ग्रन्थ-संख्या—६८
प्रकाशक तथा विक्रेता
भारती-भण्डार
लीडर प्रेस, इलाहाबाद

प्रथम संस्करण
वि० २९६,
मूल्य ४॥)

मुद्रक—
कृष्णाराम मेहता
लीडर प्रेस, इलाहाबाद

प्राक्कथन

प्रस्तुत पुस्तक में ईरान के सनाई, रूमी, अत्तार, शब्बस्तरी, निज़ामी, जामी, हाफ़िज़ और उमर खैय्याम आदि नौ प्रसिद्ध सूफ़ी कवियों की चुनी हुई रचनायें संगृहीत हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि इनके अतिरिक्त और प्रमुख सूफ़ी कवि हैं ही नहीं वरन् इन कवियों के प्रति मेरा विशेष प्रेम होना ही इस चुनाव का प्रधान कारण है। अनवरी आदि और अच्छे सूफ़ी कवियों को स्थान परिमित होने के कारण छोड़ देना पड़ा।

कवियों के चुनाव के सम्बन्ध में मुझे केवल यही कहना है कि ये सूफ़ी सिद्धान्तों का निदर्शन हैं और प्रस्तुत संग्रह का ध्येय भी, रहस्यवादी सूफ़ी कवियों की वाणी में ही उनके सिद्धान्तों की व्याख्या कर देना है। कवियों के द्वारा ही सूफ़ी मत को अभिव्यक्ति सम्भव है क्योंकि कविता ही सूफ़ी मत का प्राण है।

मेरा विश्वास है कि साहित्यिक आनन्द के अतिरिक्त ऐसी पुस्तकों के अध्ययन से भिन्न राष्ट्रों की संस्कृति से परिचित होने में भी सहायता मिलती है।

संग्रह कवियों के क्रमानुसार है और रचनायें १००० से १७०० ईसवी अर्थात् पांच शताब्दियों तक विस्तृत सूफ़ीमत की रूपरेखा का सामान्य परिचय देती हैं।

अनुवाद केवल शब्दार्थ न होकर भावानुकूल रहे इस का प्रयत्न किया गया है। अनुवाद में मूल का सौन्दर्य अपेक्षाकृत घट जाता है इसीलिए कविताओं का मूल फ़ारसी रूप भी दे दिया है इससे पाठकों को फ़ारसी के छन्द-सौन्दर्य, भाषा-माधुर्य और काव्य-संगीत का परिचय मिल सकेगा और अनुवाद उन्हें इन कवियों का भावना [illegible] और कल्पना को ऊँची उड़ान तक पहुँचने में सहायता देगा।

सूफ़ियों और सूफ़ी मत के [illegible] विषयों पर कुछ कहना आवश्यक है [illegible] निम्न प्रकार से किया जा सकता है

(१) सूफ़ी शब्द

(२) सूफ़ी कौन है ?

(३) उनके मूल सिद्धान्त

१—सूफ़ी शब्द

इस शब्द के सम्बन्ध में बहुत सी धारणायें बन गई हैं। किसी की धारणा है कि यह फ़िर्क़ा कम्बल (सूफ़) पहनता था इसी कारण इन्हें यह नाम दिया गया। एक दूसरा मत है कि इनके पूर्वज अहले सुफ़्फ़ा अर्थात् हज़रत साहब के साथी थे इसीलिये यह सूफ़ी कहे जाने लगे। मेरी व्यक्तिगत धारणा है कि सूफ़ी का उद्गम फ़ैल सूफ़ (Philosophy) से है जिसका मूल अर्थ ज्ञान है।

इस सम्प्रदाय का हज़रत अली अर्थात् मुहम्मद साहब के दो सौ वर्ष बाद से अधिक विकास हुआ। इनके स्वतन्त्र विचारों के कारण इन पर अत्याचार बढ़ते गए परन्तु कुछ समय के उपरान्त इनके उच्च विचारों के कारण बहुतों ने इस सम्प्रदाय का आश्रय लिया और इसके सिद्धान्तों को समझ कर औरों को समझाने का प्रयत्न किया।

सूफ़ी विशेष रूप से ईरान का ही मत नहीं है। अपने वेदान्ती, भक्ति-मार्गी, कुछ अंशों में बौद्ध तथा पश्चिमीय रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय वाले सूफ़ियों से विशेष भिन्न नहीं हैं। मूलतः सब एक ही हैं परन्तु भिन्न भिन्न देशों में उनके नामकरण भिन्न हो गये हैं। वास्तव में वे सभी सत्य के अन्वेषक और अलौकिक प्रेम के भिक्षुक हैं।

२—सूफ़ी कौन हैं ?

सूफ़ी दिव्य प्रेम के भिक्षुक हैं। न इन्हें कुफ़्र से मतलब है न ईमान से, क्योंकि दोनों को यह ढोंग मानते हैं। संसार में हर ओर ढोंग देख कर तथा किसी को घंटा बजाते और किसी को बनावटी माला जपते देख कर इन का मन विरक्त हो उठता है। वे इन सब बाहर के बन्धनों को तोड़ कर पूजा जप और माला के पाखण्ड से बच कर अपने प्रियतम की खोज में ही तन्मय रहना चाहते हैं।

सूफ़ी के निकट मतमतान्तर ऊँच नीच, हिन्दू मुसलमान आदि का कोई मूल्य नहीं। वह तो संसार की विविधता में एकता देखता है, जहाँ कहीं उसे अपने प्रियतम का आभास मिल जाता है वहीं वह मस्तक झुका देता है। अपने मज़हब के सम्बन्ध में एक सूफ़ी ने कहा है :-

"मर्द आशिक़ रा न बाशद इल्लते,
आशिक़ां रा न देह मिल्लते।
मज़हबे इश्क़ अज़ हमा दीनहा जुदास्त,
आशिक़ रा मज़हब व मिल्लत खुदास्त।"

अर्थात् प्रेमी का लगाव संसारी इल्लत से परे है। उसका मज़हब कोई नहीं। सब दीनों से अलग वह केवल भगवत प्रेम ही से सरोकार रखता है।

यही वह अपने जीवन से बतलाना चाहता है। उसके निकट प्रेम ही साधन है प्रेम ही साध्य है। सूफ़ी उस परदे को हटाने का प्रयत्न करता है जो दैवी प्रेम को छिपाये है और अपने उद्देश्य को प्रेम ही द्वारा ढूँढ़ता है। अपनेपन को नष्ट करके, वह परमात्मा से मिलने की इच्छा रखता है। जहां एक बार वह परदा उठा कि वह प्रेम के अर्थ को जान जाता है, और उसमें तन्मय हो हरिभजन के आनन्द में डूबा अपने दिन बिता देता है।

३—सूफ़ी मत के मूल सिद्धान्त

सूफ़ी का प्रमुख ध्येय अपने अहं को मिटाना है। रूमी ने इसी को एक उदाहरण द्वारा बताया है :

" किसी ने प्रियतम के दरवाज़े पर जाकर खटखटाया। अन्दर से एक आवाज़ ने पूछा 'तू कौन है'? उस ने कहा 'मैं'। आवाज़ ने कहा 'इस घर में 'मैं' और 'तू' दो नहीं समा सकते'। और दरवाज़ा नहीं खुला। वह दुःखी प्रेमी वापिस जंगल में तप करने चला गया। साल भर कठिनाइयां सह कर वह लौटा और उसने फिर दरवाज़ा खटखटाया। फिर उससे वही प्रश्न किया गया 'तू कौन है?' प्रेमी ने जवाब दिया 'तू'। दरवाज़ा खुल गया।"

इस सत्य तक पहुँचने के लिए सूफ़ियों के मत में एक मार्ग बताया गया है और उसके समझने के लिए यह जान लेना ज़रूरी होगा कि इस मत के आधार-भूत सिद्धान्त कौन कौन से हैं। सूफ़ियों के मूल सिद्धान्त निम्न-लिखित हैं :

(१) परमात्मा का अस्तित्व है : वही केवल यथार्थता है और शेष सब माया है। प्रायः उसे ज्योति कहते हैं। केवल उसी का अस्तित्व है।

(२) सम्पूर्ण जगत वासी दास सृष्टि सारहीन है अपनी आन्तरिक ज्योति के अतिरिक्त वह भी असार है वह आन्तरिक ज्योति उस [illegible] का काम करती है और वास्तव प्रकाश का ओर ले जाती है

(३) सत्य की प्राप्त जीवन का उद्देश्य है

होती है। या यों कहा जाय कि आत्मा ज्योति स्वरूपा नदी में मिल जाती है जिसकी वह पहिले एक लहर मात्र थी।

(६) यह अभ्यास स्वयं नहीं किये जा सकते। गुरु का होना अति आवश्यक है। यात्रा आन्तरिक और रास्ता अदृश्य है। वही पथ—प्रदर्शक हो सकता है जो इस पर चल चुका है। वही इससे परिचित है। ऐसा व्यक्ति मुक्त होता है।

(७) बहुत खोज के बाद गुरु मिलता है, और वह तभी प्राप्त होता है जब कि जिज्ञासु की पिपासा बहुत अधिक हो जाती है। उस को पहचानना कठिन है, पर समय अनुकूल होने पर वह स्वयं जान लिया जाता है।

(८) गुरु में पूर्ण विश्वास बहुत आवश्यक है और गुरु की आज्ञा का पालन शीघ्र ही फलदायक होता है। विश्वास से ही शिष्य का मार्ग प्रकाशमय हो उठता है, उसे दैवी दृष्टि प्राप्त होती है और अन्त में वह प्रेम सागर में मग्न हो जाता है।

यही सूफी मत का सार है। प्रेमी सूफी को एक एक पर विचार करना और चलना आवश्यक है।

सूफ़ियों का विश्वास है कि आत्मा को परमात्मा तक पहुँचने के लिए अनेक सीढ़ियाँ पार करनी पड़ती हैं। उससे एकाकार होने के लिये 'नासूत, शरियत, मलकूत, जबरूत, मारफत, फ़ना, हक़ीक़त क्रमबद्ध सीढ़ियाँ हैं जिनको पार करने उपरान्त ही हम परमात्मा तक पहुँच सकते हैं। इन सीढ़ियों पर पहुँचने का मार्ग 'अबूदयत, इश्क़, जोहद, मारफ़त, वज्द, हक़ीक़त, वसल, फ़ना' है जिसे पथ-प्रदर्शक सच्चा गुरू बताता है। वास्तव में मार्ग और उद्देश्य का भेद एक सीमा तक पहुँच कर स्वयं ही मिट जाता है और साधक के निकट साधन और साध्य दोनों एक ही हो जाते हैं।

सूफी के लिए दरिद्र परन्तु तप और पवित्रता से पूर्ण जीवन आवश्यक है। उसके लिए आत्म-निरीक्षण तथा मन की एकाग्रता अनिवार्य्य है जिसके साधन उसे सत्गुरु से ही प्राप्त हो सकते हैं। अपने ध्येय तक पहुँचे हुए सूफी इसी को प्रमाणित करते हैं कि उनका अनुभव दिव्य ज्ञान के समान तर्क और बुद्धि के परे है। फिर भी उनके विश्वास की आधार-शिला होने के कारण वह अन्तर्गत अनुभव सत्य ही कहा जायगा। अस्तु हमारे तर्क और बुद्धि से परे जो एक अगोचर सत्य है सूफी उसी में विश्वास रखता है। उसकी साधना उस तक पहुँचना है और उसकी सिद्धि उससे एकाकार हो जाना है।

यह विषय इतना विस्तृत है कि जिस पर विस्तार पूर्वक कुछ लिखना असम्भव है। सूफ़ियों के, उत्पत्ति का अनुमान, मार्ग की अवस्थायें, रहस्य-

वादी के सात स्थान, गुरु की आवश्यकता, प्रेम की धारणा, मृत्यु का अनुमान आदि विषय ऐसे है जिनमें से एक एक पर पुस्तकें लिखी जा सकती हैं।

प्रस्तुत संग्रह का उद्देश्य सूफ़ी कविता का दिग्दर्शन मात्र था। गुल्शनेराज, लवायह आदि पुस्तकें ऐसी हैं जिनमें सूफ़ी रहस्यवाद के सिद्धान्त विस्तार सहित दिये गये हैं। सादी की कृतियाँ ईश्वर प्राप्ति के मार्ग पर जाने वालों के लिए नैतिक नियमों का संकलन है। उसकी तुलना बौद्ध साहित्य के अष्टाङ्गिक मार्ग से की जा सकती है।

हाफ़िज़ और उमर ख़ैय्याम प्रेम मदिरा का पान कराते हैं और अपने बाग़ के गुलाबों की भीनी भीनी सुगन्धि देते हैं। निज़ामी अपने गीतों में अलौकिक प्रेम की उमंग को लौकिक प्रेमी की भाषा में चित्रित करते हैं और महान रहस्यवादी जलालउद्दीन रूमी हमें इतनी ऊँचाई तक पहुँचा देते हैं जहाँ दिव्य स्पर्श का अनुभव होने लगता है।

वास्तव में सूफ़ियों की कविता में लौकिक आवरण में छिपी अलौकिकता हमें ऐसा आनन्द देती है जो चिर परिचित होने पर भी चिर नवीन है। पाठकों को मेरे इस कथन की सत्यता इस छोटी सी पुस्तक से मालूम हो जायगी।

मैं उन लेखकों तथा प्रकाशकों को धन्यवाद देता हूँ जिनकी निम्न पुस्तकों से मुझे इस पुस्तक के प्रकाशन में बड़ी मदद मिली :

लिटरेरी हिस्टरी आफ़ परशिया—ब्राउन—(४ जिल्दें—केम्ब्रिज यूनीवरसिटी प्रेस)

परशियन लिट्रेचर—लीवी

परशियन लिट्रेचर—जैकसन

डिक्शनरी आफ़ इसलाम—ह्युज

मसनवी-अत्तार (नवलकिशोर प्रेस—लखनऊ)

लैला मजनूँ निज़ामी—(नवलकिशोर प्रेस—लखनऊ)

गुलशने राज़—शब्सतरी—मुरत्तिबा विहनकील्ड्

दीवान हाफ़िज़ शीराज़—अबदुल फ़तह अबदुल रहीम—(इरतबए जामा उसमानिया सरकार)

मिसनवी मसनवी रूमी—मुरत्तिबा निकलसन हुसेन (आज़म स्टीम प्रेस—हैदराबाद)

रुबाईयात उमर ख़ैय्याम—(नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ)

गुलिस्ताँ व बोस्ताँ—सादी (मनचा, मुजवली, देहली)

दीवाने शम्श तबरेज़—अबदुल मलिक अरबी, गोरखपुर

लवायह जामी—(मतबा मुजबली देहली)

रूमी—सुलेमान नदवी (मतबा मारिफ़ आज़मगढ़)

मैं स्वर्गीय मौलवी अन्सारी, पेश इमाम मुसलिम बोर्डिंग प्रयाग की स्मृति के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होंने अपनी वृद्धावस्था में कई महीनों तक आकर सूफ़ी कविता के अनुवाद में मुझे सहायता दी। उनकी सहायता के बिना सम्भवतः यह संग्रह कभी निकलता ही नहीं। मैं अपने मित्र श्री रामचंद्र टंडन का कृतज्ञ हूँ जिन्होंने प्रूफ़ ठीक करने में मुझे सहायता दी। इस पुस्तक के प्रकाशन और छपने में मदद देने के लिए मैं श्री राय कृष्णदास, डाक्टर मोतीचन्द तथा श्री वाचस्पति पाठक को धन्यवाद देता हूँ।

प्रयाग
१८-६-३६

बाँके बिहारी

सनाई

(मृत्यु ११३१ ई०)

आपका पूरा नाम है अब्दुल मजीद मजदूद बिन अदम। आप ग़ज़ना के निवासी थे। किसी किसी की यह भी धारणा है कि आपका निवास स्थान बलख था। आप फ़ारसी भाषा के प्रथम तथा एक उच्च सूफ़ी कवि थे। प्रोफ़ेसर ब्राउन ने अपनी 'लिटरेरी हिस्ट्री आफ़ परशिया' में आपके विषय में लिखा है :—

"मसनवी लिखने वाले तीनों लेखकों में आपका नाम सर्व-प्रथम है। अत्तार का नम्बर दूसरा, और जलालुद्दीन रूमी का तीसरा है।"

निस्सन्देह फ़ारसी भाषा के सूफ़ी कवियों में यह तीनों सर्व-प्रथम हैं। परन्तु यह जो उपर्युक्त स्थान इन लोगों को दिया गया है वह साहित्य के इतिहास तथा समय के अनुसार है। यदि कविता की उत्तमता, भाव-प्रदर्शन तथा विचारों की गम्भीरता पर दृष्टि डाली जाय तो रूमी का नम्बर पहला, अत्तार का दूसरा तथा सनाई का तीसरा होगा।

आरम्भ में सनाई भी एक दरबारी कवि थे और सुल्तानों की प्रशंसा में क़सीदे लिखा करते थे। परन्तु कुछ काल उपरान्त, सौभाग्य से इनकी भेंट एक सूफ़ी से होगई। जैसा कि दौलत शाह, जामी तथा अन्य इतिहास-लेखकों की पुस्तकों से प्रकट होता है। सत्संग का फल ऐसा हुआ कि जीवन के प्रति इनके विचारों में बहुत बड़ा उलट-फेर होगया। शम्स तबरेज़ के दीवान का सम्पादन करते हुए, उसकी भूमिका में, मौलवी अब्दुल मलूक अबरी ने इस घटना का उल्लेख इस प्रकार किया है :—

"एक दिन सनाई, सुल्तान महमूद की प्रशंसा में एक कविता लिख कर नदी की ओर जा रहे थे। मार्ग में एक शराबख़ाने के दरवाज़े से होकर निकले। उस समय लायेलबार नामक एक प्रसिद्ध मदिरा-सेवी, साक़ी से कह रहा था कि सुल्तान महमूद के अन्वेषण के नाम पर एक प्याला भर दे। साक़ी ने कहा कि सुल्तान महमूद एक बड़ा भारी मुसल्मान बादशाह है। दुनिया में मशहूर हो रहा है। उसके लिये ऐसा कहना मुनासिब नहीं है। लायेलबार ने कहा कि वह बहुत बुरा आदमी है। अपने मुल्क को तो क़ब्जे में रख नहीं सकता है, दूसरे मुल्कों को जीतने के लिये फिर रहा है। यह कह कर उसने प्याला उठाया और पी लिया। अबकी बार उसने साक़ी से कविवर सनाई को नहीं कविता के नाम पर दूसरा प्याला माँगा। साक़ी ने कहा कि सनाई तो एक बहुत ही ऊँची तबियत का शायर है उसकी कविता तो बड़े मज़े की होती है। लायेलबार ने कहा कि अगर वह ऐसा होता तो क्या ऐसे काम में लगा रहता। उसने कुछ बेहूदा बातें एक काग़ज़ पर लिख रक्खी हैं और इसके सिवा यह भी नहीं समझता कि वह किस लिये पैदा हुआ है।"

उसकी इन बातों से सनाई के हृदय पर एक ऐसा धक्का लगा कि उनके नेत्र खुल गये। सांसारिक बातों से हटा कर उन्होंने अपने दिल के घोड़े की बाग सत् की तरफ़ मोड़ दी और अब इस नवीन जगत में भ्रमण करने लगे। उन्होंने अपनी भावमयी कविता का आनन्द बहुतों को प्रदान किया। मौलाना रूम के सम्मुख यदि कोई उनकी प्रशंसा करता तो वह कह दिया करते थे, "यह तो सूर्य को अच्छा बतलाने के समान है।" मौलाना रूम ने अपनी मसनवी के आरंभ में सनाई के विषय में इस प्रकार लिखा है :—

"अत्तार रूह है, और सनाई उसकी दो आँखें। और मैं तो सनाई तथा अत्तार के पैरों के समान हूँ।"

प्रोफ़ेसर निकल्सन ने उनके विषय में कहा है, "मनुष्य का आरंभ विवेक-पूर्ण जीवन, सत, और तर्क से हुआ है।" जब रूमी के समान बड़े-बड़े विद्वानों ने सनाई की प्रशंसा की है तो उन्हें महान् कवि की पदवी से भूषित करना अत्युक्ति न होगा। बहुत से मनुष्य उनकी बड़ाई केवल इसी लिये करते हैं कि वह एक ईश्वर के प्रेम में मस्त कवि थे। परन्तु मेरी समझ में वह एक श्रेष्ठ सूफ़ी थे। और यद्यपि रूमी की समानता के न थे तब भी एक उत्तम और उच्च कवि थे। उनकी रचनाएं "दिल" और "इश्क़" बहुत ही उत्तम और उच्च भावनाओं की प्रेरक हैं।

सनाई की ख्याति उनके रचे हुए एक काव्य "हदीक़ा" के कारण और भी अधिक हो गई। इसमें ग्यारह सहस्र पद हैं। इन पदों में आध्यात्मिकता की तथा आत्मिक अनुभवों की झलक पूर्णरूप से वर्त्तमान है। ब्राउन का कहना है कि इस पुस्तक की प्रतियां बहुत सुलभ नहीं है। इनकी कविता के महत्व को समझने के लिये "दीवान" देखना आवश्यक है, जिसकी एक हस्तलिपि मेरे पास है और जिसमें से कई एक कविताएँ मैंने इस पुस्तक में उद्धृत की हैं। प्रोफ़ेसर ब्राउन का भी यही मत है। उनका कहना है कि "दीवान" में लिखी हुई कुछ कविताएँ "हदीक़ा" से भी कहीं उत्तम हैं, और उनमें सनाई के भाव-नियंत्रण और व्यक्तित्व की पूर्ण झलक विद्यमान है। उदाहरण के लिए उन्होंने निम्न आशय के पद उद्धृत किये हैं :—

"वह हृदय जो सांसारिक पीड़ाओं और कठिनाइयों से परे है बहुत ही उत्तम है।

उसे प्रेम की मुहर अथवा हस्ताक्षर भी नहीं प्रदर्शित कर सकते।

मैं केवल आपका प्रेम चाहता हूँ और यदि वैभव अथवा धन मेरे भाग्य में नहीं है तो उसकी कोई चिन्ता नहीं।

कारण कि धन का सम्बन्ध संसार से है और संसार तथा प्रेम कभी साथ-साथ चल नहीं सकते।

जब तक आप मेरे हृदय में निवास करते हैं तब तक वह सांसारिक पीड़ाओं का अनुभव भी नहीं कर सकता।" (लि० हि० प०, जिल्द २, पृ० ३१७)

सनाई की मृत्यु सन् ११३१ ई० में हुई।

उनकी प्रमुख रचनाएँ निम्न-लिखित हैं :—

दीवान।
हदीक़ुल हक़ीक़त।
तरीक़ुत-तहक़ीक़।
ग़रीबनामा।
कारनामा।
अक़्लनामा।
सैरुल इबालुल उलमद।
इश्क़नामा।

---

(१)

चंद अर्जी दावाए दुरवेशो व लाफ़े आशिक़ी।
ना चशीदा शरबते आँ नाजमूदा दर्दे दीं॥

(२)

तना पाए आँ रह नदारी चे पोई।
दिला जाय आँ बुत नदानी चे जूई॥
अर्जी रहरवाने मुख़ालिफ़ चे चारा।
कि बर लाफ़ गाहे सरे चार सूई॥
अगर आशिक़ी कुफ़्रो ईमाँ यके दाँ।
कि दर अक़्ल रानास्त ईं नेक खूई॥
तु जानी व अंकाशतस्ती कि शख्सी।
तु आबी व पिंदाश्ततस्ती सबूई॥
हमाँ चीज रा ता न जोई न यावी।
जुजीं दोस्त रा ता न यावी न जोई॥

---

(१) तू कब तक अपने इस उदासी वेष और प्रेम पर अभिमान करता हुआ बैठा रहेगा? न तो तूने अभी उसका शर्बत ही पिया है और न उस पीड़ा के आनन्द का अनुभव ही किया है।

(२) हे प्रेमी! जब तू उस मार्ग में आगे बढ़ने की क्षमता ही नहीं रखता तब व्यर्थ में क्यों दौड़ रहा है? ऐ मन! जब तू उस प्यारे का स्थान ही नहीं जानता तब व्यर्थ में क्यों उसकी खोज कर रहा है?

जब कि तू चौराहे पर खड़ा हुआ है तब इन भिन्न-भिन्न पथों पर चलने वाले पथिकों से किस प्रकार बच सकता है?

यदि तेरे हृदय में लगन लगी हुई है तो अपने धर्म और उसके विपरीत धर्मों को एक ही समझ। यह बुद्धिमानी की बात है और अच्छे स्वभाव से सम्बन्ध रखती है।

तू प्राण है, परन्तु तूने अपने आपको मनुष्य समझ लिया है। तू जल है परन्तु तूने अपने आपको घड़ा समझ रक्खा है!

अन्य वस्तुएँ खोज करने ही से प्राप्त होती हैं, परन्तु उस प्यारे के विषय में एक आश्चर्य की बात है। जब तक तू उसे पा न जायगा उसकी खोज ही न करेगा।

यक्रीं दाँ कि तू ऊ न बाशी व लेकिन।
चो तू दरमियाना न बाशी तू ऊई॥

(३)

ए दिल अर उक़्बात बायद दस्त अज़ दुनिया बेदार।
पाकबाज़ी पेश गीरो राहे दीं कुन इख़्तियार॥
ताजो तख़्ते मुल्के हस्ती जुम्ला रा दरहम शिकन।
नक़्शे मोहरे मुफ़लिसी ओ नेस्ती दर जाँ निगार॥
पाय बर दुनिया नेही बर दोज़ चश्म अज़ नामो नंग।
दस्त दर उक़्बा ज़नो बर बंद राहे फ़क़रो आर॥
चूँ ज़ना ता कै नशीनी बर उमीदे रंगो बू।
हिम्मत अंदर राह बंदो गाम ज़न मरदानावार॥
आलमे सिफ़ली न जाए तुस्त अज़ीं जा बर गुज़र।
जेहदे आँ कुन ता कुनी दर आलमे उलवी क़रार॥
ता न गरदी फ़ानी अज़ औसाफ़े ईं फ़ानी सक़र।
वे नेयाज़ी रा न बीनी दर बहिश्ते किर्दगार॥
गर चो बूज़र आरज़ूए ताजदारी रोज़े हश्र।
बाश चूँ मंसूरे हल्लाज इंतज़ारे ताजदार॥

विश्वास रख कि वह तुझमें सदैव वर्त्तमान रहता है, परन्तु जब तू बीच में से दूर हो जायगा उस समय बस वही वह रह जायगा।

(३) हे मन! यदि तू उसे प्राप्त करना चाहता है तो संसार को त्याग दे और अन्तःकरण को शुद्ध करके उस धर्म मार्ग में आगे बढ़।

सिंहासन और ताज, राज्य और अस्तित्व सबको एक किनारे रख दे। भिखारी बन जा और यह समझ ले कि मैं कुछ हूँ ही नहीं।

इस संसार को ठुकरा दे, नाम और वैभव सबको लात मार कर आगे बढ़। तू अपने अभीष्ट पर ही ध्यान जमाए रख, प्रतिष्ठा और अप्रतिष्ठा का कुछ विचार ही मत कर।

स्त्रियों के समान बनाव शृंगार करता हुआ कब तक बैठा रहेगा? मार्ग में आगे बढ़ने का साहस कर और पुरुषों के समान दृढ़ता से क़दम आगे बढ़ा।

यह नाशवान् संसार तेरे रहने योग्य स्थान नहीं है; अतएव यहाँ से चल दे और उस लोक में पहुँचने का प्रयत्न कर जिसके आगे अमर शब्द लिखा जाता है।

जब तक तू इस क्षणभंगुर जगत के मिथ्या बन्धनों को तोड़ कर शुद्ध न हो जायगा, तब तक तू ईश्वर के बनाए हुए उस स्वर्ग में शान्ति-पूर्वक नहीं रह सकता।

यदि तू मृत्यु के उपरान्त, उसके दर्बार में पहुँच कर ताज पाने की इच्छा

अज़ हदीसे इश्क़े जाँबाज़ाँ मज़न बर खीरा लाफ़।
ता तू अंदर बन्दे इश्क़े खेश मोंदी चुस्तुचार॥

(४)

चूँ इश्क़ बदस्त आमद तन गोर कुनो खुश जी।
चूँ अक़्ल बपा आमद पै कोर कुनो खम जन॥
आतश अंदर खाकपाशाने हमा आलम जनद।
हर किरा दर रूए आबे तुस्त बर सर बाद नू॥

(५)

खारस्त हमा जहानो अंगह।
बूए तो दराँ मियाना बरदे॥
दर तो कि रसद बदस्त मरदी।
ता अज़तो न बूद पाए मरदे॥

(६)

ऐ न गुज़राए अक़्लो जानम।
वै शारत करदा ईनो आनम॥

रखता है, जिस प्रकार कि कूज़र ने किया था, तो मन्सूर के समान अपने आपको मिटा कर उसका अधिकारी बनने का प्रयत्न कर।

अपने आप को सबसे पहले मिटा डाल, तब सच्चे प्रेमियों के प्रति की बातें करके अभिमान किया। यदि ऐसा नहीं कर सकता है तो अभिमान करना भी व्यर्थ है।

(५) यदि तुझे प्रेम प्राप्त हो जाये तो फिर शरीर से किसी प्रकार का

ऐ नक़्शे ख़याले तो यक़ीनम।
वै ख़ाले जमाले तो गुमानम॥
ता वा ख़ुदम अज़ अदम कम कम।
चूँ वा तो शुदम हमा जहानम॥

(७)

दीदए याक़ूब रा दीदारे यूसुफ़ तूतियास्त।
जौहरए फ़रहाद बायद ता ग़मे शीरीं कशद॥

(८)

न आँजा मेहतरी बाशद न आँजा केहतरी बाशद।
न आँजा सरवरी बाशद न ख़ैलो नै हशम बीनी॥
न दादे आलिमाँ मानद न ज़ुल्मे ज़ालिमाँ मानद।
न जौरे जाबिराँ मानद न मख़दूमो ख़दम बीनी॥
बज़ेरे ख़िश्तो गिल बीनी हमाँ शाहाने आलम रा।
चुनाँ दिलबर हज़ाराँ पेश दर ज़ेरे क़दम बीनी॥
बे आ ता अहले मानी रा दरीं आलम बराम बीनी।
बे आ ता लुत्फ़े रब्बानी व अहसानो करम बीनी॥

तू ही मेरे विश्वास का आधार है, और तेरे ही सौंदर्य पर मुझे अभिमान है।

मैं जब तक अपना निजत्व मानता हूँ, तब तक बहुत हेय और तुच्छ हूँ। परन्तु जब तेरे साथ हो जाऊँगा तब सारा संसार हो जाऊँगा।

(७) याक़ूब की आँखों का सुरमा यूसुफ़ का दीदार है। उसी को लगा कर वह मिलन मन्दिर तक पहुँच सकता है। शीरीं के लिये तड़पने को फ़रहाद के समान हृदय की आवश्यकता है।

(८) उस स्थान पर तुझे सभी समान दिखलाई देंगे। छोटे-बड़े का भेद-भाव कहीं भी दृष्टि में न आवेगा। वहाँ पर न कोई सेनापति होगा और न सेना ही।

न विद्वानों की प्रशंसा ही शेष रहेगी; न आततायियों के अत्याचार ही रह जायँगे। न आतंकवादियों का आतंक रहेगा, न स्वामियों का ही अस्तित्व रह जायगा!

संसार के जितने भी सम्राट् थे, उन सभी को तू ईंट और मिट्टी के ढेर के नीचे दबा हुआ देखेगा, और इसी प्रकार सैकड़ों बलवानों तथा बहादुरों को पैरों के नीचे पड़ा हुआ पावेगा।

यह आकर देख कि अपने आन्तरिक रहस्यों को समझने वाले लोग वास्तव में उदासीन रहते हैं, अथवा ईश्वर की दया, प्रेम और भक्ति का तमाशा देखते हैं।

चे पोई निर्दे ईं मैदाँ चे गरदी निर्दे ईं ज़िंदाँ।
चे बंदी दिल दरीं वीराँ कि चंदीं रंजो ग़म बीनी॥

(९)

कज़ बराए पुख़्ता करदन किश्त आदम रा इलाह।
दर चेहल सुबहा इलाही तीनते पाकश ख़मीर॥
चूँ तोरा दर दिल जे बहरे दोस्त न बुवद ख़ार ख़ार।
नेस्त दर ख़ैरे तो ख़ैरे जाँ मकुन दर ख़ीर ख़ीर॥
अज़ हमा आलम गुज़ीरत अज़ हमा जानो दिलत्त।
आँ तुई कज़ कुल्ले आलम ना गुज़ीरी ना गुज़ीर॥
कम न गरदद गंजहाए फ़ज़लत अज़ बदहाय मा।
तू निको कारी कुनो अज़ फ़ज़्ले ख़ुद बर मा मगीर॥
हेच ताअत नायद अज़ मा हम चुनीं बे इल्लते।
रायगाँ माँ आफ़रीदी रायगाँ माँ दर पिज़ीर॥

(१०)

दोस्ती दावा कुनी बो नफ़्स रा फ़रमाँ बरी।
गर समद ख़्वाही चिरा बाशी तलब गारे बसन॥

तू इस मैदान में इधर से उधर क्यों दौड़ रहा है और इस कारागार का चक्कर क्यों लगा रहा है? इस ऊजड़ स्थान से क्यों प्रेम करने लगा है? यहाँ रहने से तुझे बहुत से दुख उठाने पड़ेंगे, और सैकड़ों विपत्तियों का सामना करना पड़ेगा।

(९) आदम की खेती को दृढ़ करने ही के लिये ईश्वर ने अपनी सृष्टि-रचना के समय उसकी पवित्र मिट्टी को चालीस दिनों में गूँधा था।

जब तेरे हृदय में दोस्त की चाह नहीं है और न उसके हाथ से निकल जाने का ही शोक है, तो तेरी भलाई, भलाई नहीं कही जा सकती। व्यर्थ में अपने आपको कष्ट मत दे।

यह सम्पूर्ण संसार नाशवान है, फिर इसका भी कोई अस्तित्व नहीं है। एक तू ही ऐसा है जो इस सृष्टि में चिरस्थायी रह सकता है।

हमारे अनुचित कार्यों से तेरी दया की सम्भावना घट नहीं सकती है। तू दयालु है। हमारे इन कुकर्मों का तेरी दया के आगे कोई मूल्य नहीं है। हम तेरी दया को कम नहीं कर सकते।

हमने इच्छारहित प्रयोजन संसार में आकर कुछ ऐसे ऐसे काम किये हैं जो बिना हमारे प्रयत्न के हमें स्वीकार कर ले।

(१०) तू ईश्वर का प्रेमी होने का भी दावा करता है और उसका भी इच्छाओं के बन्धन में है। यदि तू वास्तव में सच्चे दिल से ईश्वर में लगा हुआ है तो मुक्ति की इच्छा क्यों करता है?

हेच कस नसतूद दर यक हाल दो मानूद रा।
हेच कस न शुनूद रोजो शब क़रीं दर यक वतन ॥
ख़िरमने ख़ुद रा वदस्ते ख़ेशतन सोज़ेम मा।
किर्म पीला हम वदस्ते ख़ेशतन दोज़द कफ़न ॥
अज़ मुरादे ख़ेश वरख़ेज़ अर मुरीदी इश्क़ रा।
दर यमन साकिन न वाशी ता तु वाशी दर ख़ुतन ॥
आज़ रा ख़ुरदन दिगर दाँ आरज़ू ख़ुरदन दिगर।
हर दो नतवानी तो ख़ुरदन या वलीदे या समन ॥
पाय आँ मरदाँ न दारी जामए मरदाँ मपोश।
वर्ग वे वरगी न दारी लाफ़े दरवेशी मज़न ॥

(११)

राहे अक़्ले आक़िलाँ रा रम्ज़े ऊ वर रम्ज़ बूद।
दर्दे जाने आशिक़ाँ रा दर्दे ऊ मरहम बुवद ॥

राहे दीं पैदास्त लेकिन सादिक़े दीदार कू।
यक जहाने शौक़ वीनम आशिक़े ख़ूँख़ार कू ॥

एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं और इसी प्रकार रात और दिन का भी एक स्थान पर इकट्ठा होना असम्भव है। भगवान् से लगन लगा कर किसी दूसरी वस्तु की इच्छा हृदय में मत रख।

हम अपने ही हाथों से अपने खलिहान को (संचित सम्पत्ति को) नष्ट-भ्रष्ट कर डालते हैं। रेशम का कीड़ा भी अपने ही हाथों से अपने को कारागार में डाल लेता है।

यदि प्रेम तेरा उद्देश्य है तो सब से पहले अपने हृदय की आकांक्षाओं को मिटा डाल। उस सुन्दर स्थान (यमन) को प्राप्त करने के लिए इस स्थान (ख़ुतन) का त्यागना आवश्यक है।

लालच को मिटा देना और बात है, और आकांक्षाओं को मिटाना दूसरी बात है। ऐ आराम से दिन व्यतीत करने वाले, तू दोनों को एक साथ नहीं मिटा सकता।

तेरे पैर उन मुर्दों के पैरों से भिन्न हैं, अतएव उन के समान वस्त्र धारण मत कर। त्यागियों का सामान तेरे पास नहीं अतएव त्यागी बनने का दावा न कर।

(११) ज्ञानियों के ज्ञान मार्ग में उसके रहस्य बहुत ही गम्भीर हैं और प्रेमियों की पीड़ा के लिए वह मरहम का काम करता है।

सत्य धर्म्म का मार्ग कुछ कुछ दिखलाई अवश्य पड़ता है परन्तु पूर्ण रूप से हमारी दृष्टि में नहीं आता। प्रेम करने के लिये सभी स्थान उपयुक्त हैं परन्तु कष्टों और कठिनाइयों को झेल कर प्रेम करने वाला कोई भी नहीं है।

सालहा बाशद चो बुलबुल गुफ़्तिओ ऊ खुद नकर्द ।
बस बबाग आखिर दमे किरदारे बेगुफ़्तार कू ॥

सिर्रे बिस्मिल्लाह अगर खाही कि गरदद ज़ाहिरत ।
चू "सनाई" अव्वल अलक़ाबे हर्सी बायद निहाद ॥

ऐ ख्वाजा तोरा दर दिल रैबस्तो सफ़ाए ।
बर हस्तिए ऊ चूँ कि हमीनस्त चे जाए ॥
गर बातिनत अज़ नूरे यक़ीनस्त मुनव्वर ।
बर ज़ाहिरे तो चूँ के हमी नेस्त सफ़ाए ॥
आरे चो बुवद सूरते तलबीस चो तहक़ीक़ ।
पैदा शवदो हर चे सवाबी व ख़ताए ॥
दावा के मुजर्रद बुवद अज़ शाहिदे माना ।
बातिल शवद अज़ अस्ल जे चूने व चराए ॥
ता शाहिदे वक़्ते तो बुवद हश्मतो नेमत ।
बीमारे दिलत रा न बुवद हेच शफ़ाए ॥
ईं हस्त वजूदश मुतालिक़ बरजाए ।
ईं हस्त हुसूलश मुतवह्हिद बरियाए ॥

वर्षों से तू बुलबुल के समान चहकता चला आ रहा है। कहता बहुत कुछ है परन्तु करता कुछ भी नहीं है। आखिर कभी तूने शान्ति के साथ किसी बात पर अमल भी किया है ?

ईश्वर के रहस्य को तू तभी समझ सकेगा, जब कि पहले "सनाई" के समान अपने हृदय की पवित्रता को आवश्यक बना लेगा।

यदि तेरे हृदय में विश्वास के साथ ही साथ सन्देह भी है तो ईश्वर से मिलना असम्भव है।

परन्तु यदि तेरे हृदय मे विश्वास का उजाला है तो बाह्य सन्देह की कोई चिन्ता नहीं है।

यदि सन्देह किसी प्रकार विश्वास के रूप मे परिवर्तित हो जावे तो निस्सन्देह अच्छे और बुरे का भेद प्रकट हो जावेगा।

निरर्थक किसी बात का दावा करना ठीक नहीं हुआ करता है। इसमे न तो किसी प्रकार की सचाई होती है और न कोई सार। ऐसे दावे के लिए किसी प्रकार के तर्क की आवश्यकता नहीं है।

जब तक सांसारी पवित्रता और सांसारी विभूतियों को त्याग देना श्रेय है, उस समय तक तेरा रोगी हृदय कभी आरोग्य लाभ नहीं कर सकता।

संसार की श्रेष्ठ वस्तुएँ दुआ अथवा आशीर्वाद माँगने से ही प्राप्त हो सकती है, और सांसारी वस्तुएँ हठ तथा कष्ट से मिल सकती है।

ता ईं दो रफ़ीक़ाने तो हमराहे तो बाशन्द ।
हरगिज़ न बुवद ख्वाजा तुरा राह बजाए ॥
शौ नेस्त तू अज़ खेशो मय अन्देश अज़ाँ पस ।
यकसाँ शमुर ईं हर दो बजाए व बफ़ाए ॥
अन्दर सिफ़ते नेस्त चे नामे व चे नंगे ।
बर बामे खराबात चे चुग़दे चे हुमाए ॥
गर निज्दे "सनाई" न शुदे खिलअते अव्वल ।
अज़ दीदा नमूदे रहे तहक़ीक़ सनाए ॥

ता कै जे हर कसे जे पए सीम बीमे मा ।
बज़ बीमे सीम गश्ता निदामत नदीमे मा ॥
ता हस्त सीम बामा बीमस्त यारे ऊ ।
चूँ सीम रफ़्त दर पए ऊ रफ़्त बीमे मा ॥
ऐ आँ कि मुफ़लिसीस्त बलाए अज़ीमे तो ।
सीमस्त गोई अस्ल निशातो नईमे मा ॥
बेहतर बेदाँ कि हस्त तमन्नाए तो मुहाल ।
सीमस्त बैहक अस्ले बलाए अज़ीमे मा ॥

अतएव जब तक यह दो प्रतिद्वन्दी तेरे साथ रहेंगे तब तक तू किसी पद को प्राप्त नहीं कर सकता है ।

तू सब से पहले अपने अहंकार को मिटा डाल, बस इसके उपरान्त किस प्रकार का भय न कर । समझ रख कि यह दोनों वस्तुएँ तेरे पद को बढ़ावेंगी

मृत्यु के लिये गौरव और पद दोनों समान हैं । मदिरागृह की छत पर उल्लू हो अथवा हुमा, इससे किसी का क्या बनता बिगड़ता है ?

यदि "सनाई" को उसकी कृपा पहले ही से प्राप्त न हो जाती तो उसको उस तक पहुँचने का मार्ग भी नहीं दिखलाई देता ।

हम चाँदी के लिये कब तक सब लोगों से भय खाते रहेंगे ? इसी चाँदी के डर से हमें लज्जित होना पड़ा है ।

जब तक हमारी गाँठ में रुपया है तब तक भय भी हमारा साथ नहीं छोड़ सकता, परन्तु इसके जाते ही हमारा भय भी सदा के लिये किनारा कर जायगा ।

तुम निर्धनता को सबसे बुरा समझते हो और कहते हो कि रुपया ही हमारी प्रसन्नता की कुंजी है ।

सुन समझ लो कि तुम्हारा यह विचार निरर्थक है और यह रुपया ही संसार में सब आपत्तियों की जड़ है ।

आयन्द हर दो वाहम हर दो वहम रवन्द।
गोई विरादरन्द वहम वीमो सीमे मा ॥
गर मा हमा सियाह गलीमेम तुर्फ़ा नेस्त।
सीमे सुपीद करदा सियह ईं गलीमे मा ॥
गे अज़ नईम करदा लिवासे खुद अज़ नसेज।
हाँ ता ज़े रूए किन्न नवाशी नदीमे मा ॥
गोई बरहना पायाँ वर मा हसद वरन्द।
हर गह कि बिनगरन्द व कफ़्शे अदीमे मा ॥
दर हसरते नसीमे सवाएम ए वसा।
आरद सबा नसीमो नयारद नसीमे मा ॥
इमरोज़ पुख़तायेम चो असहावे कहफ़ वार।
फ़रदा ज़े गोर वाशद कहफ़ो रक़ीमे मा ॥
आलम चो मंज़िलस्तो खलायक़ मुसाफ़िरन्द।
दर वै मुजव्वरस्त मक़ामे मुक़ीमे मा ॥
हस्त आँ जहाँ चो सीमो फ़लक सीम दारे ऊ।
मा गल्लादार अज़ो व अमल हम क़सीमे मा ॥

रुपया और भय संसार में साथ ही साथ आते हैं और चले जाते हैं। ऐसा ज्ञात होता है मानों वे दोनो सगे भाई हैं।

हमारे भाग्य के मन्द होने में कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इसी रुपये ने हमें ऐसा बनाया है। इसी के न होने से हमारी गणना अभागों में है।

अपने वैभव से भी बढ़ कर तुमने उत्तम वस्त्र धारण किये हैं। सावधान! अभिमान और अहंकार को लेकर हमारे पास मत आना।

तुम कहते हो कि नंगे पाँव फिरने वाले हमारे जूतों को देख कर डाह करते हैं। परन्तु यह बात नहीं है। वह तुम्हारी नरी की जूतियों पर दृष्टि भी नहीं डालते।

हम तो वायु के नरम और मस्त कर देने वाले झोंको के इच्छुक हैं। शीतलता के स्थान में वायु में कभी ताप भी हो सकता है। परन्तु वह हमारे लिये नहीं है।

आज हम सुन्दर भवनों में बड़े आनन्द से शान के साथ लेटे हुए हैं, कल क़ब्र में हमें शरण लेनी पड़ेगी।

संसार एक यात्रा है, और मनुष्य यात्री हैं। यहाँ पर किसी का विश्राम करना केवल एक धोखा है।

परन्तु वह दूसरा लोक चाँदी के समान उज्ज्वल है। आकाश उसका कोषाध्यक्ष है। हमारे पास गल्ला बहुत है और आशाएँ बढ़ी हुई हैं।

तीमारे बीम दाशतन्द चज मा हिमाकत अमत ।
तीमार दारद चाँ के बमा दाद बीमे मा ॥
मा चज जमाना उमे नका नाम करदएम ।
ऐ वाए मा के हस्त जमाना चरीमे मा ॥
दर बस्के ईं जमानए नापायदारे शूम ।
अिशनी कि मुख्तसर मसले जद हकीमे मा ॥
गुफ्त आँ जमाना मारा मानिन्दे दाया अस्त ।
बस्ता दरे उमीदे रजीओ फ़लीमे मा ॥
ता ऊ बजामो दिल हमा गाँ रा बे परवरद ।
मानिन्दे मादराने शफ़ीक़ो रहीमे मा ॥
चूँ मुद्दते बराग़द बर मा अदू शवद ।
अज बादे आँ के चूद सदीक़े हमीमे मा ॥
गर दानदत बदस्त शवो रोजो माहो साल ।
चूँ दाले मुनहनी अलिफ़े मुस्तक़ीमे मा ॥
अंगह फ़रो बरद बजमीं बे सायानते ।
आँ क़ामते मुक़व्वसो जिस्मे जसीमे मा ॥

भय की चिन्ता करना हमारे लिये मूर्खता है। भय उसी के लिये छोड़ दो जिसने उसे उत्पन्न किया है, तथा जिसने तुम्हें वह प्रदान किया है।

हमने जमाने से दो वस्तुएँ ऋण में ली हैं। एक जीवन और दूसरी अमरता। हमारी बर्बादी इसी कारण हो रही है कि जमाना यह चाहता है कि हम उससे ऋण लेते रहें।

इस खोटे और भाग्यहीन जमाने के लिये विद्वानों ने एक छोटा सा उदाहरण दिया है।

वह कहते हैं कि यह हमारे प्रति एक धात्री के समान है। दूध पीने वाले तथा बड़े बच्चे दोनों ही इससे ऐसी ही आशा रखते हैं।

हम चाहते हैं कि वह दिलोजान से सबका पालन-पोषण करे और हमसे एक दयालु माता का सा वर्त्ताव करे।

परन्तु कुछ समय उपरान्त वही हमारा शत्रु हो जाता है। गोकि किसी समय वह हमारा एक शुभेच्छु मित्र था।

समय ने—रात-दिन, वर्षों और महीनों ने—तुम्हारे ऊपर वह विपत्तियाँ गिराई हैं कि तुम्हारी कमर झुक गई है।

अन्त में यही आपत्तियाँ एक घातक के समान तुम्हें मृत्यु के मुख में ढकेल देती हैं।

रैहाने रूहे मा चे फ़राग़स्तो क़ारेगी ।
मशग़ूलयस्त शरलें अज़ावे अलीमे मा ॥
सर गश्ता शुद "सनाई" यारब तु रहनुमाए ।
ऐ रहनुमाए खल्क़ खुदाए रहीमे मा ॥
मारा अगरचे फ़ेल ज़मीमस्त तू मगीर ।
यारब वा फ़ज़्ले खेश्त ज़े फ़ेले ज़मीमे मा ॥

(१२)

ऐया माँदा वेमूजिबे हर मुरादे ।
हमा साल दर मेहनतो इज्तेहादे ॥
न दर हक़्क़े खुद मर तोरा इनज्याजे ।
न दर हक़्क़े हक़ मर तोरा इनक़्यादे ॥
चो दीवानगाँ माँदई दर तफ़क्कुर ।
कि गोई तुरा चूँ बरायद मुरादे ॥
ज़े हिर्से दो रोज़ा मुक़ामे मजाज़ी ।
वहर गोशए करदा ज़ातुलइमादे ॥
हमाना वखाव अन्दरी ता वेदानी ।
कि मारा जुज़ी नेस्त दीगर मआदे ॥

हमारा जीवन आनन्दमय कैसे हो सकता है ? विश्वास तथा बेफ़िक्री से । कार्य में व्यस्त रहना तथा चिन्ता से परे रहना भी दुख देने वाली वस्तुएँ हैं ।

भगवन् ! "सनाई" सीधे मार्ग को भूल गया है । उसे फिर उसी सत्य मार्ग पर ला । तू ही संसार का पथ-प्रदर्शक और दयालु दाता है ।

यह सत्य है कि हम पापी हैं । हमारे कर्म बुरे हैं । परन्तु तू अपनी दया दिखला और हमें क्षमा प्रदान कर ।

(१२) तू बिना किसी इच्छा या स्वार्थ के वर्ष भर परिश्रम तथा प्रयत्न करता रहा है ।

न तो तू अपनी ही चिन्ता करता है और न ईश्वर की ही उपासना करता है ।

बस एक पागल के समान कभी इस गली में और कभी उस गली में घूमा करता है ।

तेरी कोई इच्छा किस प्रकार पूर्ण हो सकती है जब तू इस दो दिन के संसार में भवन निर्माण करने में लगा हुआ है ?

तू सांसारिक कार्यों में इस प्रकार संलग्न है, मानो स्वप्न देख रहा है । तनिक सावधान होजा और समझ ले कि तुझे और भी कहीं लौट कर जाना है ।

चे बेचारा मरदी चे सर गश्ता ख़लक़ी।
चे बर बातिले बाशदत इसतिनादे ॥
मजाज़ीस्त ईं शूम दुनिया कि दायम।
तोरा नेस्त इल्ला बरू अत्तमादे ॥
पस ऐ ख्वाजा दावा रसद आँ कसे रा।
कि मावूदे ऊ गश्ता बाशद जमादे ॥
पसंगह रसीदन बतहक़ीक़े माना।
तमन्ना कुनी बा चुनीं एतक़ादे ॥
बेदानी हमीं मश्क आँ क़द्र बारे।
कि जाए मईशत दो बाशद क़रादे ॥
तु गर राहे हक़ रा हमी जोई अव्वल।
तलब करदा बाशद सबीलुर रिशादे ॥
ज़ियादत बुवद मर तुरा हर ज़माने।
व आमालो अकआले ख़ेश एतमादे ॥
पस अज़ नेस्ती साज़े आँ राह साज़ी।
कुजा बेहतर अज़ नेस्ती नेस्त ज़ादे ॥

तू लाचारी और विपत्तियों का शिकार हो रहा है। न मालूम तुझे क्या हो गया है जो एक निरर्थक बात पर विश्वास कर रहा है ?

यह अनित्य संसार तेरे लिये सुनहला है—मन-मोहक है—और तूने भूल से उसी में चित्त लगा रक्खा है।

फिर बता कि वह मनुष्य, जो एक सारहीन वस्तु की ओर आकर्षित हो रहा है, ईश्वर से मिलने का दावा किस प्रकार कर सकता है ?

और फिर संसार में इस प्रकार संलग्न रह कर तू आन्तरिक भेदों को किस प्रकार समझ सकता है ?

परीक्षा करने से तुझे यह तो ज्ञात ही हो जायगा कि जीवन व्यतीत करने के लिये दो संसार हैं।

यदि तू ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग समझ लेना चाहता है तो सबसे पहले एक सीधे और सच्चे मार्ग का इच्छुक बन।

इसके उपरान्त तेरी सदैव उन्नति होती रहेगी और तू स्वयम् अपने कार्यों पर विश्वास करेगा।

उस समय तू अपने आपको नष्ट करके उस मार्ग पर चलने को प्रस्तुत होगा, जहाँ कि अहंकार को मिटा डालने से बढ़ कर और कोई वस्तु ही नहीं है।

सलाहे "सनाई" दरीनस्त दायम ।
शवद दर रहे इश्क़ हमचूँ रिशादे ॥
बे गुफ़्तम सलाहे दिल अज रूए माना ।
सलाहस्त ईं मशमूर अन्दर फ़सादे ॥
न बीनी कि परवानओ शमा हरगिज़ ।
कि बर बातिनश खीरा गरदद बिदादे ॥
शवज़ खुद बरी गर्दतावर हक़ीक़त ।
तुरा बे तो हासिल शवद इनहिदादे ॥
बरी गरदद अज खेशतन चूँ "सनाई" ।
कुनद ऊ जे खेशी खुरा चूँ ज़ियादे ॥

(१३)

अगर मुश्ताक़े दीदारी व दायम ।
उमीदे दीदने दीदार दारी ॥
जे दीदारत न पोशीदस्त दीदार ।
बे बीं दीदार गर दीदार दारी ॥
दिला ता चूँ "सनाई" दर रहे दीं ।
तरीक़े जोहदो इसतिग़फ़ारदारी ॥
मुसलमाँ नेस्ती ता हमचो गबराँ ।
जे हम्नी बर मियाँ ज़ुन्नार फ़दारी ॥

"सनाई" की भलाई इसी में है कि वह प्रेम का सदैव सीधा और सच्चा मार्ग पकड़े रहे ।

मैंने अपने आन्तरिक विश्वास के बल पर सत्यता का वर्णन कर दिया है । यह एक बहुत ही उत्तम वस्तु है । इसकी गणना बुराई में मत कर ।

क्या तुम नहीं समझते कि दीपक और पतंग में कैसा प्रेम है ? पतंगा सदैव उसी के प्रणय में मस्त रहता है । वह कभी किसी दूसरे का ध्यान भी नहीं करता है ।

अपने आपको भुला दे । हक़ीक़त (ईश्वरीय वास्तविकता) तक पहुँचने का यही उपाय है । इसी उपाय से तू अपने आपे को भी दूर कर सकता है ।

जब "सनाई" का अपनत्व मिट जायगा तब वह अपनत्व का अभिमान रखने वालों के समान कैसे रहेगा ?

(१३) यदि तेरे हृदय में दर्शनों की लालसा लगी हुई है, यदि यही तेरा उद्देश्य है,

तो स्मरण रख कि वह तेरी दृष्टि से छिपा नहीं है । अगर तेरी (ज्ञान) नेत्रों में तो उसको देख ले ।

ऐ दिल ! तू "सनाई" के समान धर्म-मार्ग में पवित्रता और विवेक का दीन कब तक स्वीकारेगा ?

क्या तू पथ-भ्रष्ट नहीं है जो अग्नि की पूजा करने वालों के समान अपनी कमर में जनेऊ का धागा बाँधे हुए है ?

(१४)

अया अज़ चंबरे इसलाम दायम करदा सर बेरूँ ।
जे सुन्नत करदा दिल खारी जे बिदअत करदा सर मशहूँ ॥
हवा हमवारा शैताने शुदा बर नफ़्से तो सुलताँ ।
तनत रा जेह्न पैराया दिलत रा कुफ़्र पैरा मूँ ॥
अगर दर एतक़ादे मन बशकी ता बनज़्म आरम ।
अला रस्मे तो दर तौहीद फ़स्ले गोशदार अकनूँ ॥
तुरा पुरसीद ख़ाहम मन जे सिर्रे बैज़ए मुर्ग़ ।
चे गुफ़्तस्त अन्दरीं मानी तुरा तलक़ीने अफ़लातूँ ॥
सुफ़ैदो ज़र्द मी बीनम दो आब अन्दर यके ख़ाना ।
वज़ाँ यक ख़ाना चन्दीं गूना मुर्ग़ आयद हमीं बेरूँ ॥
न गोई अज़ चे मानी गश्त पर्रे ज़ाग़ चूँ क़तराँ ।
जे बहरे चे दुमे ताऊस रंगीं शुद चु बूक़लमूँ ॥
हुमायो चुग़द रा आख़िर चे इल्लत बूद दर खिलक़त ।
चेरा शुद दर जहाँ ईं शूमो आँ शुद ईं चुनीं मैमूँ ॥
न गोई कज़ चे मी गरदद चकाक इलहाने मूसीक़ार ।
न गोई कज़ चे मी मानद तदर्व अनवाए असक़ातूँ ॥

---

(१४) हे मनुष्य ! तूने सच्चे धर्म का त्याग कर दिया है। उसके पवित्र नियमों को छोड़ कर इन्द्रियों का दासत्व स्वीकार कर लिया है।

तेरे सिर पर सदैव शैतान सवार रहता है और धर्म्म-विरुद्ध आचरण करने तथा अपनी इच्छाओं को पूरा करने में तुझे अतीव आनन्द आता है।

यदि तुझे मेरे विश्वास के प्रति कोई सन्देह है तो मैं तेरे सम्मुख कविता की कुछ पंक्तियाँ कहता हूँ। यह उसके प्रति विश्वास प्रकट करती हैं। इन्हें ध्यान से सुनना।

मैं तुझसे चिड़िया के अंडे का राज़ पूछता हूँ। बता, अफ़लातून ने इस विषय में क्या कहा है ?

मैं देखता हूँ कि एक अंडे के अन्दर सफ़ेद और पीले, दो तरह के पानी हैं, और इसी अंडे से सैकड़ों प्रकार के पक्षी उत्पन्न होते हैं।

अब यह बता कि कौवे के पर काले क्यों हुए और मोर की पूँछ रंग बिरंगी क्यों हुई ? उसमें इतने रंगों का समावेश होने का क्या कारण है ?

उल्लू और हुमा के जन्म में क्या ख़राबी है, जिसके कारण उल्लू को लोग बुरा मानते हैं और हुमा का देखना शुभ शकुन समझा जाता है।

पपीहे को ऐसे मधुर स्वर में सुन्दर राग अलापना कौन सिखाता है, और चकोर को इतने सुन्दर वस्त्र पहनने को कौन देता है ?

तफक्कुर कुन यके दर खिलक़ते शाहीनो मुरग़ाबी ।
वे गोई कज़ चे मानी रास्त ईं जीं सक्त अज़ आँसूँ ॥
यके चूँ रायते सीमीं हमेशा दर हवा नाज़ाँ ।
यके रा जौरक़े ज़र्रीं रवाँ हमवारा दर जैहूँ ॥
गुरेज़ाँ ईं के चूँ गरदद वज़ाँ अज़ चंगे ऊ ऐमन ।
शितावाँ आँ के चूँ रेज़द ज़े हिर्सो शहवा अज़ वै ख़ूँ ॥
अजबतर जीं हमा आनस्त कीं परिन्दा मुर्ग़ाबी रा ।
मुरत्तब मसकने बादस्त दीगर साँनो दीगर गूँ ॥
यके रा बेशए साज़ी यके रा बादिए आँमूँ ।
यके रा क़ुल्ए क़ाफ़ो यके रा साहिले जैहूँ ॥
यके ख़ुद रा बतमए आँ बगरदूँ बुर्दा चूँ क़ारूँ ।
यके ख़ुद रा ज़े बीमे आँ व आब अफ़गन्दा चूँ ज़ूनूँ ॥
नगीरद बाद रा चंगाँ नशोयद आब रा रंगीं ।
यके ख़ूनीन इलमासस्त व दीगर जौरक़े जैतूँ ॥
नगोई ता चेरा करदन्द फ़ेलो चंगे आँ जाहन ।
नगोई ता चेरा दादन्द रंगे ईं वरा अकसूँ ॥

शाहीं और मुर्ग़ाबियों की तरफ़ ध्यान से देख कर बताओ कि इन में इतना अन्तर किस प्रकार हुआ ? किसने उनकी रचना में इतना भेद डाल दिया ?

जिसके कारण एक रुपहले भंडे के समान वायु में फहराती रहती है और दूसरी एक सुनहली नाव के समान पानी में तैरा करती है ।

मुर्ग़ाबी शाहीं के पंजे से अपने प्राण बचाने के लिये छिपती फिरती है, और शाहीं उनका रक्त बहा कर और उनको खाकर अपनी क्षुधा शान्ति करने के उद्योग में लगी रहती हैं ।

इससे भी अधिक आश्चर्य की एक दूसरी बात है । यह दोनों पक्षी वायु में रहने वाले हैं । परन्तु इस पर भी भिन्न-भिन्न हवाओं में रहते हैं ।

किसी को जंगल की हवा भली मालूम होती है और किसी को जलाशयों के किनारे की वायु लाभदायक है । कोई-कोई क़ाफ़ पर्वत की चोटियों पर रहना पसन्द करती हैं और कोई नदियों के किनारे ।

एक पक्षी दूसरे का शिकार करने के लिये आकाश में चक्कर लगाया करता है और दूसरा उसके भय से नदी में जाकर छिप रहता है ।

शिकारी पक्षी का कठोर पंजा वायु को थामने में असमर्थ है और जल-पक्षियों का रंग नदी के पानी से नहीं धुलता ।

बताओ किस कारण शिकारी पक्षी का दिल इतना कठोर है और पंजा इतना दृढ़ तथा जल के पक्षी का रंग इतना सुन्दर ?

बगर हमचूँ मने आजिज दरीं मानी कि पुरसीदम।
चे गोई दर सबाते तो सराये हब्बे अकलीमूँ॥
न मालो हर निहाले रा चो मालस्त हस्त जावो गिल।
जे बहरे तश्के खुरशीदस्त चूँ लुअबे हवा मकरूँ॥
चेरा बर यक जमीं चंदीं नबाते मुख्तलिफ बीनम।
जे गुल बज नरगिसो बज यासमीनो अज समन सौजूँ॥
हमेदूँ मेखुरानद आब लेकेशाँ हमी रोयद।
बरंगे रंगे सिबरो सुंबुलो बारंगे मा अरयूँ॥
अगर इल्म तबाए खुद बजूदे जुमला पस चूँ खुद।
यके मुमलिक यके मीलो यके आरद यके ताबूँ॥
अज अंगूरस्तो खशखाशस्त अस्ले उनसुरे हरदो।
चेरा दानिश बरद दादा चेरा खाब आबरद अकलूँ॥
हमाना ईं कि मन गुफ्तम तबाए कर्द न तवानद।
न अकलातूनो न अंदर व अरफो हीलओ अकसूँ॥

अच्छा, यदि इस विषय में तुम भी मेरे ही समान अनजान हो और इन समस्याओं को सुलझाने में असमर्थ हो तो अपने ही सांसारिक रहन सहन को देखो और समझो।

जब सूर्य तपता है, और हवा गर्म होती है, तो तुम वृक्ष की छाया की शरण क्यों लेते हो? यह इस लिये कि तुम मिट्टी तथा पानी के संयोग से उत्पन्न हुए हो और इसी लिये चित्त को प्रसन्न करने वाली हवा की भी आवश्यकता है।

फिर यह बताओ कि पृथ्वी पर नाना रंग की वस्तुएँ क्यों उत्पन्न की गई हैं? गुलाब, नरगिस, चमेली और केला इत्यादि के पुष्प क्यों खिलते हैं?

उनको पानी से सींचा जाता है, परन्तु वे उत्पन्न होते हैं पृथ्वी में से। उनमें से किसी का रंग श्वेत होता है, किसी का पीला, किसी का लाल और काला।

यदि यह कहा जाय कि इस कारीगरी में किसी का हाथ नहीं है तो फिर इनके खिलने के ढंग पृथक् पृथक् क्यों हुए? ये भिन्न-भिन्न रूपों में अपनी बहार क्यों दिखलाते हैं? एक सिमटा हुआ है, दूसरा लिपट कर फैलता है, कोई सीधा है तो कोई चपटा।

अंगूर तथा पोस्ता दोनों को अफलातून ने ही बोया है। परन्तु फिर अंगूर नशा क्यों लाता है और अफीम बेहोश क्यों कर देती है?

इससे यह सिद्ध होता है कि अपने आप कुछ नहीं हो सकता है। अफलातून अपनी शिक्षा में और अरस्तू अपनी युक्ति के द्वारा इसे सिद्ध करने में असमर्थ हैं।

मगर वेचूँ खुदावन्दे कि फ़रज़न्दाने आदम रा।
वक़ुदरत दर वजूद आवुर्द वे आलत व काफ़ो नूँ॥
खुदावन्दे कि दायम हस्त असहावे मआसीरा।
जनावे फ़ज़्ले ऊ मामन अजावे अदले ऊ मामूँ॥
हमेशा बूद पेश अज़ या हमेशा बाशद ऊ बेशक।
वक़ाला रबना मीगो व मीदाँ वस्के ऊ वेचूँ॥
कलामश हमचो वादश हक़ वलेकिन गुफ़्ते ऊ मुशकिल।
सिफ़ातश हमचो ज़ातश हक़ वलेकिन सिर्रे ऊ मखज़ूँ॥
हमू बख़्शन्दए दौलत हमू दानिन्दए फ़िकरत।
हमू दारिन्दए गेती हमू दारिन्दए गरदूँ॥
के पिनहाँ कर्द जुज़ एज़िद वसंगे खारा दर आज़र।
कि रोयानद हमीं जुज़ वे जे खाके तीरा आज़रगूँ॥
सदफ़ हैराँ व दरिया दर दवाँ आहू व सहरा बर।
रगीदो आरमीदा हर दो दर दरिया व दर हामूँ॥
के पुर करदो के आगन्द अज़ गयाहो क़तरए बारां।
दहाने ईं व नाफ़े आँ जे मुश्को लूलूए मकनूँ॥

हाँ, यह काम निस्सन्देह उस अनुपम जगत्कर्ता ईश्वर का है, जिसने अपनी इच्छा शक्ति केवल शब्द द्वारा ("सृष्टि हो जा" इस शब्द से) मनुष्य मात्र को बिना किसी प्रकार की सहायता के उत्पन्न किया है।

ईश्वर वह है जो सदैव पापात्माओं पर दया दिखलाता है और उनको शरण देता है। उसके राज्य में रह कर मनुष्य अपने आपको खोटे कर्मों से बचा सकता है।

उसका न आदि है और न अन्त। उसकी उपमा यदि किसी से दी जा सकती है तो केवल उसी से।

वह जो कुछ कहता है वह अवश्य होता है। उसका कथन भी उसी के समान पवित्र है। परन्तु उसका कहना कठिन है। उसके गुण भी उसी के समान हैं, परन्तु उनका भेद पाना कठिन है।

वह हमें धन-सम्पत्ति प्रदान करता है और हमारे हृदय की बातों को जानता है। यह संसार और आकाश सब उसी के अधिकार में हैं।

ईश्वर के अतिरिक्त पत्थर में अग्नि किसने छिपा रक्खी है और उसकी शक्ति के सिवाय काली मिट्टी में से लाल रंग के फूल किसने उत्पन्न किये हैं?

नदी में सीपियाँ और जंगल में हिरन उसी ने उत्पन्न किये हैं। दोनों अपने अपने स्थानों में आराम से रहते और भागते फिरते हैं।

उसी परब्रह्म ने बरसा के पानी के बूँद से सीप का मुँह भरवाया और जंगल की घास से हिरण की नाफ़ में मुश्क उत्पन्न की।

जे बहरे आँ कि चूँ सीमीं सिपर गरदद दर अफ़ज़नी ।
कि काहद माहरा हर माह हत्ता आदा कल उरजूँ ॥
कि बनदद चूँ ख़िज़ाँ आयद हज़ाराँ किस्मए अदकन ।
कि पोशद चूँ बहार आमद हज़ाराँ हुस्नए गुलगूँ ॥
कि गरदानद मुलव्वन कोह रा चूँ रौज़ए रिज़वाँ ।
कि गरदानद मुनक़्क़श बाग़ रा चूँ सहने अर किलयूँ ॥
दो आबे मुख़तलिफ़ रा मुत्तफ़िक़ बाहम कि गरदानद ।
बक़ुदरत दर यके मौजा कुनद हर दो बहम माजूँ ॥
पसंगह नुतफ़ा गरदानद बजू शख़्से कुनद पैदा ।
मिसालश मोहकमो सावित निहादश मुत्तफ़िक़ मोजूँ ॥
यके आलिम यके जाहिल यके ज़ालिम यके आजिज़ ।
यके मुतयम यके मुफ़लिस यके शादाँ यके महज़ूँ ॥
तआला शानहू कि जुमला अज़ आब ऊ पिदीद आवुर्द ।
पसंगह जुमला दर दम बे दखाक अन्दर कुनद मदफ़ूँ ॥
अया दिल वस्ता दर दुनिया व गश्ता ग़ाफ़िल अज़ उक़्बा ।
चे सूद अज़ सूदे इम रोज़त कि फ़रदा मी शवी मानूँ ॥
चो आलम रा हमी दानी कि फ़ानी गश्त ख़ाहद पस ।
बमेहरे आलमे फ़ानी चरा दिल करदई मरहूँ ॥

वह कौन है जिसने अपनी शक्ति से चन्द्रमा को आकाश में चमकाया है और उसे घटाता तथा बढ़ाता है ?

पर्वत को स्वर्ग के समान नाना रंग के पुष्पों से कौन सजाता है और उपवन विविध प्रकार के पौधों तथा फूलों से कौन सुशोभित करता है ?

फिर कौन अपनी शक्ति से दो वस्तुओं को मिला कर एक कर देता है ? और फिर उसे बिन्दु के रूप में परिणत कर उससे मनुष्य उत्पन्न करता है ?

और ऐसा वैसा मनुष्य भी नहीं वरन् सुन्दर शरीर वाला और आँख-नाक-कान इत्यादि से दुरुस्त ।

विद्वान, मूर्ख, गुणी, दार्शनिक, तत्ववेत्ता और बड़े बड़े ज्ञानी उसी ने अपनी शक्ति से उत्पन्न किये हैं ।

वह इतना बड़ा कारीगर है कि उसने इन सबको केवल जल से उत्पन्न किया और फिर उन्हें मिटा कर मिट्टी में मिला दिया ।

हे संसार के व्यवसायियो और अंत को न सोचने वाले ! आज के लाभ के पीछे तुम इतना क्यों पड़े हुए हो जब कि कल मृत्यु के उपरान्त तुम्हें घाटा उठाना पड़ेगा ?

जब तुम्हें यह ज्ञात है कि संसार क्षणिक है तो फिर उसमें इस प्रकार तल्लीन क्यों हो रहे हो ?

इलाही बंदए बेचारए मिसकीं "सनाई" रा।
कि ऊ अज़ दीनो ताअतहाय तो दरमाँदओ मदयूँ ॥
अगर चे हस्त ऊ मतऊँ बजिल्लतहा तमा दारद।
बदी तौहीदे नामतऊँ जज़ाए अज़ तो नामहनूँ ॥

(१५)

ऐ पेश रवे हरचे निकोईस्त जमालत।
वै दूर शुदा आफ़तो नुक़साँ ज़े कमालत ॥
ऐ मरदुमके दीदए मा बंदए चशमत।
वै जाने पसंदीदए मा हाल ज़े हालत ॥
शाम खुरदनम इमरोज़ हरामस्त चो बादा।
अज़ बख्त वमन दादा ज़माना बहलालत ॥
ऐ बुलबुले गोईंदा व ए कब्के खिरामाँ।
मै खुर कि ज़े मै बाद हमेशा परो बालत ॥
ज़ोहरा बनिशात आमद चूँ याफ़ समाअत।
खुरशेद बरश्क आमद चूँ दीद जमालत ॥
हर रोज़ दिगर गूना ज़नद शाख़ बरीं दिल।
ईं बुलअजबी बीं कि बर आबुर्द निहालत ॥

हे ईश्वर! "सनाई" तेरा सेवक है। वह दीन है, नाचीज़ है, परन्तु सदैव से तेरा भक्त रहा है।

वह नीच करके प्रसिद्ध हो रहा है। परन्तु उसे पूर्ण आशा है कि सच्ची भक्ति के उपलक्ष में वह तुझसे इनाम पायेगा।

(१५) हे भगवन्! तेरा रूप सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ है। वह अनुपमेय है। तेरा कमाल हानि और आपत्ति से परे है।

मेरी आँख की पुतली, तेरी आँखों की प्रतीक्षा में सदैव तन्मय रहती है और मेरे प्रिय तथा रोगी प्राण तेरे प्राणों का एक अंश हैं।

आज मैं अधीर हो रहा हूँ। मुझमें एक नवीन प्रसन्नता समाहित हो रही है। कारण कि भाग्य ने आज मेरे नेत्रों के सम्मुख तेरा जलवा प्रगट कर दिया है।

हे सुन्दर राग अलापने वाली बुलबुल और शीघ्रगामी कबक तू प्रेम में मस्त रह। इस प्रणय रूपी मदिरा से तेरे परों में उड़ने की शक्ति सदैव बनी रहेगी।

तेरा गाना सुन कर ज़ुहरा मोहित हो गया और तेरा रूप देख कर सूर्य भी लज्जित हो गया है।

तेरा बेल-बूटे से सुसज्जित शरीर देखने योग्य है क्योंकि यह तेरा सुसज्जित शरीर मेरे चित्त को प्रतिदिन नये ढंग से लुभाता है।

जाँ नीज़ बशुकराना बनिज्दे तो फ़रिस्तम ।
ख़ुद कारे दो सद जाँ बे कुनद बूए विसालत ॥

(१६)

राजे अज़ल अन्दर दिले उश्शाक़ निहाँनस्त ।
जाँ राज़ ख़बर याफ़्त कसे रा कि अयानस्त ॥
कूरा जे पसे परदए उश्शाक़ दुई नेस्त ।
जाँ मिस्ल न दारद कि शहंशाहे जहाँनस्त ॥
गोयन्द अज़ाँ मैदाँ ऊरा कि दर आमद ।
कै ख़ाजा दिलो रूह ख़ाना व ख़ानस्त ॥
गर माहे जलाल आमद दर नात कुसूफ़े तो ।
वर तीरे विसाल आमद दर शिस्हे कमानस्त ॥
गे कूए दो सद वार हज़ार अज़ सरे माना ।
कुश्तस्त कजे शाँ बजुज़ अंकिश्त निशानस्त ॥
आँ कसं कि रिदाए ज़रे मा वर कतिफ़ उफ़तद ।
आँ नेस्त रिदा अज़ सिफ़ते तैए लिसानस्त ॥

मैं अपने प्राणों तक को कृतज्ञता से तेरे लिये अर्पण कर सकता हूँ। तेरे मिलने की सुगन्ध ही दो सौ प्राणों के बराबर है।

(१६) सृष्टि के आदि के रहस्य प्रेमियों के हृदय में गुप्त हैं। इस भेद को वही जान सकता है, जिस पर वह प्रकट हो।

वह अपने प्रेमियों से किसी प्रकार का छिपाव नहीं रखता है। और वह अनुपम इसी लिये कहा जाता है कि वह सम्पूर्ण संसार का बादशाह है।

प्रेमियों को इस क्षेत्र में घुसने की (प्रविष्ट होने की) आज्ञा अवश्य दी जाती है परन्तु उनके दिलों और प्राणों की इस प्रणयक्षेत्र में नज़र ली जाती है।

यदि उसका चन्द्रमुख तेरी दृष्टि से ओझल हो गया है, यदि तेरी दृष्टि के सम्मुख एक मोटा आवरण आ गया है, तो इसमें तेरे ही विचारों का अपराध है। और यदि उसके मिलन में किसी प्रकार का सन्देह है तो इसमें भी तेरे गुमानों का ही अपराध है।

इस हृदय में लाखों बार उसके रहस्य प्रकट हुए हैं, परन्तु आकुलता की अग्नि से हृदय ऐसा जल गया है कि अब आगे बढ़ने का साहस भी नहीं होता है।

हमारी ज़री की यह चादर जिसके कन्धों पर डाल दी जाती है, उसका मानों मुँह बन्द कर दिया जाता है। यह चादर नहीं है। इसमें दूसरे का मुँह बन्द करने का गुण है। (इसका आशय यही है कि हमारे दर्जे को पहुँच कर मनुष्य की दशा ऐसी हो जाती है कि वह रहस्य खोल नहीं सकता।)

गोयन्द निकोयस्त दरीं परदा दिले मा।
मीदाँ व हक़ीक़त कि ज़े इक़्वाले एहसानस्त॥
नज़्मे गोहरे मानी दर दीदए दावा।
चूँ मरदुमके दीदा दरीं ग़फ़ल निहानस्त॥
दर राहे फ़ना नामदई जाय अज़ीज़ाँ।
कीं शेरे "सनाई" सवबे क़ुव्वते जानस्त॥

(१७)

खेज़ ऐ दिल बर फ़िगन ईं मरकबे तहवील रा।
बज़क कुन बर ना कसाँ आँ आलमे तातील रा॥
ना गुज़ारे खत्ते माना हर्फ़े रंगारंग रा।
मह कुन अज़ लौहे दावा नक़्शे क़ालो क़ील रा॥
अंदरीं सफ़हाय मानी दर रहे मानी मज़ू।
आँ कि दर सरना नयादी नफ़हे इसराफ़ील रा॥
कै कुनद बरदाश्त दरमाँ दर बियाबाने खिरद।
नावदाने बामे गिलख़न सैले रोदे नील रा॥
दस्ते इब्राहीम बायद बर सरे कोहे फ़िदा।
ता न बुर्रद तेग़े बुर्रां दस्ते इस्माईल रा॥

लोग कहते हैं कि इस पर्दे के भीतर हमारा दिल बड़े आनन्द में है। यदि ऐसा है तो इसे भी उसकी दया का चिह्न समझना चाहिये।

ऊपरी दृष्टि से यदि उसके रहस्य को देखा जाय तो आँख भुलावे में अवश्य आ जायगी।

प्रिय प्राण! अभी तक तुम मृत्यु के समक्ष नहीं पड़े हो। यदि ऐसा अवसर आता तो तुम भी समझ जाते कि "सनाई" की यह कविता तुम्हें बल प्रदान करने वाली है।

(१७) ऐ दिल, उठ और अपने उद्यम में लग। बहाना छोड़ दे और बेकारी को निरुद्यमी मनुष्यों के लिये छोड़ दे।

इन समाम निरर्थक बातों को छोड़ दे। इनसे कोई आशय नहीं निकलता। व्यर्थ किसी बात का दावा करने में समय को बर्बाद न कर और अधिक बातें मत बना।

इन मौखिक बातों के द्वारा आध्यात्मिक शक्ति को प्राप्त करने का प्रयत्न मत कर। कारण कि "इसराफ़ील" "सरना" में प्रविष्ट नहीं होने।

हमारी बुद्धि इस बात को किस प्रकार मान सकती है कि भाड़े के मकान की छत का नावदान नील नदी की बाढ़ को सहन कर सकता है।

फ़िदा के पर्वत पर इस्माईल का हाथ न काटने के लिये यदि कोई तलवार चला सकता है तो वह केवल इब्राहीम का हाथ है।

मर्द रा ईसीए मरियम बायद अन्दर गर्दे सिद्क ।
ता ये दानद कद्र हर्फे ज्यानने इंजील रा ॥
दर शबे तारीक कुजा बीनद दहाने परशाग ।
चां के कन्दर रोदे रौशन मी न बीनद पील रा ॥
अज तुके रा रौशने पुर मूद के दाद तुरा ।
चूं दरे रा नूर न बुवद कुरबए तंदील रा ॥
तेल अकलूं सोद का माजन बसे हसरत खुरी ।
चूं बदीनी दर सरे रूद तेगे इजराईल रा ॥

(१८)

अज इवाए फक्रदारां कासे जरकारी मजाद ।
दर सराए मर्द सलमां तख्ते अय्यारी मजो ॥
आरे पाए राहे दरवेशाने औ दरगाह रा ।
दर कफे दस्ते उरूसे आरजू अन्गारी मजो ॥
नूर चश्मे रा नूरे सिद्के इश्क ई रह के देहद ।
नूरते खुरशीद रा अन्दर शबे तारी मजो ॥
दर सरे तूरे हवा तंदूरे शहवत मी जनी ।
इश्के मरदे लंतरानी रा बदीं खारी मजो ॥

ईश्वरीय मार्ग पर चलने के लिये मरियम के पुत्र ईसा के समान मनुष्य की आवश्यकता है। क्योंकि उसे धर्म्म-ग्रन्थ इंजील के शब्दों का मूल्य मालूम रहता है।

जिस मनुष्य को दिन के उजाले में हाथी न सूझता हो वह रात्रि के अन्धकार में मच्छड़ का मुख किस प्रकार देख सकता है ?

यदि क़न्दील के अन्दर वाले दीपक में तेल न हो तो बाहर से उसमें तेल भरा होना तुझे रोशनी कब देगा !

यदि तुझे उठना है तो इसी समय उठ और जो कुछ करना है कर ले, अन्यथा जिस समय यमदूत तेरे सिर पर मृत्यु की तलवार लेकर आ उपस्थित होगा, उस समय शोक के अतिरिक्त कुछ हाथ न आवेगा।

(१८) उदासियों के पास सुन्दर स्वर्ण-मन्दिर कहाँ से आये और सुलेमान के पास ऐयारी (जादू) का तख्त कहाँ से आ सकता है ?

इस मन्दिर में आने वाले प्रेमियों के पैर में जो काँटा चुभता है, उसे दुलहिन के हाथ में खोजने से क्या लाभ होगा ?

इस मार्ग में सत्य प्रणय की चमक किसको प्राप्त हो सकती है ? अँधेरी रात में सूर्य कैसे प्राप्त हो सकता है ?

तू सांसारिक विषयों में पड़ा हुआ जीवन के झूठे सुखों का आनन्द लूट रहा है। फिर बता इस बुरी अवस्था में रह कर तू सच्चा प्रणयी किस प्रकार हो सकता है ?

बर तो ख़ाही नफ़्सो शैतां दर कफ़न जारी कशद ।
नाज़े इश्के दोस्त रा जुज़ अज़ यारे ख़ारी मजो ॥

---

(१९)

कसे कू जे गोशे हक़ीक़त अयाँ शुद ।
मजाज़ी सिफ़ाते वै अन्दर निहाँ शुद ॥
निशाने वुवद अज़ हक़ीक़त मर ऊ रा ।
चे शुद ईं कि अज़ नेस्ती वे निशाँ शुद ॥
कसे कू चुनीं शुद कि मन शरह करदम ।
यक़ीं दाँ कि ऊ बादशाहे जहाँ शुद ॥
ग़लिक शुद ज़मीनो ज़माँ रा पसंगह ।
चो कररोबियाँ साकिने आसमाँ शुद ॥
रवाँ गश्त फ़रमाने ऊ चूँ सियाही ।
मरूरा कि गुफ़्ती चुनीं शौ चुनाँ शुद ॥
चो दर नेस्ती ज़द दमे चंद ईसा ।
तने वेरवाँ अज़ दमश वा रवाँ शुद ॥
न बीनी कि हर कू जे ख़ुद गश्त फ़ानी ।
जे अहदे वफ़ा गश्तो साहब क़िराँ शुद ॥

हाँ, यदि तू अपनी शैतान इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करना चाहता है तो विनय तथा नम्रता के साथ अपने प्यारे से प्रेम-याचना कर। तुझे सफलता प्राप्त होगी।

(१९) जिस पर ईश्वर का रहस्य प्रकट हो जाता है, वह संसार के समस्त बन्धनों से छूट जाता है।

इस वास्तविकता को प्राप्त कर लेने का चिह्न यही होता है कि मनुष्य मृत्यु पर विजय प्राप्त कर अपने आपको मिटा देता है।

जो मनुष्य ऐसा हो जाता है, जैसा कि मैंने वर्णन किया, वह साधारण मनुष्य से बहुत ऊँचा हो जाता है, और संसार का सम्राट् बन जाता है।

वह पृथ्वी तथा जीवधारियों का बादशाह होकर आकाश पर चढ़ जाता है। वह स्वर्गीय दूत का पद प्राप्त कर लेता है।

उसमें इतनी शक्ति हो जाती है कि उसकी आज्ञा सभी मानते हैं!

उसमें इतनी सामर्थ्य आ जाती है जितनी ईसा में थी। वह भी उन्हीं के समान चार फूँकें मार कर मरे हुए मनुष्य को जीवित कर सकता है।

जो मनुष्य ऐसा होता है वह मृत्यु को प्राप्त होकर अमर हो जाता है और फिर संसार में वह पथ-प्रदर्शक समझा जाता है।

हमज नेस्ती बुद कि बा मुश्ते ख़ाके।
मोहम्मद व जंगे सिपाहे गराँ शुद॥
बसा दर रहे नेस्ती कस्व करदन।
गुमाहाँ यक्रीं शुद यक्रीं हा गुमाँ शुद॥
कसे कू जे हद्दे रसूज अस्त आजिज।
बयाने "सनाई" बऊ तरजुमा शुद॥

(२०)

अव्वल खलल ए खाजा अन्दर अमल आयद।
फ़रदा की बनिज्दे तो रसूले अजल आयद॥
जायल शुदा गीर आँ हमाँ मुल्के तो बयक दम।
अंगह की रसूले मलिके लमयजल आयद॥
हर साल यके काख कुनी दीगर दर बै।
हर रोज तुरा आरजूए नौ अमल आयद॥
जीं काख दर आइरदा व ओयूके मन इमरोज।
हक़्क़ा कि हमीं बूए रसूमे तलल आयद॥
शादी व गमत अदलहीओ हिर्स बऐवाँ।
दानम जे नुजूमे जे हिसाबे जुमल आयद॥

यह एक ऐसी शक्ति है कि जिससे शक्तिवान् होकर मुहम्मद साहब एक मुट्ठी धूल लेकर एक बृहत् सेना से भिड़ने के लिये पहुँच गये थे।

इस मृत्यु-मार्ग में बहुधा ऐसा होता है कि सन्देह विश्वास के रूप में और विश्वास सन्देह के रूप में परिणत हो जाता है।

जिसको उस विश्व के रचयिता का भेद नहीं ज्ञात है, उसे यह भेद, "सनाई" का यह वर्णन पूर्णतया समझा सकता है।

(२०) तुम्हारे जीवन में जो सब से पहली रुकावट होती है, जो सब से पहला विघ्न आ उपस्थित होता है, वह उस समय होता है जब मृत्यु का दूत आकर सिर पर सवार होता है।

जिस समय उस अविनाशी ईश्वर का दूत आ जाता है, उस समय तेरी सारी बादशाही समाप्त हो जाती है

प्रत्येक वर्ष तू इसी संसार में एक नया भवन तैयार करता है और प्रत्येक दिन तेरे हृदय में कोई न कोई नया काम करने की इच्छा होती है।

तेरे इन आकाश-चुम्बी महलों में, यदि वास्तव में देखा जावे तो खँडहरों और जंगलों की बू आती है।

तेरी प्रसन्नता और शोक, तेरी मृत्यु और ब्याह का सम्बन्ध इस मंडल से है। यह सम्पूर्ण बातें मेरी समझ में ज्योतिषविद्या की गणना के हिसाब से हुआ करती हैं।

ऐ बस कि न बाशी तू व ऐ बस कि नबाशी ।
वे तो जोहलो जोहराओ हूतो हमल बाशद ॥
हरचंद तू तमादरी कायद जे कनाकिब ।
वै हक़ हमा अज़ फ़ज़लो क़ज़ाए अजल आयद ॥
रोज़े की बदीबाँ मसलन देर नर आई ।
तरसी की दर असबाबे विज़ारत खलल आयद ॥
गुफ़्तत "सनाई" कि व दीवाने विज़ारत ।
ऐ बस कि दीवाने विज़ारत बदल आयद ॥

(२१)

ऐ आँ कि तुरा अज़ तूई तुम तसर्रुफ़ ।
आँ बेह कि न गोई सख़ुन अज़ यूए तसव्वुफ़ ॥
दर कूए तसव्वुफ़ व तकल्लुफ़ मगुज़ार हेच ।
ज़ीरा कि हरामस्त दरीं कूए तकल्लुफ़ ॥
दर उशवए ख़ेशी तू व आँ राह न दानी ।
ऐ दोस्त तुरा अज़ तूई तुस्त तवक्कुफ़ ॥

ऐसा बहुधा होगा कि जब तू मिट जायगा तब तेरी अनुपस्थिति में इस आकाश के ऊपर "ज़ोहल" और "ज़ोहरा" नामक सितारे "हूत" और "हमल" के "बुर्ज" में दिखाई देंगे।

तू जिन वस्तुओं के प्राप्त करने की अपने भाग्य से आशा रखता है, वह सभी तुझे तभी प्राप्त होंगी जब ईश्वर की तेरे ऊपर दया होगी तथा उसकी आज्ञा होगी।

उदाहरण के लिये एक बात ले, कि जिस दिन तू कचहरी में देर से पहुँचता है, उस दिन तुझे यह भय लगा रहता है कि कहीं पदाधिकारी क्रोधित न हो जावें।

"सनाई" ने यह बात इस लिये कही है कि बहुधा यह देखने में आता है कि मंत्री के न्याय में भी अन्तर पड़ जाता है।

(२१) हे मनुष्य, तेरी बुद्धि पर अहंकार का पर्दा पड़ गया है। तू अहंकार के अधिकार में आ गया है। तेरे लिये यही अच्छा होगा कि तू सूफ़ियों के रास्ते का वर्णन बिल्कुल छोड़ दे।

सूफ़ियों के मार्ग में कभी बनने का प्रयत्न मत करना। कारण कि इस मार्ग में बनना बहुत ही बुरा है।

तू अपने चोचलों और फरेबों को नहीं छोड़ता है। ऐसा ज्ञात होता है कि सिर से पैर तक स्वार्थ में फँसा हुआ पड़ा है।

राहेस्त हक़ीक़त कि वरा नेस्त निहायत ।
ज़िनहार मकुन दर रहे तहक़ीक़ तवक्कुफ़ ॥
तो चन्द हमीं ख़ाही मिनहाजुल मेराज ।
एहयाए उलूमे दीं वा शरहे तआरुफ़ ॥
कि नशनवद इमरोज़ "सनाई" बहक़ीक़त ।
बिगिरिफ़ व इसरार रहे इश्क़ तअन्नुफ़ ॥
गर नेक अज़ो विशनवी ऐ दोस्त अज़ी पस ।
वर शाहिदे यूसुफ़ न कुनी क़िस्सए यूसुफ़ ॥

(२२)

ऐ ऐने हक़ीक़त अन्दर ऐन ।
बाज़ करदा ज़े बहरे दीदन ऐन ॥
पेशे ऐने तो ऐने दोस्त अयाँ ।
तू रसीदा व ऐन गोई ऐन ॥
चूँ कि आयद ज़े ऐने तो हमा तो ।
एज़ादा चो सहे ज़ुलक़रनैन ॥
ता तू गोई तुई व आँ तू तुई ।
आन अज़ तो दरेग़ बाशद दैन ॥

ईश्वरीय वास्तविकता का मार्ग बहुत ही बड़ा है। यदि इस मार्ग में तुझे आगे बढ़ना है तो सावधान होकर चलना। मार्ग में विश्राम करना उचित नहीं है।

तू कब तक उन्नति के मार्ग का इस प्रकार इच्छुक रहेगा, कि अपने को प्रसिद्ध करने के लिए धार्मिक विद्याओं को जीवित रक्खेगा।

"सनाई" आज तेरी जोड़ पढ़ना सुनेगा भी नहीं क्योंकि वह ईश्वर के साथ अपने को मिटाने का मार्ग ग्रहण कर चुका है।

मित्र, यदि इस बात को तुम इस समय ध्यान से सुन लो तो फिर तुम

कै गुरेज्लग तुवद तुरा तौहीद ।
चूँकि इसनाद मी कुनी इसनैन ॥
पेश तो जा मियाँ न बातिलो हक़ ।
चंद गोई तफ़ाउते मानैन ॥
दर शके हाल गुरेतहील तुवद ।
इजतिमाए वजूदे गुस्तलिफ़ैन ॥
अव्वल अज़ खेश पेश नेह तो क़दम ।
ता जुदा गरदद अस्ले मों अज़ ऐन ॥
नज़र अज़ ग़ैर गुनफ़ते कुन जाँ के ।
शाहिदे ग़ैर गर दिल आरद ग़ैन ॥
चन्द गोई जे हाले खेश कि क़ाल ।
क़ाले बेहाल आर बाशद व शैन ॥
चूँ "सनाई" जे ख़ुद न मुनफ़तई ।
चे हिकायत कुनी जे हाले हुसैन ॥

होगा, उस समय तक तुम्हारी स्वार्थ-भावनाएं भी दूर नहीं हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त 'तू' शब्द का मुख से निकालना भी तुम्हारे लिए ठीक नहीं होगा।

जब कि तुम 'मैं' और 'तू' को दो सिद्ध कर रहे हो और उनमें अन्तर समझते हो तो फिर ईश्वरीय मार्ग में आगे बढ़ने के योग्य तुम नहीं हो।

तुम स्वयम् इस बात को समझ सकते हो कि ऐसा विचार रखते हुए ईश्वर तक पहुँचना और उसके भेदों को समझना तुम्हारे लिये कितना कठिन है।

एक ही अवस्था और एक ही समय में दो प्रतिकूल बातों का एकत्रित होना असम्भव है, और बिल्कुल असम्भव है।

दोनों बातें इकट्ठी हो हो नहीं सकतीं, सब से पहले इस बात का प्रयत्न करो कि तुम्हारा सारा अहङ्कार मिट जावे, जिससे कि तुम्हारी वास्तविकता, धर्म्म से पृथक् हो जावे।

दूसरों की तरफ़ से अपनी दृष्टि फेर लो। कारण कि यदि उनकी तरफ़ देखोगे तो तुम्हारे हृदय में बुराई उत्पन्न होगी।

अपना वर्णन कब तक रहेगा। इससे किसी प्रकार के लाभ की सम्भावना नहीं है। इन मौखिक बातों से और दावों से तुम्हें लज्जित होना पड़ेगा और बदनामी उठानी पड़ेगी।

"सनाई" का कहना है कि यदि तुम अपने अपनत्व का परित्याग नहीं करते हो तो फिर 'हुसैन' का क्या वर्णन करते हो ?

(२३)

कसे कन्दर सके मरदाँ व मैख़ाना कमर बन्दद ।
बराबर कै बुवद वा आँ कि दिल दर ख़ैरो शर बन्दद ॥
जे दी हरगिज़ नयारद याद बज़ फ़रदा अंदेशत ।
दिल अन्दर दिल फ़रेबे नाज़ो दर्दे मा हज़र बन्दद ॥
बसा पीरे मुनाजाती कि वा मरकब फ़िरो मानद ।
बसा रिंदे ख़राबाती कि चीं बर शेरे नर बन्दद ॥
कसे कू वा अयाँ बाशद ख़बर पेशश मुहाल आमद ।
चो ख़िलवत वा अयाँ साज़द कुजा दिल दर ख़बर बन्दद ॥
चो दर दावा कमरबन्दी जे मानी बेख़बर बाशी ।
कुजा दानद कसे मानी कि दर दावा कमर बन्दद ॥
न फ़िरऔने शवद आँ कस कि जा अंदर ज़मीं साज़द ।
न याक़ूबे शवद आँ कस कि दिल रा दर पिसर बन्दद ॥
बतर्ज़ो बरत मी नाज़ी गहे नख़्वत गहे बरत ।
बतर्ज़ो बरत कै नाज़द कसे कू रख़्त बर बन्दद ॥

---

(२३) शराबख़ाने के मनुष्यों की जो मनुष्य सेवा करता है, वह उससे अच्छा है जो सांसारिक झगड़ों में व्यस्त रहता है।

न तो वह बीती हुई बातों का ध्यान करता है और न भविष्य के धन्धों का। न तो उसे अपने काम में आने वाली वस्तुओं का ही विचार है और न शरीर को सुख देने वाली चीज़ों का।

बहुतेरे प्रार्थना करने वाले सवारी पर चलने पर भी थक जाते हैं। और बहुधा ऐसा देखा जाता है कि प्रणय-मार्ग में मस्त शेर पर सवार होकर चले जाते हैं।

जिसके सन्मुख वह प्रकट हो गया तथा जिसने उसके जल्वे को देख पाया उसके हाल-चाल जानने की क्या आवश्यकता है? जो प्रत्येक क्षण उसके समक्ष है, उसको ख़बर की क्या चिन्ता है।

अहङ्कार में आ जाने पर, बढ़ बढ़ कर बातें करने से तू आन्तरिक उन्नति से वंचित रह जायगा। कारण कि मौखिक दावा करने वाले आध्यात्मिक शक्ति को प्राप्त करने में असमर्थ रहते हैं।

ध्यान देकर देखो कि संसार से मोह करने वाला मनुष्य (उस पर अपना घर बनाने वाला) फ़क़ीर होकर रह जाता है और पुत्र को प्यार करने वाला याक़ूब हो जाता है।

मुझे अपने वैभव और पद का गर्व है। इन वस्तुओं को प्राप्त करके मैं दूसरों को तुच्छ समझता हूँ। परन्तु यह अहङ्कार व्यर्थ है। यह सब वस्तुएँ क्षणिक हैं।

दरो हमचूँ "सनाई" बाश न दींदारो न दुनिया।
कसे कू चूँ "सनाई" शुद दरे ईं हर दो दर बन्दद ॥

(२४)

ऐ गिरिफ्तारे नियाजो आजो हिरसो बतलो माल।
जिमतिहाने नफ्से हिस्सी चंद बाशी दर वबाल ॥

चंद दर मैदाने कुदूसे अज सीरा ताजी अस्पे लाफ।
चूँ न दारी दागे इश्क अज हजरते कुदूसे जलाल ॥

बातिन अज मानीत पाको जाहिर अज दावा पिदीद।
चूँ तिही तबली बरार आवाज अज जरमे दबाल ॥

मर्द बाशो बर गुजार अज हक्क गरदूँ पाए खेश।
ता शवी रसता अजीं अलकाजाहाये कील व काल ॥

रूह रा दर आलमे रूहानियाँ कुन आब सूर।
नफ्स रा दर सुम्मे अस्पे रूह कुन कतउलमनाल ॥

चूँ मुकस्सल गश्ती अज औसाफे नफ्सानी बदलम।
अज हमा अजसादे नफ्सानी कुनद रूह इनफिसाल ॥

अच्छा तो तब हो जब तू भी "सनाई" के समान ही हो जावे, जिसके पास न धर्म है और न संसार। क्योंकि 'सनाई" के समान मनुष्य दीन और दुनिया दोनों से पृथक् हैं।

(२४) हे धन और माल, लालच तथा डाह के फन्दे में पड़ा हुआ मनुष्य! तू इन सांसारिक वस्तुओं के पीछे कब तक पड़ा रहेगा? वह सब क्षणिक हैं।

जब तू उस विश्व-पालक परमेश्वर के रंग में नहीं रँगता तब व्यर्थ में पवित्रता का दावा करने से क्या लाभ होगा?

तेरा अन्तःकरण अपवित्र है, आध्यात्मिक विकास से रहित है, और तेरी बाह्य शक्तियाँ भी हेय हैं। तू एक खोखले ढोल के समान है, जो कि चोट पड़ने पर बजने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं करता।

तुझे मनुष्यत्व प्राप्त करके सातों आकाश-खण्डों से ऊपर पहुँचना है। और उसी अवस्था में तू इन व्यर्थ के दावों से बरी हो सकेगा।

अपनी आत्मा को उस स्थान में पहुँचा जहाँ पर बड़े-बड़े ऊँचे संतों की आत्माएँ निवास करती हैं। अपनी इन्द्रियों को शमन कर ले तभी तेरा कल्याण होगा।

जब तू विद्या तथा ज्ञान के द्वारा अपनी इन्द्रियों को दमन करके पवित्रता के मार्ग में अग्रसर होगा, तब आत्मा शरीर के बन्धनों से छूट जायगी।

जेहत कुन ता बुर्री मंजिल अन्दर नूरे रुह।
ता न मानी मुनक़ते दर औसते जिल्ल जलाल॥
चूँ मुसफ्फा गश्ती अज औसाफे नफ्सानी तुरा।
दस्ते तक़दीर ऊ तआला गोयद ऐ सैयद तआल॥
कै खबरदारी रसाने गर दरो वाक़िफ शवी।
ता कि खुरसंदी व मुश्ते इल्महाए दर मुहाल॥
रौ व कैरे सायए ला खानए इल्ला बगीर।
ता कि अज इल्लात बिनुमायद हमा राहे मुहाल॥
चूँ व तर्के नफ्स गुफ्ती दश शुदी ऊरा यकीं।
ईं चुनीं भी याश अज अनफासे नफ्स अन्दर हलाल॥

(२५)

शिगिफ़ आमद मरा दर दिल अज़ीं सुलतानए जिन्दानी।
कि दर जिन्दाने सुलतानी मनम रौनाने रिन्दानी॥
ग़रीबज जाहे नूरानी जे नाफरमानिए लश्कर।
बदस्ते दुश्मनाँ दर माँदा अंदर चाहे जुल्मानी॥

तुझको आत्मिक प्रकाश में अपना मार्ग समाप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए, ताकि इन्द्रिय-जनित अन्धकार में आकर रुक न जावे।

जिस समय तू इन्द्रियों के विकारों से रहित हो जायगा, उस समय परमेश्वर स्वयम् तुझे अपने पास बुला लेगा।

जब तक तू इन साधारण विद्याओं पर सब्र करेगा और उन्हीं से उच्च ज्ञान को सब कुछ समझेगा तब तक अनुभव प्राप्त करके भी तू उसको समझ नहीं सकेगा।

जो और विराग के अधिकार में अपने आप को रख, और संसार की अमूल्य वस्तुओं में अपने को न फँसा, जिससे सारी सृष्टि तुझे संसार के अमूल्य पदार्थों के द्वारा न दिखलाई दे।

जैसे ही तू ने अपने आप को विकारों से पवित्र किया, तुझको उसका विश्वास हो जायगा और फिर तुझे वैसे भी इन्द्रियों के अधीन में न रहना चाहिये।

(२५) तुझे जिस के उन्नी समझ पर आश्चर्य होता है कि वे अपने सोहर भी ईश्वर के सौन्दर्य पर से पर्दा उठाते हैं

उसकी सेवा में उसकी आज्ञा न मानी। उसके घर से उसका आदर न किया, जिसके परिणाम-स्वरूप आज वे हाथ उसकी सेना सहित उन्हें अपने अत्याचार में पड़ा हुआ पाते हैं

दरो हमचूँ "सनाई" बाश न दींदारो न दुनिया।
कसे कू चूँ "सनाई" शुद दरे ईं हर दो दर बन्दद॥

(२४)

ऐ गिरिफ़्तारे नियाजो आजो हिरसो अतलो माल।
जिमतिहाने नफ़्से हिस्सी चंद बाशी दर वबाल॥
चंद दर मैदाने क़ुद्से अज़ खीरा ताज़ी अस्पे लाफ़।
चूँ न दारी दागे इश्क़ अज़ हज़रते क़ुद्से जलाल॥
बातिन अज़ मानीत पाको ज़ाहिर अज़ दावा पिदीद।
चूँ तिही तबली बरार आवाज़ अज़ जरमे दबाल॥
मर्द बाशो बर गुज़ार अज़ हर्फ़ गरदूँ पाए खेश।
ता शवी रसता अज़ीं अलफ़ाज़हाये क़ील व क़ाल॥
रूह रा दर आलमे रुहानियाँ कुन आब खुर।
नफ़्स रा दर सुम्मे अस्पे रूह कुन क़तउलमनाल॥
चूँ मुकस्सल गश्ती अज़ औसाफ़े नफ़्सानी बदस्म।
अज़ हमा अजसादे नफ़्सानी कुनद रूह इनफ़िसाल॥

अच्छा तो तब हो जब तू भी "सनाई" के समान ही हो जावे, जिसके पास न धर्म है और न संसार। क्योंकि 'सनाई" के समान मनुष्य दीन और दुनिया दोनों से पृथक् हैं।

(२४) हे धन और माल, लालच तथा डाह के फन्दे में पड़ा हुआ मनुष्य! तू इन सांसारिक वस्तुओं के पीछे कब तक पड़ा रहेगा? वह सब क्षणिक हैं।

जब तू उस विश्व-पालक परमेश्वर के रंग में नहीं रँगता तब व्यर्थ में पवित्रता का दावा करने से क्या लाभ होगा?

तेरा अन्तःकरण अपवित्र है, आध्यात्मिक विकास से रहित है, और तेरी वाह्य शक्तियाँ भी हेय हैं। तू एक खोखले ढोल के समान है, जो कि चोट पड़ने पर बजने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं करता।

तुझे मनुष्यत्व प्राप्त करके सातों अकाश-खण्डों से ऊपर पहुँचना है। और उसी अवस्था में तू इन व्यर्थ के दावों से बरी हो सकेगा।

अपनी आत्मा को उस स्थान में पहुँचा जहाँ पर बड़े-बड़े ऊँचे संतों की आत्माएँ निवास करती हैं। अपनी इन्द्रियों को शमन कर ले तभी तेरा कल्याण होगा।

जब तू विद्या तथा ज्ञान के द्वारा अपनी इन्द्रियों को दमन करके पवित्रता के मार्ग में अग्रसर होगा, तब आत्मा शरीर के बन्धनों से छूट जायगी।

जेहत कुन ता बुर्री मंजिल अन्दर नूरे रुह।
ता न मानी मुनक़ते दर औसते जिल्ल जलाल॥
चूँ मुसफ़्फ़ा गश्तो अज़ औसाके नफ़्सानी तुरा।
दस्ते तक़्दीर ऊ तआला गोयद ऐ सैयद तआल॥
कै ख़दरदारी रसाने गर दरो वाक़िफ़ शवी।
ता कि ख़ुरसंदी व मुश्ते इल्महाए वर मुहाल॥
रौ व ज़ेरे सायए ला ख़ानए इल्ला बगीर।
ता कि अज़ इल्लात बिनुमायद हमा राहे मुहाल॥
चूँ व तर्के नफ़्स गुफ़्तो वश शुदी ऊरा यक़ीं।
ईं चुनीं मी वाश अज़ अनफ़ासे नफ़्स अन्दर हलाल॥

(२५)

शिताफ़ आमद मरा वर दिल अज़ीं सुलताने जिन्दानी।
कि दर जिन्दाने सुलतानी मनम शैताने रिन्दानी॥
ग़रीबज़ जाहे नूरानी ज़े नाफ़रमानिए लश्कर।
बदस्ते दुश्मनाँ दर माँदा अंदर चाहे ज़ुल्मानी॥

तुझको आत्मिक प्रकाश में अपना मार्ग समाप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए, ताकि इन्द्रिय-जनित अन्धकार में आकर रुक न जावे।

जिस समय तू इन्द्रियों के विकारों से रहित हो जायगा, उस समय परमेश्वर स्वयम् तुझे अपने पास बुला लेगा।

जब तक तू इन साधारण विद्याओं पर सब रक्खेगा और उन्हीं से उत्पन्न ज्ञान को सब कुछ समझेगा तब तक अनुभव प्राप्त करके भी तू उसको समझ नहीं सकेगा।

जा और विराग के अधिकार में अपने आप को रख, और संसार की बहुमूल्य वस्तुओं में अपने को न फँसा, जिससे सारी सड़ी तुझे संसार के बहुमूल्य पदार्थों के द्वारा न दिखलाई दे।

जैसे ही तू ने अपने आप को विकारों से पवित्र किया तुझमें उसका विश्वास हो जायगा और फिर तुझे वैसे ही इन्द्रियों के चक्कर में न पड़ना चाहिये।

(२५) मुझे दिन के उजाले में आश्चर्य होता है कि मैं मस्त होकर भी शैतान के समान पाप में क्यों डूबा हूँ

उसकी सेना ने उसकी रक्षा न की, उसके पक्ष ने उसका साथ न दिया जिसके परिणाम-स्वरूप राज्य के हाथों बन्दी होकर घोर दुःख भरी कारागार में वह अपने दिन व्यतीत कर रहा है

सिपाहे बेकराँ दारी व लेकिन बेवफ़ा जुमला।
हमा दर अश्वा मग़रूरन्द दर ग़मज़ी व नादानी॥
जे बद रूई व खुदराई हमाँ यकबारगी रफ़ा।
जे गुलशनहाय रूहानी बगुलख़नहाय जिस्मानी॥
तलबगारन्द नुज़हत रा व नशनासन्द ईं माया।
कि गुलशनहाय जिसमानीस्त गिलख़नहाय रूहानी॥
दराँ दरिया किगन ख़ुद रा कि मौजश बाश्त अज़ हिकमत।
कि जज़ए ऊ बक़ीमत तर बुवद अज़ दुर्रे उम्मानी॥
अगर गोया व पैदाई यके ख़ामोश पिनहाँ शो।
ख़ुशा ख़ामोशे गोयाओ ख़ुशा पैदाओ पिन्हानी॥
फ़िरस्ती गर तुरा बर सिर्रे जाने ख़ुद बक़ूफ़ उफ़तद।
कुजा वाक़िफ़ तवानद शुद कसे बर सिर्रे यज़दानी॥
अज़ाँ रू दर मकाने जेह्न हम वारा मकीनी तू।
कि अंदर बंदे हफ़्त अख़्तर असीरे चार अरकानी॥
चेरा दर आलमे अज़्ली न परीं चूँ मलायक तू।
चेरा तू इनसिआ जिन्नी दरन्दो हे तनो जानी॥

ऐ दिल ! तेरे अधिकार में अगणित सैनिक हैं, परन्तु उनमें स्वामिभक्ति का बिल्कुल अभाव है। सब को मिथ्याभिमान और छल ने धोखे में डाल रक्खा है।

वह सब के स्वार्थ तथा अपकर्मों के कारण, यकायक आत्मिक प्रकाश में से निकल कर शारीरिक सुखों में व्यस्त हो रहे हैं।

उनके हृदय में सांसारिक आमोद-प्रमोद और विलास के विचारों ने घर कर लिया है। और उन्हें इतना भी ज्ञान नहीं है कि शारीरिक सुख आत्मा को निर्बल बना देते हैं।

तुम यदि किसी नदी में तैरना चाहते हो तो ऐसी नदी में तैरो जिसमें हिकमत (वैद्यक) की लहरें उठती हों। कारण, कि ऐसी नदी का एक साधारण पत्थर का टुकड़ा भी मोती से अधिक मूल्य रखता है।

यदि तू वाचाल है और उसके साथ ही साथ सबकी दृष्टि के सम्मुख भी है तो चुप हो जा और तनिक छिप भी जा। क्योंकि जो मनुष्य चुप और गुप्त रह कर अपना कार्य करता है वह अच्छा होता है।

यदि अपने प्राणों का रहस्य तुझ पर प्रकट हो जावे तो तुझे स्वतंत्रता मिल जायगी। इसके उपरान्त ईश्वर का भेद तुझे ज्ञात हो जायगा।

तू सदैव से नादान चला आ रहा है। इसका करण यही है कि तू सात सितारों की शर्तें मानता है और चारों दिशाओं के भीतर बन्द है।

तू इस बुद्धि को दुनिया में स्वर्गीय दूतों के समान क्यों नहीं विचरण करता ? मनुष्यों व जिन्नों के समान शरीर तथा प्राणों की चिन्ता में व्यस्त क्यों हो रहा है ?

चे पेचानी सरज़ ताअत चे वाशी रोज़ो शब ग़ाफ़िल।
चे पोशी जामए शहवत दिलो जाँ रा चे रंजानी॥
कि ता दस्ते जवाँमर्दी ज़े दुनिया बर न अफ़शानी।
चुनाँ दाँ बर खते दीं बर कि दस्ते वा हमर दानी॥
बदीं हिम्मत कि अन्दर सर हमी दारी सर अन्दर कश।
सज़ाये पंबवो दू की न मरदे रज़्म मैदानी॥
अगर ख़ाही कि व हशमत ज़े अहलिल बैते दीं बाशी।
बे आबी दर रहे ईमाँ यके तस्लीमे सलमानी॥
अया मै ख़ुरदए ग़फ़लत कुनूँ मस्ती व मैहोशी।
ख़ुमार अज़ दीं कुनद फ़रदा कमाले खेश नुक़सानी॥
व पेशे आदमे शरई सुजूदे इनक्रियाद आवर।
गर अज़ ग्रुबहत न चूँ इबलीसो बर पैकारे शैतानी॥

(२६)

शाहरा ख़ाही कि बीनी ख़ाक शौ दरगाइ रा।
ज़ावे रूयत आब ज़न मैदाने शाहंशाह रा॥
हम व चश्मे शाह रूए शाह ख़ाही दीदो बस।
दीदा अंदर कारे शह कुन कोरिए बदख़ाह रा॥

तू ईश्वर को भुलाकर दिन-रात सांसारिक झंझटों में पड़ा रहता है और इन्द्रियों की तृप्ति में अपने दिल तथा प्राणों को कष्ट देता रहता है।

जब तक तू साहस तथा प्रतिज्ञा के साथ इस संसार को नहीं छोड़ देगा, उस समय तक सच्चे धर्म्म को नहीं जान सकेगा और न उस मार्ग में आगे ही बढ़ सकेगा।

जो कुछ जानता और समझता है उसी पर सब्र करके बैठ रहना स्त्रियों का कार्य है। यह समर-भूमि में वीरों के समान लड़ना नहीं है।

तू इस धर्म्म-मार्ग में यश और पद प्राप्त करने का इच्छुक है तो सलमान की भाँति तेरी प्रतिष्ठा होगी।

इस समय तू आलस्य में पड़ा हुआ है। मदिरा की मस्ती में सब कुछ भूला हुआ है। परन्तु प्रलय के दिन यही भूल तेरे लिये हानिप्रद सिद्ध होगी।

तुझे उस सृष्टिकर्त्ता के सम्मुख भक्ति-भाव से शिर झुकाना उचित है और इबलीस के समान सन्देह में न पड़ कर शैतान के समान कार्य में दत्तचित्त होना चाहिये।

(२६) यदि तू उस राजराजेश्वर के दर्शनों की अभिलाषा रखता है तो उसके मन्दिर की धूल बन जा और उसके आने के मार्ग में अपनी प्रतिष्ठा का छिड़काव कर दे।

उसका मुख केवल उसी के नेत्रों से देखा जाता है, अतएव अपनी आँखों को उसकी नज़र करके उसके शत्रु को अन्धा बना दे।

आह गम्माज आमद अन्दर राहे इश्कों आशिकी।
बन्द बर नेह दर निहाँ खानए खमोशी आह रा॥
दर्दे इश्क अज मर्दे आशिक पुर्स अज आकिल मपुर्स।
का गही न बुवद जे आबे चाह यूसुफ जाह रा॥
अक्ले बाफिंदस्त मनिशाँ अक्ल रा बर तर्से इश्क।
आसमाँ उश्शाकराओ रेसमाँ जोलाँह रा॥
गर सिपर बिफगनद अक्ल अज इश्क गो बिफगान रवास्त।
रूए खातूँ सुर्ख बादा खाक बर सर दाह रा॥
दर्द मूसा बार खाही जामे फिरऔनी तलब।
वा रजाओ आफियत रोजे मलामतगाह रा॥

(२७)

गाहे रज्म आमद बेया ता मैल जो मैदाँ कुनेम।
मर्दे इश्क आमद बेया ता गिर्दे ऊ जोलाँ कुनेम॥
चंग दर फित्राके ईं माशूके आशिककुश जनेम।
पस लगामे नेस्ती रा बर सरे फरमाँ कुनेम॥

आह भरने से प्रणय प्रकट हो जाता है। सभी लोग ऐसे मनुष्य को समझ जाते हैं। अतएव उसको मुख से निकलने ही न दे।

प्रेम का मजा किसी ज्ञानी को क्या मालूम होगा? उसे तो वही जान सकता है जिसने प्रेम किया है। अतएव उसके स्वाद के विषय में प्रेमी से ही प्रश्न करना उचित है। कारण कि जिसको यूसुफ का ज्ञान प्राप्त है वह कुएँ के पानी के विषय में क्या कह सकता है। प्रेम की पीड़ा का अनुभव प्रेमियों को ही हो सकता है।

हमारी बुद्धि किसी काम की नहीं है, उसमें कुछ करने की सामर्थ्य नहीं है। वह उस प्रेम को समझ नहीं सकती। प्रेमियों के लिये आकाश बनाया गया है और जुलाहों के लिये सूत।

यदि बुद्धि प्रणय से पराजित हो जावे तो इसमें कोई हानि की बात नहीं है। दुलहिन यदि स्वयम् अपने आपको सँवार सकती है, तो किसी परिचारिका की क्या आवश्यकता है?

यदि मूसा के समान प्रणय-पीड़ा का इच्छुक है तो किसी फरऊन का सामना कर और सब प्रकार की मलामतों को सहन कर।

(२७) युद्ध का समय निकट है, चलो समर भूमि को चलें। प्रणय-मार्ग का वीर आ गया है, आओ उससे युद्ध करने चलें।

चलो, इस प्रेमी को मार डालने वाली प्रेमिका का शिकारबन्द पकड़ लें, और मृत्यु का सुख-पूर्वक आवाहन करें।

गर बरायद खत्ते तौक़ी अश वरीं मसूरे मा।
याज़ दीदा वर खते मन्सूर दुरअफ़शाँ कुनेम॥
अज़ खयाले चेहरये ग़म्माज़े रंग आमेज़े ऊ।
पस बरस्मे हाजियाँ गह तौफ़ गह क़ुरबाँ कुनेम॥
नंगे ईं मसजिद परस्ताँ रा दरे दीगर ज़नेम।
चूँ कि मसजिद लायगह शुद क़िबलारा वीराँ कुनेम॥
खाके पाए मरकबे उश्शाक़ रा अज़ रूए फ़र्क़।
तूतियाए चश्मे शाहाने हमा गैहाँ कुनेम॥
ईं न शर्ते मोमिनी बाशद न रस्मे बेखुदी।
ताअते सुलताँ वे माँदम खिदमते दरवाँ कुनेम॥
चूँ अरूसाने तबीयत महरमे माँ नेस्तन्द।
बा अज़ीज़ाने तरीक़न्द शायद अर पैमाँ कुनेम॥
हर चे अज़ पेशी व बेशी हस्त दर अतराफ़े मा।
मा बदाँ अज़ दिल सलाये मा अलेहा फ़ाँ कुनेम॥
ऐ "सनाई" ता दरीं दामी मज़न दम जुज़ व इश्क़।
हात चूँ शमए मुनीरी रौशनो ताबाँ कुनेम॥

यदि वह हमारी प्रार्थना को किसी प्रकार स्वीकार कर ले तो हम उसके दर्शनों पर अपने नेत्रों के अश्रु-बिन्दुओं को न्योछावर करने के लिये उद्यत हैं।

उसके उस सुन्दर मुख के ध्यान में, प्रेमीजन कभी तो भ्रमर के समान उस पर मडराने के लिये उद्यत होते हैं और कभी अपने प्राणों को उस पर न्योछावर कर देने के लिये कटिबद्ध हो जाते हैं।

तुम्हें उन लोगों का साथ छोड़ देना चाहिये, जो मसजिद और मन्दिर के झगड़ों में पड़े हुए हैं। जब मसजिद में कीचड़ और पानी भर जाये तब क़िबला को जाकर उजाड़ डालें।

प्रेमियों का पद बहुत ही ऊँचा होता है। इस संसार के सम्राटों से भी वह कहीं बढ़े-चढ़े हुए हैं।

यह ईमानदार होने की शर्त्त नहीं है और न इसे बुद्धिमानी ही कह सकते हैं कि हम राजा को छोड़ कर द्वारपाल की सेवा में लगे रहें।

यदि हमारे स्वभाव की ख़ूबियाँ हमारा साथ नहीं देतीं हैं, तो हमें उचित है कि प्रेम के मार्ग में बढ़ने वाले मनुष्यों का उदाहरण अपने सम्मुख रक्खें।

इसके अतिरिक्त हममें यदि किसी बात की कमी है और कोई वस्तु मात्रा से अधिक वर्तमान है तो उनको दूर कर देना ही उचित है। उन्हें मिटा देना चाहिये।

"सनाई" का कथन है कि मनुष्य को इस ईश्वरीय प्रेम को छोड़ कर और किसी तरफ़ अपने मन को न दौड़ाना चाहिये. जिससे वह भी प्रेम की इस अलौकिक आभा से दीपक के समान उज्वल हो उठे।

अंदलीबे ईं नवाही दर क़फ़स औला तरी।
काशकारा अंगहे गरदी कि माँ पिनहाँ कुनेम॥
तात फ़रमाने न आमद जीं क़फ़स बेरूँ मपर।
चूँ शुदी ताऊस जायत मंजरे ऐवाँ कुनेम॥

(२८)

ता मोतकिफ़े राहे ख़राबात न गर्दी।
शाइस्तए अरबाबे करामात न गर्दी॥
अज़ बन्दे अलायक़ न शवद नफ़्से तो आज़ाद।
ता बन्दए रिंदाने ख़राबात न गर्दी॥
दर राहे हक़ीक़त न शवी क़िब्लए अहरार।
ता क़िदवए असहाबे लिवासात न गर्दी॥
ता ख़िदमते रिंदाँ न गुज़ीनी व दिलो जाँ।
शायस्तए मुक्काने समावात न गर्दी॥
ता नेस्त न गरदी चो "सनाई" ज़े अलायक़।
निज्दे उक़ला अहले मुवाहात न गर्दी॥

(२९)

अज़ पए मरदानगी पाइन्दा ज़ात आमद ख़यार।
बज़ पए तर दामनी अंदक हयात आमद समन॥

तू इस उपवन की बुलबुल है। तुझे पिंजरे में ही बन्द रहना उचित है। क्योंकि वास्तव में तू प्रकट तभी होगी जब हम तुझे छिपा देंगे।

जब तक तेरे लिये आज्ञा न हो पिंजड़े में से निकल कर बाहर जाने का प्रयत्न मत करना। हाँ, उस समय, जब तू मयूर बन जायगी हम बड़ी प्रसन्नता के साथ तुझे अपनी अट्टालिका के ऊपर स्थान देंगे।

(२८) जब तक तू प्रणय मार्ग में पाँव तोड़ कर नहीं बैठेगा तब तक करामातियों में तेरी गणना नहीं हो सकती है।

जब तक प्रणय-मार्ग के मस्त लोगों की इज़्ज़त न करेगा तब तक तेरी इन्द्रियाँ सांसारिक बन्धनों से बाहर नहीं आ सकती हैं।

जब तक तू मतवाले प्रेमियों के आगे होकर उसी मार्ग पर नहीं चलेगा तब तक ईश्वर को पहचानने में तू समर्थ नहीं हो सकता।

यदि तन और मन से तू इन मस्तों की सेवा न करेगा तो उस लोक में रहने वालों को तुझे अपने बीच में स्थान देना असम्भव है।

जब तक तू "सनाई" के समान संसार के समस्त बन्धनों को तोड़ कर अलग न कर देगा, तेरी गणना ज्ञानियों में नहीं की जा सकती।

(२९) अपने लक्ष्य पर मर मिटने के लिये वह साहसी लोग चुने गये हैं, जिनकी कभी मृत्यु नहीं होती और पाप-कर्म करने के लिये इन मनुष्यों की

गाफ़िलो ना देव दीनी बा फ़रिश्ता दर मसाफ़।
जिमलिहाने नफ़्से किस्सी चंद बाशी सुमनहन॥
तू चुनें रफ़्त अज़ नो देव ईनक दर आमद जिबरईल।
तू दर आमद जिबरईल ईनक चुनें शुद अहेमन॥
दीं जहानी आ जहा हर दो बयक दम दर कशद।
चूं निहंगे दर्द दीं नागाह चुकशायद दहन॥
सूए ईं हरगज न पोयद हेच दिल बा आरज़ू।
बा चुनीं गुलरुख न सुसपद हेचकस बा पैरहन॥
गर इमी खाही कि परदा रोयदत अज़ दामगाह।
दम बा दम किस्मे पीला दर गिर्द निहादे खुद मतन॥
बारे मानी बन्द अज़ीं जा जां के दर सहराए हरन।
सख्त ग़ाफ़िल शुद खाहद रोज़े बाज़ारे सुख्तन॥
बादो किबला दर रहे तौहीद न तवाँ रफ़्त रास्त।
या रज़ाए दोस्त बायद या हवाए खेशतन॥

सृष्टि की गई है, जिनको बहुत थोड़े दिन जीने के लिये दिये गये हैं (वास्तव में मनुष्य वही है जो इस थोड़े से जीवन को अपकर्मों में व्यतीत न करके ईश्वरीय खोज में संलग्न रहता है)।

तू उस परब्रह्म की खोज में आगे बढ़। उस समय तुझे दिखलाई देगा कि शैतान स्वर्गीय दूतों से युद्ध कर रहा है। इन सांसारिक विषय-वासनाओं में कब तक फँसा रहेगा?

तेरे अन्दर से बुराइयों का भूत भाग गया है और उसमें अब सद्भावनाओं का प्रकाश हो गया है। स्वर्गीय दूत के आ जाने पर शैतान कब रह सकता है?

धर्म्म का घड़ियाल जब अपना मुख खोलता है तो दोनों लोकों को निगल जाता है।

कोई भी मनुष्य हृदय में किसी अन्य आकांक्षा को लेकर इस दरबार की ओर अग्रसर नहीं हो सकता और ऐसी प्रियतमा के साथ कोई भी किसी प्रकार का वस्त्र पहन कर शयन नहीं कर सकता।

यदि तू इस संसार-रूपी जाल से निकल भागने के लिये पर चाहता है तो रेशम के कीड़े के समान अपने आस-पास जाला मत लगा।

यदि यहां से कोई सामान अपने साथ ले जाना चाहता है तो आध्यात्मिक वस्तुओं को अपने साथ ले जा, क्योंकि मृत्यु के उपरान्त तू जिस स्थान पर पहुँचता है वहाँ खाली हाथों से काम नहीं चल सकता।

इस प्रणय मार्ग में तू दो लक्ष्य अपने सामने रख कर मत चल। और न इस प्रकार काम ही चल सकता है। या तो तू अपनी ही इच्छाओं के अनुसार काम कर या अपने यार की इच्छाओं पर चल।

यार नामए मा व मन दर आलमे हुस्नस्त तो वस।
चूँ अज़ीं आलम बुरूँ रफ़्ती न मा बीनी न मन॥
चंग दर फ़ित्राके साहब दौलते ज़न ता मगर।
बर तर आई ज़ीं सरिश्ते गौहरे हरफ़े मज़न॥
पोशिश अज़ दीं साज़ ता बाक़ी बेमानी बहे आँके।
गर बरीं पोशिश न मीरी हम तू रेज़ी हम कफ़न॥

(३०)

दर गहे ख़ल्क़ हमा ज़र्क़ो फ़रेबस्तो हवस।
कार दरगाहे ख़ुदावन्दे जहाँ दारदो बस॥
हर कसे नामे कसी याफ़ अज़ीं दरगह याफ़।
ऐ बिरादर कसे ऊ बाश मैं अंदेश ज़े कस॥
बंदए ख़ासे मलिक बाश कि बा दाग़े मलिक।
रोज़हा ऐमनी अज़ शहना व शबहा ज़े असस॥
गर चे दर तायती अज़ हज़रते ऊ ला तामन।
बर चे गर मासियती अज़ दरे ऊ ला तैअस॥

'मेरे' और 'हमारे' का चर्चा केवल इस संसार तक ही है। यहाँ से निकल कर मेरे और 'हमारे' का भाव नितान्त निर्मूल सिद्ध होता है।

किसी बड़े आदमी की शरण ले, जिससे तू इन बुरी बातों से बचा रहे और उनका तुझ पर कोई असर न हो।

यदि अपने आप को किसी रंग में रँगना है तो प्रेम-रंग में रँग। क्योंकि इस रंग में रँगा हुआ मनुष्य मृत्यु के बन्धनों से छूट जाता है।

(३०) यह संसार विभिन्न जीवधारियों का निवास-स्थान, छल-कपट तथा विविध वासनाओं का क्रीड़ा-स्थल है। किसी काम का नहीं है। यदि किसी काम की कोई वस्तु है तो वह केवल ईश्वरीय लोक। एक धार्मिक मनुष्य बन जा और ईश्वरीय प्रेम में लवलीन हो जा। अन्यथा जितनी भी वस्तुएँ हैं सब तुझे दुखद प्रतीत होंगी।

यदि किसी को किसी प्रकार का यश प्राप्त हुआ तो वह केवल उसी ईश्वर के सम्बन्ध से। अतएव हे मित्र! तू उसी की सेवा में संलग्न रह और किसी से भय मत कर।

इस बादशाह का तू अनन्य भक्त बन जा। उसकी सेवा के अतिरिक्त किसी बात की चिन्ता मत कर। उसकी सेवा, उसके सेवक का पद, तुझे सदैव सांसारिक जालों से बचाये रहेगा।

तू भक्ति करता है, परन्तु इस पर भी ईश्वर की तरफ से निश्चिन्त मत होना और अपकर्म करके भी उसकी दयालुता के प्रति निराश न होना।

गर चे ख़ूबी तू सूए ज़िश्त बखारी मनिगर।
कंदरीं मुल्के चो ताऊस निगरस्त मगस॥
तू फ़रिश्ता शवी अर जेहद कुनी अज़ पए आँके।
वर्गे तूतस्त कि गश्तस्त बतदरीज अतलस॥
आशिक़ी वर ख़ुदो वर शहवतो वर खावो ख़ुरिश।
नफ़्से गोयाय तो अज़ हिकमत अज़ाँनस्त अखरस॥
चंग दर गुफ़्तए यज़दानो पैयंवर ज़न अज़ाँ के।
काँ चे क़ुरआनो ख़बर नेस्त क़िसानस्तो हवस॥
पोस्त बेगुज़ार कि ता साफ़ शवद ख़ूने तो ज़ाके।
कि चो बे पोस्त बुवद साफ़ शवद ख़ूँ जे अदस॥
नामे वाक़ी तलबी गर्दे कमाँ ज़ारी गर्दे।
कज़ कमाँ ज़ारो कम उम्र ने आबद करगस॥
आज़ बगुज़ार कि वा आज़ व हिकमत न रसी।
बर बयाँ बायदत अज़ हाले "सनाई" बर रस॥

तू भला है परन्तु इस पर भी बुरे से घृणा मत कर। बुरे से बुरे मनुष्य से भी भलाई की आशा की जा सकती है। (क्योंकि इस संसार में मक्खी के भी मोर के समान नक़्शो निगार होते है)।

प्रयत्न करने से तू देवत्व प्राप्त कर सकता है। शहतूत के वृक्ष की पत्तियाँ धीरे-धीरे अतलस के रूप में परिणत हो जाती हैं।

तू सदैव विषय-वासनाओं की पूर्ति में लवलीन रहता है और आँख मूँद कर खाने और सोने में आनन्द अनुभव करता है। इसी कारण तेरी इन्द्रियाँ इतनी बलवती हो गई हैं।

भगवान और पैग़ंबर के कहने पर चल, क़ुरान और हदीसों को पढ़, उनके सिवा सब बेकार कहानियाँ हैं।

अपनी खाल उतार दे जिससे तेरा रक्त शुद्ध हो जावे। अपने आपको पवित्र करने के लिये बाह्य लालसाओं का त्याग कर दे। तू इस बात को स्वयम् समझता है कि छिलका उतार देने से मसूर का रंग साफ़ निकल आता है।

यदि तुझे अपना नाम शेष रखना है तो किसी को दुःख पहुँचाने का प्रयत्न मत कर। अपने इसी गुण के कारण गृद्ध ने इतना लम्बा जीवन प्राप्त किया है।

लालच को अपने हृदय में भूल कर भी स्थान न दे। लालच के कारण सत्य-ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती। यदि इसका उदाहरण चाहता है तो "सनाई" का हाल देख ले और उससे शिक्षा प्राप्त कर।

उमर ख़य्याम

(मृत्यु ११२३ ई०)

उमर खैय्याम

(कवि की कुछ पंक्तियों का ईरान के एक प्राचीन चित्रकार द्वारा अंकित भाव चि

वह कवि तथा ज्योतिषी थे। ईरान में उनकी ख्याति इस लिये नहीं है कि वह एक ब्रह्मवादी कवि थे वरन् इस लिये है कि वह गणित-शास्त्र और ज्योतिष-शास्त्र के ज्ञाता थे। फ़िट्ज़जेराल्ड के अनुवाद द्वारा पाश्चात्य में इनका नाम अमर हो गया है, और पूर्व की अपेक्षा में पच्छिम इनकी ख्याति अधिक है। इनकी कविता एक अनोखे ढंग की है। सूफ़ी लोगों की कविता में आत्मवाद होता है, परन्तु इनकी कविता में निराशावाद की लहर है। इनकी कविता परंपरा से स्वतंत्र है और तत्कालीन रूढ़ियों से मुक्त। यह एक बड़े व्यंग्यात्मक कवि थे और आडम्बर (धार्मिक चिह्नों) की आलोचना बड़े ज़ोरदार शब्दों में किया करते थे। इन्होंने स्थान-स्थान पर अनेक बार इसकी असफलता के विषय में अपनी लेखनी उठाई है। हम लोगों में वह रुबाइयात के लेखक के नाम से प्रसिद्ध हैं। अब बड़े-बड़े विद्वान् इस विषय में सहमत हैं कि उनके नाम से जितनी भी रुबाइयाँ प्रसिद्ध हैं वह वास्तव में बहुत से कवियों की लेखनियों से निकली हुई हैं, जिनमें से इब्नसिना भी एक थे। कुछ रुबाइयाँ वास्तव में इन्हीं की हैं, परन्तु वे गणना में बहुत ही कम हैं। मौलाना सैयद सुलैमान नदवी ने अपने 'उमर खय्याम' नामी निबंध में जिसको उन्होंने 'ओरियेंटल कान्फ्रेंस' के सन्मुख पढ़ा था, इनके ऊपर बहुत ही बढ़िया प्रकाश डाला है। इस बात में किसी को भी सन्देह नहीं हो सकता है कि वह एक उच्च कोटि के कवि थे, और ख्वाजा इमाम के शब्दों में उनकी यह इच्छा कि मेरी क़ब्र ऐसे स्थान पर बने जहाँ कि वृक्ष वर्ष में दो बार अपने पुष्प बरसाया करें, कीट्स की इच्छा के समान पूर्ण भी हो गयी। उनकी क़ब्र नैशापुर में बनी हुई है, जहाँ पर शौक़ाल्ू और नाशपाती के वृक्ष अपनी पुष्प-वर्षा करते हैं। उनकी चतुष्पदी कविताओं का प्रचार रूस वालों द्वारा सबसे पहले यूरोप में हुआ था। तब से उनका नाम अधिकाधिक व्यापक होता जा रहा है।

उनकी रचनाएं निम्न हैं:—

रुबाइयात।

ज्योतिष और गणित की पुस्तकें।

(१)

आमद सहरे निदा जे मैख़ानए मा।
कै रिंद ख़राबातिए दीवानए मा॥
बर ख़ेज़ कि पुर कुनेम पैमाना जे मै।
जाँ पेश कि पुर कुनन्द पैमानए मा॥

(२)

मै क़ुव्वते जिस्मो क़ुव्वते जानस्त मरा।
मै काशिफ़े असरारे निहाँनस्त मरा॥
दीगर तलबे दीनवो उक़्बा न कुनम।
यक जुरआ पुर अज़ हर दो जहाँनस्त मरा॥

(३)

अज़ बादए नाब लाल शुद गौहरे मा।
आमद बफ़ुग़ाँ जे दस्ते मा सागरे मा॥
अज़ बसकि हमी ख़ुरेम मै बरसरे मै।
मा दर सिरे मै शुदेम व मै दर सरे मा॥

(४)

आशिक़ हमा रोज़ा मस्तो शैदा बादा।
दीवानओ शोरीदओ रुसवा बादा॥
दर हुशयारी ग़ुस्सए हर चीज़ ख़ुरेम।
चू मस्त शवेम हर चे बादा बादा॥

---

(१) एक प्रभात काल में मेरे मदिरा-गृह से एक आवाज़ मेरे कानों में पड़ी कि 'ऐ मेरे मतवाले, मदिरा प्रेमी! उठ बैठ। आ जीवन के प्याले के भर जाने से पहले ही हम उस ईश्वर के प्रेम रूपी प्याले का पान करें। मृत्यु होने से पहले ही उससे लगन लगा लें।'

(२) प्रणय को मदिरा हमें बहुत लाभ पहुँचाती है। उससे हमारे शरीर तथा प्राणों को शक्ति प्राप्त होती है। उसके पीने से रहस्यों का पता लग जाता है। बस, मैं उस मदिरा का केवल एक घूँट चाहता हूँ। उसके उपरान्त न तो मुझे संसार अथवा जीवन की ही चिन्ता रहेगी और न मृत्यु की।

(३) इस प्रणय-रूपी शुद्ध मदिरा के पान कर लेने से प्रणय-मार्ग में हमारी प्रतिष्ठा और भी अधिक हो गई है। मदिरा का पात्र भी सदैव भरा ही रहता है। इस प्रणय-मदिरा की अधिकता से, हमारे मस्तिष्क तक में घुआं छा गया है, और सच्चे प्रणय को हमने पहचान लिया है।

(४) प्रणयी को समस्त दिन प्रणय में ही मतवाला रहना चाहिये।

(५)

ऐ आँकि गुज़ीदए जहानी तु मरा।
ख़ुशतर ज़े दिलो दीदओ जानी तु मरा॥
अज़ जाने सनमा अज़ीज़ तर चीज़े नेस्त।
सद वार अज़ीज़ तर अज़ानी तु मरा॥

(६)

ख़ाही ज़े फ़िराक़ दर फ़ुग़ाँ दार मरा।
ख़ाही ज़े विसाल शादमाँ दार मरा॥
मन या तू न गोयम कि चेसाँ दार मरा।
ज़े इन्साँ कि दिलत ख़ास्त चुनाँ दार मरा॥

(७)

चंदाँ वख़ुरम शराव कीं वूए शराव।
आयद ज़े तुराव चूँ रवम ज़ेरे तुराव॥
ता वरसरे ख़ाके मन रसद मख़मूरे।
अज़ वूए तुरा वे मन शवद मस्तो ख़राव॥

(८)

माओ मैओ माशूक़ दरीं कुंजे ख़राव।
जानो दिलो जामो जामा दर रहने शराव॥

उसे पागल, व्याकुल होकर भटकते रहना चाहिये। होश में रहने पर प्रत्येक वस्तु की चिन्ता घेरे रहती है, परन्तु मतवाला हो जाने पर सभी वस्तुओं का ध्यान मस्तिष्क से दूर हो जाता है। यदि किसी का ख़्याल रहता है तो उसी वस्तु का जिसने मतवाला बना दिया है।

(५) प्यारे! तू मेरे लिए संसार में सब से बढ़ कर है। तू मुझको दिल, आँख और कान इत्यादि सभी से बढ़ कर प्रिय है। प्यारे! प्राण से बढ़ कर कोई वस्तु प्रिय नहीं होती, परन्तु तू मुझको प्राणों से भी सौ गुना अधिक प्रिय है।

(६) मैं तेरी इच्छा पर निर्भर हूँ। यदि तू अपने वियोग में मुझे तड़पाना चाहता है तो तड़पा, और मिलन का सुख देना चाहता है तो सुख दे। तू जिस अवस्था में मुझे रखना चाहता है रख। मैं कभी इसके विरुद्ध अपने मुख से एक शब्द भी नहीं निकालूँगा।

(७) मैं इतनी मदिरा पान करूँगा, कि उसकी महक मेरे क़ब्र के नीचे से निकलती हुई समाधि तक जा पहुँचे, और उसमें से भी निकलने लगे ताकि कोई मतवाला प्रेमी उस तक आ पहुँचे तो उसकी महक से और भी मतवाला तथा वेसुध हो जावे।

(८) इस सुनसान, वीहड़ में, मैं हूँ, मदिरा है और और मेरी प्या है। प्राणों का, दिल का, प्याले का तथा वस्त्रों को, मदिरा के लिये गिरवी

फ़ारिग़ ज़े उमीदे रहमतो बीमे अज़ाब।
आज़ाद ज़े ख़ाकओ बादो ज़े आतिशो आब॥

(९)

हर दिल कि दरू मेहो मोहब्बत बसिरिश्त।
गर साकिने मसजिदस्त वर अहले कुनिश्त॥
दर दफ़्तरे इश्क़ नामे हर कस के नविश्त।
आज़ाद ज़े दोज़खस्त वो फ़ारिग़ ज़े बहिश्त॥

(१०)

असरारे जहाँ चुनाँके दर दफ़्तरे मास्त।
गुफ़्तन नतवाँ आँके ववाले सरे मास्त॥
यक नेस्त दरीं मरदुमे नादाँ अहले।
गुफ़्तन न तवाँ हर उच्चे दर ख़ातिरे मास्त॥

(११)

बर तर्ज़े सिपहरे ख़ातिरम् रोज़े नख़ुस्त।
लौहो क़लमो बहिश्तो दोज़ख़ मी जुस्त॥
पस गुफ़्त मरा मोअल्लिमे अज़ल इल्से दुरुस्त।
लौहो क़लमो बहिश्तो दोज़ख़ बा तुस्त॥

(१२)

मे आमदो अज़ आलमे रुहानी तख़्त।
हैराँ शुदो दर पंजो चहारो शशो हश्त॥

दिया है। न तो यही कहता हूँ कि 'हे भगवन्! कृपा करें' और न उसके क्रोध का ही भय है। मैं इस समय जल, वायु, अग्नि और मिट्टी इत्यादि चारों भूतों से पृथक् हूँ।

(९) जिस हृदय में प्रेम की लगन लग गई, वह चाहे मस्जिद में निवास करता हो चाहे बुतख़ाने में, जिस किसी का भी नाम ऐसे लोगों की सूची में लिखा गया, उसको न तो नरक की ही चिन्ता है और न स्वर्ग की इच्छा।

(१०) संसार की गुप्त बातें, जिन्हें हमारा दिल समझता है, प्रकट नहीं की जा सकती हैं। क्योंकि हर मेरे सर का यार है। इस नादान मनुष्यों में कोई भी ज्ञानवान् मनुष्य नहीं है, जिसको अपने हृदय का भेद हम प्रकट कर ही नहीं सकते हैं।

(११) सृष्टि जिस समय उत्पन्न हुई थी, मेरा हृदय भी उसको देखने गया। उसमें भी स्वर्गलोक के सिंहासन दर्शनीय थे। उस समय सबको शिक्षा देने वाले गुरु ने मुझसे ठीक कहा था कि 'लेखनी और तख़्ती, स्वर्ग और नरक के फेर में क्यों पड़ा हुआ है?' पर मन की मेरे भी उलझन है

(१२) मैं आलमे-अज़ल के फेर में पड़े हुए आदम [illegible] के चक्कर में

मै खुर कि नदानी जे कुजा आमदई।
खुशबाश नदानी बकुजा खाही रफ्त॥

(१३)

दिल सिर्रे हयात रा कमाहुए दानिस्त।
दर मौत हम असरारे इलाएं दानिस्त॥
दुमरोज कि बालदी नदानिस्ती हेच।
फर्दा कि जे खुद रवी ने खाही दानिस्त॥

(१४)

ता यार शिनासम मन ईं पाए जे दस्त।
ईं चर्खे जिगी माया मग दस्त बे बस्त॥
चन्दांगेरा कि दर हिसाब खाहन्द निहाद।
चूमें कि मग बे मयो माशूकां गुजश्त॥

(१५)

ईं चाजहनम व मन न बुद रोजे नखुस्त।
ता रफ्तने बेसुरादे चाजमन्त दुरुस्त॥
दर मेंजो मियाँ बे बन्द ये साकी चुम्ल।
चूमें देहे जाहाँ बाँ फिरो खाहम शुम्ल॥

मस्त कर देता है। इस संसार के प्रपंच ने तुझे और भी व्याकुल बना रक्खा है। तू दुनिया को नहीं जानता है कि तू कहाँ से आया है, तो मदिरा पान कर और सांसारिक प्रपंच दूर कर। तुझे यह भी ज्ञान नहीं है कि अन्त में तू कहाँ जायगा।

(१३) विश्व के जीवन का भेद पूर्णतया ज्ञात हो गया है। उसने यह भी समझ लिया है कि मृत्यु में भी ईश्वर के कुछ रहस्य गुप्त हैं। तू इस समय आनन्द में है, परन्तु कल क्या होगा, इन बातों को क्या समझ सकेगा?

[illegible] समय में तू इस संसार में आया है, उसी समय से काल-चक्र में [illegible] परन्तु मूर्ख, एक बात का शोक है। मेरे [illegible] इस समय न तो मैं यार को [illegible] इस समय में संसार में [illegible] यह समय भी [illegible] यह समय व्यर्थ गया।

[illegible] मैं [illegible] संसार को पहचान न सका था, [illegible] जाता जाता [illegible] इस संसार को [illegible] दोगा। इस [illegible] ईश्वर की [illegible] करता [illegible]

(१६)

साक़ी मै मारेफ़त मरा मकरमतस्त।
दर मशरबे बेमारेफ़ताँ मासियतस्त॥
बेमारेफ़त आदमी चेकार आयद हेच।
मक़्सूद जे आदमी हमीं मारेफ़तस्त॥

(१७)

बुतखानओ काबा खानए बंदगी अस्त।
नाक़ूस जदन तरानए बन्दगी अस्त॥
मेहरावो कलीसाओ तसबीहो सलीब।
हक़्क़ा कि हमा निशानए बन्दगी अस्त॥

(१८)

अज मंजिले कुफ्र ता बदीं यक नफ़समस्त।
बज आलमे शक ताबैसक़ीं यक नफ़समस्त॥
ईं यक नफ़से अज़ीज रा खुश मीदार।
कज हासिले उम्रे मा हमीं यक नफ़समस्त॥

(१९)

हर दफ़्तरे आलीये मआनी दफ़्तरस्त।
सर दैते क़सीदए जवानी दफ़्तरस्त॥
ऐ आँके क़दर नदारी अज आलमे फ़क़र।
ईं नुक्ता बेदोके ज़िन्दगानी दफ़्तरस्त॥

---

(१६) हे साक़ी! मुझको पुरस्कार में मिलन-महिमा प्राप्त हुई है। जिसको मिलन-सुख का अनुभव नहीं हुआ उसका अस्तित्व व्यर्थ है। उसको निकम्मा कहना चाहिये। मनुष्य-जीवन का उद्देश्य केवल ईश्वर से साक्षात्कार करना है।

(१७) मन्दिर तथा काबा, दोनों ही ईश्वर की पूजा के स्थान हैं। शंख बजाना उसी को आवाहन करना है। तसबीह की माला, सिरहाने की वेदी, तस्वीर और माला सब के सब हैं। यह उसी परमेश्वर की पूजा की स्मृति में है।

(१८) धर्म तथा उसके प्रतिकूल चलने में अन्तिम श्वास ही अन्तर है और इसी प्रकार सन्देह तथा विश्वास में एक क्षण का अन्तर है। अतएव देखने में यदि किसी प्रकार की विशेषता है तो केवल एक क्षण की। इस बहुमूल्य क्षण को आनन्द से व्यतीत कर। क्योंकि जीवन का सार केवल यही एक क्षण है।

(१९) कवित्व-शक्ति की प्रशंसा तथा सराहनी प्रेमपात्र के ही प्रशंसा होती है। यह दुनिया प्रेम से ही प्रारम्भ होती है। दुनियादार के पीछे लगने वाला

(२०)

दर मैकदए इश्क़ अजल इस्मे मनस्त।
रिंदी व परस्तीदने मै क़स्मे मनस्त॥
मन जाने जहानम् अंदरीं दैरे मुग़ाँ।
ईं सूरते कौन जुम्लगी जिस्मे मनस्त॥

(२१)

दर हेच सरे नेस्त कि असरारे नेस्त।
दिल रा खबर अज़ अंदकी बिसयारे नेस्त॥
हर ताएफ़ा रवंद राहे दर पेश।
इल्ला रहे इश्क़ रा कि सालारे नेस्त॥

(२२)

साक़ी दिले मन जे दस्त गर खाहद रफ़्त।
वहस्त कुजा जे खुद बदर खाहद रफ़्त॥
सूफ़ी कि चु जर्के तंग अज़ खेश पुरस्त।
यक जुरआ अगर देही बसर खाहद रफ़्त॥

(२३)

आँ बादा कि क़ाबिले हयातस्त बजात।
गाहे हैवाँ भी शवद बगाह नबात॥

वस्तु प्रेम ही है। हे मनुष्य! तू इस प्रेम-रूपी जगत का कुछ भी ध्यान नहीं रखता है। तू इस रहस्य को समझ ले कि जीवन, प्रणय का ही नाम है।

(२०) इस प्रणय के मदिरा-गृह की सूची में सब से पहला मेरा ही नाम है। मस्ती और मदिरा-पान मेरे ही हिस्से में आ पड़े हैं। शराब विक्रेताओं के इस घर में जो कुछ हूँ मैं ही हूँ। मैं ही शरीर और मैं ही प्राण हूँ। यह समस्त संसार की सूरतों में केवल मैं ही मैं हूँ।

(२१) कोई भी वस्तु ऐसी नहीं है, जो रहस्य से खाली हो, परन्तु दिल को थोड़े और बहुत का कुछ भी ध्यान नहीं है। प्रत्येक झुंड का कुछ न कुछ मार्ग है। ये सब निश्चित मार्गों से आगे बढ़ रहे हैं। परन्तु प्रणय के गरोह का कोई निर्णित मार्ग ही नहीं है।

(२२) साक़ी यदि मेरा हृदय मेरे हाथ से जाता भी रहेगा तो क्या होगा? वह स्वयम् एक नदी है और नदी अपने आपे से बाहर कब होती है। यह बात अवश्य है कि यदि किसी अहंकारी तथा ओछे सूफ़ी को यदि एक घूँट भी अधिक दे दी जावे तो वह उबलने लगता है।

(२३) जिस मदिरा के पान करने से मस्ती आ जाती है, वह कभी बेसुध कर देती है और कभी ध्यान में ला देती है। यह समझना कि गुण अपने आप

ना जन न वरी कि हस्त गरदद हैहात।
मौसूक़ वजाते तुस्त गर हस्त सिफ़ात॥

(२४)

दर सोमओ मदरसओ दैरो कुनिश्त।
तरसिंदए दोज़खस्तो जोयाए वहिश्त॥
आँकस कि जे असरारे ख़ुदा वा ख़वरस्त।
जीं तुख़्म दर अंदरूने दिल हेच नकिश्त॥

(२५)

तरसे अजलो वीमे फ़ना हस्तिए तुस्त।
वर्ना जे फ़ना शाखे बक़ा खाहद रुस्त॥
मन अज़ दमे ईसवी शुदम ज़िंदा वजाँ।
मर्ग आमदो अज़ वजूदे मन दस्त वेशुस्त॥

(२६)

दरियाव कि अज़ रूह जुदा खाही रफ़्त।
दर परदए असरारे ख़ुदा खाही रफ़्त॥
मै ख़ुर कि न दानी जे कुजा आमदई।
ख़ुश जीं चो न दानी के कुजा खाही रफ़्त॥

वर्त्तमान रहते हैं, उचित नहीं जँचता। उनका अस्तित्व भी तो उसी सर्वशक्तिमान के साथ लगा हुआ है।

(२४) शिक्षा-मन्दिर, मन्दिर और मस्जिद में, जितने भी मनुष्य हैं, वह दो श्रेणियों में विभक्त किये जा सकते हैं। एक तो वह जो नरक से डरते हैं और दूसरे वह जो स्वर्ग के इच्छुक हैं। परन्तु जिसको ईश्वर से लगन लग गई है, वह इन बातों को कभी अपने हृदय में स्थान ही नहीं देता।

(२५) मृत्यु का डर और विनाश का भय केवल तुम्हीं को है, वरन् विनाश वह वस्तु है जिससे अमरत्व का अंकुर फूटता है। ईसा की कृपा से मेरे प्राणों को वह शक्ति प्राप्त हो गई है कि मृत्यु आकर और जीवन से निराश होकर लौट गई। मेरा सांसारिक अस्तित्व मिट गया है और मृत्यु अब मेरे निकट आकर ले ही क्या सकती है?

(२६) अवकाश से कुछ न कुछ लाभ उठाने का प्रयत्न करो। कारण कि तुमको रूह से पृथक् होना आवश्यकीय है और ईश्वर की खोज में निकलना है। शराब पियो। तुमको न तो यही ध्यान है कि कहाँ से आये हो, और न यही विचार है कि कहाँ जाओगे। अतएव जो कुछ भी करना है अपने जीवन में कर लो। पीछे पछताना पड़ेगा।

(२७)

बाहर बदो नेक राज न तवानम गुफ़्त।
दायम सख़ुने दराज न तवानम गुफ़्त॥
हाले दारम् कि शरह न तवाँ दादन्द।
राजे दारम् कि बाज न तवानम गुफ़्त॥

(२८)

यारब तू करीमी व करीमी करमस्त।
आसी जे चे रू बरूँ जे बाग़े यरमस्त॥
वाताअतम अरबे बख़्शी आँ नेस्त करम।
वा मासिएतम अगर बबख़्शी करमस्त॥

(२९)

ऐ बाए बराँ दिल कि दरूँ सोज़े नेस्त।
सौदा ज़दए मेहे दर अफ़रोज़े नेस्त॥
रोज़े कि तू बेबादा बसर खाही बुर्द।
ज़ाया तर अज़ाँ रोज़ तुरा रोज़े नेस्त॥

(३०)

मन बन्दए आसीअम रजाए तू कुजा अस्त।
तारीक दिलम् नूरे सफ़ाए तू कुजा अस्त॥
मारा तू बहिश्त अगर बताअत बख़्शी।
ईं मुज्द बुवद लुत्फ़ो अताए तू कुजा अस्त॥

---

(२७) प्रत्येक अच्छे अथवा बुरे से अपना भेद नहीं कह सकता और न सदैव लम्बा चौड़ा वर्णन ही कर सकता हूँ। मेरा ऐसा हाल है कि जिसको खोल कर किसी से कह नहीं सकता और मेरा रहस्य ऐसा है कि जिसका साफ़ शब्दों में वर्णन ही नहीं हो सकता।

(२८) भगवन्! तू दयालु है और दयालुता से ही तेरी ख्याति है। फिर पापी को स्वर्ग से वंचित क्यों किया गया है? यदि भक्ति और भजन के कारण तू मुझे क्षमा प्रदान करके अपनाता है, तो इसमें तेरी दयालुता कहाँ रही। हाँ, दुष्ट होने पर भी यदि तू मुझे अपनावे तब तेरी दयालुता अवश्य है।

(२९) जिस हृदय में किसी प्रकार की पीड़ा न हो, वह शोचनीय है। और जो किसी के प्रेम में पागल न हो उस पर धिक्कार है। प्रेम-विहीन जितने भी दिवस तेरे व्यतीत हो रहे हैं, वह सब व्यर्थ हैं, उनमें तनिक भी सार नहीं।

(३०) मैं पापिष्ट हूँ। तेरी वह पापियों को क्षमा प्रदान करने वाली दया कहाँ है, जिससे मुझे भी क्षमा मिले? मेरे हृदय में अन्धकार हो रहा है, अपने प्रकाश से उसे भी प्रकाशित कर दे। यदि भक्ति के कारण तूने मुझे स्वर्ग प्रदान किया तो इसमें तेरी कृपा कब हुई।

(३१)

हर दिल कि दरू मायए तजरीद कमस्त।
बेचारा हमा उम्र नदीमे नदमस्त॥
जुज़ खातिरे फ़ारिग़ कि निशादे दारद।
बाक़ी हमा हर चे हस्त असबाबे ग़मस्त॥

(३२)

पुर रूँ ज़े फ़िराक़त जिगरे नेस्त कि नेस्त।
शैदाए तू साहब नज़रे नेस्त कि नेस्त॥
बश्राँ कि न दारी सरे सौदाए कसे।
सौदाए तू दर हेच सरे नेस्त कि नेस्त॥

(३३)

चूँ रिश्क़े तु ऊँचे अदल क़िस्मत क़रमूद।
यक ज़र्रा न कम शुद्दो न ख़ाहद अफ़ज़ूद॥
आसूदा ज़े हर चे हस्त मी बायद शुद।
आज़ादा ज़े हर चे हस्त मी बायद बूद॥

(३४)

जानम व फ़िदाए आँ कि ऊ अह्ल बुवद।
सर दर क़दमश अगर नेहम सह्ल बुवद॥
ख़ाही कि बेदानी बयक़ीं दोज़ख़ चूद।
दोज़ख़ बजहाँ सोहबते नाअह्ल बुवद॥

---

(३१) जिस हृदय में त्याग की उमंग कम है, वह जीवन भर लज्जित ही बना रहेगा। जिस हृदय में त्याग है, सांसारिक विघ्नों की छाया नहीं है, वही प्रसन्न है। शेष सभी वस्तुएँ दुःखदायिनी हैं।

(३२) कोई भी हृदय ऐसा नहीं है, जो तेरे विरह से पीड़ित न हो और कोई भी ज्ञानवान् मनुष्य ऐसा नहीं है जो तेरे लिये व्याकुल न हो। तुझे किसी की भी चिन्ता नहीं है, परन्तु तेरा ध्यान सभी को है।

(३३) ईश्वर के इशारों पर तू नाचता है और वह जो चाहता है तुझे करना ही पड़ेगा। फिर तो तुझे यही उचित है कि संसार में किसी की पर्वाह न कर। क्योंकि बन्धनों से मुक्त रहने ही में भलाई है।

(३४) जो मनुष्य उस पर फ़िदा है, वह इन्सान है। उस पर मैं अपने आपको न्योछावर करने के लिये उद्यत हूँ। और उसके चरणों में पड़ा रहना सरल समझता हूँ। परन्तु यदि तुम नरक की वास्तविकता का ज्ञान करना चाहते हो, तो समझ लो कि ईश्वर-विमुख, अज्ञानी मनुष्य की संगति ही नरक है।

(३५)

वोसीदा मुरक्क़ाअंद ईं खामे चंद।
ना रफ़ा रहे सिद्क़ो सफ़ा गामे चंद॥
वेगिरिफ़ा जे तामात अलिफ़ लामे चंद।
वदनाम कुनिन्दए निकू नामे चंद॥

(३६)

दर आलमे जाँ वहोश मी वायद वूद।
दर कारे जहाँ ख़मोश मी वायद वूद॥
ता चश्मो ज़वाँ व गोश वर जा वाशद।
वे चश्मो ज़वानो गोश मी वायद वूद॥

(३७)

शव नेस्त कि अक़्ल दर तहैयुर न शवद।
वज़ गिरया कि नारे मन पुर अज़दुर न शवद॥
पुर मीं न शवद कासए सर अज़ सौदा।
आँ कासा कि सर निगूँ वुवद पुर न शवद॥

(३८)

आँहाँ कि मुहीते फ़ज़्लो आदाव शुदन।
दर कश्फ़े उल्मे शमए असहाव शुदन॥
रह जीं शवे तारीक न वुरदंद वुरूं।
गुफ़्तंद फ़िसानाओ दर ख़ाव शुदंद॥

---

(३५) कुछ ऐसे साधु हैं जो फटी हुई गुदड़ी पहने हुए हैं। वे सच्चे तथा पवित्र मार्ग से कहीं दूर हैं। वे पूरे ढोंगिया हैं। उन्होंने केवल कुछ शब्द ईश्वर के विषय में रट लिये हैं, और बहुत से अच्छे तथा सच्चे मनुष्यों को व्यर्थ में बदनाम करने का ठेका ले रक्खा है।

(३६) प्राणों के सम्बन्ध में सतर्क रहना आवश्यकीय है, और सांसारिक कामों में शान्ति से काम लेना उचित है। जिह्वा, कान, नेत्र इत्यादि को उचित शिक्षा देने के लिये, उनसे सम्बन्ध-विच्छेद कर लेना आवश्यकीय है, जब उनको न सुनोगे तो वह सभी ठीक मार्ग पर आ जायेंगे।

(३७) प्रत्येक रात को मैं उसका ध्यान करके रोता हूँ। परन्तु इस पर भी उसको जगत से पता न लगा होता है। सत्य बात तो यह है कि ईश्वर के प्रति जो प्रेम उत्पन्न होता है वह रोने अथवा चिल्ला करने से उत्पन्न नहीं होता है, परन्तु अन्तःकरण तथा हृदय से उत्पन्न होता है।

(३८) संसार में एक से एक बढ़ कर ज्ञानी मनुष्य हो चुके हैं। उन्होंने योग तथा ज्ञान के मार्ग से बहुत सी नवीन खोजें की हैं, परन्तु वह लोग भी इस मायामय संसार का पार नहीं पा सके। केवल एक कहानी कह कर सो रहे।

(३९)

ता बूद दिलम् जे इश्क़ महरूम न शुद।
कम बूद जे असरार कि मफ़हूम न शुद॥
अकनूँ कि हमी बिनगरम् अज रूए खिरद।
मालूमम् शुद कि हेच मालूम न शुद॥

(४०)

दर दह हरों के नीम नाने दारद।
अज बहे निशस्त आस्ताने दारद॥
नै खादिमे कस बुवद नै मखदूमे कसे।
गो शाद बेज़ी कि खुश जहाने दारद॥

(४१)

क़ौमे जे गुज़ाफ़ दर ग़रूर उफ़तादंद।
क़ौमे जे पए हूरो क़सूर उफ़तादंद॥
मालूम शवद चु पर्दहा बर दारंद।
कज कूए तु दूर दूर दूर उफ़तादंद॥

(४२)

उमरत ताकै बखुद परस्ती गुज़रद।
या दरपए नेस्तीओ हस्ती गुज़रद॥
मै खुर कि चुनीं उम्र कि गम दरपए ओस्त।
आँ बेह कि बखाब या ब मस्ती गुज़रद॥

---

(३९) जिन दिनों मैं प्रेम में पागल था, लगभग सभी रहस्य मुझ पर प्रगट थे। परन्तु जब ज्ञान से काम लेकर देखता हूँ, तो मालूम होता है कि मैंने अब तक कुछ भी नहीं समझा था।

(४०) संसार में वही मनुष्य सुखी है, जिसे खाने के लिए आधी रोटी मिलती है, और बैठने के लिये थोड़ी सी जगह. जो न तो किसी का चाकर है, और न किसी का स्वामी। उससे कह दो, मग्न रहे उसका संसार सब से अच्छा है।

(४१) कुछ मनुष्य व्यर्थ की बातें बना कर अहंकारी हो गये हैं कुछ लोगों ने स्वर्ग की सुन्दरियों तथा सौन्दर्य का अखाड़ा ही बना डाला है। परन्तु जब बीच का पर्दा उठा दिया जायगा, उस समय सब को ज्ञात हो जायगा कि वह तेरी गली से कहीं दूर जा पड़े हैं।

(४२) तेरी उम्र अपने स्वार्थ में मस्त रह कर कब तक व्यतीत होती रहेगी और कब तक तू इस जीवन तथा मृत्यु की खोज में व्यस्त रहेगा? आ और मदिरा-पान करके नशे में सब कुछ भुला दे। इस जीवन में, जिसमें दुःख तथा क्लेश हो, सोना अथवा मस्त रहना कहीं उत्तम है।

(४३)

इश्क़े कि मजाज़ी बुवद आतश न बुवद।
चूँ आतशे नीम मुर्दा ताबश न बुवद॥
आशिक़ बायद कि सालो माहो शबो रोज़।
आरामो क़रारो खुदो खाबश न बुवद॥

(४४)

दर राह चुनाँ रौ कि सलामत न कुनन्द।
वा खल्क़ चुनाँ ज़ी कि क़यामत न कुनन्द॥
दर मसजिद अगर रवी चुनाँ रौ कि तुरा।
दर पेश न खाहंदो इमामत न कुनन्द॥

(४५)

दर राह खिरद बजुज़ खिरद रा मपसन्द।
चूँ हस्त रफ़ीक़े नेको बद रा मपसन्द॥
ख़ाही कि हमाँ जहाँ तुरा बेपसन्दन्द।
मी बाश बखुशदिली व खुदरा मपसन्द॥

(४६)

ख़ाही कि तुरा कतबते असरार रसद।
मपसंद कि कस राजे तू आज़ार रसद॥
अज़ मर्ग मे अन्देश बरामे रिज़्क़ मखुर्द।
कीं हर दो बवक्त खेश नाचार रसद॥

---

(४३) सांसारिक प्रेम में वह प्रभा अथवा वह उज्ज्वलता नहीं होती जो ईश्वरीय प्रेम में होती है। वह अधजली अग्नि के समान शोभाहीन होता है। प्रेमी को ऐसा होना चाहिये जो वर्षों और महीनों क्या प्रत्येक क्षण बेकल और बेचैन रहे।

(४४) मार्ग में चलते हुए इस प्रकार चल कि लोग तुझे सलाम न कर सकें, और उनमें ऐसा बर्ताव कर कि वह तुझे देख कर उठ न खड़े हों। मसजिद में यदि जाता है तो इस प्रकार जा कि लोग तुझे इमाम न बना लें। सब बन और अपने को चतुर प्रकट मत कर।

(४५) बुद्धि के मार्ग में बुद्धि के अतिरिक्त किसी और को न मान। जब तुझे सच्चा अच्छा मित्र मिल गया है तो बुरे को पसन्द मत कर। यदि तू यह चाहता है कि सभी लोग तुझसे प्रसन्न रहें तो सदैव प्रसन्न-चित्त रह और अपनी पसन्दों पर मत चल।

(४६) यदि तू संसार में बलवान तथा पुण्यवान बनना चाहता है तो ऐसे काम कर जिससे किसी को कष्ट न पहुँचे। मृत्यु का कभी भय मत कर और रोटियों की चिन्ता छोड़ दे। क्योंकि यह दोनों वस्तुएँ समय पर स्वयम् ही आ उपस्थित होती हैं।

(४७)

मौजूदे हक़ीक़ी बजुज़ इंसाँ न बुवद ।
बर फ़ल्के कसे ई सख़ुन आसाँ न बुवद ॥
एक जुर्रा अज़ी शराबे बेग़श मी कश ।
ता ख़ल्के ख़ुदा पेशे तू यकसाँ न बुवद ॥

(४८)

चंदाँ मर्दे ई रह के दुई बरख़ेज़द ।
गर नेस्त दुई जे रहरवी बरख़ेज़द ॥
तु ऊ न शवी ऊ लेक गर जेहदकुनी ।
जाए बेरसे कज़ तु तुई बरख़ेज़द ॥

(४९)

बदख़ाहे कसाँ हेच बमक़सद न रसद ।
यक बद न कुनद ता बख़ुदश सद न रसद ॥
मन नेके तू ख़ाहम व तू ख़ाही बदेमन ।
तू नेक न बीनी व बमन बद न रसद ॥

(५०)

ख़ुर्रम दिले आँ कसे कि मारूफ़ न शुद ।
दर जुब्बओ दर्राओ दर सूफ़ न शुद ॥
सीमुर्ग़ सिफ़त बअर्श परवाज़ी कर्द ।
दर कुंजे ख़राबए जहाँ बूफ़ न शुद ॥

---

(४७) इस संसार में मनुष्य ही एक ख़ास चीज़ है, परन्तु प्रत्येक के लिये यह समझना कठिन है। तू इस बेमेल मदिरा का एक घूँट पीले जिसके प्रभाव से ईश्वर के समस्त जीवधारी तुझे समान दृष्टि आवेंगे।

(४८) ईश्वर की खोज में, उसके पाने की इच्छा में, इतना आगे मत बढ़ जा कि भगवान् और भक्त के बीच का अन्तर ही जाता रहे। यदि यह भेदभाव ही नहीं रहेगा तो फिर उसके प्राप्त करने के लिये आगे किस प्रकार बढ़ा जावेगा। तू स्वयम् कभी ब्रह्म नहीं हो सकता परन्तु भक्ति और साधना से इस पद तक पहुँच सकता है कि तेरा अहम् भाव तुझसे पृथक् हो जावे।

(४९) दूसरों का बुरा चाहने वाला कभी अपने अभीष्ट को प्राप्त नहीं कर सकता। वह किसी से एक बुराई करता है कि इतने ही में स्वयम् उसकी सौ बुराइयाँ इधर-उधर फैल जाती हैं। मैं तेरी भलाई चाहता हूँ और तू मेरी बुराई, तो इसका फल यही होगा कि तुझे भलाई नहीं प्राप्त होगी और मैं बुराई से अलग रहूँगा।

(५०) जो मनुष्य प्रतिष्ठित नहीं है, उसका जीवन बड़े आनन्द से व्यतीत होता है। वह बढ़िया कुर्ता और कम्बल नहीं पहनता तो अच्छा करता है।

(५१)

अन्दर रहे इश्क़ जुमला साक़ाँ दुर्दन्द ।
बन्दर तलबश जुमला बुज़ुर्गां ख़ुर्दन्द ॥
इमरोज़ शबोरोज़ जे फ़रदा ईनस्त ।
फ़रदा तलबाँ दर ग़मे फ़रदा मुर्दन्द ॥

(५२)

गर बादा बकोह दर्देही रक़्स कुनद ।
बुबद आँ कि बादा रा नक़्स कुनद ॥
अज़ बादा मरा तौबा चे मीं फ़रमाई ।
रूहेस्त कि ऊ तरबियते शख़्स कुनद ॥

(५३)

आँ क़ौम कि सज्जादा परस्तंद खरन्द ।
ज़ीराके बजेरे बारे साबूस दरन्द ॥
बीं अज़ हमा तुर्फ़ातर कि दर्दीदये ज़ोहद ।
इस्लाम फ़रोशन्दो जे काफ़िर बतरन्द ॥

(५४)

असरारे अज़ल बादा परस्तां दानन्द ।
क़दरे मै व जाम तंगदस्ताँ दानन्द ॥

ऐसा मनुष्य ही पक्षी के समान ऊपर आकाश में उड़ जाता है, और इस संसार के उजाड़-खण्ड का उल्लू नहीं बनता ।

(५१) प्रणय-मार्ग में, बहुत ही स्वच्छ और पवित्र मनुष्य भी गन्दे हैं, और ईश्वर की खोज में बड़े-बड़े प्रतिष्ठित मनुष्य भी हेय तथा तुच्छ हो रहे हैं। जिस प्रकार आज दिन है और फिर रात होगी, उसी प्रकार कल भी दिन और रात का चक्कर आवेगा । यह कल के इच्छुक उसी की चिन्ता में मर गये हैं ।

(५२) यदि किसी पहाड़ को मदिरा पिला दो तो वह भी हिलने लगे, इस लिये जो उसे बुरा बतलाता है वह स्वयम् बुरा है । मुझे मदिरा न पीने की शिक्षा क्यों देते हो ? यह तो ऐसी वस्तु है, जिसके द्वारा ईश्वर से मिलने का सौभाग्य प्राप्त होता है ।

(५३) मृगछाला धारण करने वाले त्यागियों पर जो विश्वास करके उनकी अभ्यर्थना करते हैं, वह मूर्ख हैं । ऐसे साधु कपट के बोझ से दबे हुए हैं । यदि उन्हें धार्मिक दृष्टि से देखें तो वह और भी बुरे सिद्ध होते हैं । उन्हें तो विधर्मियों से भी बुरा कहा जा सकता है ।

(५४) मदिरा के ग्राहकों पर ही जन्म के दिन के रहस्य प्रगट हुआ करते हैं, और शराब तथा प्यालों की इच्छा निर्धनों ही को हुआ करती है । यदि तू

गर चश्मे तो हाले मन वेदानद ना अजब।
शक नेस्त कि हाले मस्त मस्ताँ दानन्द॥

(५५)

सुस्ती मकुनो फ़रीज़िए हक़ बगुज़ार।
दर ओहदए आँ जहाँ मनम बादा बयार॥
दर खून कसे व माले कसे क़स्द मकुन।
बाँ लुक़्मा कि दारी ज़े कसाँ बाज़ मदार॥

(५६)

दी कूज़ा गरे बदीदम अन्दर बाज़ार।
बर पारए गिले हमी लकद ज़द बिस्यार॥
बाँ गिल बज़बाने हाल बा ऊ मी गुफ़्त।
मन हमचो तू बूदा अम मरा गमेदार॥

(५७)

गर गौहरे ताअतत न सुफ़्तम हरगिज़।
बर गिर्दे रहत ज़े रुख़ न रफ़्तम हरगिज़॥
नौमीद नेअम ज़े बारगाहे करमत।
ज़ीराके यकेरा दो न गुफ़्तम हरगिज़॥

(५८)

बाज़े बूदम परीदा अज़ आलमे राज़।
बू ता कि परम दमे नशीनी बकराज़॥

मेरे हाल को जानता है, तो इसमें आश्चर्य की कौनसी बात है? मस्त लोगों की बातें मस्त ही जाना करते हैं।

(५५) आलस में मत पड़ा रह और ईश्वर के प्रति अपने कर्त्तव्यों का पालन कर। उस लोक का बोझ मैं अपने सिर पर लेता हूँ। बस सहिष्णु बन; और कुछ न चाहिये। किसी के प्राणों तथा धन को लेने का कुत्सित विचार मत कर और जो कुछ भी तुझे प्राप्त है, उसमें से दूसरों को भी दे।

(५६) कल मुझको हाट में एक कुम्हार दिखलाई दिया था जो पोई-सी गीली मिट्टी को अपने पैरों से रौंद रहा था। वह मिट्टी उससे यह शब्द कह रही थी कि मैं भी तेरे ही समान किसी समय मनुष्य के रूप में थी और मुझ में भी यह सब बातें वर्त्तमान थीं।

(५७) भगवन्! मैंने कभी तेरी पूजा नहीं की और न तुझ तक पहुँचने का प्रयत्न ही किया है, परन्तु इस पर भी मैं निराश नहीं हूँ। मुझे तेरी कृपा का भरोसा है। कारण कि मैंने कभी भी अपने मुख से एक को दो नहीं कहा। सदैव मुझे तेरा ध्यान रहा है।

(५८) मैं एक बाज़ था और उस रहस्यमय लोक से इस संसार को

ईं जा के न याफ़्तम् कसे महरमे राज़।
जाँ दर के दरामदम् बुरूँ रफ़्तम बाज़॥

(५९)

मा आशिक़े आशुफ़्ता मस्तेम इमरोज़।
दर कूए बुताने बादा परस्तेम इमरोज़॥
अज़ हस्तिए खेश्तन बगुले रूस्ता।
पैवस्ता व मेहरावे अलस्तेम इमरोज़॥

(६०)

रफ़्तन्द जे रफ़्तगाँ यके न आमद बाज़।
ता वा तू बगोयद अज़ पसे पर्दए राज़॥
कारत जे नियाज़ मी कुशायत न निमाज़।
बाज़ीचा बुवद निमाज़ बे सिद्क़ो नियाज़॥

(६१)

मी पुरसीदी कि चीस्त ईं नक़्शे मजाज़।
गर बर गोयम हक़ीक़तश हस्त दराज़॥
नक़्शेस्त पिदीद आमदा अज़ दरियाए।
बाँगाह शुदा बक़ैरे आँ दरिया बाज़॥

लेकर आया था कि कदाचित् ऊपर उड़ने का अवसर प्राप्त हो। परन्तु जब इस संसार में, मैंने किसी को भी अपना भेद समझने वाला न पाया तो फिर मैं जिधर से आया था उधर ही चला गया।

(५९) हम आज प्रेमी हैं। लगन लग रही है। हालत खराब है और मतवाले हो रहे हैं। हम अपनी प्रेमिकाओं के कूचों में मदिरा पान करते रहते हैं। हमें अपने जीवन की तनिक भी चिन्ता नहीं है और आने वाले प्रलय के दिन के कोने में छुपे हुये बैठे हैं।

(६०) यहाँ से सभी लोग चले गये, परन्तु उन जाने वालों में से लौट कर कोई भी नहीं आया। अतएव पर्दे के भीतर का रहस्य ज्यों का त्यों गुप्त बना हुआ है। तेरा काम यदि पूरा होगा तो नम्रता और विनय से, न कि दिखावटी पूजा से। जिस वस्तु में सत्यता तथा नम्रता नहीं है, वह बच्चों के खेल से बढ़ कर नहीं है।

(६१) तू मुझसे इस बाह्य सौन्दर्य के विषय में पूछता है? यदि मैं आदि से लेकर अन्त तक इसका वर्णन करूँ तो वह बहुत लम्बा हो जायगा। वास्तव में प्रकट यह होता है कि यह जीवन एक नदी से उत्पन्न हुआ है, और फिर उसी में जाकर विलुप्त हो जाता है।

(६२)

ऐ वाक़िफ़े असरारे ज़मीरे हमाकस।
दर हालते इज्ज़ दस्तगीरे हमाकस॥
यारब तो मरा तौबा देहो उज़्रपेज़ीर।
ऐ तौबा देहो उज़्रपेज़ीरे हमा कस॥

(६३)

पंदे देहमत अगर बमनदारी गोश।
अज़ बहे खुदा जामए तज़वीर मपोश॥
उज़्वा हमा रोज़स्त दुनिया यकदम।
अज़ बहे दमे मुल्के अबद मफ़रोश॥

(६४)

बगुज़ार दिला वसवसए फ़िक्रे मोहाल।
दर कश क़दहे बादओ बुगुज़र जे मलाल॥
आज़ाद शओ मुजर्रदो बादा परस्त।
ता मर्द शवी रसी बसर हद्दे कमाल॥

(६५)

मै खुर कि न इल्म दस्तगीरद न अमल।
इल्ला करमो रहमते हक़्क़े इज्ज़ो जल॥
आँ तायफ़ए कि अज़ खिरे मै न खुरन।
अज़ जुम्लए अनआम शुमाराए अहवल॥

---

(६२) हे ईश! तू प्रत्येक मनुष्य के गुप्त से गुप्त भेदों से परिचित है और लाचारी तथा दुखद अवस्था में सब की सहायता करता है। भगवन्! मुझे पापों से बचने की शक्ति प्रदान कर। तू सभी की प्रार्थना सुनता तथा स्वीकार करता है।

(६३) यदि तुम मेरी बात मानो तो मैं तुमको एक शिक्षा देता हूँ। परमेश्वर के लिये कपटी मत बनो। छल-छद्म का जामा मत पहनो। सचाई एक ऐसी वस्तु है जो सदैव रहती है और परलोक तक साथ देती है। तनिक सी बात के लिये अपना परलोक मत बिगाड़ो।

(६४) ऐ हृदय! व्यर्थ की चिन्ताओं के झमेले में अपने आपको मत डाल। मदिरा का एक प्याला पीले और शोर को अपने हृदय में स्थान मत दे। स्वतंत्र, बन्धन-हीन और मदिरा-सेवी बन जा, जिससे मनुष्य के समान अपने पूर्ण पद को प्राप्त कर सके।

(६५) मदिरा पान कर मतवाला बन जा। पर ज्ञान न तो तेरी किसी प्रकार की सहायता करेगा और न उसके उपयोग से कोई लाभ की

ईं जा के न याफ़्तम् कसे महरमे राज़।
जाँ दर के दरामदम् बुरूँ रफ़्तम बाज़॥

(५९)

मा आशिक़े आशुफ़्ता मस्तेम इमरोज़।
दर कूए बुताने वादा परस्तेम इमरोज़॥
अज़ हस्तिए खेश्तन बगुले रुस्ता।
पैवस्ता व मेहरावे अलस्तेम इमरोज़॥

(६०)

रफ़्तन्द जे रफ़्तगाँ यके न आमद बाज़।
ता वा तू बगोयद अज़ पसे पर्दए राज़॥
कारत जे नियाज़ मी कुशायत न निमाज़।
बाज़ीचा बुवद निमाज़ बे सिद्क़ो नियाज़॥

(६१)

मी पुरसीदी कि चीस्त ईं नक़्शे मजाज़।
गर बर गोयम हक़ीक़तश हस्त दराज़॥
नक़्शेस्त पिदीद आमदा अज़ दरियाए।
वाँगाह शुदा बक़ैरे आँ दरिया बाज़॥

लेकर आया था कि कदाचित् ऊपर उड़ने का अवसर प्राप्त हो। परन्तु जब इस संसार में, मैंने किसी को भी अपना भेद समझने वाला न पाया तो फिर मैं जिधर से आया था उधर ही चला गया।

(५९) हम आज प्रेमी हैं। लगन लग रही है। हालत खराब है और मतवाले हो रहे हैं। हम अपनी प्रेमिकाओं के कूचों में मदिरा पान करते रहते हैं। हमें अपने जीवन की तनिक भी चिन्ता नहीं है और आने वाले प्रलय के दिन के कोने में छुपे हुये बैठे हैं।

(६०) यहाँ से सभी लोग चले गये, परन्तु उन जाने वालों में से लौट कर कोई भी नहीं आया। अतएव पर्दे के भीतर का रहस्य ज्यों का त्यों गुप्त बना हुआ है। तेरा काम यदि पूरा होगा तो नम्रता और विनय से, न कि दिखावटी पूजा से। जिस वस्तु में सत्यता तथा नम्रता नहीं है, वह बच्चों के खेल से बढ़ कर नहीं है।

(६१) तू मुझसे इस बाह्य सौन्दर्य के विषय में पूछता है? यदि मैं आदि से लेकर अन्त तक इसका वर्णन करूँ तो वह बहुत लम्बा हो जायगा। वास्तव में प्रकट यह होता है कि यह जीवन एक नदी से उत्पन्न हुआ है, और फिर उसी में जाकर विलुप्त हो जाता है।

ईं जा के न याफ़तम् कसे महरमे राज़।
जाँ दर के दरामदम् बुरूँ रफ़्तम बाज़॥

(५९)

मा आशिक़े आशुफ़्ताओ मस्तेम इमरोज़।
दर कूए बुताने वादा परस्तेम इमरोज़॥
अज़ हस्तिए ख़ेशतन बगुले रूस्ता।
पैवस्ता व मेहरावे अलस्तेम इमरोज़॥

(६०)

रफ़्तन्द जे रफ़्तगाँ यके न आमद बाज़।
ता वा तू बगोयद अज़ पसे पर्दए राज़॥
कारत जे नियाज़ मी कुशायत न निमाज़।
बाज़ीचा बुवद निमाज़ वे सिद्क़ो नियाज़॥

(६१)

मी पुरसीदी कि चीस्त ईं नक़्शे मजाज़।
गर बर गोयम हक़ीक़तश हस्त दराज़॥
नक़्शेस्त पिदीद आमदा अज़ दरियाए।
बाँगाह शुदा बक़ैरे आँ दरिया बाज़॥

लेकर आया था कि कदाचित् ऊपर उड़ने का अवसर प्राप्त हो। परन्तु जब इस संसार में, मैंने किसी को भी अपना भेद समझने वाला न पाया तो फिर मैं जिधर से आया था उधर ही चला गया।

(५९) हम आज प्रेमी हैं। लगन लग रही है। हालत खराब है और मतवाले हो रहे हैं। हम अपनी प्रेमिकाओं के कूचों में मदिरा पान करते रहते हैं। हमें अपने जीवन की तनिक भी चिन्ता नहीं है और आने वाले प्रलय के दिन के कोने में छुपे हुये बैठे हैं।

(६०) यहाँ से सभी लोग चले गये, परन्तु उन जाने वालों में से लौट कर कोई भी नहीं आया। अतएव पर्दे के भीतर का रहस्य ज्यों का त्यों गुप्त बना हुआ है। तेरा काम यदि पूरा होगा तो नम्रता और विनय से, न कि दिखावटी पूजा से। जिस वस्तु में सत्यता तथा नम्रता नहीं है, वह बच्चों के खेल से बढ़ कर नहीं है।

(६१) तू मुझसे इस बाह्य सौन्दर्य के विषय में पूछता है? यदि मैं आदि से लेकर अन्त तक इसका वर्णन करूँ तो वह बहुत लम्बा हो जायगा। वास्तव में प्रकट यह होता है कि यह जीवन एक नदी से उत्पन्न हुआ है, और फिर उसी में जाकर विलुप्त हो जाता है।

(६२)

ऐ वाक़िफ़े असरारे ज़मीरे हमाकस।
दर हालते इज्ज दस्तगीरे हमाकस॥
यारब तो मरा तौबा देहो उज़्रेपज़ीर।
ऐ तौबा देहो उज़्रेपज़ीरे हमा कस॥

(६३)

पंदे देहमत अगर वमनदारी गोश।
अज़ वहे खुदा जामए तज़्वीर मपोश॥
उक़्बा हमा रोज़स्त दुनिया यकदम।
अज़ वहे दमे मुल्के अबद मफ़रोश॥

(६४)

वगुज़ार दिला वसवसए फ़िक्रे मोहाल।
दर कश क़दहे बादओ बुगुज़र जे मलाल॥
आज़ाद शओ मुज़र्रदो बादा परस्त।
ता मर्द शवी रसी वसर हदे कमाल॥

(६५)

मै खुर कि न इल्म दस्तगीरद न अमल।
इल्ला करमो रहमते हक़्क़े इज्जो जल॥
आँ तायफ़ए कि अज़ ख़िरे मै न खुरन।
अज़ जुम्लए अनआम शुमाराए अहवल॥

---

(६२) हे ईश! तू प्रत्येक मनुष्य के गुप्त से गुप्त भेदों से परिचित है और लाचारी तथा दुखद अवस्था में सब की सहायता करता है। भगवन्! मुझे पापों से बचने की शक्ति प्रदान कर। तू सभी की प्रार्थना सुनता तथा स्वीकार करता है।

(६३) यदि तुम मेरी बात मानो तो मैं तुमको एक शिक्षा देता हूं। परमेश्वर के लिये कपटी मत बनो। छल-छद्म का जामा मत पहनो। सचाई एक ऐसी वस्तु है जो सदैव रहती है और परलोक तक साथ देती है। तनिक सी बात के लिये अपना परलोक मत बिगाड़ो।

(६४) ऐ हृदय! व्यर्थ की चिन्ताओं के झमेले में अपने आपको मत डाल। मदिरा का एक प्याला पीले और शोक को अपने हृदय में स्थान मत दे। स्वतंत्र, बन्धन-हीन और मदिरा-सेवी बन जा, जिससे मनुष्य के समान अपने पूर्ण पद को प्राप्त कर सके।

(६५) मदिरा पान कर मनुष्य बन जा! पर ज्ञान न तो तेरी किसी प्रकार की सहायता ही करेगा और न उसके उपयोग से कोई लाभ ही

(७३)

मन बादा ख़ुरम वलेक मस्ती न कुनम।
अला बक़्दए दराज़ दस्ती न कुनम॥
दानी ग़रज़म ज़े मै परस्ती चे बुवद।
ता हमचो तू ख़ेशतन परस्ती न कुनम॥

(७४)

मा ख़िर्क़ए ज़ोहद दर सरे ख़ुम करदेम।
वज़ ख़ाके ख़राबात तयम्मुम करदेम॥
बाशद कि दरूने मैकदा दरयाबेम।
उम्रे कि दरूने मदरसा गुम करदेम।

(७५)

यारब मन अगर गुनाह बेहद करदम।
बर जानो जवानीओ तने ख़ुद करदम॥
चूँ बर करमत बसूक़े कुल्ली दारम।
बरगश्तमो तौबा करदमो बद करदम॥

(७६)

चंदाँके ज़ेख़ुद नेस्त तरम हस्त तरम।
हरचंद बलंद पायातर पस्त तरम॥
ज़ीं तुर्फ़ा तर आँके अज़ शरावे हस्ती।
हर लहज़ा तू हुशियार तरम मस्त तरम॥

---

(७३) मैं मदिरा अवश्य पीता हूँ परन्तु मस्ती नहीं दिखलाता, और सागर को छोड़ किसी दूसरी वस्तु की तरफ़ हाथ भी नहीं बढ़ाता। तुम बता सकते हो कि शराब पीने से मेरा क्या आशय है? यह कि तुम्हारे समान अपने आपे को न समझूँ।

(७४) मदिरा के लिये मैंने परहेज़गारी से हाथ खींच लिया और शराब-खाने की धूल से वज़ू कर लिया। ऐसा मैंने इस लिये किया कि शिक्षालय में अपनी उम्र का जितना भाग व्यतीत किया है, उसे पुनः प्राप्त करलूं।

(७५) हे भगवन! अपनी युवावस्था में, अपने इस शरीर तथा प्राणों से मैंने इतने अपकर्म किये हैं, जिनकी गणना नहीं की जा सकती। परन्तु मुझे तेरी कृपा का पूरा विश्वास है इसी लिये मैं ने अपकर्मों से हाथ खींच लिया है और बुराई को त्याग दिया है।

(७६) मैं जितना ही अपने आपे को मिटाता जाता हूँ, उतना ही मेरा जीवन बढ़ता जा रहा है और जितना ही अधिक अपने ऊँचे होने का घमंड करता हूँ, उतना ही अधिक पतन की तरफ़ जा रहा हूँ। इससे भी विलक्षण एक और बात है। इस जीवन की तरफ़ से जितना ही सतर्क हो रहा हूँ, उतना ही उसमें और फँसता जा रहा हूँ।

(८१)

ताबे तवानी खिदमते रिंदाँ मी कुन।
तुनिसादे निमाजो रोजा वीराँ मी कुन॥
नशिनो सखुने रास्त जे "खय्याम उमर"।
मै मी खुरो रह् मी जनो यहसाँ मी कुन॥

(८२)

तुए आज हमा नाकसाँ निहाँदारी तू।
राज आज हमा अवलदाँ निहाँदारी तू॥
तिनिगर कि मिसाने मर्दुमा कारे तू चीस्त।
चरम आज हमा मर्दुमा निहाँदारी तू॥

(८३)

ऐ जिन्दगिए तनो तवानम हमा तू।
जाने न दिले ऐ दिलो जानम हमा तू॥
तू हस्तिए मन शुदी अज आनम हमा तन।
मन नेस्त शुदम दर तू अजानम हमा तू॥

(८४)

कर चर्मो यराकमो गर फीरोजा।
मानन्द मनी व दौलते दह रोजा॥
आप्त ऐसे फलक हेच कसे जाँ न बरद।
इमरोज तुए शिकमो फरदा कोजा॥

(८५)

मालेम नमूदे हक नवदा करदा।
यज्ञ नालानो मालियत नवनी करदा॥
मौला कि दुनायते तू आजाद आजाद।
मा करदा ऐं करदा करदा ऐं न करदा॥

(८६)

ऐ नेक न करदा वर्दाश करदा।
अंगाह नकूने हक नवदा करदा॥
दर आप मकून नकिया कि दुरगिज न बुवद।
मा करदा ऐं करदा करदा ऐं ना करदा॥

(८७)

ऐ दर रहे बंदगियत यकसाँ कदो मेह।
दर दर दो जहाँ खिदमते दरगाहे तू बेह॥
नकवत तू मितानीओ सआदत तू देही।
यारय तू वफजले खेश बिखतानों बदेह॥

(८८)

अज आतशो बादो आब खाकेम हमा।
दर आलमे कौन दर हलाकेम हमा॥
ता तन वा मास्त दर जकाएम हमा।
ऐं तन बरबद रवाने पाकेम हमा॥

यदि आज घड़ा फूटता है तो कल कूजा भी टूट जायगा। यदि आज विजय है तो कल पराजय भी अवश्यम्भावी है।

(८५) मैं अब ईश्वर की दया का भिखारी बन गया हूँ। पूजा-पाठ इत्यादि सभी का परित्याग कर चुका हूँ। कारण कि जहाँ उसकी कृपा होगी वहाँ बदी भी नेकी मे परिणत हो जायगी।

(८६) हे मनुष्य! तूने शुभ कर्म तो एक भी नहीं किया है, हाँ अपकर्म अवश्य बहुत किये हैं। परन्तु इस पर भी तू ईश्वर की दया पर भरोसा रखता है। क्षमा तुझे प्राप्त नहीं हो सकती। जो कुछ हो चुका है वह मिट नहीं सकता और जो कुछ हुआ नहीं है वह हो नहीं सकता।

(८७) हे भगवन! तेरी भक्ति के मार्ग में सब समान हैं। किसी प्रकार का भी अन्तर नहीं है। और दोनों लोकों में तेरी ही सेवा सर्वश्रेष्ठ है। तू मनुष्य की दुर्बुद्धि को लौटा कर सुबुद्धि उसे प्रदान करता है। हे परमात्मन्! दया कर और यह लेन-देन कर ले।

(८८) हम सब मनुष्य अग्नि, पवन और वायु से मिल कर बने हैं। और इस जीवन के बन्धनों में पड़ कर जन्म मृत्यु के चक्कर में पड़े हुए हैं।

(८९)

गह गश्ता निहाँ रू वकस ननुमाई।
गह दर सोवे कौनों मकाँ पैदाई॥
वीं जलवागरी वख़ेश्तन वनुमाई।
ख़ुद ऐन अयानी व ख़ुदी वीनाई॥

(९०)

ऐ दिल अगर अज़ ग़ुबार तन पाक शवी।
तू रूहे मुजस्समी वर अफ़लाक शवी॥
अर्शस्त नशीमनें तू शरमत बादा।
काई व मुक़ीम ख़ित्तए ख़ाक शवी॥

(९१)

चूँ मी न रवद व इख़्तियारत कारे।
ख़ुश वाश दरीं नफ़स कि हस्ती वारे॥
चूँ वाक़फ़ीए ऐ पिसर ज़े हर असरारे।
चन्दीं चे वरी बेहूदा हर तीमारे॥

(९२)

वर गीर ज़े ख़ुद हिसाव अगर वा ख़वरी।
कव्वल तू चे आवर्दी व आख़िर चे वरी॥

जव तक यह शरीर हमारे साथ रहेगा तव तक हमें वहुत से कष्ट उठाने पड़ेंगे परन्तु इसके दूर होते ही सव कष्ट सदैव के लिये दूर हो जावेंगे और पवित्र प्राण ही प्राण रह जायेंगे।

(८९) उसके रंग निराले हैं। कभी तो पर्दे के अन्दर छुपा रहता है और अपना मुख किसी को भी नहीं दिखलाता और कभी इस संसार की प्रत्येक सूरत में अपना जलवा दिखलाता है। तू स्वयम् यह नये-नये रूप धारण करता है। कभी तो ऐसा हो जाता है कि दिखलाई पड़ता है और कभी स्वयं दृष्टि वन जाता है।

(९०) हे हृदय! यदि शरीर के साथ तेरा सम्वन्ध न रहे, यदि वह तुझसे पृथक् कर दिया जावे, तो आत्मा के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं रह जायगा। वस फिर तू आकाश तक पहुँचने योग्य हो जायगा। तेरे रहने का स्थान आकाश पर है, इस पृथ्वी पर नहीं। अतएव तुझे इस वात के लिये लज्जा आनी चाहिये कि उस ऊँचे स्थान से गिर कर तू यहाँ पर अपना जीवन व्यतीत कर रहा है।

(९१) जव कोई कार्य तुम्हारी शक्ति से परे है तो जो कुछ कर सकते हो उसी पर प्रसन्न रहो। अरे भाई! जव तुम सभी भेदों को जानते हो तो व्यर्थ में, इन वन्धनों में पड़ कर, इतने कष्ट क्यों उठा रहे हो?

(९२) यदि तुममें कुछ ज्ञान है, तो अपने ही कर्मों का अपनी ही

गोई न ख़ुरम बाश कि मी बायद ख़ुर्द।
मी बायद ख़ुर्द गर ख़ुरी वरना ख़ुरी॥

(९३)

रौ बेख़बरी गुज़ीं अगर आगहरी
ता अज़ कफ़े मस्ताने अज़ल बादा ख़ुरी
तू बेख़बरी बेख़बरी कारे तू नेस्त
हर बेख़बरे रा न रसद बेख़बरी॥

(९४)

गर आमदनम बख़ुद बुदे ऐश मरा
वर नीज शुदने बमन बुदे कैश मरा
वे ओं न बुदे कि ऐदरी बैं नायद
न आमदमे न शुदमे न हेचम॥

(९५)

ग़ाफ़ी कि पनंदीशद ऐशश बाकी
मग़रूरे फ़रूमांदे ख़ानश बाकी
अन्दर पए मौजिदो नमूदो नायद
बदगू मबाश ता निशे नेश बाकी

वासनाओं की पूर्ति के लिये किये हुए कामों पर विचार न
तुम इस संसार में आए हो तो सदैव के लिए नहीं
क्या ले जाओगे। तुम यह जानते हो कि मरना
मरना तो है ही, जियो या न जियो

(९३) यदि तुम बुद्धिमान हो तो ऐसा
आनंद, मुख के बदले में
सकते। तुम बेख़बर हो तो
तुम बेख़बरों को भी

(९४) यदि मैं
भी न
कर मेरा
मेरा न

(९५) तुम
कहते हो मुझे
मदमस्त
मैं कर, जिसके

(८९)

गह गश्ता निहाँ रू वकस ननुमाई।
गह दर सोवे कौनों मकाँ पैदाई॥
वीं जलवागरी वख़ोशतन वनुमाई।
ख़ुद ऐन अयानी व ख़ुदी वीनाई॥

(९०)

ऐ दिल अगर अज़ ग़ुवार तन पाक शवी।
तू रूहे मुजस्समी वर अफ़लाक शवी॥
अर्शस्त नशीमने तू शरमत वादा।
काई व मुक़ीम ख़ित्तए ख़ाक शवी॥

(९१)

चूँ मी न रवद व इख़्तियारत कारे।
ख़ुश वाश दरीं नफ़स कि हस्ती वारे॥
चूँ वाक़फ़ीए ऐ पिसर ज़े हर असरारे।
चन्दीं चे वरी वेहूदा हर तीमारे॥

(९२)

वर गीर ज़े ख़ुद हिसाव अगर वा ख़वरी।
कव्वल तू चे आवर्दी व आख़िर चे वरी॥

जव तक यह शरीर हमारे साथ रहेगा तव तक हमें वहुत से कष्ट उठाने पड़ेंगे परन्तु इसके दूर होते ही सव कष्ट सदैव के लिये दूर हो जावेंगे और पवित्र प्राण ही प्राण रह जायेंगे।

(८९) उसके रंग निराले हैं। कभी तो पर्दे के अन्दर छुपा रहता है और अपना मुख किसी को भी नहीं दिखलाता और कभी इस संसार की प्रत्येक सूरत में अपना जलवा दिखलाता है। तू स्वयम् यह नये-नये रूप धारण करता है। कभी तो ऐसा हो जाता है कि दिखलाई पड़ता है और कभी स्वयं दृष्टि वन जाता है।

(९०) हे हृदय! यदि शरीर के साथ तेरा सम्वन्ध न रहे, यदि वह तुझसे पृथक् कर दिया जावे, तो आत्मा के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं रह जायगा। वस फिर तू आकाश तक पहुँचने योग्य हो जायगा। तेरे रहने का स्थान आकाश पर है, इस पृथ्वी पर नहीं। अतएव तुझे इस वात के लिये लज्जा आनी चाहिये कि उस ऊँचे स्थान से गिर कर तू यहाँ पर अपना जीवन व्यतीत कर रहा है।

(९१) जव कोई कार्य तुम्हारी शक्ति से परे है तो जो कुछ कर सकते हो उसी पर प्रसन्न रहो। अरे भाई! जव तुम सभी भेदों को जानते हो तो व्यर्थ में, इन वन्धनों में पड़ कर, इतने कष्ट क्यों उठा रहे हो?

(९२) यदि तुममें कुछ ज्ञान है, तो अपने ही कर्म्मों का, अपनी ही

गोई न .खुरम बादा कि मी बायद मुर्द।
मी बायद मुर्द गर .खुरी वरना .खुरी॥

(९३)

रौ बेख़बरी गुज़ीं अगर बाख़बरी।
ता अज़ कफ़े मस्ताने अजल बादा .खुरी॥
तू बेख़बरी बेख़बरी कारे तू नेस्त।
हर बेख़बरे रा न रसद बेख़बरी॥

(९४)

गर आमदनम बख़ुद बुदे नाम दमे।
वर नीज शुदने बमन बुदे कै शुदमे॥
बे चाँ न बुदे कि अंदरीं दैरे ख़राब।
न आमदमे न शुदमे न बुदमे॥

(९५)

ख़ाही कि पसंदीदए अनाम शवी।
मक़बूले क़बूले ख़ासओ आम शवी॥
अन्दर पए मौमिनो जहूदो तरसा।
बदगू मबाश ता निको नाम शवी॥

वासनाओं की पूर्ति के लिये किये हुए कार्यों का हिसाब कर लो। देखो, जब तुम इस संसार में आए थे तो साथ में क्या लाए थे, और यहाँ से जाते समय क्या ले जाओगे। तुम यह कहते हो कि मरना ज़रूरी है मैं शराब न पिऊँगा। मरना तो है ही, पियो या न पियो।

(९३) यदि तुम बाख़बर हो तो बेख़बर बन जाओ। जिससे प्रणय में पागल, मृत्यु के बन्धनों से रहित, मतवालों के हाथ की मदिरा का स्वाद ले सको। तुम बेख़बर हो और सुस्ती करना तुम्हारा काम नहीं है। प्रत्येक बेख़बर और मतवाले को यह अधिकार नहीं है कि वह वास्तविक रूप में ऐसा हो जावे।

(९४) यदि इस संसार में आना मेरे अधिकार में होता तो मैं यहाँ कभी भी न आता, और यदि जाना मेरे हाथ में होता तो मैं क्यों जाता? इससे बढ़ कर कोई भी बात न होती कि मैं इस ऊजड़ स्थान में न आता, न जाता और न रहता।

(९५) तुम में सर्वप्रिय बनने की इच्छा होनी चाहिये। ऐसा करो जिससे सब लोग तुम्हें पसन्द करें और अपने सम्बन्धी तथा अन्य लोग भी तुम्हें अच्छा समझें। तू मोमिन, यहूदी तथा गत्र की बुराई उनकी अनुपस्थिति में मत कर, जिससे लोग तुझे अच्छा समझें।

(९६)

वामन तो हर उच्चे गोई अज कीं गोई।
पैवस्ता मरा मुलहिदो बेदीं गोई॥
मन ख़ुद मुक़द्दम हर उच्चे गोई हस्तम।
इन्साफ़ बेदेह तुरा रसद कीं गोई॥

(९७)

मा दर्द क़नाअत कुनो आज़ाद वज़ी।
दर बन्दे फ़ज़ूनी मशो आज़ाद वज़ी॥
मुनिगर बफ़ज़ूनी ज़े ख़ुदी ग़ुस्सा मख़ुर।
दर कम ज़े ख़ुदी निगह कुनो शाद वज़ी॥

(९८)

ता दर हविसे लालो लवो जामे मै।
ता दरपए आवाज़े दफ़ो चंगो नै॥
ईंहा हमा हशवस्त ख़ुदा मीदानद।
ता तर्के तअल्लुक़ न कुनी हेचे नै॥

(९९)

हरचन्द ज़े दस्ते दह ग़मकश वाशी।
दर जौरो जफ़ाए चर्ख़ ता ख़ुश वाशी॥
ज़िनहार ज़े दस्ते ना कसाँ आबे ज़ुलाल।
वर लब मचकाँ अगर दर आतश वाशी॥

---

(९६) तू मुझे बुरा समझता है। जो कुछ भी कहता है, वह शत्रुता से। इसी लिये तू मुझे सदैव अहंकारी तथा विधर्मी कहा करता है। मैं स्वयम् इस बात को मानता हूँ कि तू मुझे जैसा कहता है, वास्तव में मैं वैसा ही हूँ। परन्तु तनिक न्याय की दृष्टि से देख कि तुझे यह कहना उचित है अथवा नहीं।

(९७) आपत्तियों को धैर्य के साथ सहन कर और स्वतंत्र जीवन व्यतीत कर। अधिक लाभ करने की इच्छा मत कर और निश्चिन्त होकर रह। जो तुझसे बढ़ कर है उससे ईर्ष्या मत कर और न वैसा बनने की चिन्ता कर। जो तुझसे कम है, उसकी तरफ़ देख और सदैव आनन्दित रह।

(९८) सांसारिक प्रलोभनों में व्यस्त रहना, नाच-रंग का इच्छुक होना, उचित नहीं है। ईश्वर ख़ूब जानता है कि इन बातों में कोई सार नहीं है। यदि कुछ करना चाहते हो तो संसार के प्रति अपने बन्धनों को तोड़ दो। त्याग ही सब कुछ है।

(९९) समय के चक्कर में पड़ कर तुम विपत्तियाँ उठा रहे हो। भाग्य

(१००)

बादर्द बेसाज़ ता दवाए यावी।
अज़ दर्द मनाल ता शेफ़ाए यावी॥
मी बाश बबस्के बेनवाई शाकिर।
ता आक़बतुल अम्र नवाए यावी॥

(१०१)

गर शादीए खेशतन दरीं मीदानी।
का सूदा दिले रा बगमे बेनिशानी॥
दर मातमे अक़्ले खेश बेनशीं हमाँ उम्र।
मीदार मुसीबत कि अजब नादानी॥

(१०२)

हंगामे सुफेदा दमे ख़ुरोसे सहरी।
दानी कि चरा हमी कुनद नौहागरी॥
यानी कि नमूदन्द दर आईनए सुब्ह।
कज़ उम्र शबे गुज़श्तो तू बेख़बरी॥

(१०३)

ऐ सोख़्तए सोख़्तए सोख़्तनी।
बै आतिशे दोज़ख अज़ तू अफ़रोख़्तनी॥

तुम्हें रुला रहा है। पर इस पर भी सावधान रहो। आग में पड़े हुए होने पर भी ईश्वर-विमुख मनुष्यों के हाथों का ठण्डा पानी होठों से न लगाना।

(१००) आपत्तियों को झेलते रहो, जिससे तुम्हें उनसे बचने की कोई औषधि मिल जावे। पीड़ा के विरुद्ध आवाज़ मत उठाओ ताकि उसके लिये कोई दवा मिल जावे। आश्रय हीन होने पर भी कृतज्ञता का भाव हृदय से दूर मत करो, ताकि तुम्हें कुछ प्राप्त हो जावे।

(१०१) यदि तुम किसी चिन्ता रहित व्यक्ति को विपत्तियों में फँसा देने से ही प्रसन्न हो सकते हो तो अपनी बुद्धि पर खेद प्रकट करो। अपनी नादानी पर शोक करो और अपना समस्त जीवन इसी पश्चात्ताप में व्यतीत कर दो

(१०२) प्रभात काल के धुँधले प्रकाश में—बहुत तड़के ही, मुर्ग क्यों बाँग दिया करता है? उसके चिल्लाने का आशय तुमको सचेत करना है। वह कहता है कि तुम्हारे जीवन की एक रात व्यर्थ में व्यतीत हो गई है। अब उठो और सावधानी से अपना कार्य करो।

(१०३) हे जले-भुने हुए और जला डालने योग्य मनुष्य! तू इतना

इनका नाम था इलियास अबू मुहम्मद। इनकी रचनाएँ अधिकतर आत्म-संबंधी न होकर शिक्षाप्रद कहानियों के रूप में हैं। उनमें वही भाव हैं जो "फ़िर्दौसी" की रचनाओं में। परन्तु अन्तर भी है। जैसा कि लिबी ने लिखा है, "इनके विषयों का संबंध स्वयं अपने आप से है। उनमें शृंगार रस की प्रधानता है। "फ़िर्दौसी" ने अपनी कविता में अधिकतर प्राचीन वीरों के वीरोचित कृत्यों का निरूपण किया है। परन्तु इन्होंने ऐसा नहीं किया है। हालांकि इन विषयों की कमी नहीं थी। इनकी रचनाओं को हम 'रोमान्स' के नाम से पुकार सकते हैं। इन्हें काव्य कहना उपयुक्त न होगा। यह ईरान के प्राचीन और बड़े बड़े कवियों में हैं। इनमें अपने विषय को वर्णन करने की शक्ति समुन्नत अवस्था में वर्तमान थी और उपयुक्त शब्दों और भाषा पर भी इनका पूर्ण अधिकार था। इनकी कल्पना ऊँची उड़ान उड़ने वाली थी। उसमें माधुर्य्य के अतिरिक्त करुण रस का भी अच्छा समावेश रहता था। प्रोफ़ेसर ब्राउन ने एक स्थान पर लिखा है, "इस देश (ईरान) के बड़े बड़े कवियों में आपका नम्बर तीसरा है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि रोमान्टिक मसनवी के लिखने में इन्हों ने कमाल दिखलाया है। ईरान और टर्की दोनों में इनकी ख्याति अभी तक बनी हुई है।" इनकी रचनाओं में भावों की गम्भीरता के अतिरिक्त आकर्षण भी है। "मख़ज़नुल असरार" जिसमें से कई एक पद मैंने दिये हैं, एक रहस्यवाद से सम्बन्ध रखने वाली रचना है और "सनाई" के "हदीक़ा" तथा "रूमी" की मसनवी के ढंग में लिखी गई है। मैंने कुछ पद इनके खुसरो-शीरीं से भी उद्धृत किये हैं, जो कि एक प्रकार से आत्मचरित ही के समान हैं। इससे विदित होता है कि इनमें रहस्यवाद भी था।

मुख्य मुख्य रचनाएँ :—

मख़ज़नुल असरार।

खुसरो-शीरीं।

लैला मजनूं

हफ्त पैकर

सिकन्दरनामा।

गुफ़्तार दर बाज़ जुस्तने दिल

हातिफ़े ख़िलवत बमन आवाज़ दाद।
दाम चुना कुन कि तवाँ बाज़ दाद॥
आद दरीं आतशे पाकत चरास्त।
बाद जुनेबत करो ख़ाकत तुरास्त॥
ख़ाके तबारिन्दह बतावूत दश्श।
आतशे ताबिंदा दयाकूत दश्श॥
ग़ाफ़िल अज़ीं बेश न बायद नशास्त।
दर दरे दिल रेज़ गर आबंत हस्त॥
दर ख़मे ईं ख़म कि कबूदे ख़शास्त।
क़िस्सए दिल गो कि सेरादे ख़शास्त॥
दूर शौ अज़ राहे ज़नाने हवास्त।
राहे तौ दिल दाँ दो दिल रा शनास्त॥
अर्श परानें कि ज़े तन रस्ता अन्द।
शहपरे जिबरील बरो बस्ता अन्द॥

हृदय की खोज का ज़िक्र

एकान्त में, भविष्य के पुकारने वाले ने मुझे आवाज़ लगाई कि इतना ही ऋण ले जितना चुका सके।

तेरी इस पवित्र अग्नि में जल क्यों सम्मिलित है? और वायु तेरी मिट्टी को ऊपर क्यों उड़ाता है?

इस ताप को बढ़ाने वाली मिट्टी को अपनी समाधि के प्रति अर्पण कर दे और चमकती हुई अग्नि अपनी आत्मा के हाथ में सौंप दे।

इससे अधिक सुस्त बैठे रहना उचित नहीं है यदि तुझ में किसी प्रकार सज धज शेष है तो हृदय-मन्दिर के द्वार पर चल

इसी संसार के सदृश आकाश के अन्दर अपने हृदय के इस राज़ का वर्णन कर जो बहुत ही कम कहा जाता है

बासनाओं से रहित हो जा तेरा मर्म यदि किसी को ज्ञात है तो दिल को अलग इसी से सम्बन्ध कर

जो लोग अपने शरीरों को छोड़कर ऊपर उठ गये हैं—जिन्होंने ज्ञान प्राप्त कर लिया है—उन्होंने हृदय को स्वर्गीय दूत जिब्रील की बादशाही समझ कर ली है।

वाँके अना अज्दो जहाँ ताफ़तन्द।
क़ूत ज़े दरयूज़ए दिल याफ़तन्द॥
दीदओ गोशपुरअज़ ग़रज़ अफ़ज़ूनी अन्द।
कारगरे परदए बेरूनी अन्द॥
पुंवा दर आगनदा चोगुल गोशे तो।
नरगिसे चश्म आबलए होशे तो॥
नरगिसो गुल रा चे परस्ती बबाग़।
ए ज़े तो हम नरगिसो हम गुल बदाग़॥
दीदा कि आईना हर नाकस अस्त।
आतशे ऊ आबे जवानी बसस्त॥
तबा कि बा अक़्ल बदल्लाल गीस्त।
मुन्तज़िरे नक़्दे चेहल साल गीस्त॥
ता ब चेहल साल के बालिग़ शबद।
ख़र्जे सफ़र हाश मबालिग़ शबद॥
बार कनूँ बाएदत अफ़सूँ मरब्बा।
दर्स चेहल सालगी अकनूँ बेरब्बा॥

जिन लोगों ने संसार से मुख मोड़ लिया है, उन्होंने भीख माँगने की शक्ति हृदय से ही प्राप्त की है।

आँख और कान इच्छाओं के कारण प्रदान किये गये है। इनका सम्बन्ध केवल स्थूल शरीर तथा संसार के बाह्य सौन्दर्य से है।

तेरे कानों में गुलाब के पुष्प के समान रुई भरी हुई है और तेरे नेत्रों का नरगिस तेरी बुद्धि का छाला है।

तू उपवन में जाकर नरगिस और गुलाब के पुष्पों पर क्यों मोहित हो रहा है? यह दोनों स्वयम् तेरे प्रेम में मतवाले हो रहे हैं।

तेरे नेत्र भली और बुरी, दोनों प्रकार की वस्तुओं को देखते हैं। जब तक युवावस्था की चमक है उनमें भी शोभा है।

इच्छा, जो कि बुद्धि को दलाल बनाए हुए है उस समय की प्रतीक्षा में है, जब तू चालीस वर्ष का हो जावेगा।

जिस समय तू चालीस वर्ष का होगा उस समय इच्छा की भी उछल-कूद समाप्त हो जायगी। उसमें शान्ति तथा गम्भीरता आ जायगी। परन्तु उस समय तक उसके मार्ग-व्यय का लेखा-जोखा बहुत बढ़ जायगा। उसके कार्यों की सूची बहुत लम्बी हो जायगी।

अब तुझे कोई सहायक मंत्र मिलना चाहिये। व्यर्थ की बातों से कोई लाभ नहीं है। चालीस वर्ष व्यतीत हो जाने की प्रतीक्षा कर।

दस्त बर आवर जे मियाँ चारा जूए।
ईं ग़मे दिल दिले ग़मख़ार जूए॥
ग़म मख़ुर अलवत्ता चो ग़मख़ार हस्त।
गरदने ग़म बिशकन अगर यार हस्त॥
हर नफ़से रा कि ज़बूने ग़मस्त।
यारीए यारां मददे मोहकमस्त॥
चूँ नफ़से ताज़ा शवद बादो कस।
नेस्त शवद सद ग़म अज़ाँ यक नफ़स॥
सुब्हे नख़ुस्पी चो नफ़स बर ज़नद।
सुब्हे दोवम बाँग बर अख़तर ज़नद॥
बेशतरीं सुब्ह बख़ारी रसद।
गर नपसीं सुब्ह बयारी रसद॥
अज़ तो नआयद बतो बर हेच कार।
यार तलब कुन कि बर आयद ज़े कार॥
गरचे हमाँ ममलुकते ख़्वार नेस्त।
चूँ निगरम हेच बेहज़ यार नेस्त॥
हस्त ज़ियारी हमारा न गुज़ीर।
ख़ासा ज़े यारे कि बुवद दस्तगीर॥

प्रयत्न करने के लिये हाथ फैला और हृदय के शोक को कम करने के लिये, अपने साथ समवेदना प्रगट करने वाले किसी अन्य हृदय को खोज निकाल।

जब तेरे प्रति सहानुभूति प्रगट करने वाला कोई है, तो किसी प्रकार की चिन्ता न कर। मित्र की उपस्थिति में दुख को अलग भगा दे।

जो हृदय दुख के भार से दबा हुआ है, उसके लिये मित्रों का होना बहुत ही उत्तम है।

दो आदमियों के साथ कुछ समय के लिये मन-बहलाव होता है और उसी कुछ समय में सैकड़ों दुख दूर हो जाते हैं।

जब पहला प्रभात अपनी उज्ज्वलता लेकर प्रकट होता तब वह आकर तारों को डांट बताता है।

यदि यह दूसरा प्रभात सहायता न दे तो पहले प्रभात को लज्जित होना पड़े।

तू स्वयम् अपने कार्य को पूर्ण करने में असमर्थ है। अतएव किसी ऐसे मित्र की खोज कर जो तेरे कार्य को पूर्णता तक पहुँचा सके।

सारा देश इतना हेय तथा तुच्छ नहीं है, परन्तु जब मैं ध्यान से देखता हूँ तो मित्र से बढ़ कर कोई अन्य ज्ञात नहीं होता।

सभी को एक मित्र की आवश्यकता होती है और विशेषकर ऐसे मित्र की जो सहायता कर सके।

ईं दो से यारे कि तू दारी तरन्द।
ख़ुशकतर अज़ हलक़ए दर वर दरन्द॥

दस्त दरआवेज़ वफ़ित्राके दिल।
आवे तो वाशद कि शवी ख़ाके दिल॥

चूँ मलिकुलअर्श जहाँ आफ़रीद।
ममलुकते सूरते जाँ आफ़रीद॥

दाद वतरतीवे करम रेज़िशी।
सूरतो जाँरा वहम आमेज़िशी॥

जीं दो हम आग़ोश दिल आमद पिदीद।
आँ ख़लफ़े कू वाख़िलाफ़त रसीद॥

दिल कि वदो ख़ुतवए सुलतानिअस्त।
अक़्दशे रूहानीओ जिसमानिअस्त॥

नूरे अदीमत ज़े सुहैले वैअस्त।
सूरतो जाँ हर दो तुफ़ैले वैअस्त॥

चू सख़ुने दिल वदिमाग़ाम रसीद।
रौग़ने मग़ज़े वचिराग़ाम रसीद॥

गोश दराँ हलक़ा ज़वाँ साख़तम।
जान हदफ़ हातिफ़े जाँ साख़तम॥

तेरे दो-तीन मित्र हैं। तू उन्हें बहुत ही अच्छा समझता है। परन्तु वे तुझे किसी प्रकार की सहायता नहीं दे सकते।

अतएव तू हृदय के पल्ले को ख़ूब सँभाल कर थाम ले। यदि तू हृदय का सहारा पकड़ लेगा तो तेरी प्रतिष्ठा बढ़ जायगी।

स्वर्ग के स्वामी ने सृष्टि की रचना की, और उन देशों को बनाया जहाँ मनुष्य रहते हैं, जिनके शरीर तथा प्राण प्रधान अंग हैं।

अपनी कृपा से उसने शरीर और प्राणों को एक किया।

उस समय इन दोनों के संसर्ग से मन उत्पन्न हुआ। यह वही बालक था जो आगे चलकर विरोधी के रूप में पाया जाता है।

मन वही वस्तु है जो शरीर तथा आत्मा का सार समझा जाता है। इसी के कारण मनुष्य की बादशाही भी है।

तुझ में उसी का प्रकाश है और शरीर तथा प्राण उसी के साथी हैं।

मन की आवाज़ जैसे ही मेरे मस्तिष्क में पहुँची, वैसे ही उसमें ज्ञान का प्रकाश होगया।

अन्तरात्मा में जो पुकार रहा था, अब मैं उसी के ध्यान में मग्न हो गया।

चर्द जबाँ गशतम अज़ाँ फ़रदिही।
तबाजे शादी पुरो अज़ ग़म तेही॥
रेख़तम अज़ चशमए गर्म आबे सर्द।
कातशे दिल देगे मरा गर्म कर्द॥
दस्त दर आवुरदम अज़ाँ दस्त बन्द।
राहज़नों आजिज़ो मन ज़ोर मन्द॥
यक तग अज़ाँ राह दो मंज़िल बुदम्।
ता दयके तग दरे दिल बुदम्॥
मन सूए दिल रफ़तमो जाँ सूए लब।
नीमए उमरम बुदा दर नीम शब॥
दर दरे मक़्सूरए रूहानीयम।
गूए बुदा क़ामते चौगानियम॥
गूए परस्त आमदा चौगाने मन।
दामने दिल गश्त गिरीबाने मन॥
पाए जे सर साख़तओ सर जे पा।
गूए सिफ़त गशतमो चौगाँ नुमा॥
कारे मन अज़ दस्त मन अज़ ख़ुद बुदा।
सद जे यके दीदा यके सद बुदा॥

इस साहस के कारण मेरी मूक वाणी में वाक्-शक्ति आगई, चित्त प्रसन्न हो गया और दुख दूर हो गये।

भारी तथा जलती हुई आँखों से मैंने आँसुओं के रूप में ठण्डे पानी को बहा दिया। कारण कि उसके कारण शरीर में भी तपन थी।

अपने हाथों को भी मैंने बन्धनमुक्त कर लिया और मुझमें इतना बल आगया कि इन्द्रियाँ अब मेरे वश में आ गईं।

दो दिन के मार्ग को मैंने अपनी शक्ति के कारण केवल एक ही दौड़ में पूरा कर लिया और एक ही झपट में दिल के कपाटों तक पहुँच गया।

मन की तरफ़ जाने के प्रयत्न में ही मैं अधमरा सा हो गया और आधी ही रात में मेरी अवस्था भी आधी रह गई

आत्मिक द्वार के सन्मुख पहुँच कर मेरा समस्त शरीर मुलायम हो गया। जो शरीर डण्डे के समान कड़ा था वही गेंद के समान बन गया

मैं उस गेंद के प्रेम में मस्त हूँ और मेरा गुलूबंद मन की चादर का अंचल बना हुआ है।

मैं शिर को पैर और पैर को शिर बना कर गेंद के समान लुढ़कता हुआ आगे बढ़ा। कभी कभी डण्डे के समान सीधा भी खड़ा हो जाता था

इस समय मैं अपने आप में नहीं था। मेरी चेष्टाएँ भी एक प्रकार

हम सफ़रॉं जाहिलो मन नौ सफ़र।
गुरबतम अज बेकसीयम तल्खतर॥
रू ना कजाँ दर बेतवानम गुज़श्त।
पाए दरूँ नै व सरे बाज़गश्त॥
चूँकि दराँ नक़ब ज़वानम गिरिफ़्त।
इश्क़ नक़ीबाना इनानम गिरिफ़्त॥
बरदरे आ महरमे ईं दर मनम।
सर जे बराए तो जे तन बर कनम॥
हलक़ा जदम गुफ़्त दरीं वक़्त कीस्त।
गुफ़्तम अगर बार देही आदमीस्त॥
पेश रवाँ परदा बरन्दाख्तन्द।
परदए तरकीब दरन्दाख्तन्द॥
अज हरमे खासा तरीने सरा।
बाँग बरामद कि "निज़ामी" दरा॥

शिथिल तथा व्यर्थ हो गईं। यहाँ तक कि सो मुझे एक दिखाई पड़ता था। और एक, सौ के रूप में।

अन्य यात्री मेरी अवस्था को समझ नहीं रहे थे और मैं एक नया यात्री था। कोई भी किसी प्रकार की सहायता नहीं देता था, इस कारण, इस यात्रा में मुझे कष्ट अधिक भोगना पड़ा।

मुझ में, दर्वाज़े के भीतर घुसने का साहस नहीं था। पैर भी अन्दर ले जाने के लिये आगे नहीं बढ़ते थे। इसके अतिरिक्त पीछे फिर जाने का ध्यान ही नहीं था।

उस संकीर्ण स्थान पर मेरी जिह्वा रुक गई। उस समय प्रेम मेरा पथ-प्रदर्शक बना।

उसने उत्साहित करते हुए कहा कि द्वार पर आ। मैं इसका भेद जानता हूँ। मैं जहाँ तक हो सकेगा तेरी सहायता करूँगा।

मैंने दर्वाज़े की साँकल बजाई। मन ने पूछा कि इस समय कौन आया है। मैंने उत्तर दिया कि आज्ञा दीजिये तो एक मनुष्य अन्दर आए।

ईश्वरीय सहायता ने नेत्रों के आगे से पर्दा हटा दिया। शरीर को छोड़कर आत्मा पृथक् होगई।

उस राजभवन के, सब से भीतरी भाग से, जिसमें पहुँचना अत्यन्त कठिन था, एक आवाज़ आई कि "निज़ामी" यदि भीतर आना चाहता है तो आजा अ।

खास तरीं महरमे आँ दर शुदम।
गुफ़्त दरूँ आय दरूँ तर शुदम॥
यार गहे याफ़्तम अफ़रोख़ता।
चश्मे बद अज़ दीदने आँ दोख़ता॥
हफ़्त ख़लीफ़ा व यके ख़ाना दर।
हफ़्त हिकायत बयक अफ़साना दर॥
मुल्के अजाँ पेश कि अफ़लाक रास्त।
दौलते आँ ख़ाक कि आँ ख़ाक रास्त॥
दर नफ़स आबाद दमे नीम नोश।
मद्द नशीं गश्त शहे नीम रोज़॥
सुर्ख़ सवारी बजदव पेशे ऊ।
लाल क़बाए ज़फ़र अन्देशे ऊ॥
तल्ख़ जबाने बजकी दर शिकार।
ज़ेर तरे ऊ बसीहए दुर्द ख़ार॥
क़ुन्दे कमीं करदा कमन्द अफ़गने।
सीम ज़ेरा सारुख़ रोईं तने॥
ईं हमा परवानवो दिल शमा बूद।
जुमला परागन्दा ओ दिल जमा बूद॥

अब मैं उस दर्बार के रहस्य को भली भाँति समझ गया और मन ने कहा यदि और आगे बढ़ने की इच्छा रखते हो तो चले आओ। यह सुन कर मैं और भी भीतर बढ़ गया।

अब मैंने अपने मन के अन्दर जो देखा, वह बहुत ही विलक्षण वस्तु थी। उस अकथनीय शोभा का केवल अनुभव किया जा सकता है।

मन रूपी उसी मन्दिर में सात मार्ग थे और सातों सिलसिले भी वहीं थे।

उस देश को आकाश से भी बढ़ कर पाया। पृथ्वी का समस्त वैभव वहाँ प्रस्तुत था।

उस अधजली खाँस के स्थान में य नी सीने के उस भाग में मैंने मन को बैठा हुआ पाया

उसके पास ही फरफड़ा, एक लाल सवार के रूप में बड़ी ही नम्रता के साथ शिर झुकाए हुए खड़ा था।

पित्त भी वहीं था और उसके नीचे ही नमकहराम पीने वाली तिल्ली भी उपस्थित थी।

बुद्धि अपने स्थूल शरीर पर चाँदी का कवच धारण किये हुए आक्रमण के सामान से लैस वहीं खड़ी हुई थी।

यह सब पतंगों के समान थे और मन दीपक के समान। यह सब उसके आज्ञाकारी ज्ञात होते थे।

मन बकिनाअत शुदा मेहमाने दिल।
जाँ बनवा दादा बसुलताने दिल॥
चूँ अलमे लशकरे दिल याफ़तम।
रूए ख़ुद अज़ आलमियाँ ताफ़तम॥
दिल व ज़बाँ गुफ़्त कि ऐ बे ज़बाँ।
मुर्ग़े तलब बगुज़र अज़ीं आशियाँ॥
आतशे मन महरमे ईं दूद नेस्त।
ईं जिगरे ताज़ा नमक सूद नेस्त॥
बे नमकाँरा तू जिगर मीदेही।
गंज ज़े दुर ज़र ज़े गोहर मीदेही॥
साया अम अज़ सर्व तवानातरअस्त।
पायम अज़ाँ पाया बलालातर अस्त॥
गंजमो दर कीसए क़ारूँ नियम।
वा तो मस्तम ज़े तो बेरूँ नियम॥
मुर्ग़े लवम वा नफ़से गरमे ऊ।
परे ज़बाँ रेखता अज़ शरमे ऊ॥
साख़्तम अज़ शर्म सर अफ़गन्दगी।
गोशे अदब हलक़ा कशे बन्दगी॥

मैं बड़े ही धैर्य्य के साथ मन का अतिथि हुआ। और उस सम्राट् के सम्मुख अपने प्राणों की भेंट लेजाकर रक्खी।

जब मन की सेना का झन्डा मुझे मिल गया, उस समय मैंने सम्पूर्ण संसार से अपना सम्बन्ध छुड़ा लिया।

मन ने ज़ुबान से कहा कि ओ मूक इच्छुक पक्षी! उस घोंसले का परित्याग कर दे। उस सांसारिक घोंसले से कोई सम्बन्ध न रख।

मैं अपने लिये ख्याति नहीं चाहता और तेरी इन हाल ही में लिखी हुई कविताओं में भी कुछ आनन्द नहीं है।

जिनको अंतरात्मा का आनन्द प्राप्त नहीं है, तू उन्हें नीरस बना देता है और रुपये तथा मोतियों के ढेर के ढेर उन्हें दे डालता है।

मेरी छाया सरो के वृक्ष से भी कहीं बड़ी तथा ऊँची है और मेरा पद उस पद से भी कहीं बढ़कर है।

मैं एक कोष अवश्य हूँ, परन्तु वह कोष नहीं जो क़ारूँ की थैली में बन्द है।

मैं तेरे साथ हूँ, तुझ में व्याप्त हूँ, परन्तु तुझ से बाहर नहीं हूँ। मन की इन सारपूर्ण बातों को सुन कर मेरी जिह्वा ने लज्जा का जामा पहन लिया।

और मैंने अपना शिर झुका लिया। मैंने अपने कानों को बड़े अदब के साथ मन की इन बातों को सुनने के लिये उधर ही लगा दिया।

चूँ के नदीदम जे रियाज़त गुज़ीर।
गश्तम अज़ीं ख़ाजा रियाज़त पेज़ीर॥
ख़ाजये दिल अहदे मरा ताज़ा कर्द।
नामे 'निज़ामी' फ़लक आवाज़ा कर्द॥

हिकायत ईसा पैग़म्बर अलेहिस्सलाम

पाए मसीहा कि जहाँ मी नवश्त।
दर सरे बाज़ारचए मी गुज़श्त॥
गुर्ग सगे दर गुज़र उफ़्तादा दीद।
यूसुफ़श अज़ चह बदर उफ़्तादा दीद॥
दरसरे आँ जीफ़ा गरोहे क़तार।
दर लिक़ते करगसे मुर्दार ख़ार॥
गुफ़्त यके बहशते ईं दर दिमाग़।
तीरगी आरद चु नक़्स दर चिराग़॥
वाँ दिगरे गुफ़्त अगर हासिलस्त।
कोरिए चश्मस्तो बलाए दिलस्त॥

मैंने समझ लिया कि प्रार्थना तथा भक्ति बहुत ही आवश्यक वस्तुएँ हैं। अतएव अपने स्वामी से इसके लिये आज्ञा ले ली।

मन ने मेरी प्रतिज्ञा में सहायता पहुँचाई और "निज़ामी" के नाम को आकाश तक पहुँचा दिया।

पैग़म्बर ईसा की कहानी

हज़रत ईसा संसार में बहुत भ्रमण किया करते थे। एक दिन वह एक छोटे से बाज़ार में घूम रहे थे।

मार्ग में एक शिकारी कुत्ता पड़ा हुआ था। उसके शरीर से प्राण निकल चुके थे।

उसके आस पास एक भीड़ लग रही थी और वह लोग मरे हुए जानवर के मांस को खाने वाले गृद्धों के समान उसकी बुराइयाँ बतला रहे थे।

एक ने कहा कि इसका डर मस्तिष्क को ऐसा गन्दा कर देता है, जैसे दीपक को मुख की भाप।

दूसरे ने कहा कि यह तो बड़ा ही भयानक है। इसको देखने से भय के मारे हृदय धड़कने लगता है।

हर कस अजाँ परदा नवाए मसूद ।
बर मरे आँ जीका जनाए नमूद ॥
चूँ बसतून नौबते ईसा रसीद ।
ऐब रिहा कर्द बेमाना रसीद ॥
गुफ़्त जे नक़शे कि दर ऐबाने ऊस्त ।
दुर बसुफ़ैदी न चो दन्दाने ऊस्त ॥
ऐब कसाँ मनिगरो यहसाने खेश ।
दीदा फ़ेरोबर बगरीबाने खेश ॥
आईना रोजे कि बिगीरी बदस्त ।
खुद शिकन आँ रोज मशो खुद परस्त ॥
खेशतन आरा मशो चूँ बहार ।
ता नकुनद दर तो तम रोजगार ॥
जामए ऐबे तो तुनक रिश्ता अन्द ।
जाँ बतो नौ परदा फ़ेरो हिश्ता अन्द ॥
चीस्त दरीं हलक़ए अंगुश्तरी ।
काँ न बुवद तौक़े तो चूँ बिनगरी ॥

प्रत्येक मनुष्य ऐसे वचन कह कर कुत्ते के मृत शरीर को बुरा कह रहा था।

जब हज़रत ईसा की बारी आई तो उन्होंने बुराइयों को छोड़ कर उसकी अच्छाइयों का वर्णन करना प्रारम्भ किया।

उन्होंने कहा कि उसके शरीर की अच्छाइयों को देखने से मालूम होता है कि उसके दाँत मोती से भी अधिक स्वच्छ हैं।

वह मनुष्य जो उसकी बुराई कर रहे थे, यह सुन कर हँसने लगे।

दूसरे मनुष्यों के दोषों और अपने गुणों को मत देखो। जब दूसरों के दोषों की तरफ़ दृष्टि जाय, अपने को देखो।

अपने आप को दूसरों से बढ़ कर लगाने का प्रयत्न मत करो। ऐसा करना स्वार्थपरता से खाली नहीं है।

यदि तुम दूसरों में दोष निकालोगे, संसार तुम्हें अच्छी दृष्टि से नहीं देखेगा।

तुम्हारे दोषों का आवरण बहुत हल्का है और इसीलिये नौ आकाश के नौ पर्दे तुम्हारे ऊपर डाले गये हैं।

इस आकाशी घेरे में, वह क्या वस्तु है, जो तुम्हारे गले में तौक़ के समान पड़ी हुई है ?

गर न सगी तौक़े सुरइया मकश ।
गर न खरी वारे मसीहा मकश ॥
कीस्त फ़लक पीर शुदा बेवए ।
चीस्त जहाँ दुख्द जदा बेवए ॥
जुमलए दुनिया जे कोहन ता बनौ ।
चूँ गुज़रिन्दस्त नयरज़द बजौ ॥
अंदोहे दुनिया मख़ुर ए ख्वाजा खेज ।
गर तो खुरी बख्शे "निज़ामी" बरेज ॥

हिकायत मोबिदे हिन्दू कि मारिफ़त याफ़्त

मोबिदे अज़ किशवरे हिन्दोस्ताँ ।
रहगुज़रे बर्द सूए दोस्ताँ ॥
मरहलए दीद मुनक़्क़श रवान ।
ममलुकते याफ़ मुज़ब्बर बिसात ॥
गुनचा बखूं बसता चो गादूँ कमर ।
लालए कम उम्र जे खुद बे खबर ॥
मोहलते शाँ ता नकसे बेश नह ।
हेच कसे आक़बत अन्देश नह ॥

सुरइया का तौक़ उठाने का प्रयत्न मत करो यदि तुम झुके नहीं हो। यदि गधे नहीं हो तो मसीह को अपने ऊपर सवार मत कराओ।

आकाश क्या है ? एक वृद्ध विधवा। संसार क्या है ? एक चोर की लूटी हुई विधवा।

नई और पुरानी इनके चक्करों में मत पड़ो। संसार के बदलने पर एक कौड़ी के भी नहीं रहोगे।

कमर बाँध कर उठ खड़े हो और इस संसार की चिन्ता मत करो। यदि तुम खाओ भी तो "निज़ामी" का भाग अलग निकाल दो।

एक ब्राह्मण की कहानी जिसने ईश्वर को प्राप्त कर लिया

भारतवर्ष में, एक दिन एक पारसी मनुष्य वायु की सैर को निकल गया।

उसे वहाँ बहुत ही सुन्दर स्थान दिखलाई दिया। उसमें जल का सुन्दर फ़र्श बिछा हुआ था।

और मनोहर कलियाँ खिल रही थीं। जल के पुष्प मस्ती में झूम रहे थे।

परन्तु उसका जीवन कुछ ही दिनों का था। इस कारण किसी का भी ध्यान नहीं जाता था।

पीर चो ज़ाँ रौज़ए मीनू गुज़श्त ।
बादे महे चन्द बदाँसू गुज़श्त ॥
ज़ाँ गुलो बुलबुल कि दराँ बाग़ दीद ।
नालए मुश्ते ज़ग़नो ज़ाग़ दीद ॥
दोज़खे उफ़ाद बजाने बहिश्त ।
क़ैसरे आँ क़स्र शुदा दर कुनिश्त ॥
सबज़ा बतहलील खारे शुदा ।
दस्तए गुल पुशतए खारे शुदा ॥
पीर दराँ तेज़ रवाँ बिनगरीस्त ।
बर हमा खनदीद बखुद बरगिरीस्त ॥
गुफ़्त कि हंगामे नुमाइन्दगी ।
हेच नदारद सरे पाबन्दगी ॥
हर चे सर अज़ खाक व आबा कशद ।
आक़बतश सर बखराबी कशद ॥
वेह ज़े खराबी चो दिगर कूए नेस्त ।
ज़ुज़ बखराबी शुदनम रूए नेस्त ॥
चूँ नज़र अज़ बीनिशे तौफ़ीक़ साख्त ।
आरिफ़े खुद गश्तो खुदा रा शिनाख्त ॥

वृद्ध भक्त उस स्थान से अपने घर को लौट गया और उसके कुछ ही महीने बाद पुनः उधर ही आ निकला ।

उसने उस उपवन में पुष्प खिले हुए देखे थे और बुलबुलों का राग सुना था । अब वहाँ पर चील-कौओं का जमघट देखा ।

स्वर्ग, नर्क में परिणत हो गया था । उस सुन्दर उपवन की शोभा अर्थात् पुष्प किनारा कर गया था ।

और घास जल कर पीली पड़ गई थी । पुष्पों के गुच्छों के स्थान पर अब कंटक ही कंटक दिखलाई पड़ते थे ।

वृद्ध शीघ्रता से इन सब वस्तुओं को देख गया । फिर वह इन सब पर हँसा और अपने ऊपर आँसू गिराए ।

उसने अपने मनमें सोचा कि आखिर, दिखावे का कोई मूल्य नहीं होता है ।

मिट्टी और पानी के संयोग से जो वस्तु उत्पन्न हुई है, वह नाश होकर ही रहती है ।

जब विनाश का मार्ग ही सर्वोत्तम है फिर उसे छोड़ कर मुझे और किस तरफ जाना चाहिये ।

जब उसमें ज्ञान उत्पन्न हुआ तब उसने अपने स्वरूप को समझ और ईश्वर को पहचान लिया ।

सैरफ़ये गोहरे आँ राज शुद ।
ता बअदम सूए गोहर बाज शुद ॥
ए के मुसलमानीवो गबरीत नेस्त ।
चश्मे तोरा क़तरए अबरीत नेस्त ॥
कमतर अज़ाँ मोबिदे हिन्दू मबाश ।
तर्के जहाँ गीरो जहाँ जू मबाश ॥
खेज़ रिहा कुन कमरे कुल जे दस्त ।
कू कमरे खेश बखूने तो दस्त ॥
चन्द चो गुल खीरासरी साख़तन ।
सर बकुलाहो कमर अफ़राख़तन ॥
हस्त कुलाहो कमर आफ़ाते इश्क़ ।
हर दो रिहा कुन बखर आते इश्क़ ॥
गह कुलहत खाजगिए गिल देहद ।
गह कमरत बन्दगिए दिल देहद ॥
कोश कज़ीं खाजा ग़ुलामी रेही ।
ता चो "निज़ामी" जे निज़ामी रेही ॥

अब वह इस रहस्य को पहचानने वाला हो गया और ईश्वर के मूल्य को समझ कर उसी तरफ़ बढ़ गया ।

मूर्ख ! न तो तू धर्म का ही कुछ ज्ञान रखता है और न ईश्वर को समझने की शक्ति । तू तो नितान्त निर्लज्ज है ।

इस हिन्दू ब्राह्मण से पीछे मत रह जा । इस संसार को खोज मत कर, इसका त्याग कर देना ही उत्तम है ।

इन सांसारिक प्रलोभनों में मत पड़, वह तुझे मिटा डालने पर तैयार हैं ।

एक पुष्प के समान अपने रंग और रूप पर कब तक गर्व करता रहेगा । टोपी और पटके पर ग़रूर करता रहेगा ।

टोपी और पटका प्रेम के लिये आड़ते हैं । प्रेम के मार्ग में इनका त्याग अवश्य है ।

कभी यह ताज तुझे पुष्प के समान इस उपवन का सम्राट् बना देता है और कभी यह पटका तुझे इच्छाओं का दास बना देता है ।

प्रयत्न कर कि दास के स्थान पर स्वामी होकर रहे और फिर "निज़ामी" के समान अपनत्व को मिटा कर स्वतंत्र होजावे ।

खुसरो व शीरीं

ज़माना ख़ुद जुज़ीं कारे नदानद।
कि अन्दोहे देहद जाने सितानद॥
चो कार उफ़तादा गरदद बेनवाए।
दरश दरगीरद अज़ हर सू बलाए॥
बहर शाख़े गुले कू दर ज़नद चंग।
बजाए गुल बेबारद बर सरश संग॥
चुनाँ अज़ ख़ुशदिली बे वह गरदद।
कि दर कारश तबरज़द ज़ह गरदद॥
चुनाँ तँग आयद अज़ शीरीदने सरत।
कि बर बायद गिरिफ़्तश जाँ जहाँ रख़्त॥
इनाने उम्र अज़ाँ साँ दर नशेबस्त।
जवानी रा चुनीं पा दर रकेबस्त॥
कसे यावद जे दौराँ रस्तगारी।
कि बर दारद इमारत जाँ इमारी॥
मसीहावार दर वै बर नशीनद।
कि वा चंदीं चिराग़श कस नबीनद॥

खुसरू और शीरीं

समय एक विचित्र वस्तु है। उसे दूसरों को नष्ट करने में आनन्द आता है।

जब कोई विपत्तियों का मारा असहाय हो जाता है, तब उसके चारों तरफ़ अन्धकार ही अन्धकार छा जाता है।

यदि किसी पुष्पकी डाल को हिलाता है तो पुष्प न गिरकर उसके शिर पर पत्थर गिरते हैं।

ख़ुशी से वह इतना महरूम हो जाता है कि उसके लिए तिर्याक़ भी ज़हर हो जाता है।

उसकी अवस्था इतनी हीन हो जाती है कि वह इस संसार को छोड़ देने पर उतारू हो जाता है।

अवस्था ढलती जा रही है और युवावस्था भी किनारा करने के लिये उत्सुक हो रही है।

काल के चक्कर में वही मनुष्य नहीं पड़ता है जो इस स्थान को प्यार नहीं करता, यहाँ अपना घर नहीं बनाता।

ईसा के समान ऐसे मंडप में बैठा रहता है जहाँ सहस्रों दीपकों के प्रकाश से भी वह दिखलाई नहीं पड़ता है।

जहाँ देवस्तो वक्ते देव वस्तन।
वख़ुश ख़ई तवाँ अज देव रस्तन॥
मकुन दोज़ख वख़ुद वर ख़ए वद रा।
वहिश्ते दीगराँ कुन ख़ए ख़द रा॥
चु दारद ख़ए तो मरदुम सरिश्ती।
हमीं जाओ हमाँ जा दर वहिश्ती॥
मख़ुस्प ए दीदा चंदाँ ग़ाफ़िलो मस्त।
चो हुशयाराँ वर आवर जीं जहाँ दस्त॥
कि चंदाँ ख़ुफ़ ख़ाही दर दिले ख़ाक।
कि फ़रमोशत कुनद दौराने अफ़लाक॥
वदीं पंजाह साला हुक्का वाज़ी।
वदीं यक मोहरा गिल ता चन्द वाज़ी॥
जे पंजह साल अगर पंजह हज़ारस्त।
क़लम दरकश कि हम नापायदारस्त॥
नशायद आहनीं तर वूदन अज संग।
वेदीं ता रेग चूँ रेज़द वफ़रसंग॥

संसार एक प्रेत के समान है और अच्छे स्वभाव तथा गुणों के द्वारा ही उससे छुटकारा मिल सकता है।

तू बुरा स्वभाव छोड़, अपने लिये नर्क न बना। अपने स्वभाव को ऐसा बना कि दूसरे लोग भी तुझे स्नेह की दृष्टि से देखें।

ऐसा न बन कि और तुझसे दूर भागने का प्रयत्न करें। यदि तेरा स्वभाव मनुष्यता से परिपूर्ण होगा तो तू यहाँ भी स्वर्ग में रहेगा और वहाँ भी।

हे नयन! इतने मतवाले मत बनो। सतर्कता से काम लो और निद्रा को दूर करो।

समाधि में सोने के लिये इतना अवकाश मिलेगा कि सांसारिक विपत्तियाँ भी तुझे भूल जायँगी।

अतएव इन प्रलोभनों पर इस समय आसक्ति मत दिखला। तूने पचास वर्ष तमाशा किया और वह भी केवल एक गोले से (मुहरे से)। अब कब तक इसी खेल में व्यस्त रहेगा?

यदि पचास हज़ार वर्ष भी तुझे मिलें तो उन्हें अस्वीकार करदे। उनमें किसी प्रकार का स्वाद नहीं है।

पत्थर सबसे कठोर वस्तु है, परन्तु वह भी रेत के रूप में कोसों तक उड़ता है।

ज़मीं नुतयेस्त रंगश चूँ नरेज़द।
कि वर नुतए चुनीं जुज़ ख़ूँ न ख़ेज़द॥
वसा ख़ूने के शुद दर ख़ाके ईं दश्त।
सियहवख़्ते नरस्त अज़ ज़ेरे ईं तश्त॥
हराँ ज़र्रा कि आरद तुंद वादे।
फ़रीदूने बुवद या कैक़ुवादे॥
कफ़े गिल दर हमा रूए ज़मीं नेस्त।
कि वर वै ख़ूने चंदीं आदमी नेस्त॥
कि मीदानद कि ईं दैरे कोहन साल।
चे मुद्दत दारदो चूँनस्त अहवाल॥
नमानद कस कि बीनद दौरे ऊ रा।
बदाँ ता दर नयावद ग़ौरे ऊ रा॥
बहर सद साल दौरे गीरद अज़ सर।
चे आँ दौराँ शुद आयद दौरे दीगर॥
बरोज़े चन्द वा दौराँ दबीदन।
चे शायद दीदनो चे तवाँ शुनीदन॥
ज़े जौरो अद्ल दर हर दौर साज़ेस्त।
दरू दानिंदा रा पोशीदा राज़ेस्त॥

पृथ्वी एक फ़र्श है। उसका रंग क्यों नहीं उड़ता? इस लिये कि रक्त के अतिरिक्त उस पर कोई दूसरा रंग ही नहीं चढ़ता।

यहाँ पर बहुत से लोगों का रक्त बहा है, और कोई भी अब तक साफ़ बच कर नहीं निकल सका है। संसार में सभी फँस जाते हैं।

आँधी चलती है और कणों को उड़ा कर लाती है। वह कण फ़रीदूं या कैक़ुबाद की राख के बने हुए होते हैं।

समस्त पृथ्वी में केवल एक हथेली भर गीली मिट्टी है और वह इस कारण कि वहाँ पर न मालूम कितने मनुष्यों का रक्त पड़ा हुआ है।

कौन कह सकता है कि यह प्राचीन गृह कितने वर्षों पहले बना था? उसके विगत इतिहास का किसे पता है?

कौन उसको देखने के लिये शेष रहेगा? अतएव उसका रहस्य समझने के लिये ध्यान की आवश्यकता है।

प्रत्येक सौ वर्ष के उपरान्त नया दौर शुरू होता है और उन सौ वर्षों के उपरान्त दूसरा।

कुछ दिनों में अथवा दो एक दौर देखने में क्या समझ में आ सकता है?

प्रत्येक दौर में न्याय तथा अत्याचार दोनों ही होते हैं और एक विद्वान मनुष्य के लिये प्रत्येक दौर में कुछ न कुछ रहस्य गुप्त रहता है।

नमीख़ाही कि बीनी जौर बर जौर।
नयायद गुफ़्त राज़े दौर बा दौर॥
शबो रोज़ अवलक़े ज़ुद तुन्द रफ़्तार।
बई अवलक़ इनाने ख़ेश मसपार॥
बसद फ़न गर नुमाई ज़ू फ़नूनी।
नशायद बुर्द अज़ीं अवलक़ हुनी॥
फ़लक चन्दाँ कि देरो ख़ाक रा पुस्त।
नरफ़्त अज़ ख़ए ऊ ख़ामी चू की मुस्त॥
कुमारिस्ताने चर्ख़े नीम ख़ाया।
बसे पुर माया गा बुर्दस्त माया॥
अरूसे ख़ाक अगर बदरे मुनीरस्त।
बदस्तो याद कुन अमरश कि पीरस्त॥
मगर हुस्के कि ख़ाहद बूदन अज़ याद।
तिलाक़े अम्र ख़ाहद ख़ाक रा दाद॥
अगर दाद आयदो गर न आयद रसरोज़।
तू बरबादे चुनीं मशग़ल मे अफ़रोज़॥
दरीं यकमुश्ते ख़ाक ए ख़ाक दर मुश्त।
गर अफ़रोज़ी चिराग़े अज़ देहमुश्त॥

तुमको अत्याचार पर अत्याचार देखना नहीं भाता और एक दौर का रहस्य दूसरे दौर से प्रकट नहीं किया जा सकता।

रात और दिन एक शीघ्रगामी कोतल घोड़े के समान है। इस घोड़े के सुपुर्द अपनी जान मत कर देना।

यदि तुम सैकड़ों विद्याओं में निपुण हो जाओ, तब भी इस कोतल घोड़े की शरारतों को दूर करने में समर्थ न हो सकोगे।

आकाश ने मिट्टी की हाँडी को अनेक ही प्रकार बनाया, परन्तु इस पर भी उसका बदापन दूर नहीं हुआ।

आकाश का कुम्हारखाना काल के उपकरणों का एक सुन्दर स्थान है।

संसार प्रतीक्षारत के परिपूर्ण है और प्रत्येक एक आश्चर्यजनक स्थान के समान है, परन्तु उस पूरी में कौन इसमें घोड़े बना सकी है।

संसार की समस्त वस्तु स्वप्न के समान है जो मनुष्य को धोखा देने के ही लिये है।

हमारी यह जगह जो सभी प्रकार के सुख और आनन्द से परिपूर्ण है, वास्तव में स्वप्न का देखना मात्र ही है। जिसे आनन्द कहते हैं।

यदि तू संसार के इस भेदभाव से भी इस सीधे से नियम को न समझे तो तुझे कुछ करेगा तब भी तू किसी विशेष कार्य के लिये समर्थ न होगा।

ज़मीं नुतयेस्त रंगश चूँ नरेज़द।
कि बर नुतए चुनीं ज़ुज़ ख़ूँ न खेज़द॥
वसा ख़ूने के शुद दर ख़ाके ईं दश्त।
सियहवख़्ते नरस्त अज़ ज़ेरे ईं तश्त॥
हराँ ज़र्रा कि आरद तुंद बादे।
फ़रीदूने वुवद या कैक़ुबादे॥
कफ़े गिल दर हमा रूए ज़मीं नेस्त।
कि बर वै ख़ूने चंदीं आदमी नेस्त॥
कि मीदानद कि ईं दैरे कोहन साल।
चे मुद्दत दारदो चूँनस्त अहवाल॥
नमानद कस कि वीनद दौरे ऊ रा।
वदाँ ता दर नयावद ग़ौरे ऊ रा॥
वहर सद साल दौरे गीरद अज़ सर।
चे आँ दौराँ शुद आयद दौरे दीगर॥
वरोज़े चन्द वा दौराँ दवीदन।
चे शायद दीदनो चे तवाँ शुनीदन॥
ज़े जौरो अद्ल दर हर दौर साज़ेस्त।
दरू दानिंदा रा पोशीदा राज़ेस्त॥

पृथ्वी एक कृषि है। उसका रंग क्यों नहीं उड़ता? इस लिये कि रक्त के अतिरिक्त उस पर कोई दूसरा रंग ही नहीं चढ़ता।

यहाँ पर बहुत से लोगों का रक्त बहा है, और कोई भी अब तक साफ़ बच कर नहीं निकल सका है। संसार में सभी फँस जाते हैं।

आँधी चलती है और कणों को उड़ा कर लाती है। वह कण फ़रीदूं या कैक़ुबाद की राख के बने हुए होते हैं।

समस्त पृथ्वी में केवल एक हथेली भर गीली मिट्टी है और वह इस कारण कि वहाँ पर न मालूम कितने मनुष्यों का रक्त पड़ा हुआ है।

कौन कह सकता है कि यह प्राचीन गृह कितने वर्षों पहले बना था? उसके विगत इतिहास का किसे पता है?

कौन उसको देखने के लिये शेष रहेगा? अतएव उसका रहस्य समझने के लिये ध्यान की आवश्यकता है।

प्रत्येक सौ वर्ष के उपरान्त नया दौर शुरू होता है और उन सौ वर्षों के उपरान्त दूसरा।

कुछ दिनों में अथवा दो एक दौर देखने में क्या समझ में आ सकता है?

प्रत्येक दौर में न्याय तथा अन्याचार दोनों ही होते हैं और एक विद्वान मनुष्य के लिये प्रत्येक दौर में कुछ न कुछ रहस्य गुप्त रहता है।

नमीख़ाहद कि बीनी जौर बर जौर।
नयायद गुफ़्त राज़े दौर बा दौर॥
शबो रोज़ अबलक़े शुद तुन्द रफ़्तार।
बई अबलक़ इनाने ख़ेश मसपार॥
बसद फ़न गर नुमाई चू फ़नूनी।
नशायद बुर्द अज़ीं अबलक़ हरूनी॥
फ़लक चन्दाँ कि देज़ो ख़ाक रा पुर।
नरफ़्त अज़ ख़ूए ऊ ख़ामी चू की मुर॥
कुमारिस्ताने चर्ख़े नीम ख़ाया।
बसे पुर माया रा बुर्दस्त माया॥
अरूसे ख़ाक अगर बदरे मुनारस्त।
बदस्तो याद कुन अमरश कि पीरस्त॥
मगर हुक्के कि ख़ाहद बूदन अज़ याद।
निलाफ़े अम्र ख़ाहद ख़ाक रा दाद॥
अगर बाद आयदो गर न आयद इमरोज़।
तू बरबादे चुनीं मशअल मे अफ़रोज़॥
दरीं यकमुश्ते ख़ाक ए ख़ाक दर मुश्त।
गर अफ़रोज़ी चिराग़े अज़ देहमुश्त॥

तुमको अत्याचार पर अत्याचार देखना नहीं भाता और एक दौर का रहस्य दूसरे दौर से प्रकट नहीं किया जा सकता।

रात और दिन एक शीघ्रगामी कोतल घोड़े के समान हैं। इस घोड़े के सुपुर्द अपनी बाग मत कर देना।

यदि तुम सैकड़ों विद्याओं में निपुण हो जाओ, तब भी इस कोतल घोड़े की शरारतों को दूर करने में समर्थ न हो सकोगे।

आकाश ने मिट्टी की हाँडी को बहुत ही पकाया परन्तु इस पर भी उसका कच्चापन दूर नहीं हुआ।

आकाश का जुलाहाना बहुत से धनवानों का धन खींच कर ले गया है।

संसार प्रलोभनों से परिपूर्ण है और यद्यपि एक चन्द्रमुखी रमणी के समान है, परन्तु वह चूड़ी है और उसमें कोई सार नहीं है।

खुदा को अगर याद रखना चाहता है तो दुनिया को त्याग देने में ही भलाई है।

खुदा की तरफ से जो न्याय होगा वह संसार से बिल्कुल ही पृथक कर देगा उसको पूर्ण के संबंध के लिये झकझोर कर देगा।

यदि तू अपनी इन इच्छाओं से भी इस दीपक को जलाने का प्रयत्न करेगा तब भी यह मिट्टी किसी प्रकार से तेरी सहायता न करेगी।

नशुद मुमकिन कि ईं ख़ाके ख़तरनाक।
बअंगुश्ते बुरीदा बर कुनद ख़ाक॥
चु यूसुफ़ जीं तुरंज अर सर बेतावी।
चु नारंजे ज़ुलेख़ा ज़ख्म यावी॥
सहरगह मस्त शौ संगे बरन्दाज।
जे नारंजो तोरंज ईं ख़ाँ बेपरदाज॥
बुरूँ अफ़गन बतह जीं दारे नोहदर।
मकुन कैमन शवी जीं मारे नोहसर॥
नफ़स कू ख़ाजा नाशे ज़िन्दगानीस्त।
बया परवरदए बादे ख़िज़ानीस्त॥
अगर यकदम ज़नो बेइश्क़ मुर्दस्त।
कि बरमा यकबयक दमहा शुमुर दस्त॥
बवायद इश्क़ रा फ़रहाद बूदन।
पसंगाहे बमुर्दन शाद बूदन॥
मोहन्दिश दस्तये पौलाद तेशा।
जे चोबे नार बुन करदे हमेशा॥

यह मुमकिन नहीं कि इस संसार में कटी उँगलियों वाला मिट्टी खोद सके।

यदि यूसुफ़ के समान तू इस नींबू से पृथक् हो जायगा तो जुलेख़ा की नारंगी के समान तुझ में भी घाव हो जायँगे।

प्रभात होते ही मतवाला बन जा और एक ढेला फेंक कर मार तथा नारंगी और नींबू से यह भोजनालय भर दे।

इस शरीर रूपी गृह से जिसमें नौ इन्द्रियों के रूप में नौ द्वार हैं अपना सब सामान बाहर निकाल ले चल। देखना, इस नौ फन वाले सर्प की तरफ़ से सतर्क रहना।

वह स्वाँस, जिससे हमारा जीवन क़ायम है विनाश-रूपी वायु की उत्पन्न की हुई है।

प्रेम-विहीन एक भी साँस निकालना व्यर्थ है। कारण कि हमारे जीवन की साँसें गिनती की हैं।

प्रणय के लिये "फ़रहाद" का होना आवश्यक है और उसी अवस्था में मृत्य के समय हर्ष होगा।

"फ़रहाद" सदैव फ़ौलाद के बसूले का बेंट अनार की लकड़ी काट कर बनाया करता था,

ज़े बहरे आँके बाशद दस्तगीरश।
बदस्त अंदर बुवद फ़रमाँ पिज़ीरश॥
चु बिशुनीद ईं सख़ुनहाए जिगर ताब।
फ़राज़े कोह कर्द आँ तेशा पुरताब॥
चुनीं गोयँद ख़ाके बूद नमनाक।
सिना दर संग रफ़्तो चोब दर ख़ाक॥
अज़ाँ दस्ता बर आमद शोशए नार।
दरख़्ते गश्तो नार आवुर्द बिसयार॥
अज़ाँ शोशा कनूँ गर नारयाबी।
दवाए दर्दे हर बीमार याबी॥
"निज़ामी" गर नदीद आँ नार बुन रा।
बदफ़्तर दर चुनीं ख़ाँद ईं सख़ुनहा॥

हिकायत बुलबुल वा बाज़

दर चमने बाग़ चो गुलबुन शिगुफ़्त।
बुलबुल वा बाज़ दर आमद बगुफ़्त॥

ताकि वह उसके हाथ से फिसल न जावे और हाथ ही में ठीक ठीक बना रहे।

जब फ़रहाद ने हृदय को बेधने वाली बातें सुनीं तो पर्वत की चोटी पर से उस बमूले को फेंक मारा।

लोग कहते हैं कि वहाँ पर कुछ गीली मिट्टी थी। बमूले का फल पत्थर में घुस गया और दस्ता मिट्टी में।

उसी दस्ते की लकड़ी में कल्ले फूटे और धीरे धीरे एक बड़ा भारी वृक्ष उत्पन्न हो गया और उसमें अनार के सहस्रों फल उत्पन्न हुए।

यदि उस अनार का तुझे एक भी फल मिल जावे तो सभी रोग दूर हो सकते हैं।

"निज़ामी" ने उस अनार के वृक्ष को नहीं देखा है, परन्तु पुस्तकों में उस कहानी को पढ़ा है

बुलबुल और बाज़ का वार्तालाप

जिस समय उपवन में गुलाब के पुष्प खिल रहे थे बुलबुल और बाज़ में इस प्रकार बातचीत हुई।

कज़ हमह मुर्ग़ाँ तुई खामोश सार।
गोय चेरा बुरदई आखिर बेयार॥
ता तु लबे बसता कुशादी नक़स।
यक सख़ुने नरज़ नगुफ़्ती वकस॥
मंज़िले तो दस्त गहे सनजरी।
तोमए तो सीनए कवके दरी॥
मनके बयकदम ज़दन अज़ काने गैब।
सद गोहरे सुफ़्ता बर आरम जे जैब॥
तोमए मन किर्म शिकारी चेरास्त।
खानए मन बर सरे खार चेरास्त॥
बाज़ बदो गुफ़्त हमा गोश बाश।
खामुशियम बिनगरो खामोश बाश॥
मनके शुदम कारशिनास अन्दके।
सद कुनमो बाज़ नगोयम यके॥
गौ कि तुई शेफ़्तए रोज़गार।
जाँके यके न कुनीओ गोई हज़ार॥
मनके हमा मानीयम ई सैद गाह।
सीनए कवके देहद अज़ दस्ते शाह॥

बुलबुल ने बाज़ से कहा कि तू सब पक्षियों में बड़ा है। परन्तु कभी बोलता नहीं। इसका क्या कारण है?

तूने जब से इस संसार में जन्म लिया है, उस समय से अभी तक एक भी अच्छी बात मुख में नहीं निकाली।

सुंदर बादशाह के हाथ पर तू बैठा रहता है और पहाड़ी चकोर के कलेजे को खाता है। पर इस पर भी चुप है।

मुझे देख; कितनी बोलने वाली हूँ। एक साँस में सैकड़ों मोती के समान सुन्दर शब्द कह डालती हूँ।

फिर क्या कारण है कि छोटे छोटे कीड़ों से मैं अपना पेट भरती हूँ और काँटों पर विश्राम करती हूँ।

बाज़ ने उत्तर दिया कि मेरी बात ध्यान से सुन। मुझे देख कर तू भी चुप साध ले।

मुझे केवल शिकार ही का काम कर आता है। इस पर भी मैं सौ काम करता हूँ, परन्तु बकवाद एक का भी नहीं करता हूँ।

तुझे संसार ने प्रसिद्ध कर रक्खा है। तेरा प्रेम प्रसिद्ध है। तू काम एक भी नहीं करती परन्तु बकने में एक ही है

मैं बिल्कुल सीधी विचार रखने वाला हूँ और इसी लिये यह संसार मेरा

चूँ तो हमह उम्र जवानी तमाम।
किमे खुरीओखार नशीनी बमलाम॥
खुतबा चो बर नामे फरेदूँ कुलन्द।
हुक्म बर आवाजे दुहुल चूँ कुनन्द॥
सुबह चो दा दाँग खुरुसतो दम।
खंदा जन अज राहे फुतूतो दम।
चर्ख कि दर मारकेर फरयाद नेस्त।
हेच सरज तिर्कश आजाद नेस्त॥
बर मकश आवाजए नउमे बलन्द।
ता चो "निजामी" नशवी शाह चन्द॥

एक प्रकार से आखेट का स्थान है मुझे बादशाह के हाथ में चकोर का सीना खिलवाता है।

तू केवल घातें ही करना जानती है और इसी लिये तुझे खाने के लिये कोदो मिलते हैं और बैठने तथा विश्राम करने के लिये कौंटा।

मस्जिदों में बादशाह के नाम का खुतबा (प्रार्थना) पढ़ा जाता है न कि डंके की चोट का।

प्रभात के पास केवल एक आवाज है और वह है मुर्गे की। इसीलिये वह देर के साथ हँस कर रह जाता है।

आकाश के पास एक भी आवाज नहीं है। इसीलिये कोई भी डमरू उसके में बाहर नहीं है।

ऊँचे दर्जे की कविता करने में रवानि न प्राप्त कर। कवि "निजामी" के समान, इसी कारण से, तू भी एक नगर में नक्कारखाने न कर दिया जाये।

कज हमह मुर्ग़ाँ तुई ख़ामोश सार।
गोय चेरा बुरदई आख़िर बेयार॥
ता तु लबे बसता कुशादी नफ़स।
यक सख़ुने नरज़ नगुफ़ी बकस॥
मंज़िले तो दस्त गहे सनजरी।
तोमए तो सीनए कबके दरी॥
मनके बयकदम ज़दन अज़ काने ग़ैब।
सद गोहरे सुफ़्ता बर आरम ज़े जैब॥
तोमए मन किर्म शिकारी चेरास्त।
ख़ानए मन बर सरे ख़ार चेरास्त॥
बाज़ बदो गुफ़्त हमा गोश बाश।
ख़ामुशियम बिनगरो ख़ामोश बाश॥
मनके शुदम कारशिनास अन्दके।
सद कुनमो बाज़ नगोयम यके॥
रौ कि तुई शेफ़्तए रोज़गार।
ज़ाँके यके न कुनीओ गोई हज़ार॥
मनके हमा मानीयम ई सैद गाह।
सीनए कबके देहद अज़ दस्ते शाह॥

बुलबुल ने बाज़ से कहा कि तू सब पक्षियों में बड़ा है। परन्तु कभी बोलता नहीं। इसका क्या कारण है?

तूने जब से इस संसार में जन्म लिया है, उस समय से अभी तक एक भी अच्छी बात मुख से नह ली।

संजर बादशाह के ह तू बैठा रहता है और पहाड़ी चकोर के कलेजे को खाता है। पर भी चुप है।

मुझे देख, कितनी बोल ी हूँ। एक साँस में सैकड़ों मोती के समान सुन्दर शब्द कह डालती हूँ।

फिर क्या कारण है कि छोटे छोटे कीड़ों से मैं अपना पेट भरती हूँ और काँटों पर विश्राम करती हूँ।

बाज़ ने उत्तर दिया कि मेरी बात ध्यान से सुन। मुझे देख कर तू भी चुप साध ले।

मुझे केवल थोड़ा ही सा काम कर आता है। इस पर भी मैं सौ काम करता हूँ, परन्तु बखान एक का भी नहीं करता हूँ।

तुझे संसार ने प्रसिद्ध कर रक्खा है। तेरा प्रेम प्रसिद्ध है। तू काम एक भी नहीं करती परन्तु बातें बनाने में एक ही है।

मैं बिल्कुल भीतरी विचार रखने वाला हूँ और इसी लिये यह संसार जो

चूँ तो हमह रुक्न कवानी तमाम।
किमे खुरीओखार नशीनी बखलाम॥
खुतबा चो दर नामे फरेदूँ कुनन्द।
हुक्म दर आवाजे दुहुल चूँ कुनन्द॥
सुबह चो बा बाँगे खुरुसतो दम।
खंदा दन अज राहे कबूलो बम।
चर्ख कि दर मारजैर फरयाद नेस्त।
हेच सरज तिर्कश आजाद नेस्त॥
दर नक्कारा आवाजए नरमे दलन्द।
ता चो "निजामी" नशवी शह बन्द॥

एक प्रकार से आखेट का स्थान है मुझे बादशाह के हाथ से चकोर का सीना खिलवाता है।

तू केवल बातें ही करना जानती है और इसी लिये तुझे खाने के लिये कीड़े मिलते हैं और बैठने तथा विश्राम करने के लिये काँटे।

मस्जिदों में बादशाह के नाम का खुतबा (प्रार्थना) पढ़ा जाता है न कि ढंके की चोट का।

प्रभात के पास केवल एक आवाज है और वह है मुर्गे की। इसीलिये वह खेद के साथ हँस कर रह जाता है।

आकाश के पास एक भी आवाज नहीं है। इसीलिये केंद्र भी इसके फन्दे से बाहर नहीं है।

ऊँचे दर्जे की कविता करने में ख्याति न प्राप्त कर। कहीं "निजामी" के समान, इसी कारण से, तू भी एक नगर में नजरबन्द न कर दिया जावे।

कज़ हमह मुर्ग़ाँ तुई ख़ामोश सार।
गोय चेरा बुरदई आख़िर बेयार॥
ता तु लबे बसता कुशादी नक़स।
यक सख़ुने नरज़ नगुफ़ी बकस॥
मंज़िले तो दस्त गहे सनजरी।
तोमए तो सीनए कबके दरी॥
मनके बयकदम ज़दन अज़ काने ग़ैब।
सद गोहरे सुफ़्ता बर आरम ज़े जैब॥
तोमए मन किर्म शिकारी चेरास्त।
ख़ानए मन बर सरे ख़ार चेरास्त॥
बाज़ बदो गुफ़्त हमा गोश बाश।
ख़ामुशियम विनगरो ख़ामोश बाश॥
मनके शुदम कारशिनास अन्दके।
सद कुनमो बाज़ नगोयम यके॥
रौ कि तुई शेफ़्तए रोज़गार।
जाँके यके न कुनीओ गोई हज़ार॥
मनके हमा मानीयम ई सैद गाह।
सीनए कबके देहद अज़ दस्ते शाह॥

बुलबुल ने बाज़ से कहा कि तू सब पक्षियों में बड़ा है। परन्तु कभी बोलता नहीं। इसका क्या कारण है ?

तूने जब से इस संसार में जन्म लिया है, उस समय से अभी तक एक भी अच्छी बात मुख से नहीं निकाली।

संजर बादशाह के हाथ पर तू बैठा रहता है और पहाड़ी चकोर के कलेजे को खाता है। पर इस पर भी चुप है।

मुझे देख, कितनी बोलने वाली हूँ। एक साँस में सैकड़ों मोती के समान सुन्दर शब्द कह डालती हूँ।

फिर क्या कारण है कि छोटे छोटे कीड़ों से मैं अपना पेट भरती हूँ और काँटों पर विश्राम करती हूँ।

बाज़ ने उत्तर दिया कि मेरी बात ध्यान से सुन। मुझे देख कर तू भी चुप साध ले।

मुझे केवल थोड़ा ही सा काम कर आता है। इस पर भी मैं सौ काम करता हूँ, परन्तु बखान एक का भी नहीं करता हूँ।

तुझे संसार ने प्रसिद्ध कर रक्खा है। तेरा प्रेम प्रसिद्ध है। तू काम एक भी नहीं करती परन्तु बातें बनाने में एक ही है।

मैं बिल्कुल भीतरी विचार रखने वाला हूँ और इसी लिये यह संसार जो

चूँ तो हनह जख्म जबानी तमाम।
किमे खुरीओंखार नशीनो बल्लाम॥
खुतबा चो बर नामे फरेदूँ कुनन्द।
हुक्म बर आवाजे दुहुल चूँ कुनन्द॥
सुबह चो बा बाँगे खरुसतो दम।
खंदा जन अज राहे फलूतो बम।
चर्ख कि दर मारजेर फरयाद नेस्त।
हेच सरज तिकेश आजाद नेस्त॥
बर मकश आवाजए नरमे बलन्द।
ता चो "निजामी" नशवी शाद खन्द॥

एक प्रकार से आखेट का स्थान है मुझे बादशाह के हाथ से चरोंर का सींग खिलवाता है।

तू केवल बातें ही करना जानती है और इसी लिये तुझे खाने के लिये थोड़े मिलते हैं और बैठने तथा विश्राम करने के लिये काँटे।

मस्जिदों में बादशाह के नाम का खुतबा (प्रार्थना) पढ़ा जाता है न कि डंके की चोट का।

प्रभात के पास केवल एक आवाज है और वह है मुर्गे की। इसीलिये वह खेद के साथ हँस कर रह जाता है।

आकाश के पास एक भी आवाज नहीं है। इसीलिये तेरे भी हमारे बन्दे से बाहर नहीं है।

ऊँचे दर्जे की कविता करने से ख्याति न प्राप्त कर। कहीं गाने वाली के समान, इसी कारण से, तू भी एक नगर में नजरबन्द न कर दिया जाये

उत्पन्न होने पर उस लड़की को त्याग दिया। लड़की भी उनके विरह में पागल होकर वहीं पहुँची और उनके जीवन में भक्ति का मिश्रण करके संसार से चल बसी।

"मोक्ष-मार्ग की कठिनाइयाँ और उसके सातों भाग—प्रेम, ज्ञान स्वतंत्रता, सम्मिलन, आश्चर्य, निराशा और मृत्यु के रूप में—प्रगट किये गये हैं। मानव हृदय की मलिनताओं से पृथक होकर आत्मा अपने अभीष्ट को प्राप्त कर लेती है।"

(लि० हि० आ० पर जिल्द २, पृष्ठ ५१२)

" पक्षियों की कठिनाइयाँ तथा उनके भिन्न २ भाग्य, मोक्ष तथा सत्य पथ को ग्रहण करने वालों की विपत्तियों को प्रदर्शित करते हैं और इन बातों का वर्णन, पुस्तक को, जार्ज बनियन की लिखी हुई पुस्तक पिलग्रिम्स प्रोग्रेस, के समान बनाता है। "

(लीवी—परशियन लिट्रेचर—पृष्ठ ४७)

अत्तार का जन्म नीशाँपुर में ११५७ ई० में हुआ था। यह अबू तालिब मुहम्मद के नाम से प्रसिद्ध थे। इनके पिता का नाम था अबूबक्र इब्राहीम। इन्होंने बहुत से नगरों तथा देशों में भ्रमण किया था। जैसे रे, क्यूक, मिश्र, दमिश्क, मक्का, भारतवर्ष, तुर्किस्तान इत्यादि, परन्तु अन्त में यह अपने जन्मस्थान में ही जाकर रहे। यह रहस्यवाद की पुस्तकों को बहुत अधिक पढ़ा करते थे और लगभग ३९ वर्ष तक उन्होंने अपने इस अध्ययन को जारी रक्खा। रहस्यवाद के साहित्य में इनकी कुछ रचनाएँ बहुमूल्य प्रतीत होती हैं। उन्होंने सूफ़ियों के सातों स्टेजेज़ का बहुत ही उत्तम भाषा में वर्णन किया है।

अपने उद्दण्ड विचारों के कारण उन्हें बहुत कष्ट उठाना पड़ा। मकान लूट कर उनको अन्त में निकाल दिया गया। सुना जाता है कि इसके उपरान्त वह मक्का को चले गये और वहाँ पर उन्होंने इसानुलईनब नामक पुस्तक लिखी।

उनकी मृत्यु का समय निश्चित रूप से नहीं बताया जा सकता। विशेषज्ञों में, इस विषय पर मतभेद है। कई एक कारणों से ब्राउन ने उनकी मृत्यु का होना सन् १२३० ई० में लिखा है। लेवी भी इससे सहमत है। प्राचीन कहानी के अनुसार यह कहा जाता है कि उनको चंगेज़ खाँ ने मार डाला।

प्रमुख रचनाएँ :—
पन्द नामा,
तज़किरातुल औलिया,
मन्तक़ुलतीर,
क़सीदा,
मुसीबत नामा,
बुलबुल नामा,
शुतुर नामा।

मुनकिरे गर गोयदीं वस मुनकरस्त ।
इश्क़ कू कज कुफ़्रो ईमाँ वरतरस्त ॥
इश्क़ रा वा कुफ़्रो वा ईमाँ चे कार ।
आशिक़े रा लहज़ए वा जाँ चे कार ॥
आशिक़ आतश वर हमाँ खिर्मन ज़नद ।
अर्श वर फ़र्क़श ज़न्द अर्दम ज़नद ॥
दर्दो खूने दिल वे वायद इश्क़ रा ।
क़िस्सए मुशकिल वे वायद इश्क़ रा ॥
साक़िया खूने जिगर दर जाम कुन ।
गर नदारी दुर्द अज़ मा वाम कुन ॥
इश्क़ रा दर्दे वेवायद पर्दा सोज़ ।
गाह जाँ रा परदा दर गह परदा दोज़ ॥
ज़र्रये इश्क़ अज़ हमा आफ़ाक़ वेह ।
ज़र्रये दर्द अज़ हमा उश्शाक़ वेह ॥
इश्क़ मग़ज़े कायनात आमद मुदाम ।
लेक इश्क़ आमद ज़े वेदर्दी तमाम ॥

यदि इस मत को न मानने वाला कोई कह बैठे कि यह तो बिल्कुल ही मूर्खता है। भला ऐसी भी कोई लगन है जो नास्तिकता तथा धर्म्म से बढ़कर है!

तो उससे कह दे कि प्रेम को धर्म्म और नास्तिकता से क्या सम्बन्ध है! प्रेमियों को तो एक क्षण भर के लिये भी प्राणों का मोह नहीं होता है।

यदि क्षण भर के लिये भी उसके दिल में प्राणों की ममता जागृत हो उठे तो उसके शिर पर आरा चला देते हैं। प्रेमी अपना सम्पूर्ण खलिहान स्वयम् जलाकर भस्म कर डालता है।

प्रणय के लिये दर्द और हृदय का रक्त दोनों को न्यौछावर कर देना चाहिए। प्रणय के लिये सबसे कठिन बात सदैव अनुरक्त रहना है।

ऐ साक़ी! अब प्याले में हृदय का रक्त भर दे। यदि तेरे पास तलछट नहीं है तो हम से उधार ले ले।

प्रेम के लिये, लगन के लिये ऐसा तलछट होना चाहिये जो पर्दे को ही जला डाले (अर्थात् कभी प्राणों को खो बैठे और कभी उसे फिर लौटा ले) कभी प्राण के पर्दे को फाड़ डाले और कभी उसे फिर सीदे।

प्रेम का एक कण भी सारे संसार से बढ़कर मूल्य रखता है और तनिक सी पीड़ा सम्पूर्ण संसार के प्रेमियों से बढ़कर है।

प्रणय इस सारे जगत का सार है; परन्तु इसमें दया का लेशमात्र भी नहीं है।

कुदूसियां रा इश्क हस्तो दर्द नेस्त।
दर्द रा जुज आदमी दर मर्द नेस्त॥
हर के रा दर इश्क मोहकम शुद क़दम।
दर गुजश्त अज़ कुफ्र ओ अज़ इस्लाम हम॥
इश्क सूये फक्र दर बोकुशायदत।
फक्र सूये कुफ्र रह बे नुमायदत॥
इश्क रा बा काफिरी खेशी बुवद।
काफिरी खुद ऐने दरवेशी बुवद॥
चूं तुरा ईं कुफ्र ओ ईं ईमाँ न माँद।
ईं तने तू गुम शुदो ईं जाँ न माँद॥
बाद अजीं मर्दे शवी ईं कार रा।
मर्द बायद ईं चुनीं असरार रा॥
पाए दर नेह हम चो मरदानो मतर्स।
दर गुजर अज़ कुफ्रो ईमानो मतर्स॥
चन्द तरसी दस्त अज़ तिफ्ली बेदार।
बाज़ शो चूं शेर मरदाँ दर शिकार॥
गर तुरा सद उकबा नागह ओफ्तद।
बाक न बुवद चूं दरीं रह ओफ्तद॥

स्वर्गीय दूत प्रेमी हैं, परन्तु उनमें प्रणय पीड़ा नहीं है। पीड़ा के योग्य मनुष्य के अतिरिक्त और कोई नहीं है।

जो प्रेम में संलग्न है, उसको धर्म्म पालन और नास्तिकता से कोई सम्बन्ध नहीं रहता है।

प्रणय तेरे सन्मुख फ़कीरी का द्वार खोल देता है और तेरा यही पद तुझे वहाँ पहुँचा देता है जहाँ ईश्वर को नहीं माना जाता है।

प्रणय और नास्तिकता में प्रगाढ़ सम्बन्ध है। वास्तविक प्रेमी वही है जो नास्तिक है।

जब तेरे पास तेरा धर्म्म और तेरी नास्तिकता कुछ भी नहीं रह जायगा तो यह तेरा शरीर और तेरा प्राण कुछ भी नहीं रह जायगा।

इसके उपरान्त तू इसके योग्य होगा। ऐसे कार्यों के लिये मनुष्य का पराक्रमी होना आवश्यक है।

वीर मनुष्य के समान अपने मार्ग में आगे बढ़ और किसी प्रकार का भय मत कर। नास्तिकता और धर्म दोनों का त्याग कर दे और डर मत।

तू कब तक भय खाता रहेगा, इस बालकपन के स्वभाव को छोड़ दे। वीरों के समान आखेट करने में अपनी धुन में मस्त हो जा।

यदि तेरे मार्ग में यकायक कठिनाइयाँ आ पड़ें तो भी उनका भय मत कर।

हिकायत शेख़ सनआँ

शेख़ सनआँ पीर अहदे खेश बूद।
दर कमालश उम्मे गीयम बेश बूद॥
शेख़ बूद अंदर हरम पंजाह साल।
बा मुरीदाँ चार सद साहब कमाल॥
हर मुरीदे कानेऊ बूदे अजब।
मी नआसूद अज रयाज़त रोज़ो शब॥
हम अमल हम इल्म बा हम यार दाश्त।
हम अयाँ हम करक हम असरार दाश्त॥
कुर्द पंजह हज बजा आउरदा बूद।
उमरा उमरे बूद ता में करदा बूद॥
हम सलातो सौम बेहद दाश्त ऊ।
हेच सुन्नत रा फ़रो न गुज़ाश्त ऊ॥
पेशवायाने कि दर पेश आमदन।
पेशे ऊ अज खेश बे खेश आमदन॥

शेख़ सनआँ की कहानी और उनका एक स्वप्न देखना

शेख़ सनआँ अपने समय के एक बहुत बड़े साधु थे। उनके चमत्कार के विषय में जितना भी कहा जाय थोड़ा है।

काबे की मस्जिद में पचास वर्षों तक उन्होंने फेरी लगाई और चार सौ पहुँचे हुए साधु शिष्य उनके साथ थे।

आश्चर्य यह है कि जो कोई भी साधु उनके दर्शन करता था उनसे मिलता था वह फिर अहर्निश ध्यान-मग्न और ईश्वरीय भेद को जानने में व्यस्त रहता था।

ज्ञान और विद्या के अतिरिक्त उनकी अन्तर्दृष्टि बहुत ही पैनी थी और सब बातें उनपर प्रकट थीं। ठीक ठीक सभी भेदों का उन्हें ज्ञान था।

पचास हज भी उन्होंने की थीं। और छोटे हज में तो उन्होंने अपनी सारी अवस्था ही व्यतीत कर दी थी।

व्रत और उपवास भी वह बहुत अधिक रखते थे और किसी भी व्रत को योंही खाली नहीं जाने देते थे।

बड़े बड़े सन्यासी और त्यागी जो उनके पास आते थे वह अपने आपे को भूल जाते थे।

मूए मी बेशिगाफ़ मर्दे मानवी।
दर करामातो मुक़ामात आमदी॥

हर के बीमारी व सुस्ती याफ़े।
अज़ दमे ऊ तंदुरुस्ती याफ़े॥

खल्क़ रा किलजुमला दर शादी व ग़म।
मुक़तदाए वूद दर आलम अलम॥

गर चे खुद रा क़िदवए असहाब दीद।
चंद शब ऊ हम चुनाँ दर ख़्वाब दीद॥

कज़ हरम दर राहरा उक़तादा मुक़ाम।
सिजदा मी करदे बुते रा वर दवाम॥

चूँ बेदीदआँ ख़ाब बेदार अज़ जहाँ।
गुफ़्त दर्दा ओ दरेग़ा कीं जमाँ॥

यूसुफ़े सिद्दीक़ दर चाह ओफ़ाद।
उक़बए वस सअब दर राह ओफ़ाद॥

मी नदानम ता अज़ीं ग़म जाँ बरम।
तर्के जाँ गुफ़्तम अगर ईमाँ बरम॥

वह सैकड़ों प्रकार के चमत्कार भी दिखला सकते थे। योग विद्याके पूर्ण ज्ञाता थे।

उनमें वह शक्ति विद्यमान् थी कि रोगी मनुष्य उनकी फूँक से स्वस्थ हो जाता था।

संसार के दुःख और शोक उनके लिये समान थे। वह संसार में एक प्रसिद्ध गुरु थे।

जब उन्होंने अपने आपको साधुओं में एक श्रेष्ठ साधु के रूप में देखा तो कई दिनों तक लगातार एक स्वप्न देखा,

कि काबे की मसजिद से आते हुए मार्ग में वह एक स्थान पर पड़े हुए हैं और वहाँ एक मूर्त्ति की पूजा कर रहे हैं।

जब संसार के रहस्यों से परिचित मनुष्य ने यह स्वप्न देखा तो वह दुःख से बोले शोक! हाय शोक!

इस समय सच्चे यूसुफ़ कुए में गिर पड़े, और एक बहुत भयंकर घाटी मार्ग में आगई।

मुझे यह ज्ञात नहीं है कि मैं इस शोक से अपने आपको कैसे बचा सकूँगा। और यदि किसी प्रकार धर्म्म को बचा भी लिया तो प्राण अवश्य ही देना पड़ेगा।

नेस्त यकतन दर हमा रूए ज़मीं।
कू नदारद उक़्बए दर रह चुनीं॥
गर कुनद आँ उक़्बा क़तआँ जाएगाह।
राह रौशन गर्दद्श ता पेशगाह॥
वर बेमानद दर पसे आँ उक़्बा बाज़।
दर उक़्बत रह शवद वर वै दराज़॥
आखिरुलअम्र आँ वदानिश ओस्ताद।
वामुरीदाँ गुफ़्त कारेम ओफ़्ताद॥
मी बेवायद रफ़्त सूए रूम ज़ूद।
ता शवद तावीरे ईं मालूम ज़ूद॥
चार सद मर्दे मुरीदे मोतवर।
हमरही करदन्द वा ऊ दर सफ़र॥
मी शुदंद अज़ काबा ता अक़्साए रूम।
तौफ़ मी करदंद सर ता पाए रूम॥
अज़ क़ज़ा रा वूद आली मंज़रे।
वर सरे मंज़र निशस्ता दुख़्तरे॥
दुख़्तरे तरसाए रूहानी सिफ़त।
दर रहे रूहुलअश सद मारेफ़त॥

समस्त संसार में, कोई भी ऐसा मनुष्य नहीं है, जिसे मार्ग में ऐसी घाटी न मिलती हो।

यदि इस घाटी को वह पार कर जाता है तो अपने अभीष्ट तक पहुँचने का सीधा मार्ग उसे प्राप्त हो जाता है।

यदि उस घाटी में वह भटक जाता है तो मुसीबत के कारण उसका रास्ता लम्बा हो जाता है।

उन्होंने अपने आस पास बैठे हुए साधुओं से कहा कि मुझे एक बड़ा काम पड़ गया है।

उसके भेद को समझने के लिये मुझे शीघ्र ही रूम की ओर जाना है।

शेख के साथ चार सौ बड़े बड़े साधु हो लिये।

वह काबे से लेकर रूम की अन्तिम सीमाओं तक और समस्त रूम में भ्रमण करते हुए गये।

संयोग से एक दिन उन्होंने एक बहुत ऊँची अट्टालिका देखी, जिसमें एक लड़की बैठी थी।

वह लड़की (गुवरा) ईसाई थी। पवित्रता की उज्ज्वलता उसके मुख से प्रकट हो रही थी और वह अपने धर्म्म तथा आत्मा से सम्बन्ध रखने वाली सैकड़ों बातों से भली भाँति परिचित थी।

दर सिपहरे हुस्न दर बुर्जे जमाल।
आफ़तावे बूद इज्ञा बेजवाल॥
आफ़ताव अज रश्के अक्से रूए ऊ।
जर्दतर अज आशिकाने कूए ऊ॥
हर कि दिल दर जुल्के आँ दिलदार बस्त।
अज खयाले जुल्फ ऊ जुन्नार बस्त॥
हर कि आँ दर लाले आँ दिलबर निहाद।
पाए दर रह ना निहादा सर निहाद॥
चूँ सबा अज जुल्के आँ मुशकीं शुदे।
रूम अज हिंदू सिफत पुरचीं शुदे॥
हर दो चशमश कितनए उश्शाक़ बूद।
हर दो अबरूयश दखूबी ताक़ बूद॥
चूँ नजर बर रूए उश्शाक़ ऊ फिगन्द।
जाँ बदस्ते गमजा बर ताक़ ऊ फिगन्द॥
अबरुयश बर माह ताक़े बस्ता बूद।
नरदुने बर ताक़े ऊ बनिशिस्ता बूद॥

वह बड़ी ही रूपवती और लावण्यमयी थी। उसका सौंदर्य पटने बढ़ने वाले सूर्य के समान प्रकाशमान था।

सूर्य, उसके सौन्दर्य के आगे लज्जित होकर फीका पड़ रहा था और उसकी प्रभा, बाला के उन प्रेमियों के रंग से भी अधिक उड़ी हो रही थी जो उसकी गली में पड़े हुए थे।

जिस किसी ने भी उस विपत्ना को प्रेम की दृष्टि से देखा वह फिर उसी के ख्याल में डूबा रह गया।

जिस मनुष्य ने अपने प्राण उसके ओठों ने लगा दिये, उसने प्रेम मार्ग में क़दम रखने से पहले ही अपना सिर दे डाला।

जब शीतल पवन उसकी जुल्फों से कस्तूरी की सुगन्ध लेकर उड़ी तो सारे देश में एक प्रकार की आनन्द दायक मस्ती की लहर सी दौड़ आई।

उस विपत्ना के वे दोनों नेत्र प्रेमियों को जादू डालने वाले थे और उसके सुन्दर मुख की बिखरी हुई जुल्फें उन्हें और भी बेचैन कर रही थीं। उसकी दोनों भौंहों की शोभा निराली थी।

जब वह अपने प्रेमियों की ओर कटीले संकेतों वाली आँखों से देखती थी तो उसके आगे व्याकुल होकर सिर झुके के सिवा कुछ सूझता न था।

उसकी भौंहों ने चंद्रमा के ऊपर एक ताक़ सा बना रखा था और उसमें एक मनुष्य बैठा हुआ था।

मरदुमे चशमश चो कर्दे मरदुमी।
सैद कर्दे जाने सद सद आदमी॥
रूए ऊ दर जेरे जुल्फे ताबदार।
बूद आतिश पारए बस आबदार॥
लाले सैराबश जहाने तिश्ना दाश्त।
नरगिसे मस्तश हजारों दश्ना दाश्त॥
हर कि सूए चश्मए ऊ तिश्ना शुद।
दर दिले ऊ हर मेजह सद दश्ना शुद॥
गुफ्त रा चूँ बर दहानश रह नबूद।
ता दहानश हर कि गुफ्त आगह नबूद॥
हमचु शक्ले सीजनी शक्ले दहाँश।
चमता जुन्नारे चु जुल्फश बर मियाँश॥
चाह मीमीं दर जनखदाँ दाश्त ऊ।
हमचु ईमा दर सलुन जाँ दाश्त ऊ॥
सद हजारां दिल चूँ यूसुफ बर्के सां।
आफ्ताबश दर चाह ऊ सर निगूँ॥

गौहरे खुर्शीदवश दर मूए दाश्त।
बुरक़ए शैरे सियावर रूए दाश्त॥
दुखतरे तरसा चु बुर्क़ा वरगिरिफ़्त।
बंद बन्दे शैख़ आतश दर गिरिफ़्त॥
चूँ नमूद अज़ जेरे बुरक़ा रूए खेश।
बस्त सद ज़ुन्नार अज़ यक मूए खेश॥
गरचे शैख़ आँजा नज़र दर पेश कर्द।
इश्क़े तरसाज़ादा कारे खेश कर्द॥
शुद दिलश अज़ दस्तो दर पा ओफ़ाद।
जाए आतश बूदो बर जा ओफ़ाद॥
हरचि बूदश सर बसर नाबूद शुद।
आतशे सौदा दिलश पुर दूद शुद॥
इश्क़े दुखतर कर्द ग़ारत जाने ऊ।
कुफ़्र रेख़्त अज़ ज़ुल्फ़ दर ईमाने ऊ॥
शैख़ ईमाँ दाद तरसाई ख़रीद।
आफ़ियत बफ़रोख़्त रुस्वाई ख़रीद॥
इश्क़ बर जानो दिले ऊ चीर शुद।
ता ज़े दिल नौमीद अज़ जाँ सीर शुद॥

उसके काले केशों में सूर्य के समान चमकदार एक मोती लगा हुआ था और वह अपने मुख पर काले बालों का घूँघट डाले हुए थी।

उस ईसाई बाला ने जब अपने मुख से घूँघट हटा दिया तो शेख के शरीर के प्रत्येक जोड़ में आग लग गई।

घूँघट उसके मुख से जैसे ही दूर हुआ वैसे ही शेख उसके प्रणय-पाश में बँध गया। उसने अपने एक ही बाल से सहस्रों जनेऊ पहिना दिये।

शेख ने यद्यपि अपनी दृष्टि वहाँ से हटाने का प्रयत्न किया परन्तु उस ईसाई बाला का प्रेम अपना काम कर गया।

शेख का हृदय उसके वश में नहीं रहा और फिर वह उस बाला के पैरों पर गिर गया। उसका हृदय जल रहा था वह ठीक समय पर उचित स्थान पर जा गिरा।

जो कुछ भी उसके पास था वह सब नष्ट होगया और प्रणय की अग्नि से उसका हृदय जलने लगा।

उस लड़की के प्रेम ने उसके प्राण लूट लिये और उसकी काली अलकों ने उसका धर्म्म देकर उसका धर्म्म छीन लिया।

शेख ने बेचैनी लेली और अपने सुख को बेचकर अप्रतिष्ठा मोल ले ली उसने ईमान बेच बुतपरस्ती खरीद ली।

प्रणय का अधिकार उसके प्राणों और हृदय पर हो गया। यहाँ तक कि वह अपने दिल से निराश और जान से तंग आ गया।

यकदमश नै ख्वाब चूदो नै क़रार।
मी तपीद अज़ इश्क़ो मी नालीद ज़ार॥
चूं शवे तारीक दर क़ारे सियाह।
शुद निहाँ चूं कुफ़्र दर ज़ेरे गुनाह॥
इश्क़े ऊ आँ शब यके सद वेश शुद।
लाजरम यकबारगी अज़ खेश शुद॥
हम दिलज़ खुद हम ज़े आलम बर गिरिफ़्त।
खाक बरसर कर्दो मातम दर गिरिफ़्त॥
गुफ़्त यारब इम शबम रा रोज़ नेस्त।
या मगर शमए जहाँ रा सोज़ नेस्त॥
दर रियाज़त माँदाअम शबहा वसे।
खुद निशाँ न देहद चुनीं शब रा कसे॥
हम चो शना अज़ सोखतन ताबम नमाँद।
बर जिगर ज़ुज़ खूने दिल आबम नमाँद॥
हम चो शमा अज़ सोज़ तुफ़्म मी कुशन्द।
शब हमी सोज़न्दो रोज़म मी कुशन्द॥

क्षण भरके लिये भी उसकी आँख नहीं लगती थी और न कभी उसे चैन ही मिलता था। प्रेम व्यथा से तड़पता और खूब रोता था।

जब रात्रि, काले आवरण में इस प्रकार छिप गई जिस प्रकार धर्म्म पापों के अन्दर छिप जाता है,

तब शोक की पीड़ा सौ गुनी और बढ़ गई और इसीलिये वह यकायक मूर्च्छित हो गया।

उसने भगवान तथा इस संसार दोनों से अपने दिल को हटा लिया। सिर पर धूल डाल ली और विलाप करना प्रारम्भ कर दिया।

"ऐ खुदा! क्या इस रात के बाद दिन नहीं होगा अथवा दुनिया का दीपक अब जलता नहीं है।

मैंने बहुत सी रातें जागकर प्रार्थना करने में व्यतीत कर दीं, परन्तु इतनी भयानक और लम्बी रात मैंने अभी तक नहीं देखी। और न इस जीवन में सुनी ही है।

दीपक के समान जलते हुए मुझे बहुत समय हो चुका है और अब अधिक जलने की सामर्थ्य नहीं रही है। कलेजे पर दिल के रक्त के अतिरिक्त और कोई पानी नहीं रहा है।

दिये के समान जलने की गर्मी मुझे मारे डालती है। रात शमा की तरह को जलाती है और दिन मुझे मारे डालता है।

जुमलए शब दर शबे खूं माँदा अम।
पाए ता सर ग़र्क़ दर खूं माँदा अम॥
हर दमज़ शब सद शबे खूं बुगज़रद।
मी न दानम रोज़े मन चूं बुगज़रद॥
हर कि रा यक शब चुनीं रोज़ी बुवद।
रोज़ो शब कारश जिगर सोज़ी बुवद॥
रोज़ो शब बिसयार दर तब बूदा अम।
मन बजोरे खेश इम शब बूदा अम॥
कारे मन रोज़े कि मी परदाख़तंद।
अज़ बराए इम शबम मी साख़तंद॥
यारब इम शब रा न ख़ाहद बूद रोज़।
या मगर शमए फ़लक रा नेस्त सोज़॥
यारबी चंदीं अलामत इमशबस्त।
या मगर रोज़े क़यामत इमशबस्त॥
या बे आदम शमा गरदूँ मुदा शुद।
या बे शर्मे दिलबरम दर पदा शुद॥

सारी रात मैं आकाश में डूबा हुआ पड़ा रहा हूँ। सर से पैर तक उस में सना रहा हूँ।

रात का प्रत्येक क्षण मुझ पर ग़म की वर्षा करता है। न मालूम दिन कैसे कटेगा।

यदि किसी मनुष्य को ऐसी एक रात भी व्यतीत करनी पड़े तो वह सारी उम्र अपने कर्मों को जलाता ही रहे।

महीनों मैं एक प्रकार की भयंकर जलन में जलता रहा हूँ और आज की रात ही मैं केवल अपने बल के कारण बच गया हूँ।

ऐसा मालूम होता है कि जन्म के दिन मेरे भाग्य में इसी रात का मरण लिख दिया गया।

इस रात का भी एक सूरज मालूम होता है दिन न चाहिये। अथवा आकाश की इस समय जल नहीं रहा है।

हे ख़ुदा इस रात में इतनी निशानियाँ (लक्षण) मौजूद हैं कि उसके देखने से यह क़यामत (प्रलय) का दिन जान होता है।

यह भी हो सकता है कि आकाश की इस मेरी आह की हवा लगने से थक गया हो अथवा मेरी प्रियतमा के मुख की देख कर चाँदनी दोहर पर्दे के अन्दर छिप गया हो।

शब दराज़स्तो सियह चूं मूए ऊ।
वरना सद रह मर्दुमे वे रूए ऊ॥
मी वसोज़म इम शवज़ सौदाए इश्क़।
मी नदारम ताक़ते गोशाए इश्क़॥
अक़्ल कू ता इल्म दर पेश आवरम।
या व हीलत अक़्ल वा खेश आवरम॥
दस्त कू ता खाके रह बर सर कुनम।
या ज़े ज़ेरे खाको खूं सर बर कुनम॥
पाए कू ता बाज़ जोयम कूए यार।
चश्म कू ता बाज़ बीनम रूए यार॥
यार कू ता दिल देहद दरयक ग़मम।
अक़्ल कू ता दस्त गीरद यक दमम॥
ज़ोर कू ता नालओ ज़ारी कुनम।
होश कू ता साज़े हुशयारी कुनम॥
रफ़्त सब्रो रफ़्त अक़्लो रफ़्त यार।
ई चे दर्दस्त ई चे इश्क़स्त ई चे कार॥

उसके बाल के समान काली रात लम्बी है। यदि यह बात न होती तो मैं अभी तक उसका मुख बिना देखे हुए सौ बार मर चुका होता।

आज की रात मैं प्रणय की जलन में जल रहा हूँ और अब इस शरीर में प्रेम का आक्रमण सहन करने की शक्ति नहीं है।

वह ज्ञान कहाँ है ताकि उसकी सहायता से विद्या अथवा किसी यत्न से बुद्धि को अपने पास लाऊँ!

वह हाथ कहाँ है कि जिससे गली की मिट्टी सर पर डाल लूँ अथवा मिट्टी और रक्त के नीचे से शिर निकाल लूँ!

वह पैर कहाँ कि जो यार की गली खोज ले। वह नेत्र कहाँ जो उसके चेहरे को देख ले!

इस समय ग़म में (शोक में) घुल रहा हूँ। ऐसा कोई भी दोस्त नहीं दीखता जो मेरी दिलजोई करे। बुद्धि कहां है जो आकर मेरी सहायता करे।

वह सामर्थ कहाँ है कि जिससे रोऊँ और चिल्लाऊँ! होशियार करने वाला होश कहाँ है!

सब्र चला गया, बुद्धि भी विलुप्त होगई, और दोस्त भी चला गया। यह कैसा प्रेम है, यह कैसा अन्धेर है और यह कैसा दुख है!"

जमा शुदने मुरीदान बगिर्द शेख़ व नसीहत करदन ऊ रा

जुमलए यारां बदिलदारीए ऊ।
जमा गशतंद आँ शवज़ ज़ारीए ऊ॥
हमनशीने गुफ़्तश ए शेख़े केबार।
खेज़ो ईं वसवास रा गुस्ल बेआर॥
शेख़ गुफ़्तश इमशवज़ खूने जिगर।
करदा अम सद बार गुस्ल ऐ बेख़बर॥
वाँ दिगर गुफ़्ता कि तसवीहत कुजास्त।
कै शवद कारे तो बेतसवीह रास्त॥
गुफ़्त तसवीहम बेयफ़गदंम ज़ेदस्त।
ता तवानम बर मियाँ ज़ुन्नार बस्त॥
वाँ दिगर यक गुफ़्तश ऐ पीरे कुहन।
खेज़ो दर ख़िलवत ख़ुदारा सिजदा कुन॥
गुफ़्त अगर महरूए मन ईंजासते।
सिजदा पेशे रूए ऊ ज़ेबासते॥
आँ दिगर गुफ़्ता कि ऐ दानाए राज़।
खेज़ो ख़ुद रा जमा कुन अन्दर नमाज़॥

चेलों का शेख़ को घेर कर शिक्षा देना

शेख के जितने भी मित्र थे वह सभी उसे सान्त्वना देने लगे और उसे आँसू बहाते देख कर सब उसके पास आकर इकट्ठे होगये।

एक सखा ने उससे कहा कि ऐ बड़े साधु! उठ बैठ और (नहा ले) इस वसवसे को हृदय से निकाल दे।

शेख ने उत्तर दिया कि मैंने आज की रात अपने कलेजे के खून से सौ बार स्नान किया है।

एक दूसरे ने कहा कि आपकी माला कहाँ है। बिना उसके सब काम ठीक कैसे चलेंगे?

उसने कहा मैंने फेंक दी है, ताकि कमर में जनेऊ पहन सकूँ।

उनमें से एक फिर बोल उठा कि हे वृद्ध फ़क़ीर! उठ, और ख़ुदा के सामने सर झुका।

उसने उत्तर दिया कि यदि वह सुन्दरी मेरी प्रियतमा यहाँ मौजूद होती तो उसके सामने सर झुकाते हुए मुझे अच्छा मालूम होता।

तब तक किसी और ने कहा कि ऐ भेदों के ज्ञाता! उठो और दिल लगाकर नमाज़ पढ़ो।

गुफ़्त कू मेहरावे अबरूए निगार ।
ता न बाशद जुज़ नमाज़म हेच कार ॥
वाँ दिगर गुफ़्तश परीशानीत नेस्त ।
जर्रए दर्द मुसलमानीत नेस्त ॥
गुफ़्त कस न बुवद पशीमाँ वेश अज़ीं ।
ता चेरा आशिक़ न बूदम पेश अज़ीं ॥
वाँ दिगर गुफ़्तश कि देवत राह ज़द ।
तीरे ख़ज़लाँ बर दिलत नागाह ज़द ॥
गुफ़्त देवे कू रहे मा मी ज़नद ।
गो बेज़न अलहक़ कि जेबा मी ज़नद ॥
वाँ दिगर गुफ़्ता कि हर कि आगाह शुद ।
काँ चुनाँ शेख़े चुनीं गुमराह शुद ॥
गुफ़्त मन बस क़ानेम अज़ नामो नंग ।
शीशए सालूस बिशिकस्तम बसंग ॥
आँ दिगर गुफ़्तश कि यारानेक़दीम ।
अज़ तो रंजूरन्दो माँदादिल दो नीम ॥
गुफ़्त चूं तरसा बचा ख़ुशदिल बुवद ।
दिल जे रंजे ईनो आँ ग़ाफ़िल बुवद ॥

उसने कहा कि प्रियतमा के भवन की महराव कहाँ है ताकि उसमें नमाज़ पढ़ने के अतिरिक्त और मेरा कोई काम ही न रहे।

किसी और ने कहा कि तुझे ऐसा करते हुए लज्जा भी नहीं आती। मुसल्मान होने की तुझे अणमात्र भी चिन्ता नहीं है।

शेख ने कहा कि उससे अधिक और किसका हाल बदतर होगा जो उसका आशिक़ न हो।

इसके उपरान्त किसी और ने कहा कि शैतान ने तेरा रास्ता रोक दिया है और तेरे हृदय पर यकायक बर्बादी का तीर मार दिया है।

उसने उत्तर दिया कि वह शैतान जो हमेशा लूटता है बहुत ठीक करता है। उससे कह दो कि लूटे।

किसी दूसरे ने कहा कि यदि किसी को यह ख़बर मिल गई कि इतना बड़ा पीर इस प्रकार पथ-भ्रष्ट हो गया है तब क्या होगा।

उसने जवाब दिया कि इज्ज़त और नाम से मैं रहित हो गया हूँ और मैंने शीशे " सालूस " को पत्थर से तोड़ दिया है।

किसी और ने कहा कि पुराने मित्र तुझसे नाराज़ हैं। उनके दिल टूट गये हैं।

शेख ने उत्तर दिया कि जब ईसाई की लड़की राज़ी हो जायगी तब दिल में किसी के भी नाराज़ होने का ख़्याल न रह जायगा।

आँ दिगर गुफ़्त कि बा यारां बेसाज़।
ता रवेम इमरोज़ सूए काबा बाज़॥
गुफ़्त अगर काबा न बाशद दैर हस्त।
होशियारे काबा अम दर दैर मस्त॥
आँ दिगर गुफ़्तश ईं जमाँ कुन अज़्म राह।
दर हरम बेनशीनो उज़्रे ख़ुद बेख़ाह॥
गुफ़्त सर बर आसताने आँ निगार।
उज़्र ख़ाहम ख़ास्त दस्तज़ मन बेदार॥
आँ दिगर गुफ़्त कि दोज़ख़ दूर हस्त।
मर्दे दोज़ख़ नेस्त हर कू आगाहस्त॥
गुफ़्त अगर दोज़ख़ बुवद हमराहे मन।
हफ़्त दोज़ख़ सोज़द अज़ यक आहे मन॥
आँ दिगर गुफ़्त बउम्मीदे बहिश्त।
बाज़ गरदो तौबा कुन ज़ींकारे ज़िश्त॥
गुफ़्त चूँ यारे बहिश्ती रूए हस्त।
गर बहिश्ते बाएदम आँ कूए हस्त॥

दूसरा बोला कि अब आकर साथियों से मिल जा ताकि हम सब फिर काबे को चलें।

पीर ने उत्तर दिया काबा न सही मन्दिर तो मौजूद है। मैं मन्दिर में मस्त होकर काबे से भी अधिक बुद्धिमान हो गया हूँ।

तब किसी दूसरे ने कहा कि उठिये और चल कर मस्जिद में बैठकर क्षमा प्रार्थना कीजिये।

शेख ने उत्तर दिया कि यदि ऐसा ही करना होगा तो उस प्रियतमा की चौखट पर शिर रखकर करूँगा।

किसी दूसरे ने कहा कि सब कामों से जानकारी रखते हुये इस नर्क में क्यों आ पड़े हो।

शेख ने जवाब दिया कि यदि नर्क मेरे पास आ जावे तो मेरी एक ही आह से जल कर भस्म हो जावे।

किसी ने कहा कि स्वर्ग की आशा में इस बुरे काम से हाथ खींच ले और अपने को सुधार।

उत्तर मिला कि मेरे लिये स्वर्ग के समान सुन्दर मुख वाली प्रियतमा मौजूद है और अगर उससे भी ज्यादा किसी वस्तु की आवश्यकता होगी तो उसकी गली उपस्थित है।

आँ दिगर-गुफ़्त कि अज़ हक़ शर्मेदार।
हक़ तआला रा वख़ुद आज़र्मदार॥
गुफ़्त ईं आतश चु हक़ दर मन फ़िगंद।
मन वख़ुद न तवानम अज़ गरदन फ़िगंद॥
आँ दिगर गुफ़्तश बेरौ ऐ मन बेबाश।
वाज़ ईमाँ आवरो मोमिन बेबाश॥
गुफ़्त जुज़ कुफ़्र अज़ मने हैराँ मख़ाह।
हर कि काफ़िर शुद अज़ो ईमाँ मख़ाह॥
चूँ सख़ुन दर वै नआमद कारगर।
तन ज़दंद आख़िर वदाँ तीमारदर॥
मौजज़न शुद परदए दिल शाँ ज़े खूँ।
वा चे आयद अज़ पसे पर्दा बुरूँ॥
तुर्क रोज़ आमद चु बाज़रीं सिपर।
हिंदुवे शब रा व तेग़ अफ़गंद सर॥
रोज़े दीगर कीं जहाने पुर ग़ुरूर।
शुद ज़े बहरे चश्मए ख़ुर ग़र्क़े नूर॥
शेख़ ख़िलवतसाज़ कूए यार शुद।
वा सगाने कूए ऊ दरकार शुद॥

कोई फिर कहने लगा ख़ुदा का लिहाज़ रख और उसको अपने ऊपर दयालु रखने का प्रयत्न कर।

शेख ने उत्तर दिया कि जब ख़ुदा ही ने मेरे दिल में यह आग पैदा कर दी है फिर धर्म और ईमान के पीछे क्यों पड़ूँ।

दूसरे ने कहा कि इस से बाज़ आ और धार्मिक बन जा।

उसने कहा मुझे कुफ्र के सिवा कुछ न चाहिये। ऐसा जो काफ़िर हो उस से धर्म की उम्मीद न कर।

जब किसी की बात ने उसके ऊपर कुछ भी असर नहीं किया तो उसके साथ दया दिखलाने वाले उसके साथी सब चुप होकर बैठ रहे।

उनके दिलों में रक्त का प्रवाह ज़ोरों से हो रहा था और प्रतीक्षा कर रहे थे कि देखें भविष्य क्या रँग लाता है।

दिवस रूपी यवन सोने की ढाल लिये हुये आया और उसने रजनी रूपी हिन्दू का शिर अपनी तलवार से काट डाला।

दर्प पूर्ण जगत पुनः भगवान भास्कर की उज्ज्वलता में मौजें मारने लगा।

शेख ने अपना आसन उसी प्रियतमा की गली में जमा दिया और उसकी गली के कूकरों के साथ निवास करने लगा।

मोतकिफ़ बेनशिस्त दर ख़ाके रहश।
हमचु मूए गश्त रूए चूं महश॥
क़र्बे माहे रोज़ो शब दर कूए ऊ।
सब्र कर्दज़ आफ़तावे रूए ऊ॥
आक़बत बीमार शुद बेदिल सिताँश।
हेच बर नरफ़ सरअज़ आसताँश॥
बूद ख़ाके कूए आँ बुत बिस्तरश।
बूद बालीं आसताने आँ दरश॥
चूँ न बूद अज़ कूए ऊ बुगुज़श्तनश।
दुखतरा आगह शुद ज़े आशिक़ गश्तनश॥
ख़ोशतन रा आंज़मी कर्द आँ निगार।
गुफ़्त शेखा अज़ चे गश्ती बेक़रार॥
कै कुनद ए अज़ शरावे इश्क़ मस्त।
ज़ाहिदाँ दर कूए तरसायाँ नेशस्त॥
गर बज़ुल्फ़म शेख इक़रार आवरद।
हर दमश दीवानगी बार आवरद॥
शेख गुफ़्तश चूँ ज़बूनम दीदई।
लाज़रम दुज़दीदा दिल दुज़दीदई॥

उसका चन्द्रमा के समान श्वेत और चमकदार मुख वालों के समान काला पड़ गया। वह रास्ते में मिट्टी पर बैठ गया।

लगभग एक मास वह उस गली में उसी प्रियतमा के पुनः दर्शन की प्रतीक्षा में पड़ा रहा।

अन्त में बीमार हो गया। परन्तु उसकी चौखट से अपना सर न उठाया।

यार की गली की धूल उसका बिस्तर थी। उसके द्वार की चौखट उसके लिये तकिया के समान थी।

वह उस गली से कहीं जाता ही न था। अन्त में वह ईसाई बाला उसके पास पहुँची,

और उस पर दया भाव प्रदर्शित करते हुये पूछा ऐ शेख तू किस लिये बेचैन हो रहा है?

ऐ प्रणय की मदिरा में मस्त साधु, पाक मुसलमान कभी ईसाइयों की गली में भी बैठा करते हैं!

हाँ, यदि मेरी काली अलकों पर, तेरा दिल आगया है तो सदैव के लिये वह पागल बना रहेगा।

शेख ने कहा कि तूने मुझको दुर्बल देख लिया है। मैं वृद्ध आशिक़ हूँ और कमज़ोर हूँ।

या दिलम देह बाज या बा मन बेसाज।
दर नियाज मन निगर चंदीं मनाज॥

जाँ फ़िशानम बर तो गर फ़रमाँ दिही।
बर तो बाही बाजम अज लब जाँ दिही॥

ऐ लबो जुलफ़त ज़ियानो सूदे मन।
रूयो क़ूयत मक़सदो मक़सूदे मन॥

गह जे तावे जुल्फ़ दर तावम मकुन।
गह जे चश्मे मस्त दर खावम मकुन॥

दिल चु आतश दीदा चूं अब्र अज तूअम।
बेकसो बेयारो बेसब्र अज तूअम॥

बेतो बर जानम जहाँ बिफ़रोखतम।
को सबीं कज इश्क़े तो बरदोखतम॥

हमचो बाराँ अश्क मी बारम जे चश्म।
ताँ के बेतो चश्म ई दारम जे चश्म॥

दिल जे दस्तो दीदा दर मातम बेमाँद।
दीदा रूयत दीदा दिल दर ग़म बेमाँद॥

या तो दिल वापिस करदे या मेरी हो जा। मेरी मोहब्बत को देख और इतना नाज़ न कर।

अगर तू आज्ञा दे तो मैं अपनी जान को न्योछावर कर दूँ और अगर तू चाहे तो मुझे अपने ओठों से फिर नई जान बख्श दे।

ऐ प्रियतमा तेरे होठ और तेरी काली अलकें ही मेरी हानि और लाभ के कारण हैं। और तेरा मुख और गला मेरा अभीष्ट है।

कभी तू अपनी घुंघराली जुल्फ़ों से मुझे बेचैन कर देती है और कभी अपनी मदमाती आँखों से मुझे बेहोश कर देती है।

तेरी वजह से मेरे दिल में धक् धक् करके आग जल रही है। तूने ही मुझे बेखबर बना दिया है।

तेरी जुदाई में मैंने अपनी जान की भी सुधि भुला दी है। और देख तेरे प्रेम में मैंने कौन सी दौलत हासिल की है।

मैं बादल की तरह अपनी आँखों से आँसू बरसाता हूँ, क्योंकि जब तू नहीं है तब उन आँखों से यही उम्मीद करता हूँ।

मेरा दिल मुझसे किनारा कर गया और आँख उसके दुख में बेचैन हो गई। आँख ने तेरा मुख क्या देखा कि वह सदैव के लिये मेरे दिल को दुख में फँसा गई।

उंचे मनज दीदा दीदम कस नदीद।
उंचे मनज दिल कशीदम की कशीद॥
अज दिलम जुज खूने दिल हासिल न मुंद।
खूने दिल ताके खुरम चूं दिल न मुंद॥
बेश अर्जी बर जाने ईं मिसकीं मजन।
दर फ़तूदे ऊ लकद चंदीं मजन॥
रोजगारे मन बशुद दर इंतजार।
गर बुवद वस्ले बेआयद रोजगार॥
हर शबे बर जाँ कमीं साजो कुनम।
बर सरे कूये तो जाँ बाजो कुनम॥
रूये बर खाके दरत जां मीदेहम।
जाँ व निखे खाक अरजाँ मीदेहम॥
चन्द नालम बर दरत दर बाज कुन।
यक दमम बा खेशतन दम साज कुन॥
आफ़तावी अज तो दूरी चूं कुनम।
जर्रा अम बे तो सवूरी चूं कुनम॥

जो कुछ मैंने अपनी इन आँखों से देखा है वह किसी को भी दिखलाई नहीं दिया और जो बोझ मैंने अपने दिल की वजह से उठाया है वह किसी ने भी नहीं उठाया है।

मेरे दिल में अब खून के अतिरिक्त और कुछ भी शेष नहीं रहा है। मैं किस दिल का खून पान करूँ जब कि मेरे पास दिल ही नहीं है।

इससे भी बढ़ कर अब इस दीन की जान के ऊपर हमला न कर और इसको भी जीतने का यत्न न कर।

मेरी सारी उम्र इन्तिजारी में बीत गई अब यदि मिलन हो जाये तो फिर दिन निकल आयेगा।

प्रत्येक रात को मैं अपनी जान दे देने की तय्यारी करता हूँ और तेरी गली में जान पर खेलना चाहता हूँ।

तेरे दर्वाजे के सामने ही पड़ा रहकर मैं अपने प्राणों को गँवा देना चाहता हूँ और मिट्टी के मोल अपनी जान को बेच रहा हूँ।

भला, कब तक मैं इस प्रकार तेरे द्वार पर बैठा हुआ आँसू बहाता रहूँ? थोड़ी देर के लिये ही इस दर्वाजे को खोल दे और क्षण भर के लिये मुझसे दो बोल बोल दे।

तू सूरज है, मैं तुझसे कुछ अधिक दूरी पर नहीं हूँ। मैं तेरे लिये ज़र्रे के समान हूँ, फिर तेरे पास बिना आये हुए कैसे रह सकता हूँ।

गरचे हम चूं साया अम दर इज़्तराब।
वरजे हम अज़ रौशनत चूं आफ़ताब॥
हक़ गरदूं रा वर आरम ज़ेरे पर।
गर फ़ेरोद आरी वरीं सर गश्ता सर॥
नीं रवम दर ख़ाक जाने सोख़्ता।
आतशे आहम जहाने सोख़्ता॥
पायम अज़ इश्क़े तू दर गिल माँदा अस्त।
दस्त अज़ शौक़े तू वरे दिल माँदा अस्त॥
नीं दर आयद जे अदरे ख़्वत जाँ जे तन।
चन्द वाशी वा मनो पिन्हाँ जे मन॥
दुख़्तरश गुफ़्त ऐ ख़ज़ूक अज़ रोज़गार।
साज़े काफ़ूरो कफ़न कुन शर्मसार॥
चूं दमत सर्दअस्त दमसाज़ी मकुन।
पीर गश्ती क़स्दे दिल बाज़ी मकुन॥
ईं चनीं अज़्मे कफ़न करदन तुरा।
बेहतर आयद जाँ के अज़्मे मन तुरा॥
चूं तो दर पीरी बयक नानेगिरी।
इश्क़ वरज़ीदन न दिवानी बेरी॥

मैं छाया हूँ। मेरी कोई निजी हस्ती नहीं है, लेकिन फिर भी मैं तेरे झरोके से होकर सूरज की रोशनी की तरह अन्दर पहुँच जाऊँगा।

अगर तू मुझ बेचैन के ऊपर तनिक सी भी दया दिखलायगी तो मैं इतना ऊँचा चढ़ जाऊँगा कि सातों आसमान मेरे नीचे हो जायँगे।

मैं अपने प्राण को जलाकर मिट्टी में मिला जा रहा हूँ और मेरी आह की आग में दुनियाँ भस्म हो चुकी है।

तेरे प्रेम के कारण मेरी जान पर आ बनी है और तुझसे मिलने के लिये अपना दिल थामे हुए बैठा हूँ।

जब तेरा मुँह पर्दे के अन्दर हो जाता है तो मेरी जान निकल जाती है। मेरे दिल की साथिन! तू कब तक मुझसे पृथक रहेगी।

लड़की ने उससे कहा कि ऐ दुनियाँ भर के मूर्ख! तुझे शर्म नहीं लगती। तुझे तो अब क़ब्र में जाने का सामान करना चाहिये।

तेरी साँस ठंडी हो चली है तू अब गर्मी न दिखा। अब बुड्ढा होकर प्रेम करने के लिये उतावला न बन।

इस समय तू अपने कफ़न का इन्तज़ाम कर। अब यही तेरे लिए अच्छा होगा। मुझसे मिलने की इच्छा को अपने दिल से दूर कर दे।

तू बुढ़ापे में एक रोटी के लिये मारा मारा फिर रहा है। तू प्रेमी कैसे हो सकता है, जा यहाँ से दूर भी हो।

चूं न पोरे नाँ न ख़ाहो पादशाह।
के तमामो पादशाही पादशाह॥
शेख़ गुफ़्तश मन बेगोई मन कुनम।
मन ग़ुलामम तुज गुमे इश्के मो कुन॥
आशिक़ीरा चे जवाँ चे पीर मर्द।
इश्क़ बर हर दिल के ज़द लश्कर करद॥
गुफ़्त दुख़्तर गर करी कारे दुरुस्त।
दस्त बायद शुस्त अज़ इस्लाम दुरुस्त॥
हर चे तू हुक्मे मारे शेख़ा मेकुनी।
इश्के तू मुज रंगो बूए मेरा मेकुनी॥
शेख़ गुफ़्तश हर चे गोई आँ कुनम।
लेक फ़रमाई तबा फ़रमा कुनम॥
गुफ़्त दुख़्तर गर तु हमती मर्द कार।
कर बायद चार चीज़त इख़्तियार॥
सिन्धा कुन पेरो मुतो क़ुरआँ मेसोज़।
सुब्ह नोशो दीदा अज़ ईमाँ मेदोज़॥

जब कि तू एक रोटी नहीं बना सकता तो फिर बादशाही के लिये क्यों प्रयत्न कर रहा है?

शेख ने उत्तर दिया कि तू चाहे जितनी सख़्त बात कर मैं तेरे प्रेम के अतिरिक्त कोई काम नहीं कर सकता।

प्रेमियों को बूढ़े और जवान होने से क्या मतलब है। वह हर एक अवस्था में समान है।

प्रणय जिस दिल पर हमला करता है उस पर अपना रोब जमा लेता है।

लड़की ने कहा कि अगर तू इस काम में पक्का है तो अपने धर्म इसलाम को छोड़ दे।

जो आदमी अपने प्यारे के धर्म का नहीं होता है उसका प्रेम रंग और बू से बढ़ कर नहीं होता है।

शेख ने कहा तू जो कुछ कहेगी उसे मैं जरूर ही करूँगा, और जो आज्ञा देगी उसे भरसक पूरा करने का प्रयत्न करूँगा।

लड़की ने कहा कि अगर तू मेरा सब काम करने के लिये तय्यार है तो तुझको चार बातें माननी पड़ेंगी।

तू मूर्ति पूजा कर, क़ुरान को जलादे, शराब पी और धर्म छोड़ दे।

शेख़ गुफ़्त खम्र करदम इख़्तियार।
वा से आं दीगर नदारम हेच कार॥
वा जमालत खम्र तानम खुर्द मन।
वां से दीगर रा नतानम कर्द मन॥
गुफ़्त बर खेज बेआ ओ खम्र नोश।
खश बेनोशी खम्र आई दर खरोश॥

रफ़तने शेख़ बा दुख़्तर बे दैरे मुग़ाँ व मस्त गरदीदन व ख़बर शुदने तुरसायाँ अज़ अहवाले ख़ेश

शेख़ रा बुरदंद ता दैरे मुग़ाँ।
आनदंद आँ जा मुरीदाँ दर क़ुग़ाँ॥
आतिशे इश्क़ आबेकारे ऊ बसुर्द।
चुल्के तरसा रोज़गारे ऊ बसुर्द॥
शेख़ अलहक़ मजलिसे बस ताज़ा दीद।
मेज़बाँरा हुस्ने बे अंदाज़ा दीद॥
जर्रए अक़्लश न माँदो होश हम।
दर करीदा जाएगाह ख़ामोश हम॥

शेख़ ने उत्तर दिया कि मैं शराब इख़्तियार करता हूँ और बाक़ी की तीन चीज़ों की मुझे कोई ज़रूरत नहीं है।

मुझे सिर्फ़ इतना अधिकार दे दे कि मैं तेरी सूरत देखता रहूँ। बस मैं शराब पी सकता हूँ। और शेष की तीन बातों को मैं छोड़ता हूँ।

उस लड़की ने कहा कि उठ कर आ और शराब पी। शराब पीने पर तुझे वह नशा आयेगा कि तू मतवाला हो जायगा।

शेख़ का सुन्दरी बाला के साथ मदिरा गृह में जाना और मतवाला हो जाना तथा ईसाइयों का उसका समाचार जानना

शेख़ को शराबख़ाने में लिवा ले गये। उसके चेले उसकी दशा पर खेद करते हुए और अन्य तर्क-वितर्क करते हुए रह गये।

प्रेमाग्नि ने उसकी प्रतिष्ठा को भस्म कर दिया और ईसाई बाला ने उसका हाल ख़राब कर दिया।

सत्य यह है कि शेख़ ने उस मदिरा गृह में एक बहुत ही आनन्द दायक मजलिस देखी और उसके सौन्दर्य को बहुत ही बड़ा चढ़ा देखा।

यह देखते ही शेख़ बेसुध हो गया और एक स्थान पर चुर होकर बैठ गया।

जाम लिया उसने प्रेम से भरा प्याला।
सौंप दिया दिल उसे और जाम ले लिया॥
वह साकी था जुल्फों में हृदय था।
इसके बाँधे माशूक उसे यार पुकार॥
पूँ हरीफे आशो बेदर्द शेख।
जाहिद न दर दुखता पिनहाँ बेद शेख॥
आलिमे अज शौक दर आलम फिताद।
मैखो मीनो साग़र मैखानए फिताद॥
साहिबे दीवार सिरकशे नीस्त करे।
हुलकए आज जुल्फे ऊ दर गोश करे॥
मुर्दे मय अजमानीके दरगी यादगश्त।
दिदे कुरआँ आज बमे अनवार दाश्त॥
पूँ मे अज मासूर लाफे ऊ जमीद।
दामने ऊ रफ्तो लाफे ऊ जमीद॥
हरफे आरिफ चूद अज आलम बरफ्त।
नामे आमद आलमे चूँ आदम बरफ्त॥
सुब्ह माना कि कूजा अज मयाम्त।
पाकुअज जीदे जमीरे ऊ बयाम्त॥

उसने अपनी प्रियतमा के हाथ से मदिरा से भरा हुआ प्याला ले लिया और उसे पीकर अपने काम से हाथ खींच लिया।

मदिरा और प्रेम दोनों इकट्ठे हो गये और उनके सम्पर्क से शेख के हृदय में प्रणय पहले से लाख गुना बढ़ गया।

इसके अतिरिक्त शेख ने अपने यार के अधरों को निकट से देखा और डिब्बे में छिपे हुए उसके लाल पर दृष्टि डाली।

शौक से उसका प्राण फड़फड़ाने लगा और रक्त के बिन्दु उसके नेत्रों से जोरों के साथ टपकने लगे।

उसने एक और प्याला लेकर पी लिया और अपनी प्रियतमा के केशों की घुँघराली लट को कान में पहन लिया।

शेख को लगभग सौ पुस्तकें जबानी याद थीं। कुरान का भी पाठ उसने बहुत से गुरुओं से किया था और वह भी उसे कण्ठस्थ था।

जैसे ही मदिरा उसके कण्ठ से नीचे उतरी उसकी स्मरण शक्ति जाती रही और अहंकार चूर्ण हो गया।

मदिरा के असर से उसकी बुद्धि और विवेचन शक्ति विलीन हो गई और जो कुछ भी उसे याद था, सब उसके ध्यान से जाता रहा।

उसके पास जितने भी गुण थे उसमें जितनी भी विशेषताएँ थीं वह सब मदिरा के असर से जाती रहीं।

इश्के आँ दिलबर बेमाँदश सावनाक।
हर चे दीगर बूद कुल्ली रफ़ पाक॥
शेख चूँ शुद मस्त इश्कश जोर कर्द।
हमचु दरिया जाने ऊ पुर शोर कर्द॥
आँ सनम रा दीदमे दर दस्तो मस्त।
शेख शुद यकबारगी आँजा ज़े दस्त॥
दिल बेदाद अज दस्तो अज मै खुरदनश।
खास्त ता दस्ते कुनद दर गरदनश॥
दुख्तरश गुफ्तए तू मर्द कार ना।
मुद्दई दर इश्क मानी दार ना॥
गर क़दम दर इश्क मोहकम दारिए।
मजहबे ईं जुल्फे पुरखम दारिए॥
इक़तिदा गर तू बजुल्फे सन कुनी।
बा सन ईं दम दस्त दर गरदन कुनी॥
गर नखाही कर्द ईंजा इक़तिदा।
खेज़ो मरौ ईनक आसा ईनक रिदा॥

यदि कुछ रह गया उसके पास तो वह विपत्ति डाने वाला उसकी प्रियतमा का प्रणय। इसके अतिरिक्त उसका सर्वस्व जाता रहा।

शेख जिस समय मतवाला हो गया, उस समय उसके प्रेम ने और भी जोर बाँधा और नदी की बाढ़ के समान उसने उसके हृदय को जोश और शोर से परिपूर्ण कर दिया।

एक और बात ने उसे और भी मतवाला बना दिया। उसने अपनी प्रणयिनी को हाथ में मदिरा का प्याला लिये हुए देखा।

बस फिर क्या था, उसके दिल में वह भयंकर तूफान उठा कि उसका दिल बिल्कुल हाथ से जाता रहा और उसने चाहा कि अपनी प्रियतमा के गले में बाहें डाल दे।

यह देखकर उसकी प्रेमिका ने कहा कि तू अच्छा आदमी नहीं है। तू केवल अपनी जबान से तो कह सकता है परन्तु कार्यों में उन वचनों को परिणत नहीं कर सकता।

अगर तू प्रेम में संलग्न रहना चाहता है तो मेरी घुँघराली अलकों के समान ही विधर्मी बन जा।

यदि तू मेरी अलकों की समानता कर लेगा तो उसी समय मेरे गले से लग जायगा।

लेकिन यदि तू मेरी आज्ञा नहीं मानता तो यहाँ से चला जा। यह मेरी लाठी है और यह चादर।

शेख आशिक़ गश्ता कार उफ़्तादा बूद।
दिल जे ग़फ़लत बर क़ज़ा बिनिहादा बूद॥
आँजमाँ क़दर सरश मस्ती न बूद।
यक नफ़स ऊ रा सरे हस्ती न बूद॥
आँ ज़माँ चूँ शेख आशिक़ गश्त मस्त।
मस्त आशिक़ चूँ बुवद रफ़ता जे दस्त॥
बर न आमद बा खुदी रूसवा शुद ऊ।
मी न तरसीद अज़ कसो तरसा शुद ऊ॥
बूद मै बस कोहना दर वै कार कर्द।
शेख रा सरगश्ता चूँ परकार कर्द॥
पीर रा मै कोहनः ज़ो इश्क़े जवाँ।
दिलबरश हाज़िर सबूरी कै तवाँ॥
शुद खराबाँ पीरो शुद अज़दस्त मस्त।
मस्त आशिक़ चूँ बुवद रफ़ता जे दस्त॥
गुफ़्त मे ताक़त शुदम ऐ माहरू।
अज़ मनी बेदिल चे मीख़ाही बगू॥

शेख को अवश्य लग रही थी और वह अपना अभीष्ट भी सिद्ध करना चाहता था। वह बेहोशी में अपने दिल को भाग्य के हाथ में दे चुका था।

सौंदर्य पान में पहले ही उसे अपनी प्रेमिका के अतिरिक्त किसी का ध्यान नहीं था। अब तो भान ही दूसरी हो गई।

अब वह मस्त हो रहा था और उस मतवाली अवस्था में अपने आपे को खो चुका था।

गर बहुशयारी नगश्तम बुत परस्त।
पेशे बुत मुसहफ़ बेसोज़म मस्त मस्त॥
दुरतरश गुफ़्त ईं ज़मां मर्देमनी।
खाबे खुश बादत कि दर खदमनी॥
पेश अज़ीं दर इश्क़ बूदी खाम खाम।
खुश बेज़ी चूँ पुख्ता गश्ती बस्सलाम॥
चूँ खबर नज़दीके तरसायाँ रसीद।
काँचुनाँ शेखे रहे ईशाँ गुज़ीद॥
शेख रा बुर्दंद सूए दैर मस्त।
बाद अज़ाँ गुफ़्तंद ता ज़ुन्नार बस्त॥
शेख चूँ दर हल्क़ए ज़ुन्नार शुद।
खिर्का रा आतशज़दो दरकार शुद॥
दिल ज़े दीने खेशतन आज़ाद कर्द।
ना ज़े काबा ना ज़े शेखी याद कर्द॥
बादे चंदीं सालअां ईमाँ दुरुस्त।
ईं चुनीं यक बारा दस्त अज़ बे बशुस्त॥

जब मैं अपने होश में था मैंने कभी मूर्ति के सामने शिर नहीं झुकाया अब मतवाली अवस्था में मूर्ति के सामने प्रतिज्ञा करके क़ुरान को अग्नि के हवाले कर दूँगा।

ईसाई वाला ने कहा कि हाँ अब तू मेरे योग्य हो गया है और काम का आदमी बन गया है।

अब जाकर सुख की नींद सो। इससे पहिले तू कच्चा था। अब पक्का हो गया है इसलिये खूब मजे में रहेगा।

ईसाइयों को यह समाचार मिला कि इस प्रकार के एक शेख ने उनका धर्म ग्रहण कर लिया है।

वे सब आये और शेख को उसी अवस्था में अपने गिरजे में ले गये। और उससे कहा कि अब अपने धर्म को छोड़ कर हमारे धर्म की दीक्षा ग्रहण कर।

शेख ने दीक्षा ले ली और अपनी गुदड़ी को आग में जला दिया।

वह अपने धर्म से पृथक हो गया। अब न उसे काबे का ही ध्यान था और न अपने शेख होने की सुध।

बहुत बरसों तक अपने धर्म पर दृढ़ रह कर अब उसने एकाएक उसे तिलांजलि दे डाली।

ज़रये इश्क़ अज़ कमी बर जस्त चुस्त।
बुर्द मारा बर सरे लौहे न खुस्त॥
इश्क़ अज़ीं बिस्यार करदस्तो कुनद।
सुबह रा चुन्नार कर दस्तो कुनद॥
पुखतये अज़ू अस्त अबजद ख्वाने इश्क़।
सिर शिनासे ग़ैब सर गरदाने इश्क़॥
ईं हमा खुद रफ़्त बर गो अन्दके।
ता तू कै ख्वाही शुदन वा मा यके॥
चूँ बिनाये वस्ले तो बर अस्त बूद।
उँचे करदम बर उमीदे वस्ल बूद॥
वस्ल ख्वाही व आशनाई याफ़तन।
चन्द सोज़म दर जुदाई याफ़तन॥
बाज़ दुख़्तर गुफ़्त कै पीरे असीर।
मन गराँ क़ाबीनमो तू बस फ़क़ीर॥
सीमे ज़र बायद मरा ऐ बेख़बर।
कै शव बे सीम कारे तो चोज़र॥
चूँ नदारी ज़र सरे खुद गीरो रौ।
नक़क़ये बेसिताँ ज़े मन ए पीरो रौ॥

एकायक तेरे इश्क़ ने निकल कर मुझ पर हमला कर दिया और मैं फिर वहीं पहुँच गया जहाँ से चलना आरम्भ किया था।

इस प्रेम ने ऐसे अनूठे काम किये हैं और करता रहता है। इसने शेख को दूसरे धर्म का अवलम्बी बना दिया और बनाएगा।

प्रेम के प्रारम्भिक अक्षर पढ़ने वाला चेला भी ज्ञान का पक्का होता है और प्रणय की लगन में भटकने वाला मनुष्य ईश्वरीय रहस्यों में जानकारी रखता है।

शेख ने फिर अपनी प्रेमिका से कहा कि यह सब हो चुका अब यह बतलाओ कि वस्ल कब होगा?

उसके लिये जो कुछ शर्तें थीं वह पूरी भी हो चुकीं। मैंने जो कुछ किया वह भी तुम्हारे मिलने की उम्मीद पर।

अब तुम मुझे किस दिन अपना दोस्त समझ कर मिलने की राह बताओगी और मैं कब तक तुमसे अलग रहकर इस जुदाई की आग में जलता रहूँगा?

लड़की ने उत्तर दिया कि ऐ नये बने हुए बूढ़े! मुझे अपने लिये दौलत की आवश्यकता है और तू बिल्कुल निकम्मा है।

नादान! ज़रा सोच तो सही रुपये और अशर्फ़ों की माँग तू किस प्रकार पूरी करेगा? बिना चाँदी के तेरा कार्य किस प्रकार सोना बनेगा?

तेरे पास अगर रुपया नहीं है तो अपना रास्ता नाप और यहाँ से चला

हम चो ख़ुर्शीद सुबुक रौ फ़र्द वाश ।
सब्र कुन मरदानावारो मर्द वाश ॥
पीर गुफ़्त ऐ सर्व क़द सीमबर ।
अहद नेको मी वरी अलहक़ बसर ॥
कस नदानम जुज़ तो ए ज़ेबा निगार ।
दस्त अज़ाँ शेवा सुखन आखिर बेदार ॥
दर रहे इश्क़े तो हर चम बूद शुद ।
कुफ़्रो इस्लामो ज़ियानो सूद शुद ॥
चंद दारी बेक़रारम ज़िन्तज़ार ।
तू न दारी ईं चुनीं वामन क़रार ॥
जुमलए यारां ज़ेमन बर गश्ता अंद ।
दुश्मने जाने मने सर गश्ता अंद ॥
तू चुनीं ईशाँ चुनाँ मन चूं कुनम ।
नै दिलम माँदा न जाँ मन चूं कुनम ॥
दोस्तर दारम मन ए ईसा सरिश्त ।
वा तो दर दोज़ख कि बे तो दर बहिश्त ॥

जा। सफ़र के लिये यदि ख़र्च की ज़रूरत हो तो मैं तुझे अपने पास से कुछ दे सकती हूँ।

तेज़ चलने वाले सूरज की तरह अपने रास्ते पर आगे बढ़ और मर्दों की तरह साहस व धैर्य्य से काम ले।

बूढ़े ने कहा कि ऐ कठोर हृदय, परन्तु ख़ूबसूरत माशूक़! सच बात तो यह है कि तू बड़ी ख़ूबी के साथ अपने वादे को पूरा कर रही है!

मैं तो तेरे सिवाय किसी दूसरे यार को जानता भी नहीं हूँ। फिर ऐसी बातें करने से क्या लाभ!

मेरे पास जो कुछ भी था वह सब तेरे प्रेम में पड़कर गँवा चुका हूँ। अब न धर्म्म है और न ख़ुदा।

नफ़ा और नुक़सान सभी कुछ जाता रहा। तू मुझे अपने लिये कब तक बेचैन रक्खेगी? तूने तो मुझसे मिलने का वादा किया था।

मेरे जितने भी दोस्त थे वह सब मुझसे बिछुड़ गए हैं। और यही नहीं बल्कि मुझ दुखिया की जान के गाहक बन गए हैं!

तू इस प्रकार बदल गई और उन लोगों ने भी मुँह फेर लिया! अब मैं क्या करूँ? अफ़सोस न तो अब मेरा दिल ही रह गया है और न जान ही।

ऐ ईसा के समान दयालू प्रियतमे! मुझे तो तेरे साथ नर्क में रहना अच्छा है और बिना तेरे स्वर्ग भी मुझे बहुत बुरा मालूम देगा।

आक़बत चूं शेख़ आमद मर्दे ऊ ।
दिल बसोख़्त आँ माह रा बर दर्दे ऊ ॥
गुफ़्त का बीनम कनूं ऐ नातमाम ।
ख़ूक बानी कुन मरा साले मुदाम ॥
ता चु साले बुगुज़रद हर दो बहम ।
उम्र बुगुज़ारेम दर शादी व ग़म ॥
शेख़ अज़ फ़रमाने जानाँ सर न ताफ़्त ।
काँ कि सर तावद ज़े जानाँ सर न याफ़्त ॥
रफ़्त शेख़े कावओ पीरे के बार ।
ख़ूक बानी कर्द साले इख़तियार ॥
दर निहादे हर कसे सद ख़ूक हस्त ।
ख़ूक बायद कुश्त या ज़ुन्नार बस्त ॥
तू चुना ज़न मी बरी ऐ हेच कस ।
काँ ख़तर आँ पीर रा उफ़्तादो बस ॥
दरदरूने हर कसे हस्त ईं ख़तर ।
सर बुरूँ आरद चो आयद दर सफ़र ॥

अन्त में जब शेख बिल्कुल उसके काम का होगया तो उस चन्द्रवदनी के हृदय में भी उसके प्रति दया उत्पन्न हुई ।

उसने कहा कि पूरे एक वर्ष तक रोज़ाना मेरे सुअर चराया कर ।

जब एक वर्ष पूरा हो जायगा तब हम दोनों मिलेंगे और साथ साथ रहकर समय बितावेंगे । और दुःख तथा आराम में एक दूसरे के साथी रहेंगे ।

शेख़ ने अपनी प्रेमिका के कहने को शिरोधार्य कर लिया । जो मनुष्य अपनी प्रणयिनी के वचनों को नहीं मानता वह रहस्य को नहीं समझ सकता है ।

काबे का शेख़ और इतना बड़ा साधु एक सुअर चराने वाले के रूप में परिणत हो गया और उसने एक वर्ष तक यह कार्य करना स्वीकार कर लिया ।

प्रत्येक मनुष्य के पास स्वभावतः इच्छाओं रूपी सहस्रों सुअर होते हैं । फिर या तो उनको समाप्त ही कर डाला जावे अथवा उनको चराया जावे ।

ओ दीन-हीन मानव ! तू कदाचित् यह सोचता होगा कि यह आपत्ति केवल उस शेख़ के ही ऊपर पड़ी ।

नहीं, बात दूसरी है । प्रत्येक मनुष्य के हृदय में यह विघ्न उपस्थित है और जब वह ज्ञान के मार्ग में अग्रसर होता है तब उसे इसका ज्ञान आता है ।

तू जे खूके खेश अगर आगह नई ।
सख्त माजूरी कि मर्दे रहनई ॥
चूं क़दम दर रहनई मरदानावार ।
हम बुतो हम खूक बीनी सद हज़ार ॥
खूक कुश बुत सोज़ दर सहराए इश्क़ ।
वरना हमचू शेख शौ रुस्वाए इश्क़ ॥
आक़बत चूँ शेखे दीं रुसवा न बूद ।
दरमियाने रूम सर गोग़ा न बूद ॥

दर माँदने मुरीदान बकारे शेख़ व मुराजअत करदन व काबा

हमनशींनानश चुनाँ दरमानदंद ।
कज़ फ़रोमाँदन बजाँ दरमानदंद ॥
जुमला अज़ यारीए ऊ बगुरेख़तन्द ।
अज़ ग़मे ऊ ख़ाक बर सर रेखतन्द ॥
बूद यारे दरमियाने जमआ चुस्त ।
पेश शेख़ आमद कि ए दरकार सुस्त ॥
मी रवम इमरोज़ सूए काबा बाज़ ।
चीस्त फ़रमाँ बाज़ बायद गुफ़्त राज़ ॥

यदि तू अपने सुअर को नहीं जानता है तो तू क्षमा के योग्य है, क्योंकि तू इस योग्य नहीं है ।

जब तू इस रास्ते में चलता है लाखों मूर्त्तियाँ और सुअर तेरे सम्मुख आते हैं ।

प्रेम के नाम पर सुअर को मार डाल और मूर्त्ति को तोड़ दे । यदि ऐसा नहीं करेगा तो शेख़ के समान प्रेम में पड़कर बदनामी का कारण बनेगा ।

यदि वह इस्लाम का सन्त इस प्रकार कलंकित न होता तो रूम के देश में सब लोग उसकी इस प्रकार कहानी न कहते ।

शेख़ के विषय में निराश होकर चेलों का काबे को वापस लौटना

शेख़ के साथी उसकी अवस्था देखकर निराश होगये । उनसे कुछ करते-धरते न बन पड़ा और ख़ुद उनकी जान पर आ बनी ।

फिर वे सब उसका साथ छोड़कर पृथक होगये । शेख़ के शोक में वे सब सर धुनने लगे ।

उनमें से एक को शेख़ से अधिक स्नेह था । वह जाकर शेख़ से कहने लगा कि अब तो तुम्हारा कार्य चौपट हो गया !

मैं आज काबे को लौटा जा रहा हूँ । यदि तुम्हें कुछ कहना है तो कह दो ।

या दिगर हमचो तू तरसाई कुनेम ।
खेश रा मेहराबे रुसवाई कुनेम ॥
ईं चुनीं तनहात नपसन्दम मा ।
हमचु तो जुन्नार बर बन्दम मा ॥
मा चे मतवानेम दीदन ईं चुनीं ।
जूद बेगुरेज़ेम अज़ तो ईं ज़मीं ॥
मोतकिफ़ बर काबा बेनशीनेम मा ।
ता न बीनेम ऊंचे मी बीनेम मा ॥
शेख गुफ़्ता जाने मन बर तफ़ बुद ।
हर कुजा ख्वाहेद बायद रफ़्त जूद ॥
ता मरा जानस्ता दैरम जाए बस ।
दुख्तरे तरसाए रह अफ़्ज़ाए बस ॥
मी न दानम अज़ चे रू आज़ादायेद ।
ज़ाँ कि ईंजा कार ना उफ़्तादायेद ॥
गर तुमा रा कार उफ़्तादे दमे ।
हमदमे बूदे मरा बर हर ग़मे ॥

क्या हम भी तुम्हारी तरह ईसाई बनकर अपने सर पर बदनामी का टीका लगवा लें ?

हम यह नहीं चाहते कि तू अकेला रहे और इसलिये हम भी अब ईसाई हो जायेंगे ।

तुम्हारी यह हालत हम अपनी आँखों से नहीं देख सकते और इससे बचने के लिये हम बहुत जल्द यहाँ से भाग जायेंगे ।

हम काबे में पहुँचकर किसी कोने में छिप रहेंगे ताकि जो हम देख रहे हैं न देखें ।

शेख ने उत्तर दिया कि मेरी जान में जान तुम नहीं हो । मैं तुझे क्या बतला सकता हूँ । जहाँ जाना हो जल्द जाओ ।

जब तक ज़िन्दगी है तब तक मेरे रहने के लिये यही मन्दिर काफ़ी है और यह जाना बस केवल ईसाई की लड़की मेरी ज़िन्दगी का सहारा है ।

मुझे नहीं मालूम तुम इससे क्योंकर बचोगे । आखिर इस काम से एक तुम्हारे ऊपर नहीं किसी दूसरे पर भी कभी कोई न कोई

अगर तुममें से कोई भी इस काम में मेरा साथी हो तुझे हर ग़म में कोई न कोई नया साथी मिल जाता ।

वाज़ गरदेद ऐ रफ़ीक़ाने अज़ीज़।
मी नदानम ता चे ख्वाहद बूद नीज़॥
गर जे मा पुर्सन्द वर गोयेद रास्त।
काँ जे पा उफ़्तादा सर गरदाँ चेरास्त॥
चश्म पुरख़ूनो दहन पुर ज़हर माँद।
दर दहाने अज़दहाए क़हर माँद॥
हेच काफ़िर दर जहाँ नदेहद रज़ा।
उंचे कर्द आँ पीरे इसलाम अज़ क़ज़ा॥
रूए तरसाए नमूदन्दश जे दूर।
शुद जे दीनो अक़्लो शेख़ी ना सबूर॥
ज़ुल्फ़ हमचूं हल्क़ा दर हल्क़श फ़िगंद।
दर ज़बाने ज़ुम्लए ख़ल्क़श फ़िगंद॥
गर मरा दर सर ज़निश गीरद कसे।
गो दरीं रह ईं चुनीं उफ़्तद बसे॥
दर चुनीं रह कस न सर गीरद न बुन।
हेच कस रा नेस्त रूए यक सख़ुन॥

मेरे प्यारे साथियो तुम लोग अब यहाँ से रवाना हो जाओ। मैं नहीं कह सकता कि आगे चलकर क्या होगा।

अगर लोग मेरा हाल पूछें तो सब बातें ज्यों की त्यों बयान कर देना। ताकि वह लोग भी समझ जावें कि शेख क्यों वापस लौटने से लाचार है।

लोग पूछें तो कह देना कि शेख की आँखें ख़ून से भरी हुई हैं, उसका मुख ज़हर से कड़वा हो गया है और वह क़हर-रूपी अजदहे के मुख में जा पड़ा है।

किसी विधर्मी के द्वारा भी ऐसा काम न होगा जैसा कि उस इस्लाम के पक्के मानने वाले से हो गया है।

एक ईसाई लड़की की शक्ल उसे दूर से दिखला दी गई जिसे देखते ही उसका धर्म और ज्ञान सब कुछ जाता रहा।

ज़ंजीर के समान ज़ुल्फ़ ने उसके गले में फन्दा डाल दिया और यह बात सारी दुनिया जान गई।

अगर कोई आदमी मेरी कहानी सुनकर मुझे बुरा भला कहना शुरू करे तो उससे कह देना कि इश्क़ की राह में ऐसी बहुत सी बातें हुआ करती हैं।

इस रास्ते में किसी भी आदमी को अपने सर और पैर का ख़याल नहीं रहता है और न किसी को कोई बात ही कहने की सामर्थ्य होती है।

बसके यारां दर ग़मश बेगिरीस्तन्द ।
गाह मी मुर्दन्दो गह मी ज़ीस्तंद ॥
शेख़ शाँ दर रूम तनहा माँदए ।
दाद दीं बरबाद तनहा माँदए ॥
आक़बत रफ़्तंद सूए काबा बाज़ ।
माँदा जाँ दर सोख़तन तन दर गुदाज़ ॥
चूँ रसीदंद आँ अज़ीज़ाँ दर हरम ।
लब फ़रो बसततंदो न कुशादंद दम ॥
अज़ हयाये शेख़ ख़ुद हैराँ शुदंद ।
हर यके दर गोशए पिनहाँ शुदंद ॥
शेख़ रा दर काबा यारे रस्ता बूद ।
दर इरादत दस्त अज़ कुल शुस्ता बूद ॥
बुद बस बीनिन्दओ बस राह बर ।
ज़ूरो न बूदे शेख़ रा आगाह तर ॥
शेख़ चूँ अज़ काबा शुद सूए सफ़र ।
आँ नबूदाँ जाएगा हाज़िर मगर ॥
चूँ मुरीदे शेख़ बाज़ आमद बजाय ।
बूद अज़ शेख़श तिही ख़िलवत सराय ॥

साथी लोग उसके शोक में बहुत रोये और अपने प्राणों को पीड़ित करने लगे ।

उनका शेख़ और गुरु विधर्मी होकर रूम में अकेला रह गया था और उनसे पृथक हो गया था ।

अन्त में वह सब काबे को लौट गये, परन्तु उनके प्राण पीड़ा से आकुल हो रहे थे ।

जब वह काबा पहुँचे, अफ़सोस के मारे ज़बान बन्द किये थे, और तकलीफ़ में घुल रहे थे ।

अपने गुरु की अप्रतिष्ठा से लज्जित होकर वह इधर-उधर छिपते फिरते थे ।

काबे में शेख़ का एक ऐसा मित्र भी था जो उसके स्नेह में अपना सब कुछ छोड़ बैठा था ।

वह बड़ी गम्भीर दृष्टि वाला और विद्वान था और शेख़ के भेदों को उससे अधिक और कोई नहीं जानता था ।

शेख़ जब काबे से रूम को गया था उस समय वह मित्र घर पर नहीं था । कहीं बाहर गया हुआ था ।

जब वह बाहर से घर लौटकर आया उसने पूजा-गृह को शेख़ विहीन पाया ।

बाज़ पुरसीद अज़ मूरीदाँ हाले शेख़ ।
बाज़ गुफ़्तन्दश हमा अहवाले शेख़ ॥
कज़ क़ज़ा ऊ रा चे कार आमद वसर ।
वज़ क़दर ऊ रा चे बाज़ आमद ववर ॥
रूये तरसाए व यक मूयश वे वस्त ।
राह वर ईमां जे हर सूयश वे वस्त ॥
इश्क़ मी बाज़द कनूँ वा ज़ुल्फ़ो खाल ।
खिर्क़ा गश्ता मोहक़ा हालश बहाल ॥
दस्त कुल्ली बाज़ दाश्त अज़ ताअतऊ ।
ख़ूकबानी मीकुनद ईं साअतऊ ॥
ईं ज़माँ आँ ख्वाजये बिस्यार दर्द ।
वर मियाँ ज़ुन्नार दारद चारकर्द ॥
शेखना गर चे बसे दरदीं वे ताख़ ।
अज़ कोहन गबरेश मी न तवाँ शनाख़ ॥
चूँ मुरीद आँ क़िस्सा बिशुनूद अज़ शिगिफ़्त ।
रूये ख़ुद ज़र कर्द मातम दर गिरिफ़्त ॥
वामुरीदाँ गुफ़्त ऐ तरदामनाँ ।
दर वफ़ादारी न मरदाँ न ज़नाँ ॥

दूसरे चेलों से उसने शेख़ का हाल पूछा; उन्हों ने सब शेख़ का हाल कह दिया ।

दूसरे चेलों से सब समाचार सुनकर उसकी समझ में आगया कि शेख़ को भाग्य ने कहाँ ले जाकर पटका था ।

उसकी समझ में आ गया कि वह अब एक ईसाई-बाला के प्रणय में फंसकर अपने धर्म्म को खो बैठा है ।

उसकी काली अलकों के जाल में पड़कर, उसने अपनी गुदड़ी को त्याग दिया है और अपनी हालत खराब कर ली है ।

ख़ुदा की अभ्यर्थना से उसने बिल्कुल हाथ खींच लिया है और अब सुअर चराया करता है ।

उस मित्र को ज्ञात हो गया कि ख़ुदा से प्रेम रखने वाला वह वृद्ध अब अपनी कमर में चार फेरों वाला जनेऊ बाँधे हुए है ।

हमारा शेख़ यद्यपि अपने धर्म्म में उन्नति कर चुका था परन्तु अब प्राचीनता का स्मरण दिलाकर उसे पुनः उचित मार्ग पर लाना कठिन था ।

शेख़ के मित्र ने जब यह कहानी सुनी तो आश्चर्य और खेद से उसका मुख पीला पड़ गया ।

तब उसने अन्यान्य चेलों से कहा कि ऐ पापियो, तुम वफ़ादारी में न तो [illegible] के ही समान हो और न मर्दों के ।

बार कार उफ्तादा बायद सद हजार।
यार नायद जुज चुनीं रोजे बकार॥
गर शुमा बूदन यारे शेख खेश।
वाजिब ऊ अज चे न गिरिफ्तेद पेश॥
शर्म नां बाद आखिर ईं यारी बुवद।
हक गुजारी ओ वफादारी बुवद॥
चूं निहाद आँ शेख बर जुन्नार दस्त।
जुम्लगी जुन्नार मी बायस्त बस्त॥
अज बरश अमदन नमी बायस्त शुद।
जुम्लगी तरसा हमी बायस्त शुद॥
ईं न यारीओ मुवाफिक बूदनस्त।
उंचे करदेद अज मुनाफिक बूदनस्त॥
हरकि यारे खेश रा यावर शवद।
यार बायद बूद अगर काफिर शवद॥
वक्ते नाकामी तवाँ दानिस्त यार।
खूद बुवद दर कामरानी सद हजार॥
शेख चूं उफ्ताद दर कामे निहंग।
जुम्ला ज बुगुरेखतंद अज नामो नंग॥

लानत है तुम्हारी दोस्ती पर। मतलब के तो सैकड़ों यार हुआ करते हैं, लेकिन सच्चा दोस्त वही है जो मुसीबत के समय में काम आवे।

अगर तुम शेख के दोस्त थे तो उसके साथ दोस्ती का हक क्यों नहीं अदा करते रहे ?

तुम्हें हया लगनी चाहिये। क्या दोस्ती ऐसी ही होती है और शुक्र गुज़ारी और वफ़ादारी इसी का नाम है ?

जब तुम्हारे शेख ने दूसरे धर्म्म की दीक्षा ली थी तब तुम्हें भी ऐसा ही करना था।

जानबूझ कर उसका साथ छोड़ देना ठीक नहीं था बल्कि उसी के समान सब को ईसाई हो जाना था।

तुम लोगों ने जो कुछ किया है वह दोस्ती नहीं कही जा सकती है। यह तो बहुत बुरे आदमियों का काम है।

अपने दोस्त का जो सच्चा साथी होता है वह हमेशा उसके तईं सच्चा ही बना रहता है। चाहे वह विधर्म्मी ही क्यों न हो जावे।

जब आदमी के दिन बुरे होते हैं उसी वक्त दोस्त की पहचान होती है। अच्छे दिनों में ऐश के जलसों में तो सैकड़ों साथी हो जाते हैं।

शेख जिस समय मुसीबत में पड़ गया, उस समय उसके सब साथी बदनामी के डर से उसको छोड़ कर भाग गये।

इश्क़ रा बुनियाद बर बदनामी अस्त।
हर के ज़ीं दर सर कशद अज़ खामी अस्त॥
जुम्ला गुफ़्तन्द उंचे गुफ़्ती पेश अज़ीं।
बारहा गुफ़्तेम वा ऊ बेश अज़ीं॥
अज़मे आँ करदेम ता व ऊ वहम।
हम नफ़स वाशेम वा शादी वा ग़म॥
जोह बेफ़रोशेम रुसवाई खरेम।
दीं बरंदाज़ेमो तरसाई खरेम॥
लेके राये दीद शेखे कारसाज़।
कज़ बरू यक बयक गरदेम बाज़॥
चूँ नदीदज़ यारीए मा हेच सूद।
बाज़ गर दानीद मारा शेख ज़ूद॥
बाद अज़ाँ असहाब रा गुफ़्त आँ मुरीद।
गर शुमारा कार बूदे बर मज़ीद॥
जुज़ दरे हक़ नेसते जाये शुमा।
दर हज़ूर हस्ते सरो पाए शुमा॥
दर तेज़ुल्लुम दाश्तन दर पेशे हक़।
आँ यके बुर्दे अज़ाँ दीगर सबक़॥

प्रेम की नींव बदनामी होती है और इस द्वार से होकर निकलने वाला बदनाम हो जाता है।

यह सुनकर सब चेलों ने दूर ही से कहा कि जो कुछ तू कहता है उससे कहीं ज्यादा हम लोगों ने किया।

शेख को हमने हर तरह समझाया था और इस बात का पक्का इरादा कर लिया था कि दुख और आराम में उसके साथी रहें।

हमने यहाँ तक कहा था कि हम भी उसी की तरह बदनामी मोल लेकर ईसाई हो जावें।

लेकिन शेख ने हमारी एक भी न सुनी। उसकी यही राय हुई कि हम सब उसके पास से चले जावें।

हम लोगों को साथ रखने में उसे कोई नफा नहीं दिखलाई दिया और हम को बहुत जल्द वहाँ से रवाना कर दिया।

यह बातें सुनकर शेख के उस खास चेले ने कहा कि अगर तुम अच्छे काम करने वालों और समझदारों में होते,

तो शेख का हाल देखकर खुदा के दर्वाजे पर अपना डेरा जमा देते। वहीं उसकी मिन्नत करते और गिड़-गिड़ाकर शेख के लिये कहते।

तब उसके दर्बार में तुम्हारी सुनवाई होती जब वह तुमको इस बात में एक दूसरे से बढ़-चढ़ा हुआ देखता और समझता कि तुम अपनी आन पर मर मिटने वाले हो,

ता चो हक़ दीदे शुमारा वर क़रार।
वाज़ दादे शेख़ रा वे इन्तज़ार॥
गर ज़े शेख़े खेश करदेत यहतराज़।
अज़ दरे हक़ अज़ चे मी गशतेद वाज़॥
चूँ शुनीदंद ईं सख़ुन अज़ इज्ज़े खेश।
वर नयावरदंद यक तन सर ज़े पेश॥
आँ मुरीदश गुफ़्त आँ ख़िजलत चे सूद।
कार चूँ उफ़्ताद वर खेज़ेद ज़ूद॥
लाज़िमे दरगाहे हक़ बाशेम मा।
वज़ तज़ल्लुम ख़ाक मी बाशेम मा॥
पैरहन पोशेम अज़ काग़ज़ हमा।
दर रसेम आख़िर व शेख़े खुदहमा॥

बाज़ गरदीदने मुरीदाँ अज़ क़ाबा वरूम अज़ पए शेख़

ज़ुम्ला सूए रूम रफ़्तंद अज़ अरब।
मोतकिफ़ गश्तंद पिनहाँ रोज़ो शब॥
वर दरे हक़ हर यके रा सद हज़ार।
गह ज़ारी गह शफ़ाअत वूद कार॥

तो वह फ़ौरन ही शेख़ को वापस लौटा देता।

मानलिया कि तुमने शेख़ का साथ छोड़ दिया, लेकिन ख़ुदा के दर्वाज़े पर क्यों नहीं गये।

दूसरे शिष्यों ने जब यह बातें सुनी तो लज्जा से उनके सिर झुक गये। उनका अपराध प्रमाणित हो चुका था।

इस पर उसी ख़ास शिष्य ने कहा कि इस ताने से कुछ नहीं होता है। काम आ पड़ा है। आओ, उठो।

जल्दी हम सब इकट्ठे होकर मस्जिद में जमकर बैठ जावें। ख़ुदा से फ़रियाद करें,

और फटे-पुराने कपड़े पहन लें। उम्मीद है कि उसकी दुआ से हम अपने शेख़ से फिर मिलेंगे।

चेलों का शेख़ से मिलने के लिये काबे से रूम को फिर से यात्रा करना

सब शिष्य गण अरब देश से रूम को चल दिये। वहाँ पहुँचकर वे अन्य लोगों की दृष्टि से छिपकर एकान्त स्थान में रहने लगे।

उन लोगों ने ईश्वर के द्वार पर आसन जमा दिया। उनमें से प्रत्येक विनती करके अपने गुरु को पुनः प्राप्त करने के लिये कहता।

हमचुनाँ ता चिल शबाँ रोजे तमाम।
सर न पेचीदंद हर यक अज़ मुक़ाम॥
जुम्ला रा चिल शब न खुर वूदो न ख्वाब।
हमचुनाँ चिलदर ननाँ वूदो न आब॥
अज़ तजर्रो करदने आँ क़ौमे पाक।
दर फ़लक उफ़्ताद जोशे सावनाक॥
सब्ज़ पोशाँ दर फ़राज़ो दर फ़रूद।
जुम्ला पोशीदंद अज़ मातम कबूद॥
आखिरुलअम्र आँ के वूदज़ पेशे सफ़।
आमदश तीरे दुआए बर हदफ़॥
बादे चिल रोज़ आँ मुरीदे पाक बाज़।
वूद अंदर खिलवते ख़ुद दर नमाज़॥
सुब्हदम बादे बर आमद मुरकबार।
शुद जहाने कश्फ़ बर वै आशकार॥
मुस्तफ़ारा दीदमीं आमद चो माह।
दर बरफ़गन्दा दो गेसूए सियाह॥
मायए हक़ आफ़ताबे रूए ऊ।
शुद जहाने जान वक़्फ़े मूए ऊ॥

इस प्रकार चालीस दिन तक वह लोग लगातार ईश आराधना में निमग्न रहे।

चालीस दिन तक न तो उन्होंने भोजन ही किया और न शयन। और चालीस रातें भी उन्होंने इसी प्रकार जागकर प्रार्थना में व्यतीत कीं।

उस पवित्र ज्ञान की इस टेक से आकाश हिल उठा और शोर होने लगा।

सब्ज़ वस्त्र धारण करने वाले देवताओं ने शोक में काले वस्त्र धारण कर लिये।

अन्त में उन सब नेकों के मुखिया की प्रार्थना ने तीर लक्ष्य पर जा लगा।

जब चालीसवाँ दिन समाप्त होने पर जब वह पवित्र नेता अपने आसन पर प्रातः काल बैठा हुआ था,

सूर्यदेव आकाश में आया और वह मस्त होकर झूमने लगा।

उसने ईसा के बादों के समान उज्ज्वल पैगम्बरत्व की काली पोशाकों को उतार दूर उनकी तरफ़ फेंक दीं।

उसका मुख सूर्य के समान ईश्वरीय प्रभा से प्रकाशित हो रहा है और वे संसार को अपने ऊपर न्योछावर थे।

मी खिरामीदो तबस्सुम मी नमूद।
हर के मी दीदश दरो गुम मी नमूद॥
आँ मुरीद ऊ रा चो दीद अज जायेजस्त।
के नबी अल्लाह दस्तम गीर दस्त॥
रहनुमाए खल्क अज बहरे खुदा।
शेख मा गुमरह गुदा राहश नुमा॥
मुसतफा गुफ्त ऐ बहिम्मत बस बलंद।
रा कि शेखत रा बरूँ करदम जे बंद॥
हिम्मते आलीत कारे खेश कर्द।
दम नजद ता शेख रा दर पेश कर्द॥
दरमियाने शेखो हक ता देर गाह।
बूद गरदे व गुबारे बस सियाह॥
आँ गुबारज राहे ऊ बरदाश्तम।
दरमियाने जुल्मतश नगुजाश्तम॥
करदमज बहरे शफाअत शबनमे।
मुंतशर बर रोजगारे ऊ हमे॥
आँ गुबार अकनूँ जे रह बरखास्तस्त।
तौबा बेनशिस्तो गुनाह बरखास्तस्त॥

वह धीरे धीरे टहल रहे थे और मुस्कुरा रहे थे। उनको जो कोई भी देखता था वह उनकी शोभा पर मोहित हो जाता था।

उस चेले ने जब पैग़म्बर को देखा तब उठकर खड़ा हो गया और विनीत भाव से बोला कि ऐ खुदा के नबी, मेरी सहायता कीजिये।

आप सारी दुनिया को खुदा का रास्ता दिखलाते हैं, हमारे पीर को भी, जो अपने रास्ते को भूल गया है, ठीक रास्ते पर लाइये।

पैग़म्बर साहब ने कहा कि ऐ ऊँचे हौसले वाले मर्द, जा, मैंने तेरे पीर को क़ैद से छुड़ा दिया।

तेरी ऊँची हिम्मत अपना काम कर गई। तूने जबतक शेख को आगे नहीं बढ़ा लिया दम भी न लिया।

तेरे शेख और खुदा के बीच में बहुत दिनों से एक काला पर्दा आ गया था और वह भी गर्द-गुबार का।

मैंने वह गर्द उसके सामने से हटा दी है और अब वह अँधेरे में नहीं रह गया है।

मैंने उसके हाल पर एक फुआर छिड़क दी है, जिसकी वजह से वह सारी गर्द साफ़ हो गई है।

अब उसने खराब काम करने से हाथ खींच लिया है और बुराई उससे दूर भाग गई है।

तू यक़ीं मीदाँ कि सद आलम गुनाह।
अज़ तफ़े यक तौबा बर शोजद जे राह॥
बहरे एहसाँ चूँ दर आयद मौजजन।
मह गरदानद गुनाहे मर्दो ज़न॥
ईं दो से हरफ़े बगुफ़्त अज़ यारे ऊ।
दर जमाँ ग़ायब शुद अज़ दीदारे ऊ॥
मर्दअज़ शादीए ऊ मदहोश शुद।
नारए ज़द कासमाँ पुर जोश शुद॥
हम चुनाँ नारा जनाँ बेरूँ फ़िताद।
जाबे दीदा दरमियाने ख़ूँ फ़िताद॥
ज़ुल्मए असहाब रा आगाह कर्द।
मुज़्दगाने दाद अज़मे राह कर्द॥
रफ़्त बा असहाबे गिरयानों दवाँ।
ता रसीद आँ जा कि शेख़े ख़ूकवाँ॥
शेख़ रा दीदन्द चूँ आतश शुदा।
दरमियाने बेक़रारी ख़श शुदा॥
दीदाआँ दरवेश रा बाज़ आमदा।
बा ख़ुदाए ख़ेश दर राज़ आमदा।

तू इस बात पर यक़ीन रख कि सारी दुनियाँ के बुरे काम केवल उनपर एक बार अफ़सोस करने से ही दूर हो जाते हैं।

जब ख़ुदा के अहसान का दरिया बाढ़ पर आ जाता है तब मर्दों और औरतों सभी की बुराइयों को धो देता है।

यह दो-तीन बातें शेख़ के प्रधान चेले से कहकर पैग़म्बर साहब तत्क्षण उसकी दृष्टि से ओझल हो गये।

वह मनुष्य आनन्द में आकर झूमने लगा और मतवाला हो गया। और उसी अवस्था में इतने ज़ोर से यकायक चिल्लाया कि आकाश में एक प्रकार का हुल्लड़-सा मच गया।

इसी प्रकार चिल्लाता हुआ वह बाहर निकला और उसने रोना प्रारम्भ किया। यहाँ तक रोया कि आँसुओं के कीचड़ में लोटने लगा।

अपने सारे साथियों को उसने यह आनन्द दायक समाचार कह सुनाया और यात्रा करने के लिये प्रबन्ध करने लगा।

इसके उपरान्त अपने सब साथियों के साथ रोता बिलखता और दौड़ता हुआ वह वहाँ पहुँचा जहाँ शेख़ सुअर चरा रहा था।

इन सबों ने जाकर देखा कि शेख़ अग्नि के समान भड़क रहा है और बहुत ही व्याकुल हो रहा है।

उस प्रधान शिष्य ने देखा कि वह साधु पहले ही से बुरे कामों से हाथ खींच चुका है और ख़ुदा से दिल लगा चुका है।

हम क़िनंदां वूद नाक़ूस अज़ दहाँ।
हम गुसिस्ता वूद ज़ुन्नार अज़ मियाँ॥
हम कुलाहे गुज़ की अंदाख़ता।
हम ज़े तरसाई दिलश परदाख़ता॥
शेख चूँ असहाब रा अज़ दूर दीद।
ख़ेशतन रा दरमियाने नूर दीद॥
हम ज़े ख़िजलत जामा बर तन चाक कर्द।
हम बदस्ते इज्ज़ बर सर ख़ाक कर्द॥
गाह चूँ अब्र अश्के ख़ूनी मीफ़िशाँद।
गाह दस्तज़ जाने शीरीं मीफ़िशाँद॥
गह ज़े आहश परदए गरदूँ बेसोख़्त।
गह ज़े हसरत बर तनेऊ ख़ूँ बेसोख़्त॥
हिक्मते क़ुरानी असरारो ख़बर।
शुस्ता वूद अन्दर ज़मीरश सर बसर॥
जुमला वा याद आमदश यकबारगी।
वाज़ रस्त अज़ जेहो अज़ बेचारगी॥
चूँ बहाले ख़ुद फ़ेरो निगुरीस्ते।
दर सजूद उफ़्तादश्यो बेगुरीस्ते॥

उसने अपने मुख से शंख को पृथक कर दिया है और जनेऊ को तोड़ डाला है।

उसने ईसाइयों की टोपी को भी उतार कर फेंक दिया था और ईसाई होने का ख्याल भी हृदय से अलग कर दिया था।

जैसे ही उसने इन सब चेलों को अपनी तरफ़ आते देखा उसे ऐसा ज्ञात हुआ कि वह उजाले में आगया है।

मारे शर्म के उसने अपने वस्त्र फाड़कर फेंक दिये और ख़ुदा के सन्मुख विनीत भाव से बैठकर सर पर धूल डालने लगा।

कभी तो वर्षा की झड़ी के समान अपने नेत्रों से शोक के आँसू बरसाता था और कभी अपने प्राण खो देने की इच्छा करता था।

कभी उसको गर्म साँसों से आकाश का पर्दा जलने लगता था और कभी शोक और दुख से उसका रक्त जलने लगता था।

क़ुरान और हदीस के सारे रहस्य जो उसके मस्तिष्क से धुल चुके थे, अब सब उसपर प्रकट हो गये और उसकी सुन्नी तथा काहली दूर हो गई।

जब वह अपनी अवस्था पर विचार करता तो ख़ुदा के सामने सर पटक कर रोने लगता था।

हम चो गिल दर ख़ूने दिल आग़श्ता बूद।
बज़ ख़िजालत दर अरक़ गुमगश्ता बूद॥
चूँ चुनाँ दीदंद आँ असहाबे ला।
मांदा दर अंदोहो शादी मुबतिला॥
पेशे ऊ रफ़्तंद सरगरदाँ हमा।
अज़ पए शुकराना जाँ अफ़शाँ हमाँ॥
शेख़ रा गुफ़्तंद ए बेपरदा राज़।
मना शुद अज़ पेशे ख़ुरशीदे तो बाज़॥
कुफ़्र बरख़ास्त अज़ रहो ईमाँ नशस्त।
बुतपरस्ते रूम शुद यज़दाँ परस्त॥
मौजज़द नागाह दरियाये क़बूल।
शुद शफ़ाअत ख़ाहे कारे तो रसूल॥
ईं जमा शुकराना आलम आलमस्त।
शुक्र कुन हक़ रा चे जाए मालमस्त॥
मिन्नत ऐज़िद रा कि दर दरियाय तार।
कर्द राहे हमचु ख़ुर्शीद आशकार॥
आँ कि तानद कर्द रौशन रा सियाह।
तौबा तानद दाद वा चंदीं गुनाह॥

वह पुष्प के समान अपने हृदय के रक्त में रंग गया था और शर्म के पसीने से तरबतर हो रहा था।

जब उसके साथियों ने अपने गुरु को आनन्द और शोक दोनों अवस्थाओं में मस्त देखा तो दौड़कर सब उसके पास पहुँच गये।

और धन्यवाद दे दे अपने आपको उस पर न्यौछावर करने लगे।

शेख से उन्होंने कहा कि हे वृद्ध गुरु, तेरे सूरज के सामने से रुकावट का पर्दा दूर हो गया है।

कुफ़्र (नास्तिकता) रास्ते से हट गया है मूर्त्ति का पूजक खुदा को मानने लगा है।

बकायक खुदा की मुहब्बत ने जोर मारा और खुदा के दूत ने तेरी सिफ़ारिश की।

अब यह मौक़ा ऐसा आ गया है कि खुदा का शुक्र किया जावे। रंज के दिन दूर हो गये हैं।

उस खुदा का शुक्र (धन्यवाद) है जिसने अन्धकार से भरे हुए दरिया में सूरज के समान एक साफ़ रास्ता तेरे लिये निकाल दिया है।

जो चमकदार चीज को भी काला बना सकता है उसमें बुरे कामों को भी नीचा दिखाने की ताक़त है।

आतिशे अज़ तौबा चूँ बेफ़रोज़द ऊ।
हरचे यावद जुमला दरहम सोज़द ऊ॥
क़िस्सा कोताह मी कुनम ईं जाएगाह।
वूद शाँ अलक़िस्सा हाले अज़्मे राह॥
शेख़ ग़ुस्ले करदा शुद दर हलक़ा याज़।
रफ़्त बा असहाब ता सूए हिजाज़॥

ख़्वाब दीदन दुख़्तर तरसा व अज़ अक़्ब शेख़ रफ़्तन

दीद अज़ाँ पस दुख़्तरे तरसा बख़्वाब।
कोफ़्ताद दर किनारश आफ़्ताब॥
आफ़्ताब आँगाह बकुशादे ज़बाँ।
कज़ पए शेख़त रवाँ शो ईं ज़माँ॥
मज़हबे ऊ गीरो ख़ाके ऊ बेबाश।
ऐ पिलीदश कर्दा पाके ऊ बबाश॥
ऊ चे आमद दर रहे तो अज़ मजाज़।
दर हक़ीक़त तू रहे ऊ गीर बाज़॥

जब वह किसी दिल में पश्चाताप की आग भड़का देता है तो उसके द्वारा गुनाहों को भी जला डालता है।

मैं इस अवसर पर इस कथानक का थोड़े ही शब्दों में वर्णन करना उचित समझता हूँ। सारांश यह कि उन लोगों ने उसी समय यात्रा करने की ठान ली।

शेख़ ने स्नान किया और पुनः अपने साथियों के बीच में बैठा और फिर उनके साथ अरब देश को चल दिया।

ईसाई बाला का स्वप्न देखना और शेख़ के पीछे जाना

शेख़ के चले जाने के उपरान्त ईसाई की लड़की ने यह स्वप्न देखा कि उसके अंक में एक सूर्य आकर गिर पड़ा है,

और वह उससे कह रहा है कि इसी क्षण अपने प्रेमी शेख़ के पीछे रवाना हो जा।

उसका धर्म स्वीकार करले और उसी की शिक्षाओं पर चल। तूने ही उसे अपवित्र किया था अब स्वयं उसके हाथों से पवित्र बन जा।

वह सांसारिक प्रणय-जाल में फँसकर तेरे धर्म में आया था परन्तु तू वास्तव में उसके धर्म को स्वीकार कर।

अज रहश बुर्दी बराहे ऊ दर आ।
चूँ बराह आमद तो हमराही नुमा॥
रहज़नश बूदी तो पस हमरह बेवाश।
चंद अज़ीं बे आगही आगह बेवाश॥
चूँ दर आमद दुख़्तरे तरसा ज़े ख़्वाब।
नूर मीदादे दिलश चूँ आफ़ताब॥
दर दिलश दरदे पिदीद आमद अजब।
बेक़रारश कर्द आँ दर्द अज़ तलब॥
आतिशे दर जाने सरमस्तश फ़िताद।
दस्त दर दिल अज़ दिलो दस्तश फ़िताद॥
मी नदानिस्त ऊ कि जाने बेक़रार।
दर दरूँने ऊ चे तुख़्म आवुर्द बार॥
कारश उफ़्तादो नबूदश हमदमे।
दीद ख़ुद रा दर अजायब आलमे॥
आलमे काँजा मजाले राह नेस्त।
गुंग बायद शुद ज़बाँ आगाह नेस्त॥

तूने उसको सीधे मार्ग से हटाया था। अब जा और उसके धर्म में परिवर्तित हो जा।

तूने उसको पथ—भ्रष्ट किया था अब जाकर उसकी सहायक बन और उसके साथ रह। वह अब अपने उचित मार्ग पर आ गया है। तू कब तक इस प्रकार मुर्ग़ी में पड़ी रहेगी! अब ख़ुदा को समझ ले।

ईसाई बाला यह स्वप्न देखकर चौंक पड़ी। उसका हृदय सूर्य के समान प्रकाशित हो रहा था।

उसके दिल में एक विलक्षण पीड़ा उत्पन्न हो गई जिसने उसे एक आकुल जिज्ञासु बना दिया।

उसके मनवाले प्राण में एक जलन सी पैदा हो गई और दिल पीड़ित होने के कारण उसका हाथ दिल पर जा पड़ा। उसका हाथ भी व्यर्थ हो गया।

उसको यह भी ज्ञान न रहा कि उसके व्याकुल प्राणों ने उसके अन्दर कैसा बीज बो दिया है।

उसके प्रति स्नेह दिखाने वाला कोई न था। वह बड़ी कठिनाई में पड़ गई।

उसने अपने आप को एक अनूठे जगत में देखा जहाँ पहुँचने का कोई मार्ग ही नहीं दिखलाई पड़ता था।

चूँ नज़र वर शेख़ अफ़गंद आँ निगार।
अश्क मी बारीद चूँ अब्रे बहार॥
दीदा वर अहदो वफ़ाए ऊ फ़िगन्द।
खेश रा वर दस्तो पाए ऊ फ़िगन्द॥
गुफ़्त अज तशवीरे तू जानम बेसोख़्त।
बेश अज़ीं दर पर्दा नतवानम बेसोख़्त॥
वर फ़िगन ईं परदा ता आगह शवम।
अरज़ा कुन इसलाम ता वारह शवम॥
शेख़ वर वै अरज़ए इस्लाम दाद।
गुलगुला दर जुम्लए यारां फ़िताद॥
चूँ शुदाँ महरूए अज अहे ऊयाँ।
अश्के बारां मौजज़न शुद दर ज़मां॥
आखिरुलअम्र आँ सनम चूँ राहे याफ़्त।
औफ़्के ईमाँ दर दिलश नागाह याफ़्त॥
शुद दिलश अज़ औफ़्के ईमाँ बेक़रार।
ग़म दर आमद गिर्द आँ बे ग़मगुसार॥

उसने अपने नेत्र खोल कर शेख़ को देखा और उसे बादल के समान आँसू गिराते हुए पाया।

उस समय उसने शेख़ के सच्चे प्रेम और प्रतिज्ञा पर विचार किया। और जोश में आकर उसके पैरों पर गिर पड़ी।

फिर वह कहने लगी कि तुम्हारे शोक में मेरे प्राण जल गये हैं और अब अधिक समय तक पर्दे के भीतर छिपकर जलने की शक्ति मुझमें शेष नहीं रह गई है।

आप इस पर्दे को दूर कर दीजिये ताकि मैं ख़ुदा तक पहुँच सकूँ। मुझे अपने धर्म इस्लाम की दीक्षा दीजिये जिससे कि मैं उचित मार्ग पर आ जाऊँ।

शेख़ ने उसे इस्लाम की दीक्षा दी और उसके मित्र आनन्द के मारे चिल्लाने लगे।

वह सुन्दरी ख़ुदा को चाहने वालों में से बन गई और उसके नेत्रों से आसुओं की नदी बह चली।

शेख़ की शिक्षा पाते ही उस प्रेमिका के हृदय में धर्म्म के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होगई।

धर्म्म की श्रद्धा से उसका दिल बेचैन होगया। इस निर्दय अबला को परमात्मा के प्रेम ने चारों तरफ़ से घेर लिया!

हर चे मी गोई चु दर रह मुमकिनस्त।
रहमतो नौमीद गिर्द ऐमनस्त॥
नफ़्स ईं असरार न तवानद शुनूद।
बे नसीबा गूए न तवानद रबूद॥
ईं बगोशे जाँ जे दिल बायद शुनीद।
न जे नक़्बे आबो गिल बायद शुनीद॥
जंग दिल बा नफ़्स हरदम सख़्त शुद।
नौहए दर्देह कि मातम सख़्त शुद॥
दर चुनीं रह चावुके बायद शिगर्फ़।
बू कि बेतबाँ रफ़्त अज़ीं दरिया बे शर्फ़॥
शेख़ रा अज़ रफ़्तने ऊ जाँ बसोख़्त।
दीदा अज़ बेरूए ऊ आलम बदोख़्त॥
बा रफ़ीक़ाँ गुफ़्त शेखे ग़मज़दा।
ख़स्तओ सरगश्तओ मातम ज़दा॥
कै रफ़ीक़ाँ हाले मारा बिनिगरेद।
ईं चुनीं अहवाल मारा बिनिगरेद॥

जो कुछ भी तू कह रहा है वह इस मार्ग में सम्भव है। दया करना और निराश करना दोनों में किसी प्रकार का भय नहीं है।

नफ़्स इन बातों को नहीं सुन सकता है और भाग्य की सहायता के बिना सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है।

यह बात प्राणों पर भली प्रकार विदित होनी चाहिये। पानी और मिट्टी के इस प्रकट शरीर की इच्छाओं का इसके साथ सम्बन्ध न होना चाहिये।

मानवी इन्द्रियों और हृदय के साथ सदैव तुमुल युद्ध होता रहता है। इस शोक के विषय पर दुःख प्रकट कर।

इस मार्ग पर चलने के लिये एक बहुत चालाक और चुस्त मनुष्य होना चाहिये। तब आशा की जा सकती है कि वह इस अथाह नदी के पार जा सकता है।

शेख़ के प्राणों में उस प्रेमिका की मृत्यु से धकधक कर के अग्नि जलने लगी और उस चन्द्रवदनी के न रहने से उसने भी संसार की तरफ़ से अपनी आँखें फेर लीं।

शेख़ बहुत ही उदासीन और दुःखी था। वह परेशान, दुखी और दुर्बल हो गया था।

उसने अपने साथियों से कहा कि मेरी इस अवस्था को देखो और विचार करो कि मुझ पर क्या बीती है।

बाशद ईं आग़ाज़ ईं अंजामे इश्क़।
हरकि ख़ाहद कू बरद दर दामे इश्क़॥
मुर्ग़ दाम आमद गिरिफ़्तम जेरे बाल।
मन नख़्वाहम माँद वे ऊ देरे साल॥
अज़ जहाँ सूए जिनाँ ख़्वाहम शुदन।
वज़ पए जानाँ रवाँ ख़ाहम शुदन॥
वामदादाँ दिलवर अज़ आलम बेरफ़्त।
शेख़ अज़ पै नीमरोज़े हम बेरफ़्त॥
क़ब्र शेख़ो क़ब्रे दुख़्तर साख़तन्द।
हर दो रा पहलूए हम परदाख़तन्द॥
पेशवाए इश्क़े जानाँ ख़ुतबा ख़ाँद।
आशिक़े माशूक़ रा वाहम निशाँद॥
चूँ दो आशिक़ दायमा मदहोश हम।
चूँ दो मौजूँ दस्त दर आग़ोश हम॥
जाँ दो क़ब्रे आँ दो यारे दर्दमंद।
दस्त अज़ाँ हसरत ज़दा सरवे बुलंद॥
वाँके आँजा ऐज़िद अज़ लुत्फ़ो कमाल।
कर्द पैदा चश्मए आबे ज़ुलाल॥

प्रेम की शुरुआत और ख़ात्मा इसी प्रकार होता है। इश्क़ को क़ाबू में लाना बहुत ही मुश्किल बात है।

चिड़िया जाल में फँस गई थी और मैंने उसे गोद में भी छिपा लिया। अब उसके बिना बहुत दिनों ज़िन्दा नहीं रह सकता।

मैं इस दुनियाँ से बहिश्त को चला जाऊँगा और अपनी प्रेमिका के पीछे रवाना हो जाऊँगा।

प्रातःकाल उस प्रेमिका के प्राण निकले थे और दोपहर के समय शेख़ भी इस संसार को छोड़ कर उसके पीछे चल दिये।

लोगों ने शेख़ और उस लड़की की समाधियाँ एक ही जगह बनाईं और उन दोनों को एक दूसरे की बग़ल में समाधिस्थ कर दिया।

प्रेमिका के प्रेम रूपी क़ाज़ी ने विवाह का मन्त्रोच्चारण किया और प्रेमी और प्रेमिका को एक दूसरे से मिला दिया।

वह दो प्रेमी थे जो सदैव आनन्द में रहेंगे। दो मित्रों के समान एक दूसरे के गले मिलते रहेंगे।

उन दोनों की समाधियों से दो ऊँचे-ऊँचे सरो के वृक्ष उत्पन्न हुये।

और उसके अतिरिक्त उन्होंने अपने प्रभाव से एक मीठे जल का स्रोत भी पैदा कर दिया।

जवाब दादन हुदहुद ऊ रा

गुफ़्तए दर वन्द सूरत माँदा तू ।
पाए ता सर दर कुदूरत माँदा तू ॥

इश्क़े सूरत नेस्त इश्क़े मारफ़त ।
इश्क़े शहवत वाज़िए हैवाँ सिफ़त ॥

हर जमाले रा कि नुक़साने वुवद ।
मर्द रा अज़ इश्क़ तावाने वुवद ॥

हर जमाले रा कि वाशद वा ज़वाल ।
कुफ़्र वाशद मस्त गश्तन ज़ाँ जमाल ॥

सूरते अज़ खल्तो खूँ आरास्ता ।
करदा नामे ऊ महे ना कासता ॥

गर शवद आँ खल्तो आँ खूँ कम अज़ो ।
ज़िश्त तर न वुवद दरीं आलम अज़ो ॥

आँ कि हुस्ने ऊ ज़े खल्तो खूं वुवद ।
दानी आखिर काँ नकूई चूँ वुवद ॥

हुद हुद का सांसारिक प्रेमी को समझाना

हुद हुद ने कहा कि तू इस संसार का सेवक होगया है। सांसारिक वस्तुओं के प्रति तेरे हृदय में मोह उत्पन्न हो गया है। इसलिये अब तू सिर से पैर तक अपवित्र होगया है।

सांसारिक सौंदर्य पर मुग्ध हो जाना ईश्वर के प्रति प्रेम करना नहीं है वरन् जानवरों से सम्पर्क रखने के समान है। वासनामय प्रेम मनुष्य को ईश्वर से प्रेम करने से रोक देता है।

नाशवान् सौन्दर्य पर मुग्ध होना ईश्वर को न मानने के समान है।

जो वस्तु स्थायी नहीं है उस पर मर मिटना ठीक नहीं है।

रक्त और माँस से बने हुए मुख को प्रियतमा की उपाधि से भूषित किया जाता है।

उस रक्त और माँस के दूर होजाने पर तो संसार में उससे अधिक कुरूप वस्तु ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलेगी।

फिर विचार करो, वह रूप कैसा है, जिसका बनना और बिगड़ना केवल रक्त और माँस के ऊपर निर्भर है!

चूँ जहानम हमः ख़ौफ़ मीमे बुवद ।
कै चुनीं जाए मरा बीमे बुवद ॥
हमः कि रा बा अज़दहाए हफ़्त सर ।
दर नमूज़ इबतादे दायम ख़ाबो ख़ुर ॥
ईं चुनीं बाशद बिसयार ओफ़्तद ।
कमतरीं चीज़श सरे दार ओफ़्तद ॥

हिकायत मन्सूर

गुफ़्त चूँ दर आतशे अफ़रोख़्तना ।
गश्त आँ हल्लाज कुल्ली सोख़्तना ॥
आशिक़े आमद मगर चोबे बदस्त ।
बर सरे आँ मुश्ते ख़ाकिस्तर नशस्त ॥
पस ज़बाँ बकुशाद हमचूँ आतशे ।
बाज़ मी शोरीद ख़ाकस्तर ख़शे ॥
बंगरे मी गुफ़्त बर गोयद रास्त ।
काँ के मी ज़द ऊ अनलहक़ ऊ कुजास्त ॥
उंचे गुफ़्तम उंचे बिशनीदी हमह ।
उंचे दानिस्ती तूबो दीदी हमह ॥
आँ हमह ज़ुज़ अज़्वले अफ़साना नेस्त ।
मह शुद जानत दरीं वीराना नेस्त ॥

मेरे प्रति तो सम्पूर्ण संसार ही संकीर्ण हो रहा है फिर ऐसी जगह मुझे भय क्यों मालूम होने लगा !

जिस मनुष्य का साथी गर्मी के मौसम और सोते जागते हर वक्त सात सिर वाला अजदहा हो,

और सर उठाना रहता हो उसे इस प्रकार के बहुत से खेल खिलाने पड़ते हैं और उसके लिये शूली की नोंक बहुत छोटी-सी वस्तु है ।

मन्सूर की कहानी

जब धधकती हुई अग्नि में मन्सूर जलकर भस्म हो गया, एक प्रेमी आया, और उस राख के ढेर पर आकर बैठ गया । उसके हाथ में एक डंडा था । उस भस्म को डंडे से कुरेदता हुआ वह बड़े क्रोध के साथ बोला,

कि अब तो तनिक सत्य बोलो, वह अनलहक़ (अहं ब्रह्मास्मि) की पुकार मचाने वाला इस समय कहाँ है ?

मैंने जो कुछ कहा और तेरे कान में जो कुछ पड़ा वह सब और जो कुछ तूने जाना व देखा,

यह सब भी अभी कथानक के प्रारम्भिक शब्द से बढ़कर नहीं है । इसी में तेरा प्राण विलीन हो गया और इस उजड़ शरीर को छोड़ गया ।

दर निगारे ग कि नारे दर दहर ।
गर बसे दर सर जनी आज दे ने सुद ॥
चूँ निगारज जाए बेजाए रसीद ।
चूँ बदाजा बाज शुद शुद ना पदीद ॥
गाहे बीना जीं जहाँ ता आं जहाँ ।
बेश नकदम नेस्त जायज दरमियाँ ॥
अज जहानत चूँ बर आयद जाँ दमे ।
दीं जहानत आँ जहाँ गरदद हमे ॥
दीं जहाँ ता आँ जहाँ बिसयार नेस्त ।
जुज दमे अन्दर मियाँ दीवार नेस्त ॥
चूँ बर आयद आँ दमत अज जाने पाक ।
पस निगूँ सारत बेगानादाज बखाक ॥
मर्ग रा बर खल्क अज्मे लाजिमस्त ।
जुम्ला रा बर खाक खुफ्तन लाजिमस्त ॥
मर्ग न अहमक न बुखरद रा गुजारत ।
न यके नेको न यक बद रा गुजारत ॥

फिर उस बुझे हुए दीपक का पता तुझे संसार में कोई भी नहीं दे सकेगा। वह तुझे कहीं भी नहीं मिलेगा।

जिस दीप को वायु का झोका उड़ा ले गया, उसके पाने के लिये लाख प्रयत्न कर तब भी न मिलेगा।

जब वह अपने स्थान से हट गया तो तुझे समझ लेना चाहिये कि वह नष्ट-भ्रष्ट हो गया।

इस संसार से वह संसार बुद्धिमान् मनुष्य के लिये बहुत दूर नहीं है। इस जग से जैसे ही तेरी साँस निकली वैसे ही यह जगत दूसरे जगत के रूप में परिणत हो जाता है।

यह संसार उस दूसरे से अधिक दूर नहीं है। बस एक सांस रूपी दीवाल बीच में स्थित है।

जब तेरी मृत्यु आती है, तुझे औंधे मुख पृथ्वी पर गिरा देती है।

सांसारिक मनुष्यों पर मृत्यु अपना प्रभुत्व स्थापित किए हुए है और प्रत्येक को किसी न किसी दिन पृथ्वी पर सोना अवश्य ही होगा।

मृत्यु ने न मूर्ख को छोड़ा और न बुद्धिमान् को। उसके लिये भले और बुरे समान हैं।

गर तु ज़ीं क़ौमी वगर ज़ाँ दीगरी ।
हमचो ईशाँ वुगुज़री ता विनगरी ॥
हर कि मुर्दो गश्त ज़ेरे ख़ाक पस्त ।
हर कसश गोयद वेया सूदो वेरस्त ॥
हर किरा अरज़ीं तेहमतन हस्त मर्ग ।
देग रा सर वर गिरफ़्तन नेस्त वर्ग ॥
अलहक़्क़त दुनिया चु पुर वर्ग ओफ़्ताद ।
कव्वलीं आसाइशे मर्ग ओफ़्ताद ॥
खेज़ ता गामे वगरदूँ दर नेहेम ।
पस सरे ईं मर्ग पुर खूँ वर नेहेम ॥
मी रवम गिरयाँ चो मेग अज़ आमदन ।
आह अज़ रफ़्तन दरेग अज़ आमदन ॥

हिकायत गिरीसतन दीवाना दर दमे नज़ा

आँ यके दीवानए अज़ पहले राज़ ।
गश्त वक़्ते नज़ा जाँकन्दन दराज़ ॥
अज़ सरे वेक़ूव्वतीयो इज़्तेरार ।
हमचो अत्रे ख़ँ फ़िशाँ वेगिरीस्त ज़ार ॥

तू चाहे मूर्ख हो अथवा ज्ञानी, जिस प्रकार और सब यहाँ से चले गये, तुझे भी जाना है।

परन्तु जो मनुष्य पृथ्वी के अन्दर विलीन हो जाता है, लोग उसके विषय में कहते हैं कि चलो अब वह संसारिक झंझटों से छूटकर सुखी हो गया।

जब रुस्तम ऐसे पहलवान की मृत्यु आ जाती है तो वह हाँडी का ढक्कन खोलने तक का अवकाश नहीं पाता है।

सत्य तो यह है कि यदि इस संसार में तेरा घर पूरा भरा है तो मृत्यु तेरे आनन्द की प्रथम सीढ़ी है।

उठ, आकाश के ऊपर अपना क़दम रख। इस रक्त से परिपूर्ण संसार का विचार ही मस्तिष्क से निकाल बाहर कर।

जब हम इस संसार में उत्पन्न होते हैं तो खूब रोते हैं। (जाने का हाल पहले ही कह चुके) दोनों ही अवस्थाएँ खेद जनक हैं।

एक पागल का दुःखित अवस्था में रोना

एक पागल जिसके हृदय में पीड़ा थी, जब मरने लगा तो प्राण निकलने का उसे बहुत कष्ट हुआ।

व्याकुल होकर और कमज़ोरी से तड़प कर अश्रुपात करने लगा,

दर सिफ़त वादिए इश्क़ गोयद

कस दरीं वादी वजुज़ आतश मवाद।
जाँ के आतश नेस्त इश्क़श खाम मवाद॥

इश्क़ आँ वाशद कि चूँ आतश बुवद।
गर्म रौ सोज़िंदओ सरकश बुवद॥

आक़बत अंदेश नबुवद यक ज़मीं।
बर कुशद ख़ूनश बआतश सद जहाँ॥

लहज़ए न काफ़िरी दानद न दीं।
लहज़ए न शक शिनासद न यक़ीं॥

नेको बद दर राहे ऊ यकसाँ बुवद।
ख़ुद चो इश्क़ आमद न ईनो आँ बुवद॥

ऐ मुबाही ईं सख़ुन आँने तो नीस्त।
मुरतदी दीं शौक़ दर जाने तो नीस्त॥

हरचे दारद जुमला दर बाज़द ब नक़्द।
बज़ विसाले दोस्त मी नाज़द ब नक़्द॥

प्रेम की विशेषताएँ

इस घाटी में विना अग्नि के कोई प्रवेश न करे और जो आग के समान जलता न हो उससे उसका प्रेम ही प्रसन्न न हो।

जिस मनुष्य में प्रणय की अग्नि दहकती हो वह कभी प्रसन्न चित्त न रहे। प्रेमी वही होता है जिसमें अग्नि की जलन हो और वह भी इतनी तीव्र कि दूसरों को जलादे।

वह मस्त रहे। उसे अपना भी ज्ञान न रहे और क्षण भर के लिये भी फलाफल का विचार न करे।

उसका रक्त सैकड़ों सांसारिक मानवों को अग्नि में डाल दे। उसको एक क्षण भर के लिये भी अपना अथवा अपने धर्म का ध्यान न आवे।

अर्थात् उसके रक्त की गर्मी उन सब में आग लगा दे। इसी प्रकार विश्वास और सन्देह का भी उसे विचार न होना चाहिये और भलाई-बुराई उसकी दृष्टि में समान जचें।

क्योंकि जब प्रणय का भूत उसके शिर पर सवार होता है तब उसे इन बातों की भिन्नता का ज्ञान ही नहीं रहता है।

ऐ प्रत्येक वस्तु को उचित समझने वाले! तब तू इन वस्तुओं के विषय में कुछ भी नहीं कह सकता है।

यह एशिया माइनर में रूम के निवासी थे और इसी कारण इनका पूरा नाम जलालुद्दीन रूमी था। यह मौल्वी पन्थ के साधुओं में से थे, जो नाचा भी करते थे। इस पन्थ को इन्हींने अपने गुरु शम्शतबरेज़ की मृत्यु के उपरान्त चलाया था। वास्तव में ईरान के सूफ़ी कवियों में इनका स्थान बहुत ऊँचा है। बहुधा लोग इन्हें सर्वश्रेष्ठ भी कहते हैं। इनकी मसनवी में जो क़ुरानी पहलवी भी कहलाती है, २६३०० दो पदी छंद हैं। यह पुस्तक संसार की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों में गिनी जाने योग्य है। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा पिता के द्वारा हुई थी। इनके पिता तथा बादशाह का कुछ सम्बन्ध था। बादशाह के अत्याचारों के कारण उन्हें दूर दूर के सफ़र करने पड़े थे। इस कारण जलालुद्दीन का बचपन इधर उधर घूमने ही में व्यतीत हुआ। बग़दाद, मक्का, मलाविया लारिन्दा, क़ुनिया इत्यादि का भ्रमण इन्होंने किया था। किम्वदन्ती प्रचलित है कि नीशापुर में इनकी भेंट अत्तार से हुई, जिन्होंने बताया कि बच्चे का भविष्य बहुत ही अच्छा होगा और इलाहीनामा की एक प्रति भी दी।

रूमी ने दो विवाह किये थे, जिनसे उसके दो लड़के और एक लड़की हुई थी। इन लड़कों में से एक के कारण रूमी के गुरु की मृत्यु हुई। जो निकल्सन का कहना है, "एक बहुत ही दुर्बल मनुष्य था। काले कपड़े से वह अपने शरीर को ढका रखता था। संसार के रंगमंच पर आकर उसने कुछ दिनों तक दर्शकों को अपनी झलक दिखलाई और फिर सबके हृदयों में करुण रस भरकर अन्तर्धान हो गया। उस समय उसका प्रभाव लोगों पर बहुत ही अधिक था। जिस प्रकार प्लेटो का अपने गुरु सोक्रेटीज़ के साथ शरीर तथा आत्मा का सम्बन्ध था, उसी प्रकार जलालुद्दीन रूमी का शम्शतबरेज़ के साथ, जिनके नाम पर उन्होंने अपनी पुस्तक की रचना की थी। शम्शतबरेज़ की मृत्यु के उपरान्त भी, मेरी समझ में, उन्हें मृत कहना भूल थी।"

विज्ञान के रूखेपन के कारण रूमी का चित्त रहस्यवाद की तरफ़ गया और इस विषय में उन्होंने आशातीत उन्नति की।

विनफ़ील्ड के कथनानुसार रूमी की समानता रहस्यवाद में कोई भी नहीं कर सकता। किसी भी मनुष्य का इस विषय में सन्देह, केवल उनकी मसनवी, दीवान शम्शतबरेज़ के पढ़ने ही से, विश्वास में परिणत हो सकता है।

इन दोनों में कौनसी रचना अच्छी है, यह निश्चय करना कठिन है। इस विषय में निकल्सन के शब्दों को उद्धृत करता हूँ :—

"मसनवी में धार्मिक गीतों के सभी गुण वर्त्तमान हैं। पर्वत के गान गुलाब पुष्प के रंग तथा सुगन्ध, जंगल की हलचल इत्यादि से पद्य आंत

प्रोत हो रहे हैं। ईश्वर की व्यापकता सभी में दिखलाई गई है। यही नहीं, वरन् इसमें और भी अनेक विशेषताएँ हैं। रंग, रूप और गन्ध प्रियतम के दर्पण के समान हैं। सांसारिक प्रेम, और उस स्थान की यात्रा जहाँ उपवन में खिले हुए गुलाब पुष्प कभी मुर्झाते नहीं है, केवल उसी प्रियतम के लिये लिखे गये हैं।"

इसके उपरान्त :—

"एक बहुत बड़ी नदी है, जिसकी धार प्रशान्त है और जो बहुत ही गहरी है। भिन्न भिन्न और अनोखे प्राकृतिक सौन्दर्य से परिवेष्ठित स्थानों से बहती हुई, यह अनन्त सागर की ओर अग्रसर होती है। दूसरी गम्भीर गर्जन के साथ फेन उगलती हुई और अठखेलियाँ करती हुई पहाड़ियों में विलीन होजाती है।"

रूमी की कविता के विषय में वह लिखते हैं, "उनकी कविता को पढ़ने से ऐसा ज्ञात होता है, मानो हम किसी स्वर्गीय वेगवती सरिता का गान सुन रहे हैं। शब्द योजना, हृदय को हिलानेवाली और आनन्द प्रदायिनी है।"

उनकी प्रमुख रचनाएँ यह हैं :—

मसनवी,

दीवान शम्शतबरेज़।

सवाल करदने ख़लीफ़ा अज़ लैला व जवाबे ऊ

गुफ़्त लैला रा खलीफ़ा कीं तुई।
कज़ तो मजनूँ शुद परीशानो ग़वी॥
अज़ दिगर ख़ूबाँ तो अफ़ज़ूँ नेस्ती।
गुफ़्त खामुश चूँ तो मजनूँ नेस्ती॥
दीदए मजनूँ अगर बूदे तुरा।
हर दो आलम बेखतर बूदे तुरा॥
ताखुदी तू लेक मजनूँ बेखुदस्त।
दर तरीक़े इश्क़ बेदारी बदस्त।

सबब तर्क करदन इबराहीम अद्हम तख़्तो ताज रा

खुफ़्ता बूद आँशह शबाना बर सरीर।
हारिसाँ बर बाम अन्दर दारो गीर॥
क़स्दे शह अज़ हारिसाँ आँदन नबूद।
कि कुनद आँ दफ़ए दुज़्दानों रुनूद॥

ख़लीफ़ा का लैला से प्रश्न करना और उसका उत्तर

ख़लीफ़ा ने लैला से प्रश्न किया, क्या तू ही वह स्त्री है जिसके कारण मजनूँ हैरान और मारा मारा फिरता है?

दूसरी सुन्दर युवा स्त्रियों से तो तू बढ़कर (श्रेष्ठ) नहीं है। लैला ने उत्तर दिया बस आप शान्त रहिये।

आप मजनूँ तो हैं नहीं; यदि आप को मजनूँ की आँख मिलती तो सारे लोकों की प्रतिष्ठा आपकी दृष्टि में न रहती।

आप होश में हैं और मजनूँ बेहोश है। प्रेम के मार्ग में चतुरता बहुत बुरी वस्तु है।

इबराहीम अद्हम का अकारण राज्य सिंहासन व मुकुट का त्याग करना

रात्रि में वह बादशाह सिंहासन पर सो रहा था और रक्षक सिंहद्वार पर चौकसी दे रहे थे।

बादशाह का वह मन्तव्य न था कि वह रक्षकों को सचेत करे और दुष्ट चोरों को दूर रक्खे।

मानी अश पिनहां व कु दर पेशे खल्क।
खल्क के बीनन्द गैरे रीशो दल्क॥
चूं ब चश्मे खेश खल्कां दूर शुद।
हमचु अनका दर जहां मशहूर शुद॥

इनकार मजनूँ अज़ फ़स्द

जिस्मे मजनूँ रा चे रंजे दूरवे।
अन्दर आमद नागहां रंजूरवे॥
खूँ बजोश आमद चे शोले इशतियाक।
ता पदीद आमद बरां मजनूँ फ़राक॥
पस तबीब आमद बदारू कर्दनश।
गुफ्त चारा नेस्त गैरज रग जदनश॥
रग जदन बायद बराए दफ़ए खूँ।
रग जने आमद बदआंजा चू फ़नूँ।
बाजुवश बस्तो कुशादाँ नेशे रू।
बाग बर जद बरवे आँ माशूक़ जू॥
मुद्दे खुद बिसतानो तर्के फ़स्द कुन।
गर बेमीरम गो बेरो जिस्मे कोहन।

उसका आन्तरिक गुण गुप्त था और उसकी सूरत लोगों के समक्ष थी। लोग दाढ़ी और गुदड़ी के अतिरिक्त और क्या देखते हैं!

परन्तु जब वह अपनी प्रजा की आँखों से परे होगया तो इस संसार में उल्क: (एक विशेष पक्षी) की भाँति प्रसिद्ध होगया।

मजनूँ का फ़स्द खुलवाने (रग से खून निकलवाने) से मना करना

मजनूँ को वियोग के कष्ट से सहसा एक शारीरिक बीमारी उत्पन्न होगई, शोक की जलन से उसके खून में उबाल आगया जिसके कारण मजनूँ के बदन पर दाने पड़ गये।

वैद्य उसका इलाज करने को आया और कहा कि रग से खून निकालने के अतिरिक्त इसका अन्य इलाज नहीं।

खून को निकालने के लिये इसकी रग फाड़ देना चाहिये। इसको सुनने के पश्चात् एक चतुर फस्द खोलने वाला आया।

फस्द खोलने वाले ने मजनूँ के हाथ बाँध दिये और अपना नश्तर (एक यन्त्र) निकाल लिया। मजनूँ ने उसको डाँट कर पूछा, यह क्या है?

तू अपना बेतन ले ले और मेरा फ़स्द न खोल। अगर मैं इस बीमारी में मृत्यु को प्राप्त भी हो जाऊंगा तो क्या होगा पुराना शरीर न रहेगा।

अज मोहब्बत सिज्न गुलशन मी शवद।
वे मोहब्बत रोजा गिलखन मी शवद॥
अज मोहब्बत नार नूरे मी शवद।
अज मोहब्बत देव हूरे मी शवद॥
अज मोहब्बत संग रौशन मी शवद।
वे मोहब्बत मोम आहन मी शवद॥
अज मोहब्बत तुख शादी मी शवद।
वज मोहब्बत गोल हादी मी शवद॥
अज मोहब्बत नेश नोशे मी शवद।
वज मोहब्बत शेर नूशे मी शवद॥
अज मोहब्बत सुख सेहत मी शवद।
वज मोहब्बत रुज रहमत मी शवद॥
अज मोहब्बत मुर्दा जिन्दा मी शवद।
वज मोहब्बत शाह बन्दा मी शवद॥
ईं मोहब्बत हम नतीजे दानिशत।
कै गजाला वर चुनीं तख्ते नशिस्त॥
दानिशे नाकिस कुजा ईं इश्क जाद।
इश्क जायद नाकिस अन्मा वर जमाद॥

प्रेम से कारागृह उद्यान बन जाता है। प्रेम के बिना उद्यान भाड़ बन जाता है।

प्रेम ही से अग्नि प्रकाश बन जाती है। प्रेम ही से कुरूप सुन्दर प्रतीत होता है।

प्रेम हो तो पत्थर घुलकर तेल बन जाता है। प्रेम न हो तो सोना लोहा बन जाता है।

प्रेम के कारण रञ्ज व दुख प्रसन्नता के रूप में पलट जाते हैं और प्रेम ही से भूतप्रेत मार्गदर्शक बन जाते हैं।

प्रेम से कष्ट आराम बन जाते हैं। प्रेम के ही प्रभाव से सिंह एक मूसा बन जाता है।

प्रेम से रोग स्वास्थ्य बन जाता है। प्रेम ही से क्रोध दया बन जाता है।

प्रेम से मृतक जीवित हो जाता है और प्रेम से बादशाह गुलाम बन जाता है।

यह प्रेम भी विद्या का फल है, वह व्यर्थ इस प्रकार के सिंहासन पर आरूढ़ नहीं हुआ।

अधूरी विद्या ने ऐसा प्रेम कहाँ उत्पन्न किया! प्रेम अधूरा पैदा होता है परन्तु बेजान पर (जो अपने प्राणों को प्राण नहीं समझते)।

हिम्मतश बीनो दिलो जानो शिनाख्त।
कू कुजा बेगुज़ीदो मसकनगाह साख्त॥
ऊ सगे फ़र्रुख रुखे कहफ़े मनस्त।
बलके ऊ हम दर्दो हम लहफ़े मनस्त॥
आँ सगे कै गश्त दर कूयश मुक़ीम।
खाके पायश बेह ज़े शेराने अज़ीम॥
आँ सगे कै बाशद अन्दर कूए ऊ।
मन बशेराँ कैदेहम यकमूए ऊ॥
ऐ के शेरा मर सगानश रा गुलाम।
गुफ़्तन इमकाँ नेस्त खामुश बस्सलाम॥
गर ज़े सूरत बगुज़रेद ऐ दोस्ताँ।
जन्नत अस्तो गुलसिताँ दर गुलसिताँ॥

दीवान

(१)

चे नदबीर ऐ मुसलमानाँ कि मन खुदरा नमी दानम्।
न तर्सा न यहूदम् न मन गबरम् न मुसलमानम्॥
न शर्क़ीयम् न ग़र्बीयम् न बर्रीयम् न बहरीयम्।
न अज़ कानेम तबीईयम न अज़ अफ़लाके गरदानम्॥

इसके हृदय, इसके जिगर और इसकी पहिचान को तो देखो कि किस स्थान को चुनकर अपने रहने का स्थान नियत किया है।

यह "कहफ़" वालों के कुत्ते के समान धन्यवाद का पात्र है, यह मेरे दुखों का साथी और मित्र है।

जो कुत्ता प्रेमिका की गली में रहता है उसके पाँवों की धूल बड़े बड़े सिंहों से भी बढ़कर है।

जो कुत्ता उस प्रेमिका की गली में रहता है, मैं उसके एक बाल बराबर भी सिंहों को नहीं समझता।

चूंकि आम आदमी की बोली में सिंह उसके कुत्तों का गुलाम नहीं कह सकते इस लिये बस चुप रहो।

मित्रो! यदि तुम इस प्रत्यक्ष दुनिया से सम्बन्ध त्याग दो तो फिर स्वर्ग और आनन्द के अतिरिक्त कुछ नहीं।

दीवान

(२)

मुसलमानो! मैं क्या करूँ? मैं तो यही नहीं समझता हूँ कि मैं क्या वस्तु हूँ। न तो मैं ईसाई हूँ, न यहूदी न पारसी, और न मुसलमान।

न तो मैं पूर्व का रहने वाला हूँ, न पश्चिम का। न स्थल में रहता हूँ, न प्राकृतिक खान का जवाहर हूँ और न मुझे यों आकाश का नक्षत्र।

न अज खाकम् न अज आबम् न अज बादम् न अज आतिश ।
न अज अरशम् न अज फ़रशम् न अज कोनम् न अज कानम् ॥
न अज हिन्दम् न अज चीनम् न अज बलग़ारो सक़लीनम् ।
न अज मुल्के इराक़ीनम् न अज खाके खुरासानम् ॥
न अज दुनिया न अज उक़्बा न अज जन्नत न अज दोज़ख ।
न अज आदम् न अज हव्वा न अज फ़िरदौसे रिज़वानम् ॥
मकानम् लामकाँ बाशद निशानम् बेनिशाँ बाशद ।
न तन बाशद न जाँ बाशद के मन अज जाने जानानम ॥
दुई अज खुद बदर करदम् यके दीदम् दो आलम रा ।
यके जोयम् यके दानम् यके बीनम् यके खानम् ॥
होवल अव्वल होवल आखिर होवल ज़ाहिर होवल बातिन ।
बजुज़ याहू व यामनहू कसे दीगर नमी दानम् ॥
चे जामे इश्क सर मस्तम् दो आलम रफ़्त अज दस्तम् ।
बजुज़ रिन्दी व क़ल्लाशी न बाशद हेच सामानम ॥
अगर दर उम्र खुद रोज़े दमे बे तो बर आवुर्दम् ।
अज़ाँ रोज़ो अज़ाँ साअत जे उम्रे खुद पशेमानम् ॥

न तो मैं मिट्टी ही से उत्पन्न हुआ हूँ और न वायु से । न तो जल से और न अग्नि से । मैं न तो आकाश से आया हूँ और न पृथ्वी से उत्पन्न हुआ हूँ । न तो मैं संसार का ही परिमाणु हूँ और न किसी खान ही से निकला हुआ जवाहर हूँ ।

न मैं भारतीय हूँ और न चीनी । न तो मैं बलगेरिया का निवासी हूँ और न सक़लीनिया का । मैं ईराक़ देश का भी नहीं हूँ और न खुरासान का ।

न तो मैं संसार का ही हूँ और न आकाश का । न स्वर्ग का ही जीव हूँ और न नर्क का । न तो मुझे आदम से ही सम्बन्ध है और न ही हव्वा से । और न मैं फ़िरदौस से ही आया हूँ ।

मेरा स्थान वह है जो कोई स्थान ही नहीं है और मेरा पता न पते में है । न मैं शरीर हूँ और न प्राण, अपितु प्राणों का प्राण हूँ ।

मैंने न तो मस्तिष्क तथा हृदय से द्वैत का विचार निकाल डाला है । एक ही को देखा है, एक ही को जाना है, वही मेरी दृष्टि में है और उसी का नाम लेता हूँ ।

वही आदि है और वही अन्त । वही प्रकट है और वही गुप्त । मेरा सम्बन्ध वही है जो तू ही है और वह भी तू ही है । इसके अतिरिक्त और मैं कुछ भी नहीं जानता ।

मैं अब दो संसारों को त्याग कर अद्वैत हो गया हूँ । दोनों जहाँ को त्याग चुका हूँ । मेरा और जानने के अतिरिक्त मेरे पास कोई वस्तु नहीं है ।

यदि मैंने अपने जीवन के कुछ क्षण एक क्षण भी व्यर्थ में खोये हैं तो उस [illegible] और उस क्षण से [illegible]

अगर दस्तम दहद रोज़े दमे बातो दरीं ख़िलवत।
दो आलम चोरे पा आरम् हमी दस्ते बरफ़शानम॥
इला ऐ "शम्से तबरेज़ी" चुनीं मस्तम् दरीं आलम्।
कि जुज़ मस्ती व क़ल्लाशी नबाशद हेच दस्तानम्॥

(२)

व रोज़े मर्ग चु ताबूते मन रवाँ बाशद।
मुमाँ मबर के मरा दिल दरीं जहाँ बाशद॥
बराये मन मगरी व मगो दरेग़ दरेग़।
व दामे देव दर उफ़्ती दरेग़ आँ बाशद॥
जनाज़ाअम चु बबीनी मगो किराक़ किराक़।
मरा विसाले मुलाक़ात आँ ज़माँ बाशद।
मरा व गोर सपारी मगो विदा विदा।
कि गोर परदए जमाअते जिनाँ बाशद॥
फ़रो शुदन चु व दीदी बरामदन दिलगर।
बख़्वे शम्से क़मर रा चेरा चियाँ बाशद॥

यदि इस अवस्था में तू मुझे क्षण भर के लिये भी मिल जावे तो मैं दोनों लोकों को पाँव से कुचल डालूं और उनसे अपना सारा सम्बन्ध छोड़कर पृथक हो जाऊँ।

ऐ मेरे शम्स तबरेज़, तुझे स्मरण रहे कि मैं इस संसार में इस प्रकार मस्त हूँ कि मस्ती और बेफ़िक्री के अतिरिक्त मेरे कोई कार्य नहीं है। इसी में मेरी ख्याति है।

(२)

मृत्यु के दिन जब लोग मुझे शमशान को ले चलेंगे यह मत सोचना कि मेरा हृदय इस संसार में होगा।

मेरे मुख को मृत्यु की छाया से विवर्ण देखकर शोक मत प्रकट करना। शोक की बात तो यह होती कि तू शैतान के पंजे में आजाता।

मेरी अर्थी निकलती देखकर इस बात पर दुख मत प्रकट करना कि मैं संसार से विदा हो रहा हूँ। नहीं, यही तो दिन होगा मेरे लिये प्रियतम से मिलने और उसके संसर्ग में बैठने का।

मुझे समाधिस्थ करके यह मत कहना, जाओ विदा हो, क्योंकि यह समाधि तो मेरे चिरंतन विश्राम के लिये वहीं के समान होगी।

सूर्य और चन्द्र का अस्त होना देखकर उनका उदय होना भी देख उनका अस्त होना उनके लिये चिरंतरक रहा है।

तुरा गुरूब नुमायद न लेक शर्क नुमूद।
लहद चु हश्र नुमायद खलासे जाँ बाशद॥

(३)

ऐ आशिक़ाँ ऐ आशिक़ाँ हंगामे कूचस्त अज जहाँ।
दर गोश जानम मी रसद तबले रहील अज आसमाँ॥
निक सारेबाँ बरखास्ता क़तारहा आरास्ता।
अज मा हलाली खास्ता चे खुफ़्तह ऐ कारवाँ॥
ईं बाँगहा अज पेशो पस बाँगे रहील अस्तो जरस।
हर लहज़ए नफ़्सो नफ़स सरमी कुनद दर लामकाँ॥
जाँ शम्मा हाये सरनगूँ जाँ परदहाये नीलगूँ।
खल्के अजब आमद बरूँ तागैरहा गरदद अयाँ॥
जाँ चर्ख दौलाबी तोरा आमद गिराँ खाबी तोरा।
फ़रयाद अज़ीं उम्रे सुबुक जिन्हार अज़ीं खवाबे गराँ॥
ऐ दिल सुए दिलदार शो ऐ यार सुये यार शो।
ऐ पासबाँ बेदार शो खुफ़्ता न शायद पासबाँ॥

जब तू उसको डूबता हुआ देखता है तो वास्तव में वह उदय होता है। समाधि देखने में कारागार के समान ज्ञात होती है पर है वास्तव में वह प्राणों के मोक्ष का मार्ग।

(३)

ओ प्रेमियो! संसार से चल देने का समय निकट है। मेरे प्राणों को आकाश में बजने वाले कूच के नक़्क़ारे का शब्द सुनाई पड़ रहा है।

यह देखो कारवां पंक्तियों में चलने के लिये तैयार खड़ा है। हमसे भी तय्यारी के लिये कह दिया है। उठो, काफ़ले के साथ चलने वालो! क्या तुम्हें नींद आ रही है?

यह जो आगे और पीछे से शब्द सुनाई पड़ रहे हैं वह और कुछ नहीं केवल चलने की और घण्टे की आवाज़ें हैं। प्रतिक्षण प्राण और साँस स्थान रहित स्थान को जा रहे हैं।

इन औंधे दीपकों से और इन नीले रंग के पर्दों से नाना भाँति की विलक्षणताएँ इसलिये प्रकट हो रही हैं ताकि रहस्यों का पता लग जावे।

इस ढंग के और ऐसे आसमान से मुझको घोर निद्रा आगई है। इस तीव्र-गामिनी अवस्था के हाथ से फ़रियाद की जाती है और इस गम्भीर नींद से दूर रहने का प्रयत्न किया जाता है।

ऐ दिल! प्यारे की तरफ़ चल और हे मित्र! प्रियतम के पास चल। चौकीदार! उठ जाग जा, तेरे लिये इस प्रकार सोना ठीक नहीं है।

हर सूए बाँगो मश्गला हर कूए शम्मो मशअला।
किम् शव जहाने हामिला जायद जहाने जावेदाँ॥
तू गिल बुदी ओ दिल शुदी जाहिल बुदी आकिल शुदी।
आँ कू कशीदत ईं चुनी आँसू कुशादत आँ चुनाँ॥
अन्दर कशाकशहाये ऊ नौशुस्त ना खुशहाये ऊ।
आबस्त आतिशहाय ऊ बरबै मकुन रूरा गिराँ॥
दर जाँ नशिस्तन कारे ऊ तौबा शकिस्तन कारे ऊ।
अज होलए बिस्यारे ऊ चूँ जर्रहा लर्जां दिलाँ॥
ऐ रेशखन्दे रख्ना जेइ यानी मनम साजारे देह।
ता कै जेही गरदन बेनेइ बर नै कशन्दत चूँ कमाँ॥
तुख्मे दग़ल मो काश्ती अफ़सोस हामी दाश्ती।
हक़रा अदम् पिंदाश्ती अकनू बेयीं ऐ क़िल्लतबाँ॥
ऐ खर्बगा औलातरी देगे सियाह औलातरी।
दर क़ारे चाह औलातरी ऐ नङ्ग खानो खानदाँ॥

चारों तरफ़ से आनन्द और प्रसन्नता की आवाजें आ रही हैं। प्रत्येक गली में दीपकों और मशालों का उजाला फैला हुआ है। यह इसलिये कि यह नाशवान संसार आज एक अमर संसार को उत्पन्न करेगा और उसी के शुभागमन में आज इसने यह आनन्दित रूप धारण किया है।

तू मिट्टी था पर अब दिल के रूप में परिणत हो गया है। मूर्ख था परन्तु अब बुद्धिमान् हो गया है। जितने तुझे ऐसा बना दिया है वही तुझे उस प्रकार उधर भी ले जायगा।

उसकी इस खींचतान में जो कष्ट मिलें उन्हें मधु की मिठास समझो। उसकी आग को पानी के समान शीतल समझो और उस पर क्रोध न करो।

इसके काम हैं प्राणों में सना जाना और शरीर को तोड़ डालना। अगणित कार्यों से सबके हृदय ऐसे काँपते हैं जैसे वायु में कण।

ए बेवकूफ़! तू कहता है कि मैं गोल का नाविक हूँ। तू कब तक घमंड में इस तरह उचकता रहेगा? अपना सर झुका दे नहीं तो कमान की तरह तुझे कमान पर चढ़ायेंगे।

तू सदैव मक्कारी के बीज बोया करता था, और खूब अफ़सोस किया करता था; भगवान को तूने समझा था कि वह है ही नहीं। अब, ए पापात्मा! अपनी करनी भोग।

ए धान के गर्व और घर का नाश हुआनेवाले! अरजा होना चाहिये तू एक काली हाँडी के समान कुँये की तह में पड़ा रहता।

दरमन कसे दीगर बूबद कीं चश्महा अज वै जेहद।
गर आब सोजानी कुनद जातश बुबद ईं रावेदाँ॥
दर कफ न दारम संगे मन बाकस न दारम जंगे मन।
बर कस न गीरम तंगे मन जीरा खुशम चूँ गुलसिताँ॥
पस चश्मे मन जाँ सर बुबद वजं आलमे दीगर बुबद।
ईं सू जहाँ आसूँ जहाँ बनशिस्ता मन बर आस्ताँ॥
बर आस्ताँ आँ कस बुबद कू नातिकें अखरस बुबद।
ईं रम्जे गुफ्तन बस बुबद दीगर मगो दर कश जबाँ॥

(४)

बाँग जदम नीम शबाँ कोस्त दरीं खानए दिल।
गुफ्त मनम, कज रुखे मन, शुद महो खुरशीद खजिल॥
गुफ्त के ईं खानए दिल पुर हमाँ नक्शस्त चेरा।
गुफ्तम कीं अस्से तू अस्त ए रुखे तो शमा चेगिल॥
गुफ्त कि ईं नक्शे दिगर चीस्त पुर अज खूने जिगर।
गुफ्तम की नक्शे मने खस्ता दिलो पाये बगिल॥
बस्तमे मन गरदने जाँ बुरहम पेशश बनिशां।
मुजरिमे इश्कस्त मकुन मुजरिमे खुदरा तु बहिल॥

मेरे अंदर तो कोई और रहता है और यह सोते उसी से जारी है। अगर पानी जलने लगता है तो समझ ले कि यह (मेरी) आग की वजह से है।

न मैं किसी से लड़ता हूँ, न किसी को दबाता हूँ। मैं तो सदैव इसी कारण घास के समान प्रसन्न रहता हूँ।

यही कारण है कि मेरे नेत्र दूसरे के और दूसरे लोक के होते हैं। इस लोक और परलोक के बीच में चौखट की तरह बना बैठा हूँ।

एक चौखट पर वही बैठा रह जाता है जो गूंगा होता है। बस मैं इतना ही इशारा देता हूँ तुम समझ जाओ (कि मेरा मतलब क्या है) और चुप साध लो।

(४)

आधी रात को मैंने उठ कर पूछा, मेरे हृदय रूपी घर में कौन है? उस विलक्षण ने उत्तर दिया, मैं हूँ जिसके मुख की आभा से सूर्य और चन्द्र प्रकाशित हो रहे हैं।

उसने पूछा, इस घर में यह बहुत सी सूरतें क्यों दिखाई पड़ रही हैं? मैंने उत्तर दिया, ये चुगल (चीन देश का एक प्रान्त जहाँ के मनुष्य बड़े सुन्दर होते हैं) इस दीपक पर मेरे मुख का प्रतिबिम्ब पड़ रहा है।

उसने कहा इसी घर में, जब मैं डूबी हुई यह दूसरी सूरत कैसी है? मैंने उत्तर दिया, यह चीनाब और चिनाबियों में पड़े हुए दिल का चित्र है।

मैंने अपनी दो भुजाएँ खोलीं और उसके सम्मुख ले गया. कहा, यह तुम्हारे मिल जाने की आकांक्षी है उसको आशा न कर।"

दाद सरे रिश्ता बमन रिश्तए पुर फ़िन्ना व फ़न।
गुफ़्त बकश ता बकशम हम बकुशो हम मगसिल॥
ताफ़्त अज़ाँ खुरगए जाँ सूरते तुरकम बे अज़ाँ।
दस्त ब बुरदम सूए ऊ दस्ते मरा ज़द के बहिल॥
गुफ़्तम तू हम चों फ़लाँ तुर्श शुदी गुफ़्त बेदाँ।
मन तुरशे मसलहतम ना तुरशे कीनओ ग़िल॥
हर के दर आयद के मनम बर सरे शाखश बेज़नम।
कीं हरमे इश्क़ बुवद ऐ हैवाँ नीस्त अग़ल॥
दस्त सलाहे दिलो दीं सूरते आँ तर्क बक़ीं।
चश्मे फ़रोमालो बबीं सूरते दिल सूरते दिल॥

(५)

मन आँ रोज़ बूदम कि अस्माँ न बूद।
निशाँ अज़ बजूदे मुसम्मा न बूद॥
जेमाँ शुद मुसम्मा ब अस्माँ पेवंद।
दरीं रोज़ काँजा मनो माँ न बूद॥
निशाँ गश्त मज़हर सरे जुल्के यार।
हनोज़ाँ सरे ज़ुल्फ़ जेबा न बूद॥

उसने रस्सी का सिरा, जो कि चालाकियों और कुटाइयों से भरा था, मेरे हाथ में दे कर कहा कि इसे खींच जिससे मैं भी खिंचूँ, परन्तु इसे तोड़ना मत।

उस प्राण के तन्बू से मेरे प्यारे का मुख और भी अधिक लावण्यमय प्रतीत हुआ। मैंने उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाया। उसने हाथ हटाकर कहा, बस हाथ न लगाना।

मैंने कहा कि अमुक पुरुष जिस प्रकार मुझसे रुष्ट हो गया था उसी प्रकार तू भी क्यों होने लगा है। वह बोला कि तुझे नहीं मालूम इस रूठने में भी एक ख़ास भेद है। मैं शत्रुता और बैर से नहीं बिगड़ता हूँ।

जो यहाँ अहंकार के साथ आता है उसकी जड़ में काट (उसे मैं पंगु बना) देता हूँ। यह प्रेम का तीर्थस्थान है, वासना रहित पवित्र है। जानवरों के चरने का स्थान नहीं है।

उस प्रियतम का मुख ही इस हृदय की कोठरी की सजावट है। तनिक आँखें मलकर देख कि तेरे दिल में ही दिल कितना चमत्कृत हो रहा है।

(५)

मैं उस दिन, जबकि वस्तुओं का नामकरण नहीं हुआ था, अस्तित्व था; तब न वह वस्तुएँ ही थीं जिनका नाम रक्खा गया है।

सुन्नी से नाम रक्खी गई वस्तुएँ और सब नाम उत्पन्न हुए और वह भी उस दिन जब कि वहाँ "मैं" और "तू" का भेद भाव कुछ भी न था।

यार की काली घुँघराली अलकों ने पथप्रदर्शक का कार्य किया पर अब तक वह अलकें प्रकट नहीं हुई थीं।

बजुज "शम्शतबरेज़" पाकीज़ा जाँ।
कसे मस्तो मख़मूरो शैदा न बूद॥

(६)

हर नक़्श रा के दीदी जिनसश चे ला मकानस्त।
गर नक़्श रफ़्त ग़म नेस्त अस्लश चु जावेदानस्त॥
हर सूरते कि दीदी हर नुक़्ता के शुनीदी।
बद दिल मशो के रफ़्ताँ जीराना आँ चुनानस्त॥
चूँ अस्ले चश्मा बाक़ीस्त फ़रअश हमेशा साक़ीस्त।
चूँ हर दो बे ज़वालन्द अज़ चे तुरा फ़ुग़ानस्त॥
जाँ रा चु चश्मये दां बीं सुनुअहा चु जू हा।
ता चश्मा हस्त बाक़ी जू हा अज़ो रवानस्त॥
ग़म रा बदाँ कुन अज़ सर बीं आबे जू हमी ख़ुर।
अज़ फ़ौते आब मन्देश कीं आबे बेकरानस्त॥
जाँ दम के आमदस्ती अन्दर जहाने हस्ती।
पेशत के ता बरस्ती बिनहादा नर्दबानस्त॥
अव्वल जमाद बूदी आख़िर नबात गश्ती।
आँ गह शुदी तो हैवाँ ईं बर तू चूँ निहानस्त॥

सारांश यह कि शम्सतबरेज़ के अतिरिक्त कोई मस्त और मतवाला प्रेमिक न था।

(६)

तुमको जो रूप दिखाई देता है उसकी वास्तविकता किसी विशेष स्थान में नहीं है! रूप के मिट जाने का क्या शोक जब कि उसका तत्व स्थायी है।

अतएव जो रूप आँखों के समक्ष है और उसके विषय में जो रहस्य सुनाई पड़ता है, उसके खो जाने अथवा विलुप्त हो जाने पर खेद मत करो।

वास्तव में वह मिटती नहीं है। सोते में जब तक जलधारा प्रवाहित रहती है उसकी नालियाँ पानी देती रहती हैं और फिर जब कि सोता और उसकी नालियाँ चिरस्थायी हैं तो तुम्हें चिल्लाने की क्या आवश्यकता है?

परमेश्वर एक सोते के सदृश है और उसके निर्मित रूप नालियों के समान हैं। जब तक चश्मा रहेगा, नालियाँ उस समय तक उसमें से निकलती रहेंगी।

तू चिन्ता न कर और इन नालियों का जल पान करता रह। यह विचार मनकर कि पानी न रहेगा। चश्मे में अथाह पानी भरा हुआ है।

तू जब से इस संसार में आया है तेरी उत्पत्ति के समय से ही तेरे सम्मुख उन्नति की सीढ़ी रक्खी हुई है।

तू पहले पत्थर था, फिर पौधा हुआ और फिर पशु के रूप में परिवर्तित हो गया। परन्तु तुझ पर यह भेद प्रगट क्यों नहीं हुआ?

गश्ती अज़ाँ पल इन्सां वाइल्मो अक़लो ईमाँ।
विनगर चे गिल शुदाँ तन कू जुस्ते खाक़दानस्त॥
जे इन्साँ चु सैर करदी बेशक फ़रिश्ता गरदी।
वे ईं ज़मी अज़ाँ पस जायत बर आस्मानस्त॥
बाज़ अज़ फ़रिश्तगी हम बगुज़र बरो दरायम।
ता क़तरये तो बहरे गरदद कि सद उमानस्त॥
बगुज़र अज़ीं बलद तू मीगो जे जाने अहदे तू।
गर पीर गश्त जिस्मत चे ग़म चु जाँ जवानस्त॥

(७)

गुफ़्ता के कीस्त बर दर, गुफ़्तम कमीं ग़ुलामत।
गुफ़्ता चे कारदारी, गुफ़्तम महा सलामत॥
गुफ़्ता के चन्द रानी, गुफ़्तम के ता बखानी।
गुफ़्ता के चन्द जोशी, गुफ़्तम के ता क़यामत॥
दावाए इश्क़ करदम सौगन्द हा बख़ुर्दम।
कज़ इश्क़ या वा करदम मन मुल्कतो शहामत॥

पशु से तुझे एक सत्यवादी और विद्वान् मनुष्य का रूप मिला। देख, मिट्टी का एक ढाँचा कितना सुन्दर सुमन बन गया है।

मनुष्य की अवस्था से यदि आगे बढ़ा तो तू निस्सन्देह देवता हो जायगा और तेरा निवास आकाश में होगा। पृथ्वी छूट जायगी।

फिर इस अवस्था को भी छोड़ कर उस समुद्र से जा मिल जो अत्यन्त विशाल है, ताकि एक बूंद के स्थान पर तू एक ऐसी नदी बन जावे जो सैकड़ों नदियों से बढ़कर है।

अब इस जन्म के चक्कर में न पड़ कर प्राण से जाकर मिल जा और उससे कह कि तेरा शरीर वृद्ध हो गया है परन्तु तू इसकी चिन्ता मत कर। जीव तो तेरा अभी युवक ही है।

(७)

प्यारे ने पूछा कि द्वार पर कौन है। मैंने उत्तर में कहा, "तेरा एक तुच्छ सेवक।" उसने पूछा कि यहाँ क्यों आया है। मैंने उत्तर दिया, "मन-मोहन! तेरी अभ्यर्थना करने।"

उसने पूछा कबतक आवारा फिरता रहेगा। मैंने उत्तर दिया, "जब तक तू न बुलायेगा।" उसने पूछा तू कब तक अपना जोश दिखाता रहेगा। मैंने कहा, "प्रलय तक।"

मैंने उसके सम्मुख उसके प्रति अपने हृदय का प्रेम दर्शाया और बहुत सी शपथें उठाईं। कहा कि देख तेरे प्रणय में पड़कर मैंने अपनी प्रतिष्ठा और राज पद का परित्याग कर दिया है।

गुफ़ा बराये दावा क़ाज़ी गवाह ख़ाहद।
गुफ़्म गवाह अश्कम ज़रदीए रुख अलामत॥
गुफ़ा गवाह जरहस्त तर दामनस्त चश्मत।
गुफ़्म बफ़र्रे अदलत अदलन्दो बेग़रामत॥
गुफ़ा चे अज़्मदारी गुफ़्म वफ़ावो यारी।
गुफ़ा जे मन चे ख़ाही गुफ़्म के लुत्फ़े आमत॥
गुफ़ा के बूद हमराह गुफ़्म ख्यालत ए शाह।
गुफ़ा के ख़ांदत ईँ जा गुफ़्म के बूए जामत॥
गुफ़ा कुजास्त खुशतर गुफ़्म के क़स्रे क़ैसर।
गुफ़ा चे दीदी आँ जा गुफ़्म के सद करामत॥
गुफ़ा चरास्त ख़ाली गुफ़्म जे बीम रहज़न।
गुफ़ा के कीस्त रहज़न गुफ़्म के ईँ मलामत॥
गुफ़ा कुजास्त एमन गुफ़्म बज़ोहदो तुक़वा।
गुफ़ा के ज़ोहद चे बूवद गुफ़्म रहे सलामत॥

प्रियतम ने कहा, "न्यायाधीश अभियोग के प्रमाण स्वरूप साक्षी चाहता है।" मैंने उत्तर दिया, "मेरे अश्रु बिन्दु साक्षी हैं और मुख पर की ज़र्दी प्यार की निशानी है।"

उसने कहा, "साक्षी अविश्वासी है, तेरी आंख से ही अपराध, तेरे कथन की असत्यता प्रगट होती है।" मैंने उत्तर दिया, "तेरी न्याय-प्रियता से अब वह विश्वासी हैं। उनमें किसी प्रकार की कालिमा नहीं है।"

उसने कहा, "फिर किस बात की चाह है। मैंने कहा कि तेरे साथ रहने और सच्चे दिल से सेवा करने की।" उसने पूछा, "यह सब कुछ है परन्तु मुझसे किस बात की आशा रखता है।" मैंने कहा, "केवल तेरी उस कृपा की जो दूसरों के लिये भी है।"

उसने पूछा, "तेरे साथ में और कौन था?" मैंने कहा, "हे सम्राट! तेरा ध्यान।" उसने कहा, "तुझे यहाँ तक खींच कौन लाया है?" मैंने कहा, "तेरे प्याले की कामना।"

उसने कहा, "सबसे अच्छा रमणीक स्थान कौन है?" मैंने कहा, "सम्राट का भवन।" उसने पूछा, "तुझे यहां क्या प्राप्त हुआ है?" मैंने उत्तर दिया, "सैकड़ों प्रतिष्ठाएँ।"

उसने पूछा, "तू खाली हाथ क्यों आया है?" मैंने कहा, "चोर के भय से।" उसने कहा, "उस डाकू का नाम बता सकते हो?" मैंने उत्तर दिया, "उसका नाम है तेरे प्रसाद में औरों की बदनामी।"

उसने पूछा, "फिर वह स्थान कौन है जहाँ किसी प्रकार का भय नहीं है।" मैंने कहा, "संविधा और विवेक।" उसने पूछा "विवेक क्या वस्तु है?" मैंने कहा "कुशलता का मार्ग।"

(११)

बुतरे नज़्शन् हर लहज़ा बुते साज़म् ।
बुत हमा बुतहारा दर पेशे तू बुगज़ाज़म् ॥

हूँ और मूर्त्तियाँ बनाया करता हूँ। फिर उन अपनी सारी सन्मुख पिघला डालता हूँ।

दराँ खुम्मे कि दिलरा रंग बख्शी।
कि बाशम मन चे बाशद मेहरो कीनम्॥
तू बदी अव्वलो आखिर तू बाशी।
तु वह कुन आखिरम् अज अव्वलीनम्॥
चु तू पिनहा शवी अज अहे कुफ़्म्।
चु तू पैदा शवी अज अहे दीनम्॥
बजुज चीजे कि दादी मन चे दारम्।
चे मी जोई जे जेबो आस्तीनम्॥

(१०)

बगीर दामने लुत्फ़श कि नागहाँ बगुरेज़द।
बले मकश तु चूं तीरश कि अज़ कमाँ बगुरेज़द॥
चे नज़शहा के बयाज़द चे हीलहा कि बसाज़द।
बनज़श हाजिरे बाशद जे राहे जाँ बगुरेज़द॥
दर आसमाँश बजोई चो मेह दर आब बताबद।
दर आब चूंकि दर आई व आस्मां व गुरेज़द॥

तू जिस रंग में चाहे मुझे रंग दे। मैं क्या वस्तु हूँ और मेरा प्यार तथा वैर क्या है?

प्रथम तो मुझमें और तुझमें कोई भेद नहीं था। जो तू था वही मैं था। और अन्त में भी जो तू होगा वही मैं हूँगा। तू ही मेरे अन्त को मेरे आदि से उत्तम बनादे।

जिस समय तू मेरी दृष्टि से ओझल हो जायगा उस समय मैं बिखरा हो जाऊँगा। और जिस घड़ी तू मेरे सम्मुख आजायगा मैं समीना हो जाऊँगा।

जो कुछ तूने दिया है उसके अतिरिक्त मेरे पास कुछ भी नहीं है। तू मेरा जेबें और आस्तीनें क्यों टटोल रहा है?

(११)

उसके [illegible] को पकड़ ले। [illegible] वह बवण्डर बन जाता है। परन्तु उसे एक बाण के समान अपने [illegible] से बाण धनुष को छोड़ देता है।

वह कैसे सिखाये, विविध प्रकार के रंग दिखाता है और कहाँ कहाँ जाता है। चित्र के रूप में जीव समस्त में वर्तमान रहता है पर आँखों के आगे से अदृश्य हो जाता है।

यदि तू आकाश में [illegible] करे तो वह बादल बनकर नीचे आता है प्रतिबिम्बित होता है पर जैसे ही तू उसे देखने जाता है वह [illegible] हो जाता है।

आईना सादा खाही खुदरा दरू निगर।
कूरा जे रास्त गोई शरमो हज़ार नेस्त॥
चूँ रूए आहिनी जे तमीज़ ईं सफ़ा वयाफ़्।
ता रूए दिल चे यावदे कू रा गुबार नेस्त॥
लेकिन मियाने आहनो दिल ईं तफ़ावतसत।
कीं राज़ दार आमद व आँ राज़दार नेस्त।

(९)

मन अज़ आलम तुरा तनहा गुज़ीनम।
रवादारी के मन रामगीं नशीनम्॥
दिले मन चूँ क़लम अन्दर कफ़े तुस्त।
जे तुस्त इरशाद मानम व रहज़ीनम्॥
बजुज आँचे तू खाही मन चे खाहम्।
बजुज आँचे नुमाई मन चे बीनम्॥
गहे अज़ मन खारे रू यानी गहे गुल।
गहे गुल बोयमो गह खार चीनम्॥
मरा गर तू चुनादारी चुनानम्।
मरा गर तू चुनी खाही चुनीनम्॥

यदि दर्पण को स्वच्छ तथा सादा रखना चाहता है तो अपना वदन उसमें देख। यह समझ ले कि उसे सत्य प्रकट करने में न लज्जा ही है और न भय।

जब लोहे के तख़्ते का ऊपरी भाग बुद्धि द्वारा इतना स्वच्छ हो गया है तो ध्यान दे कि हृदय जिसमें कोई गन्दापन नहीं होता कितना निर्मल हो जायगा।

परन्तु लोहे और हृदय में अन्तर है। हृदय रहस्यमय है और लोहे में कोई रहस्य नहीं है।

(९)

इस सारे संसार में मैं केवल तुझी से प्यार करता हूँ। तेरी इच्छा है कि मैं अकेला बैठा हुआ कालक्षेप करूँ।

मेरा दिल क़लम है और तेरे हाथ में है। मैं प्रसन्न हूँ अथवा दुखी, जो कुछ भी हूँ, हूँ तेरी ही तरफ़ से।

जो कुछ भी तेरी इच्छा है उसके अतिरिक्त और मेरी इच्छा हो ही क्या सकती है? जो कुछ भी तू दिखाता है, मैं उसके सिवा और क्या देखूँ?

तू कभी तो मुझ में काँटे उत्पन्न करता है और कभी फूल। कभी मैं तुझी को सुगन्ध लेता हूँ और कभी काँटे चुनता हूँ।

अगर तू वैसा रक्खे वैसा हूँ और ऐसा रक्खे ऐसा हूँ; जिस प्रकार तू मुझको रखना चाहता है मैं वैसा ही हूँ।

दराँ खुम्मे कि दिलरा रंग बख्शी।
कि बाशम मन चे बाशद मेहरो कीनम्॥
तू बदी अव्वलो आखिर तू बाशी।
तु वह कुन आखिरम् अज अव्वलीनम्॥
चु तू पिनहा शवी अज अहे कुफ़्म्।
चु तू पैदा शवी अज अहे दीनम्॥
बजुज चीजे कि दादी मन चे दारम्।
चे मी जोई जे जेबो आस्तीनम्॥

(१०)

बगीर दामने लुत्फ़श कि नागहाँ बगुरेज़द।
बले मकश तु चूं तीरश कि अज कमाँ बगुरेज़द॥
चे नक़्शहा के बबाज़द चे हीलहा कि बसाज़द।
बनक़्श हाज़िरे बाशद जे राहे जाँ बगुरेज़द॥
दर आसमाँश बजोई चो मेह दर आब बेताबद।
दर आब चूंकि दर आई ब आस्मां ब गुरेज़द॥

तू जिस रंग में चाहे मुझे रंग दे। मैं क्या वस्तु हूँ और मेरा प्यार तथा वैर क्या है?

प्रथम वो मुझमें और तुझमें कोई भेद नहीं था। जो तू था वही मैं था। और अन्त में भी जो तू होगा वही मैं हूँगा। तू ही मेरे अन्त को मेरे आदि से उत्तम बनादे।

जिस समय तू मेरी दृष्टि से ओझल हो जायगा उस समय मैं विधर्मी हो जाऊँगा। और जिस घड़ी तू मेरे सम्मुख आजायगा, मैं धर्मात्मा हो जाऊँगा।

जो कुछ तूने दिया है उसके अतिरिक्त मेरे पास कुछ भी नहीं है। तू मेरी जेबें और आस्तीनें क्यों टटोल रहा है?

(१०)

उसके कृपा-रूपी अञ्चल को पकड़ ले। स्मरण रख वह यकायक भाग जाता है। परन्तु उसे एक बाण के समान अपनी तरफ खींच मत। खींचने से बाण धनुष को छोड़ देता है।

वह कैसे निराले, विविध प्रकार के रंग दिखलाता है और बहाने करता है। चित्र के रूप में सदैव समस्त में वर्त्तमान रहता है पर प्राणों के मार्ग से अदृश्य हो जाता है।

यदि तू आकाश में उसकी खोज करे तो वह चन्द्र बनकर नीचे, पानी में प्रतिबिम्बित होता है पर जैसे ही तू उसे वहाँ देखने आता है वह पुनः आकाश-चारी हो जाता है।

जे लामकाँश व जोई निशाँ दहेद वमकानत।
चु दर मकाँश व जोई व लामकाँ वगुरेज़द॥
चु तीर मीं वेरवद अज़ कमाँ चु मुर्ग़ गुमानत।
यक़ीं वेदाँ के यक़ींदार अज़ गुमाँ वगुरेज़द॥
अज़ ईनो आँ वगुरेज़म जे तर्स नै जे मलूली।
के आँ निगारे लतीफ़म अज़ीनो आँ वगुरेज़द॥
गुरेज़े पाये चु वादम जे इश्क़े गुल चु सवा अम।
गुले जे वीमे ख़िज़ाने जे वोस्तां वगुरेज़द॥
चुनाँ गुरेज़दे नामश चु क़स्द गुफ़्तने वीनद।
कि गुफ़्त नीज़ न तावी कि आँ फ़लाँ वगुरेज़द॥
चुना गुरेज़द अज़ तु कि गर नवीसी नक़्शश।
जे लौह नक़्श वपररद जे दिल निशाँ वगुरेज़द॥

(११)

सूरतगरे नक्क़ाशम् हर लहज़ा वुते साज़म्।
वाँगाह हमा वुतहारा दर पेशे तू वुगज़ाज़म्॥

तू जब उसकी खोज में वनों में भटकता है तब वह घर में दिखलाई देता है और जब तू उसे पाने की आशा से घर में आता है तो वह वनों में भाग जाता है।

यदि तेरी कल्पना बहुत ऊँची उड़ान भरने वाली है तो वह भी उससे कम शीघ्र गामी नहीं है। विश्वास रख वह तुझसे इस प्रकार भागता है जिस प्रकार कल्पना से विश्वास भागता है।

मैं इस सम्पूर्ण संसार से ही भय खाकर दूर दूर भागता फिर रहा हूँ। यह नहीं कि घबड़ाकर शीघ्रगामी बाण के समान जा रहा हूँ। बात केवल यह है कि मेरा सुन्दर प्रियतम भी इस से दूर भागता फिरता है।

मैं वायु के समान भागता हूँ। उसी के समान सुमनो का प्राणयी हूँ (जैसे कि वह उनकी सुगन्ध को चुराकर नौ दो ग्यारह हो जाती है)। मैं एक फूल के समान हूँ जो पतझड़ ऋतु के डर से उपवन को छोड़कर भाग जाता है।

तू उसी के समान भागने वाले को देखकर कहता है कि तू इस प्रकार भागता है जैसे मेरा प्रियतम। परन्तु तू यह भी नहीं बतला सकता कि अमुक भाग रहा है।

वह तुझसे इस प्रकार भागता फिरता है कि यदि तू तख्ती पर उसकी तस्वीर उतारे तो वह भी वहाँ से उड़ जाय और हृदय से उसका निशान भी विलीन हो जाय।

(११)

मैं एक शिल्पी हूँ और मूर्त्तियाँ बनाया करता हूँ। फिर उन अपनी सारी कृतिओं को तेरे सन्मुख पिघला डालता हूँ।

गर नक़्शे बर अंगेज़म् वा रुह दरां मेज़म।
चूं नक़्शे तुरा बीनम् दर आतिशश अंदाज़म॥
तू साक़िए मुग़्मारी या दुश्मने हुशियारी।
या आँ कि कुनी बीरूँ हर आना किबर साज़म॥
जां रेज़ा शुद वा तू आमेज़ा शुद वा तू।
चूं बूए तु दारद जाँ जाँ हना व नवाज़म॥
हर ख़ुं के अमी रोयद वा आक तु मी गोयद।
या मंदरे तू इस रंगम वा इश्क़े तू अम्बाज़म॥
दर आनए आबो गिल ये तुम्न अराब ई दिल।
या आना दर आ ए जाँ, या आना व परदाज़म॥

शिकवए नै

बिश्नो अज नै चूं हिकायत मी कुनद।
अज जुदाईहा शिकायत मी कुनद॥
कज नेस्ताँ ता मरा बबुरीदाअन्द।
अज नफ़ीरम मर्द ओ ज़न नालीदाअन्द॥

सैकड़ों प्रतिमाएँ निर्माण करके उनमें प्राण डाल देता हूँ परन्तु तेरी प्रतिमा देखते ही उन सबों को अग्नि में डाल देता हूँ।

तू मदिरा बनाने वाला साक़ी है अथवा चतुरता का वैरी या और कुछ ? मैं जो घर अपने लिये बनाता हूँ तू उसको नष्ट कर देता है।

मेरा जीवात्मा तुझसे बना है। तुझसे परिचित है। और चूँकि इस प्राण में तेरी सुगन्ध है, अतएव इसको प्रतिष्ठा के साथ रखना मेरा कर्त्तव्य है।

पृथ्वी जिस पुष्प को उत्पन्न करती है वह तेरी राख से यही कहता है कि तेरे प्रेम का ही रंग मुझ पर चढ़ा हुआ है और मैं भी तेरा प्रेमी हूँ।

मिट्टी और पानी के घर में यह हृदय तेरे बिना मिटा जा रहा है। प्रियतम या तो तू इस घर में आ जा या मैं ही इस घर को त्याग कर पृथक हो जाऊँ।

बाँसुरी की शिकायत

सुनो बाँसुरी क्या कहती है। वह अपनी वियोगावस्था की शिकायत करती है।

वह कहती है, जब से मुझे जंगल से काट कर लाये हैं मेरे बीन स्त्री पुरुष सब दुहाई करते हैं।

जे लामकाँश व जोई निशाँ दहेद बमकानत।
चु दर मकाँश व जोई व लामकाँ बगुरेज़द॥
चु तीर मां बेरवद अज़ कमाँ चु मुर्ग़ गुमानत।
यक़ीं बेदाँ के यक़ींदार अज़ गुमाँ बगुरेज़द॥
अज़ ईनो आँ बगुरेज़म जे तर्स नै जे मलूली।
के आँ निगारे लतीफ़म अज़ीनो आँ बगुरेज़द॥
गुरेज़े पाये चु बादम जे इश्क़े गुल चु सबा अम।
गुले जे बीमे खिज़ाने जे बोस्तां बगुरेज़द॥
चुनाँ गुरेज़ादे नामश चु क़स्द गुफ़्तने बीनद।
कि गुफ़्त नीज़ न तावी कि आँ फ़लाँ बगुरेज़द॥
चुना गुरेज़द अज़ तु कि गर नवीसी नक़्शाश।
जे लौह नक़्श बपररद जे दिल निशाँ बगुरेज़द॥

(११)

सूरतगरे नक्काशम् हर लहज़ा बुते साज़म्।
बाँगाह हमा बुतहारा दर पेशे तू बुगज़ाज़म्॥

तू जब उसकी खोज में बनों में भटकता है तब वह घर में दिखलाई देता है और जब तू उसे पाने की आशा से घर में आता है तो वह बनों में भाग जाता है।

यदि तेरी कल्पना बहुत ऊँची उड़ान भरने वाली है तो वह भी उससे कम शीघ्र गामी नहीं है। विश्वास रख वह तुझसे इस प्रकार भागता है जिस प्रकार कल्पना से विश्वास भागता है।

मैं इस सम्पूर्ण संसार से ही भय खाकर दूर दूर भागता फिर रहा हूँ। यह नहीं कि घबड़ाकर शीघ्रगामी बाण के समान जा रहा हूँ। बात केवल यह है कि मेरा सुन्दर प्रियतम भी इस से दूर भागता फिरता है।

मैं वायु के समान भागता हूँ। उसी के समान सुमनों का प्राणयी हूँ (जैसे कि वह उनकी सुगन्ध को चुराकर नौ दो ग्यारह हो जाती है)। मैं एक फूल के समान हूँ जो पतझड़ ऋतु के डर से उपवन को छोड़कर भाग जाता है।

तू उसी के समान भागने वाले को देखकर कहता है कि तू इस प्रकार भागता है जैसे मेरा प्रियतम। परन्तु तू यह भी नहीं बतला सकता कि अमुक भाग रहा है।

वह तुझसे इस प्रकार भागता फिरता है कि यदि तू तख्ती पर उसकी तस्वीर उतारे तो वह भी वहाँ से उड़ जाय और हृदय से उसका निशान भी विलीन हो जाय।

(११)

मैं एक शिल्पी हूँ और मूर्त्तियाँ बनाया करता हूँ। फिर उन अपनी सारी कृतियों को तेरे सन्मुख पिघला डालता हूँ।

सद नक्श बर अंगेजम् वा रूह दरां मेजम्।
चूं नक्शे तुरा बीनम् दर आतिशश अंदाजम्॥
तू साकिए सुन्नारी या दुश्मने हुशियारी।
या आँ कि कुनी वीरांहर खाना किश्वर साजम्॥
जां रेख्ता शुद वा तू आमेख्ता शुद वा तू।
चूं बूए तु दारद जाँ जाँरा हला व नवाजम्॥
हर खूं के जमीं रोयद वा खाक तु मी गोयद।
वा महरे तू हम रंगम वा इश्के तू अन्बाजम्॥
दर खानए आबो गिल बे तुस्त खराब ईं दिल।
या खाना दर आ ऐ जाँ, या खाना व परदाजम्॥

शिकवए नै

बिश्नो अज नै चूं हिकायत मी कुनद।
अज जुदाईहा शिकायत मी कुनद॥
कज नेस्ताँ ता मरा बबुरीदाअन्द।
अज नफीरम मर्द जन नालीदाअन्द॥

सैकड़ों प्रतिमाएँ निर्माण करके उनमें प्राण डाल देता हूँ परन्तु तेरी प्रतिमा देखते ही उन सबों को अग्नि में डाल देता हूँ।

तू मदिरा बनाने वाला साक़ी है अथवा चतुरता का वैरी या और कुछ ? मैं जो घर अपने लिये बनाता हूँ तू उसको नष्ट कर देता है।

मेरा जीवात्मा तुझसे बना है। तुझसे परिचित है। और चूँकि इस प्राण में तेरी सुगन्ध है, अतएव इसको प्रतिष्ठा के साथ रखना मेरा कर्त्तव्य है।

पृथ्वी जिस पुष्प को उत्पन्न करती है वह तेरी राख से यही कहता है कि तेरे प्रेम का ही रंग मुझ पर चढ़ा हुआ है और मैं भी तेरा प्रेमी हूँ।

मिट्टी और पानी के घर में यह हृदय तेरे बिना मिटा जा रहा है। प्रियतम या तो तू इस घर में आ जा या मैं ही इस घर को त्याग कर पृथक हो जाऊँ।

बाँसुरी की शिकायत

सुनो बाँसुरी क्या कहती है। वह अपनी वियोगावस्था की शिकायत करती है।

वह कहती है, जब से मुझे जंगल से काट कर लाये हैं मेरे बीन से स्त्री पुरुष सब दुहाई करते हैं।

जे लामकाँश ब जोई निशाँ दहेद बमकानत।
चु दर मकाँश ब जोई ब लामकाँ बगुरेज़द॥
चु तीर मीं बेरवद अज़ कमाँ चु मुर्ग़े गुमानत।
यक़ीं बेदाँ के यक़ींदार अज़ गुमाँ बगुरेज़द॥
अज़ ईनो आँ बगुरेज़म जे तर्स नै जे मलूली।
के आँ निगारे लतीफ़म अजीनो आँ बगुरेज़द॥
गुरेज़े पाये चु बादम जे इश्क़े गुल चु सबा अम।
गुले जे बीमे खिज़ाने जे बोस्ताँ बगुरेज़द॥
चुनाँ गुरेज़दे नामश चु क़स्द गुफ़्तने बीनद।
कि गुफ़्त नीज़ न तावी कि आँ फ़लाँ बगुरेज़द॥
चुना गुरेज़द अज़ तु कि गर नवीसी नक़शश।
जे लौह नक़श बपररद जे दिल निशाँ बगुरेज़द॥

(११)

सूरतगरे नक़्क़ाशम् हर लहज़ा बुते साज़म।
वाँगाह हमा बुतहारा दर पेशे तू बुगज़ाज़म्॥

तू जब उसकी खोज में वनों में भटकता है तब वह घर में दिखलाई देता है और जब तू उसे पाने की आशा से घर में आता है तो वह वनों में भाग जाता है।

यदि तेरी कल्पना बहुत ऊँची उड़ान भरने वाली है तो वह भी उससे कम शीघ्र गामी नहीं है। विश्वास रख वह तुझसे इस प्रकार भागता है जिस प्रकार कल्पना से विश्वास भागता है।

मैं इस सम्पूर्ण संसार से ही भय खाकर दूर दूर भागता फिर रहा हूँ। यह नहीं कि चकराकर शीघ्रगामी बाण के समान जा रहा हूँ। बात केवल यह है कि मेरा सुन्दर प्रियतम भी इससे दूर भागता फिरता है।

मैं वायु के समान भागता हूँ। उसी के समान सुमनों का प्राणपी हूँ (जैसे कि वह उनकी सुगन्ध को चुराकर नौ दो ग्यारह हो जाती है)। मैं एक हिरण के समान हूँ जो पलकझपकते शत्रु के डर से उपवन को छोड़कर भाग जाता है।

तू उसी के समान भागने वाले को देखकर कहता है कि तू इस प्रकार भागता है जैसे मेरा प्रियतम। परन्तु तू यह भी नहीं बतला सकता कि अमुक भाग रहा है

यह तुझसे इस प्रकार भागता फिरता है कि यदि तू तख्ती पर उसकी तस्वीर उतारे तो वह भी वहाँ से उड़ जाय और हृदय से उसका निशान भी मिटाने दौड़ जाय

(१२)

मैं एक चित्रकार हूँ और सुन्दर बनावट करता हूँ। फिर मैं अपनी सारी कृतियों को देखकर सन्तुष्ट क्यों होता हूँ।

गर नक्शे बर अंगेजम् वा रुह् दरां नेजम।
चूं नक्शे तुरा बीनम् दर आतिशश अंदाजम॥
तू साकिए खम्मारी या दुश्मने हुशियारी।
या आँ कि कुनी बीरोंहर खाना किवर साजम्॥
जा रेखता शुद वा तू आमेखता शुद वा तू।
चूं बुए तु दारद जाँ जाँरा हला व नवाजम्॥
दर खुं के ऊमीं रोयद वा खाक तु मी गोयद।
या मंदरे तू इस रंगम वा इश्के तू अम्बाजम्॥
दर खानए आबो गिल बे तुस्त खराब ईं दिल।
या खाना दर आ ऐ जाँ, या खाना ब परदाजम्॥

शिकवए ने

बिश्नो अज नै चूं हिकायत मी कुनद।
अज जुदाईहा शिकायत मी कुनद॥
कज नेस्ताँ ता मरा बबुरीदाअन्द।
अज नफीरम मर्दे जन नालीदाअन्द॥

सैकड़ों प्रतिमाएँ निर्माण करके उनमें प्राण डाल देता हूँ परन्तु तेरी प्रतिमा देखते ही उन सबों को अग्नि में डाल देता हूँ।

तू मदिरा बनाने वाला साक़ी है अथवा चतुरता का वैरी या और कुछ ? मैं जो घर अपने लिये बनाता हूँ तू उसको नष्ट कर देता है।

मेरा जीवात्मा तुझसे बना है। तुझसे परिचित है। और चूँकि इस प्राण में तेरी सुगन्ध है, अतएव इसको प्रतिष्ठा के साथ रखना मेरा कर्त्तव्य है।

पृथ्वी जिस पुष्प को उत्पन्न करती है वह तेरी राख से यही कहता है कि तेरे प्रेम का ही रंग मुझ पर चढ़ा हुआ है और मैं भी तेरा प्रेमी हूँ।

मिट्टी और पानी के घर में यह हृदय तेरे बिना मिटा जा रहा है। प्रियतम या तो तू इस घर में आ जा या मैं ही इस घर को त्याग कर पृथक हो जाऊँ।

बाँसुरी की शिकायत

सुनो बाँसुरी क्या कहती है। वह अपनी वियोगावस्था की शिकायत करती है।

वह कहती है, जब से मुझे जंगल से काट कर लाये हैं मेरे बीन से स्त्री पुरुष सब दुहाई करते हैं।

सीना साहम शुर्हा शुर्हा अज फिराक।
ता बेगोयम दर्दे खेश इश्तियाक॥
हर कसे कू दूर मानद अज असले खेश।
बाज जोयद रोजगारे वस्ले खेश॥
मन मदर जामीगते नालां शुदम।
जुफ्ते बदहालां व खुशहालां शुदम॥
हर कसे अज जन्ने खुशखुद यारे मन।
अज दरूने मन नजुस्त असरारे मन॥
सिर्रे मन अज नालए मन दूर नेस्त।
लेके चश्मो गोश रा आँ नूर नेस्त॥
तन जे जानो जाँ जे तन मस्तूर नेस्त।
लेके कसरा दीदे जाँ दस्तूर नेस्त॥
आतिशस्त ईं बाँगे नायो नेस्त बाद।
हर के ईं आतिश नदारद नेस्त बाद॥
आतिशे इश्कस्त कंदर नै फिताद।
जोशिशे इश्कस्त कंदर मै फिताद॥

मेरा हृदय वियोग के शोक से विदीर्ण हो जाय तब मैं उसके टुकड़े दिखा कर अपने कष्टों को सुनाऊँ।

जो पुरुष अपने मूल तत्व से विलग हो जाता है उसको पुनः उससे मिलने की चिन्ता रहती है।

मैं प्रत्येक जलसे में अपना रुदन करती रही हूँ और अच्छे व बुरे पुरुषों से मेल भी रक्खा है।

और प्रत्येक पुरुष ने भिन्न भिन्न प्रकार से सहायता की है परन्तु मेरे आंतरिक भेद को किसी ने भी नहीं टटोला।

क्योंकि मेरा भेद मेरे रोने धोने से अलग नहीं है परन्तु आँख और कान में वह प्रकाश कहाँ जो उस भेद को जान सके।

प्रत्येक पुरुष को इस बात का ज्ञान है कि शरीर और प्राण दो वस्तु हैं परन्तु कोई भी प्राण नहीं देखता।

बाँसुरी का स्वर एक आग है हवा की फूंक नहीं है अगर किसी में यह भाग न हो तो वह मृत्यु को प्राप्त हो जाय।

बाँसुरी में जिस अग्नि का प्रकाश है वह प्रेमाग्नि है शराब में (सुरा) जो जोश है (उमङ्ग) वह प्रेम का जोश है।

नै हरीफ़े हर कि अज़ यारे बुरीद।
पर्दाहायश पर्दाहाये मा दरीद॥
हमचु नै ज़हे व तिर्याक़े कि दीद।
हमचु नै दमसाज़ व मुशताक़े कि दीद॥
नै हदीसे राह पुरख़ूँ मी कुनद।
क़िस्साहाये इश्क़े मजनूँ मी कुनद॥
दोदहाँ दारेम गोया हमचो नै।
यक दहाँ पिनहाँस्त दर लबहाए वै॥
यक दहाँ नालाँ शुदा सूए शुमा।
हाए हूए दर फ़िगन्दा दर समा॥
लेके दानद हर के ऊ रा मंज़रस्त।
कीं फ़ुग़ाने ईं सरी हमज़ाँ सर अस्त॥
दमदमा ईं नाए अज़ दमहाय ओस्त।
हाए हूए रूहे अज़ हैहाय ओस्त॥
महरमे ईं होश जुज़ बेहोश नेस्त।
मर ज़बाँ रा मुशतरी जुज़ गोश नेस्त॥

बाँसुरी उसकी सहायक है जिसका किसी मित्र से वियोग है।

उसके पर्दों ने हमारे पर्दे विदीर्ण कर दिये हैं, सत् को प्रकट कर दिया है। बाँसुरी की तरह विष और जहरमोरा (एक प्रकार का विष) दोनों का स्वाद किसने लिया है और उसके समान दिल बहलाने वाला और प्रेमी दोनों को किसने देखा है।

बाँसुरी एक शोक पूर्ण मार्ग की कहानी सुनाती है और प्रेम युक्त कहानियाँ मनुष्य को उन्मादी बना देती हैं (मजनूं के प्रेम की कहानी कहती है।)

हम भी बाँसुरी की तरह दो मुँह रखते हैं एक मुँह उसके ओष्ठों में लुप्त है।

एक मुँह हमारे सम्मुख रुदन कर रहा है और उसने सम्पूर्ण आकाश को हाय हाय के शोर से परिपूर्ण कर दिया है।

परन्तु जिसकी दृष्टि है वह भली प्रकार से जानता है कि इस सिरे की आवाज़ उस सिरे की आवाज़ है।

इस बाँसुरी का सुर उस दूसरे मुँह की फूंक से है और रूह (ज्ञान) का विलाप करना उसी के विलाप के कारण है।

इस चतुराई को केवल प्रेमोन्मादी ही जान सकता है, अन्य नहीं। जिह्वा का ग्राहक केवल कान है।

कूजा मी बीनी व लेकिन आँ शराब।
रूए ननुमायद बचश्मे ना सवाब॥
क़ासरातुत्तर्फ़ वाशद जौक़े जाँ।
जुज़ बखस्में खेश ननुमायद निशाँ॥
क़ासरातुत्तर्फ़ वाशद आँ मुदाम।
बीं हिजावे जर्फ़हा हमचू खयाम॥

सवाल करदन बाबत नमाज़

आँ यके पुर्सीद अज़ मुफ़्ती बराज़।
गर कसे गिर्यद बनौहा दर नमाज़॥
आँ नमाज़े ऊ अजब बातिल शवद।
या नमाज़श जायज़ो कामिल बुवद॥
गुफ़्त आबेदीदा नामश बहे चीस्त।
बिनगरी ता ऊ चे दीदस्तो गिरीस्त॥
आबे दीदा ता चे दीदा अस्त अज़ निहाँ।
ता बदाँ शुद ऊ ज़े चश्मेद खुद रवाँ॥

तुम लोग पात्र को देखते हो परन्तु वह सुरा तिरछी आँख में दिखाई नहीं देती।

नीची दृष्टि देखने वाली स्वर्ग की देवियाँ प्राणों का आनन्द प्राप्त करती हैं और वह केवल अपने ही आखेट पर दृष्टि रूपी बाण का प्रयोग करती हैं।

वह सुरा सदैव नीची दृष्टि रखने वाली है और प्यालों का आवरण तम्बू के समान है।

नमाज़ की बाबत सवाल करना

मुफ़्ती (फ़तवा देने वाला) से एक पुरुष ने चुपके से पूछा कि यदि कोई पुरुष नमाज़ में दहाड़ें मार २ कर रोये,

तो क्या वह नमाज़ उसकी भंग हो जायगी या पूर्ण होगी ?

फ़तवा देने वाले ने कहा कि अश्रुओं का नाम नेत्र जल है। अब तुम देखो कि उस पुरुष ने क्या देखा जिसके कारण वह रो पड़ा।

नेत्र के जल को अन्दर (भीतर) से क्या देख पड़ा जिसके कारण वह नेत्रपट से प्रकट हो प्रवाहित हुआ।

गर नबूद मन ज आदम आदा आम।
मन बमानी बरे जद इफ्तादा अम॥
पस ज मन आइदा हर मानी पिदर।
पस ज मेवा जाद हर मानी शजर॥

मरतबात रहे सादिक़

हर सिफ़ते बन्दए ओ करी खुद।
जुम्ला मस्तीरा बुवद वर ओ हसद॥
देव मीदानद मए गुलगूँ नई।
तर्क कुन गुलगूना, तू गुलगूनई॥
जौहरस्त ईसाँ व नर्दे ऊ रा अर्ज़।
जुमला फ़र्श ओ सायन्दो तू मर्ज़॥
इल्म जोई अज़ कुजा बहरए फ़रोश।
जौक़ जोई तू ज़े दल बहरए सरोश॥
ए गुलामत अक़्लो तदबीरातो होश।
तू चराई खेश रा अरज़ाँ फ़रोश॥

प्रत्यक्ष में तो मैं मनुष्य से उत्पन्न हुआ हूँ परन्तु मैं वास्तव में दादा का दादा हूँ अर्थात् आदम से भी पूर्वज हूँ।

और वास्तविकता का विश्वास रखते हुए बाप मेरी संतान है और उसी के अनुसार वृक्ष मेवे से उत्पन्न होता है।

सत्य का रास्ता

प्रत्येक सुरा उसी भाव और सूरत का दास है। तमाम मतवालों को तुझ पर ईर्षा है।

तू कुछ भी गुलाबी सुरा का आश्रित नहीं है। गुलाबी पाउडर का प्रयोग त्याग दे तू स्वयं गुलाबी पाउडर है।

मनुष्य जौहरी है और आकाश उसकी चौड़ाई है। वास्तविक वस्तु तू है और अन्य सब वस्तुयें डाली और परछाईं के समान हैं।

तू व्यर्थ पुस्तकों से विद्या ढूँढ़ता है अर्थात् छिलकों के हलवे में आनन्द ढूँढ़ता है।

बुद्धि, उपाय और ज्ञान यह सब तेरे दास हैं फिर तू स्वयं को इतने सस्ते मूल्य में क्यों बेचता है।

[illegible] तुमरा हमी सुकूनज ।
जौहरे तू इल्म बाशद बा अरज ॥
बल हम्मे बर नमे पिनहाँ खुदा ।
दर मे नज मन आलमे पिनहाँ खुदा ॥

एक हिकायत

शौदके दर पेशे नाबूने पिदर ।
आर मी नालीदो बर मी कोन सर ॥
कै पिदर आखिर कुजायत मी बरन्द ।
ता मुरा दर गोर नामे बकशरन्द ॥
मी बरन्दत नानए नंगो जहीर ।
ने दरो आली व ने दर वै हसीर ॥
ने चिरागे दर शबो व ने रोजे नान ।
ने दरीं वक्त तआमो ने निशान ॥
ने दरे भामूर ने दर बाम राह ।
ने यके हमसाया कू बाशद पनाह ॥

सम्पूर्ण उपस्थित वस्तुओं की सेवा करना तेरा धर्म है। तू जौहरी होकर "अर्ज" के सामने क्यों सर झुकाता है।

तू विद्या रूपी सागर है जो कि एक बूँद में व्याप्त है और एक तीन हाथ के शरीर में सम्पूर्ण संसार छिपा हुआ है।

एक कहानी

एक बच्चा पिता के मृतक शरीर के समीप फूट फूट कर रुदन करता हुआ सर पीटता था।

और पूछता था पिता जी को कहाँ लिये जाते हो ? फिर कहता था ऐं पिता तुमको मिट्टी के नीचे गाड़ आवेंगे।

एक कम चौड़े और अँधेरे घर में तुमको डाल देंगे, न उसमें क़ालीन है न चटाई।

न रात्रि के समय प्रकाश है और न दिन में भोजन, वहाँ भोजन का लेशमात्र तक नहीं है।

न उस घर का कोई खुला हुआ पट है और न उसकी छत पर जाने का मार्ग। न कोई पड़ोसी है कि जिससे सहारा मिले।

गर वसूरत मन जे आदम जादा अम।
मन वमानी जदे जद उफ़ादा अम॥
पस जे मन जाईदा दर माना पिदर।
पस जे मेवा जाद दर माना शजर॥

मरतबात राहे सादिक़

हर शरावे वन्दए आँ क़दो खद।
जुम्ला मस्ताँरा बुवद वर तो हसद॥
हेच मोहताजे मए गुलगूँ नई।
तर्क कुन गुलगूना, तू गुलगूनई॥
जौहरस्त इंसाँ व चर्ख ऊ रा अर्ज़।
जुमला फ़र्रा व सायन्दो तू गर्ज़॥
इल्म जोई अज़ कुतुबहाए फ़सोस।
औक़ जोई तू जे हलवाए सबोस॥
ए गुलामत अक़्लो तदबीरातो होश।
तू चराई खेश रा अरज़ाँ फ़रोश॥

प्रत्यक्ष में तो मैं मनुष्य से उत्पन्न हुआ हूँ परन्तु मैं वास्तव में दादा का दादा हूँ अर्थात् आदम से भी पूर्वज हूँ।

और वास्तविकता का विश्वास रखते हुए बाप मेरी संतान है और उसी के अनुसार वृक्ष मेवे से उत्पन्न होता है।

सत्य का रास्ता

प्रत्येक सुरा उसी भाव और सूरत का दास है। तमाम मतवालों को तुझ पर ईर्षा है।

तू कुछ भी गुलाबी सुरा का आश्रित नहीं है। गुलाबी पाउडर का प्रयोग त्याग दे तू स्वयं गुलाबी पाउडर है।

मनुष्य जौहरी है और आकाश उसकी चौड़ाई है। वास्तविक वस्तु तू है और अन्य सब वस्तुयें डाली और परछाईं के समान हैं।

तू व्यर्थ पुस्तकों से विद्या ढूँढ़ता है अर्थात छिलकों के हलवे में आनन्द ढूँढ़ता है।

बुद्धि, उपाय और ज्ञान यह सब तेरे दास हैं फिर तू स्वयं को इतने सस्ते मूल्य में क्यों बेचता है।

ईरान के सूफ़ी कवि

ख़िदमते बर जुमला हस्ती मुफ़रज़ ।
जौहरे चूँ इज्ज दारद या अरज ॥
बह इल्मे वर नमे पिनहाँ शुदा ।
दर से गज तन आलमे पिनहाँ शुदा ॥

एक हिकायत

कौदके दर पेशे ताबूते पिदर ।
जार मी नालीदो बर मी कोबत सर ॥
के पिदर आखिर कुजायत मी बरन्द ।
ता तुरा दर जेर खाके बकशरन्द ॥
मी बरन्दत खानए तंगो जहीर ।
नै दरो क़ाली व नै दर वै हसीर ॥
नै चिराग़े दर शबो व नै रोजे नान ।
नै दराँ बूए तआमो नै निशान ॥
नै दरे मामूर नै दर बान राह ।
नै यके हमसाया कू दाशद पनाह ॥

सम्पूर्ण उपस्थित वस्तुओं की सेवा करना तेरा धर्म है। तू जौहरी होकर "अर्ज" के सामने क्यों सर झुकाता है।

तू विद्या रूपी सागर है जो कि एक बूँद में व्याप्त है और एक तीन हाथ के शरीर में सम्पूर्ण संसार छिपा हुआ है।

एक कहानी

एक बच्चा पिता के मृतक शरीर के समक्ष खड़ा होकर रुदन करता हुआ सर पीटता था

और पूछता था पिता जी कहाँ जा रहे हो ? फिर कहता था ऐ पिता तुमको मिट्टी में न दे न जाएगा

एक कम चौड़े और छोटे घर में तुमको डाल देंगे, न उसमें कालीन है न चटाई।

न रात्रि के समय वहाँ दीपक है और न दिन में भोजन, वहाँ भोजन का लेशमात्र तक नहीं है

न उस घर का कोई पड़ोसी है और न उनको छत पर जाने का मार्ग। न कोई [illegible] उसमें सहारा मिले।

उंचे ऊ नौशीदा गुद अज तल्खी दुई।
ऊ नतकसीलश रकागक मी शमुद॥
नज बराये मिन्नते बल मी नमूद।
बर दुरस्तीए मोहब्बत सद शहूद॥
आकिलाँ रा यक इशारत बस बुवद।
आशिकाँ रा तिश्नगी जाँ के रवद॥
सद सखुन मी गुफ़ जाँ दर्द कुदन।
दर शिकायत के न गुफ्तम यक सखुन॥
आतिशे बूदस्त नमीदानिस्त चीस्त।
लेके चूँ शमा अज तके ऊ मी गिरीस्त॥
बादे गिर्या गुफ़ ईं हा रफ़ लेक।
ईं जमाँ दरयाद कुन तू यार नेक॥
हरचे फ़रमाई बजाँ इस्तादाअम्।
बर रवे तो पा व सर बनिहादा अम्॥
गर दर आतिश रफ़ बायद चूँ खलील।
वर चू येहिया मीकुनी खूनम सबील॥

तात्पर्य यह कि उस प्रेमी ने जो जो कठिनाइयाँ सहन की थीं उनको बार बार सुना रहा था।

परन्तु इससे वह प्रेमिका पर किसी प्रकार का कृतज्ञता का भार नहीं प्रकट करता था बल्कि अपना प्रेम सच्चा होने पर सहस्रों त्तेपक दे रहा था।

यह तो बुद्धिमानों के लिये है कि उन्हें एक संकेत से ही तुष्टि हो जाती है परन्तु मदमस्त प्रेमियों की पिपासाग्नि इससे कब शान्त होती है।

वह अपने भूतकाल के कष्टों को सहस्रों बातें कह रहा था पर अभी उसको शिकायत थी कि मैंने कुछ भी नहीं किया।

उसके हृदय में अग्नि भभक रही थी परन्तु उसको यह पता न था कि क्या है; इस पर भी उसको उष्णता से मोम सम घुल रहा था।

रुदन करने के पश्चात् कहा कि सब बातें तो सम्पूर्ण हो चुकीं अब आप यह कहिये कि क्या आज्ञा है, मैं उसको पूर्ण करने के लिये जी जान से प्रस्तुत हूँ।

जो आज्ञा हो उसको हार्दिक भाव से पूर्ण करूँगा। मैं सर से पैर तक अर्थात् पूर्णतया आपका दास हूँ।

यदि "खलीलअल्लाह" की तरह अग्नि में प्रवेश करने की आज्ञा हो या "यूहा" पैग़म्बर के समान मेरा रुधिर बहा दीजिये,

वर जे गिर्या चूँ शोएब आमाँ शवम।
वर चू यूनस दर फ़मे माही रवम॥
वर चू यूसुफ़ चाहो जिन्दानम कुनी।
रुख न गरदानम नगरदम अज तो मन।
वहे फ़रमाँ तो दारम जानो तन॥
गुफ़ माशूक ईं हमा कर्दी वलेक।
गोश वकुशा पेहनो अन्दरयाव नेक॥
काँचे असल असले इक्कात व विलास्त।
आँ न कर्दी उंचे कर्दी फ़रआहस्त॥
गुफ़श आँ आशिक़ वगो काँ अस्ल चीस्त।
गुफ़ अस्लश मरदनस्तो नीस्तीस्त॥
तू हमा करदी न मुरदी जिन्दई।
हीं बेमीर अर यारे जाँ बाजिन्दई॥
गर बेमीरी जिन्दगी यायी तमाम।
नामे नीकूए तू मानद ता क़याम॥
चूँ शनूद आँ आशिक़े बे खेशतन।
आहे सर्दे वरकशीद अज जानो तन॥

"शोयब" पैग़म्बर के समान मैं अंधा होजाऊँ या "यूनिस" पैग़म्बर की तरह मछली (मत्स) के मुंह में प्रवेश कर जाऊँ।

और या "यूसुफ़" की तरह मुझे कारागृह में डाल दे या "ईसा" के समान मुझे फ़क़ीर बना दे।

मैं कभी मुंह न फेरूंगा और तेरी आज्ञा से कभी मुख न मोड़ूँगा। मेरा यह शरीर और प्राण दोनों तेरी आज्ञा को पूरी करने के लिये प्रति समय तत्पर हैं।

प्रेमिका ने उत्तर दिया कि अभिमान आपने सब किया परन्तु अब कान खोलकर ध्यानपूर्वक श्रवण करो।

कि प्रेम और प्यार का जो वास्तविक मूल है तुमने उसका कहीं पता

और यह तो सब आडम्बर है

प्रेमी ने पूछा तो फिर उसका वास्तविक मूल क्या है [illegible]

उत्तर दिया कि वह वास्तविक मूल [illegible]

तुमने करने को सब कुछ किया परन्तु मन में [illegible]

यदि तुम सच्चे प्रेमी हो तो अभी मर जाओ

तुम मर जाओगे तो तुम्हारा [illegible]

प्रलय पर्यन्त तुम्हारा यश रहेगा

अभिमान रहित प्रेमी ने अब [illegible]

हमदरीं दम शुद दराज़ो जाँ बेदाद।
हमचो गुल दर बाग़ सर ख़न्दानो शाद॥
मानद आँ ख़न्दा बरो बक़्के अबद।
हमचो जानो अक़्ले आरिफ़ बेकबद॥
अरजई बेशुनीद नूरे आफ़ताब।
सूए अस्ले खेश बाज़ आमद शताब॥
नूर दीदा सूए दीदा बाज़ गश्त।
मानँद दर सौदाए ऊ सहरा व दश्त॥

सिलसिलाए शहवत

ख़ल्क़ देवानन्दो शहवत सिलसिला।
मेकशद शाँ सूए दुक्कानो ग़ला॥
हस्त ईं जँजीर अज़ ख़ौफ़ो बला।
तू मबीं ईं ख़ल्क़ रा बे सिलसिला॥
मी कशानद शाँ सूए किश्तो शिकार।
मी कशद शाँ सूए काहाँ व बिहार॥
मी कशानद शाँ बसूए नेको बद।
गुफ़्त हक़ की जोदेहा हबलुम मसद॥

और उसी समय लम्बा लम्बा लेट गया और मृत्यु को प्राप्त हो गया।

फूल के समान हँसते खेलते मुरझा गया अर्थात् नष्ट हो गया।

और बड़ी हँसी उसके ऊपर सदैव उपस्थित रही, हृदय रहित ईश्वर की जान और बुद्धि की तरह।

सूर्य के प्रकाश ने "लौट आ" की आज्ञा सुनी और तुरन्त अपने वास्तविक स्थान को चली गई।

आँखों का प्रकाश पुनः आँखों में आगया और मैदान और जंगल उसके पश्चात् अँधेरे में ही रह गये।

अभिलाषाएं

लोग सब देव हैं और इन्द्रिय लोलुपता एक बंधन है जो उनको इच्छा के कारणों की ओर खींच ले जाता है।

यह बंधन भय व आनन्द युक्त है। तू यह विचार न कर कि यह लोग क़ानून रहित हैं।

यही अभिलाषा का बंधन उनको खेती करने, आखेट करने, खानों को खोदने और नदियों में जाने की ओर खींच ले जाता है।

यह उनको शुभ और अशुभ सब की ओर आकर्षित करता है। ईश्वर ने कह दिया है कि उसके गले में एक घास की बटी हुई रस्सी है।

इश्क़े इलाही

हरचे रोईद अज़ पए मोहताज रुस्त।
ता बयाबद तालिबे चीज़े कि जुस्त॥
हक़ तआला कीं सनाबत आफ़रीद।
अज़ बराए रफ़ए हाजात आफ़रीद॥
हरकि जोया शुद बयाबद आँचनत।
मायए दर्दस्त अत्ले मरहमत॥
हर कुजा दरदे दवा आँजा रवद।
हर कुजा फ़क़रे नवा आँजा रवद॥
हर कुजा मुशकिल जवाब आँजा रवद।
हर कुजा पस्तीस्त आब आँजा रवद॥
ज़रए जाँरा किश जवाहिर मुज़मरस्त।
अब्रे रहमत पुर ज़े आबे कौसरस्त॥

बरफ़े इश्क़

आशिक़ाँ रा हर नफ़स सोज़ीद नीस्त।
बर देहे बीराँ खिराजो उश्र नीस्त॥

ईश्वरीय प्रेम

जो कुछ उत्पन्न हुआ है वह दरिद्र ही के लिये उत्पन्न हुआ है ताकि याचने वाले को जिस वस्तु की इच्छा हो प्राप्त हो सके।

ईश्वर ने इन वस्तुओं को उत्पन्न किया तो लोगों की आवश्यकतायें पूर्ण करने के लिये उत्पन्न किया।

जो पुरुष ढूंढ़ता है अंत में प्राप्त करता है अनुग्रह का वास्तविक मूल कष्ट सहन करने के कारण है।

जहाँ कोई बीमारी प्रकट होती है वहाँ औषधि पहुँच जाती हैं। जिस स्थान पर दरिद्रता होती है उस जगह सामान पहुँच जाता है।

जहाँ किसी कठिनता का सामना होता है वहीं उसके पूर्ण होने का आसान (सरल) रूप भी उत्पन्न हो जाता है और जहाँ अधिक निचाई होती है वहाँ पानी पहुँचता है।

जान (प्राण) रूपी क्षेत्र के लिये जिसमें जवाहरात गुप्त हैं कृपा रूपी बादल (मेघ) को दया रूपी मेंह से परिपूर्ण है।

प्रेम की ख़ूबियाँ

प्रेमी लोग प्रतिक्षण अग्नि में जला करते हैं। उजाड़ गावों पर लगान नहीं लगता।

रा शहीदाँ रा ज़े जान औला तर अस्त।
ईं बला आज सद बलाय औला तरस्त॥
दर दरूने कार्या रसे किस्सा नीस्त।
ज़े ग़म आशिक़ रा बा बाला नीस्त॥
इश्क़े इश्क़ज़ दमा दीदा कुशास्त।
आशिक़ाँ रा मज़हबो मिल्लत ख़ुदास्त॥

आँके आशिक़ दर ग़मे नादस्त मस्त।
लाजरम् अज़ कुफ्रो ईमाँ बरतरस्त॥
कुफ्रो ईमाँ दर दो ख़ुद दरबाने ऊस्त।
कुस्त मरदो कुफ्रो दीं ऊ रा दो पोस्त॥
कुफ्र किश्ते ख़ुश्क रू बर ताफ्ता।
बाज़ ईमाँ किश्ते लज़्ज़त याफ्ता॥
किश्ताए ख़ुश्क रा जा आतिशस्त।
किश्ताए पैवस्ता मरजे जाँ ख़ुशस्त॥
मरजे ख़ुदज़ मर्तबा ख़ुश बरतरस्त।
बरतरस्त अज़ ख़ुद कि लज़्ज़त गुस्तरस्त॥

शहीदों के लिये रक्त जल से श्रेष्ठतर है; उनकी यह त्रुटि शत नेकियों से बढ़कर है।

कुटुम्ब के अन्दर बड़े बूढ़े का कोई क़ायदा नहीं है। यदि डुबकी लगाने वालों के पास तूंबरा नहीं है तो क्या चिंता है।

प्रेम का रोग समस्त मतों से निराला है। प्रेमियों का धर्म और मत ईश्वर है।

चूँकि प्रेमी नक़द माल में मतवाला है इस कारण अकृतज्ञता और धर्म दोनों से छुटकारा पागया।

नास्तिकता और धर्म दोनों उसी नक़द के ड्योढ़ीवान हैं क्योंकि वास्तविक गूदा (वस्तु) वही नक़द है और नास्तिकता और मत उसके दो छिलके हैं।

नास्तिकता शुष्क छिलका है जो ऊपर से विलग होगया तो उसके नीचे धर्म नर्म और स्वादिष्ट छिलका पाया गया।

शुष्क छिलकों का स्थान अग्नि है और गूदे से मिले हुये छिलके दिव को पसन्द है।

और गूदा उस छिलके के स्वाद से अवश्य बढ़कर है उसमें स्वयं श्रेष्ठगुण है क्योंकि वही स्वाद देने वाला है।

ख़ू शहीदाँ रा ज़े आब औला तर अस्त।
ईं ख़ता अज़ सद सवाब औला तरस्त॥
दर दरूने कावा रस्मे क़िब्ला नीस्त।
चे ग़म अरबाबास रा वा चपला नीस्त॥
इल्लते इश्क़ज़ हमा दीहा जुदास्त।
आशिक़ाँ रा मज़हबो मिल्लत ख़ुदास्त॥

ज़ांके आशिक़ दर दमे नक़दस्त मस्त।
लाजरम् अज़ कुफ़्रो ईमाँ वरतरस्त॥
कुफ़्रो ईमाँ हर दो ख़ुद दरवाने ऊस्त।
कूस्त मरज़ो कुफ़्रो दीं ऊ रा दो पोस्त॥
कुफ़्र क़िश्रे ख़ुश्क रू वर ताफ़्ता।
वाज़ ईमाँ क़िश्रे लज़्ज़त याफ़्ता॥
क़िश्रहाए ख़ुश्क रा जा आतिशस्त।
क़िश्रहाए पैवस्ता मग़्ज़े जाँ ख़ुशस्त॥
मग़्ज़े ख़ुदज़ मर्तवा ख़ुश वरतरस्त।
वरतरस्त अज़ ख़ुद कि लज़्ज़त गुस्तरस्त॥

शहीदों के लिये रक्त जल से श्रेष्ठतर है; उनकी यह त्रुटि शत नेकियों से बढ़कर है।

कुटुम्ब के अन्दर बड़े बूढ़े का कोई क़ायदा नहीं है। यदि डुबकी लगाने वालों के पास तूंबरा नहीं है तो क्या चिंता है।

प्रेम का रोग समस्त मतों से निराला है। प्रेमियों का धर्म और मत ईश्वर है।

चूँकि प्रेमी नक़द माल में मतवाला है इस कारण अकृतज्ञता और धर्म दोनों से छुटकारा पागया।

नास्तिकता और धर्म दोनों उसी नक़द के ड्योढ़ीवान हैं क्योंकि वास्तविक गूदा (वस्तु) वही नक़द है और नास्तिकता और मत उसके दो छिलके हैं।

नास्तिकता शुष्क छिलका है जो ऊपर से विलग होगया तो उसके नीचे धर्म नर्म और स्वादिष्ट छिलका पाया गया।

शुष्क छिलकों का स्थान अग्नि है और गूदे से मिले हुये छिलके दिव को पसन्द है।

और गूदा उस छिलके के स्वाद से अवश्य बढ़कर है उसमें स्वयं श्रेष्ठगुण है क्योंकि वही स्वाद देने वाला है।

शेख़ सादी

(जन्म ११८४ ई० : मृत्यु १२९१ ई०)

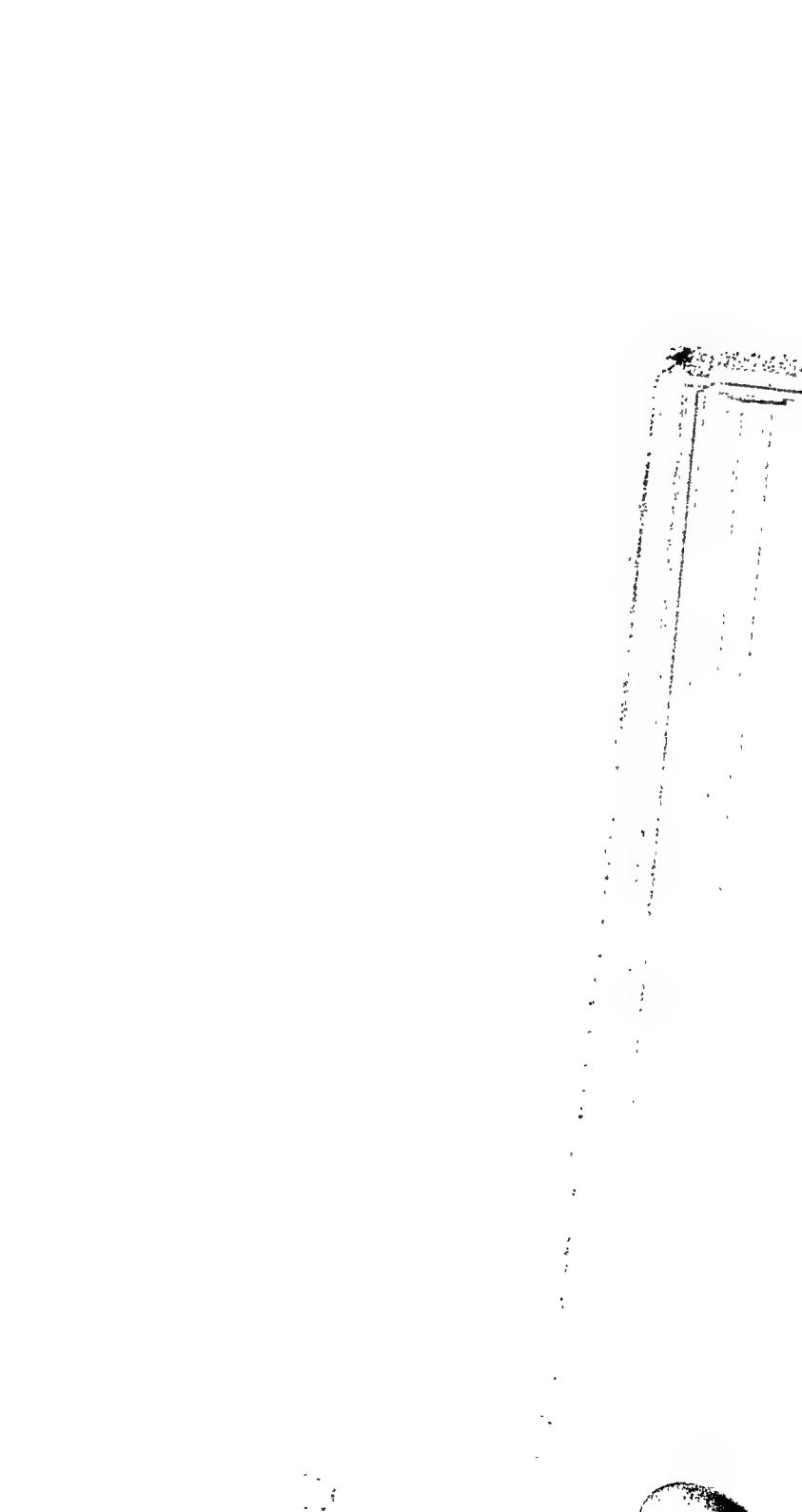

सादी

(ब्रिटिश म्यूज़ियम में सुरक्षित एक प्राचीन चित्र से)

इनका पूरा नाम था मश्रफ़उद्दीन बिन मसीहउद्दीन अबदुल्ला। इनका जन्म शीराज़ में सन् ११८४ ई० में हुआ था और शरीरान्त सन् १२९१ ई० में। इन्होंने रहस्यवाद पर अधिक न लिखकर धर्म्म सम्बन्धी विषयों पर अपनी क़लम चलाई थी। इनकी रचनाएँ भी कर्त्तव्याकर्त्तव्य से ही सम्बन्ध रखती हैं।

इन्होंने भी कई एक स्थानों तथा देशों में भ्रमण किया था, जिनमें से अरब, अबसीनियाँ, सीरिया, दमिश्क, उत्तरी अफ्रीका, एशिया माइनर, जेरूसलम और भारतवर्ष के नाम विशेषकर उल्लेखनीय हैं। सिन्ध प्रान्त में, इन्हें कई एक ऊँचे दर्जे के सूफ़ी मिले थे। बग़दाद में इनकी भेंट सूफ़ी शेख़ शहाबुद्दीन से हुई थी। इन्होंने बहुत कुछ लिखा है, परन्तु इनकी ख्याति गुलिस्ताँ तथा बोस्ताँ से अधिक है। गुलिस्ताँ में इन्होंने धार्मिक सिद्धान्तों का वर्णन करके अपने अनुभवों को दर्शाया है। बोस्तां में (जिसमें के कई एक पद मैंने इस पुस्तक में उद्धृत किये है) ईश्वरवाद की झलक है, जिससे यह प्रकट होता है कि वह रहस्यवादी थे और आध्यात्मिक विद्या से भी कुछ जानकारी रखते थे। भाषा की सरलता से इनको कविता में एक अनोखापन आ जाता है। इन्होंने कई विषयों पर कविताएँ लिखी हैं जो कि बहुत ही सुन्दर हैं और जिनके कारण उनका स्थान कवियों में ऊँचा हो गया है। सादी ने कविता लिखना वृद्धावस्था में आरम्भ किया था। उन्होंने कई बार अपने समय के राजाओं के यहाँ राजकवि के रूप में रहने का प्रयत्न किया। परन्तु स्वीकार नहीं हुआ।

इनके विचार बहुत ही पवित्र थे। इन्होंने कई एक नवीन विषयों पर लिखने का प्रयत्न किया था, जिनमें से शृङ्गार रस तथा भारतीय ढंग पर कविता लिखना भी थे। ग़ज़ल लिखने में वह हाफ़ीज़ से कुछ ही कम होंगे। ब्राउन ने उनके विषय में लिखा है, "इनकी रचनाओं में पूर्वीय झलक पूर्णतयः वर्त्तमान है। सुन्दर से सुन्दर और रद्दी से रद्दी रचनाओं में भी यही बात जाती है। और फिर यह बात भी साधारण नहीं है कि जहाँ कहीं भी फ़ारसी भाषा का अध्ययन किया जाता है, पढ़ने वाले के हाथ में पहले इनकी ही पुस्तक आती है। यह बात लगभग डेढ़ सौ वर्ष से चली आ रही हैं।"

(लि० हि० भ्र० पर० जिल्द २ पृ० ५३२)

प्रमुख रचनाएँ:—

गुलिस्ताँ।
बोस्ताँ।
दीवान।
अख़लाक़ी नासीन।
चिजी सेखानी।

मलामत कशानन्द मस्ताने यार।
सबुकतर बरद उश्तुरे मस्त बार॥
बसर बर्के शाँ खल्क के रह बरन्द।
कि चूँ आबे हैवाँ बजुल्मत दरन्द॥
चू बैतुलमुकद्दस बर्रूं पुर्ज ताब।
रिहा करदा दीवारे बरूं खराब॥
चु परवाना आतश बखुद दर जनन्द।
न चूं किम पीला बखुद दर तनन्द॥
दिलाराम दरबर दिलाराम जूय।
जनाब तिश्नगी खुश्क बर तर्क जूय॥
नगोयम कि बर आब कादिर नयन्द।
कि बर माहिये नील मुसतसकी अन्द॥

गुफ्तार अन्दर राबूत इश्के हकीकी बदलीले मजाजी।

बुवा इश्क दामन खुदे जाबो दिल।
कमायद दुरो रावो आरामे दिल॥

बवेदारेयश फ़िना बर खत्तो खाल।
बखाबन्दरश पाए बन्दे खयाल॥
बसिदक़श चुनाँ सर नेही बर क़दम।
कि बीनी जहां बावजूदश अदम॥
चो दर चश्मे शाहिद नुआयद ज़रत।
ज़रो ख़ाक यकसां नुमायद बरत॥
दिगर वा कसत दर न आयद नक़स।
कि वा ऊ नमानद दिगर जाए कस॥
तू गोई बचश्म अन्दरश मंज़िलस्त।
बगर चश्म बरहम निही दर दिलस्त॥
न अन्देशा अज़ कस कि रुसवा शवी।
न क़ूवत कि यकदम शिकेबा शवी॥
गरत जां बेखाहद बकफ़ बर निही।
बरत तेग़ बर सर नेहद सर निही॥
चु इश्क़े कि बुनियादे ऊ बर हवास्त।
चुनी फ़िना अंगेज़ो फ़रमां रवास्त॥

जब तक जागते हैं, उसके कपोलों और मुख पर के तिल का ध्यान बँधा रहता है और सोते हुए भी उसी के स्वप्न दिखलाई देते हैं।

तुझको उसके चरणों पर अपना सिर इस प्रकार रख देना उचित है कि इस संसार का होना भी न होने के समान जँचे।

जब तेरी प्रियतमा तेरी स्वर्ण मुद्राओं की तरफ़ आँख उठाकर देखती भी नहीं है तब तू सोने और मिट्टी को समान रूप से देख।

फिर किसी दूसरे की तरफ़ तेरा हृदय आकर्षित न हो और उसके स्थान पर किसी दूसरे का वास न हो।

उसके प्रणय में इस प्रकार रँग जा कि वह तेरी आंख में ही सर्वदा विद्यमान् रहे और आँख नींद लेने पर हृदय में दिखलाई दे।

तू सदैव उसके लिये व्यग्र रह और कभी भी उसके विरह की चिन्ता न कर। कारण कि जब वह सर्वदा तुझी में है तब तुझसे पृथक किस प्रकार हो सकता है! उसके प्रेम में अपने को मतवाला बना डाल।

यदि वह तेरे प्राण चाहता है तो हथेली पर रखकर उसके सामने कर दे। यदि वह तलवार तेरी गर्दन पर रखता है तो अपना सिर ही उसे दे डाल।

जब वासनाओं से परिपूर्ण प्रेम में प्रणयी की यह अवस्था हो जाती है तो उन प्रेमियों पर क्यों आश्चर्य होता है, जो ईश्वर से मिलने के लिये मतवाले हो रहे हैं।

मलामत कशानन्द मस्ताने यार।
सबुकतर बरद उश्तुरे मस्त बार॥
बसर बर्दे शाँ खल्क के यद बरन्द।
कि चूँ आबे हैवाँ ज़ुलमात दरन्द॥
चू बैतुलमुक़द्दस दिलश पुर ज़िया।
रिहा कर्दा दीवारे तन सर ब सर॥
चु परवाना आतश बजुद दर ज़नन्द।
न चूँ किर्म पीला बखुद दर तनन्द॥
दिलाराम दरबर दिलाराम जूयाँ।
लबश तिश्नगी खुश्क बर नहर जूयाँ॥
नगोयम कि बर आब क़ादिर नयन्द।
कि बर साहिले नील मुश्तसक़ी अन्द॥

गुफ़्तार अन्दर सबूत इश्क़े हक़ीक़ी बतरीक़े मजाज़ी।

तुरा इश्क़ हमचूँ खुदे आबी गिल।
रुबायद हमे सब्रो आरामे दिल॥

हम उसके प्रणयी हैं जो सहन शील है और मतवाले ऊँट के समान शीघ्र अपनी लादी ले जाते हैं।

संसार को उनकी ओर आकर्षित होने से क्या प्राप्त होगा जब कि अमृत के समान वह अन्धकार में छिपे हुए हैं।

बेतुलमुक़द्दस के समान उनका हृदय प्रकाश से परिपूर्ण हो रहा है। उन्होंने इस ढांचे को दुरावस्था में छोड़ रक्खा है। शरीर की तनिक भी चिन्ता नहीं है।

पतंगे के समान प्रणय की अग्नि में अपने आप को जला रहे हैं। जिस प्रकार रेशम का कीड़ा अपने ही ऊपर ताना-बाना तान देता है, उसी प्रकार उन्होंने भी अपने को भुला रक्खा है।

उनका प्यारा गोद में है, परन्तु उसी की खोज में व्यस्त हैं। सामने पानी से भरा हुआ तालाब है परन्तु ओंठ वहाँ तक पहुँचना नहीं चाहते।

यह नहीं कि वह जान बूझ कर ऐसा कर रहे हैं। परन्तु उन्हें प्यास का रोग है। नील नदी के तट पर बैठे हुए हैं परन्तु ओंठ अब भी सूख रहे हैं।

सांसारिक प्रेम के उदाहरण देकर, सच्ची लगन का वर्णन

जल और मिट्टी के संयोग से बने हुए, अपने ही समान मनुष्य का प्रेम व्याकुल कर देता है। जीवन की शान्ति और आनन्द दोनों विलुप्त हो जाते हैं।

वबेदारेयश फ़ित्ना बर खत्तो खाल।
वख़ाबन्दरश पाए बन्दे ख़याल॥
वसिद्क़श चुनाँ सर नेही बर क़दम।
कि बीनी जहां बावजूदश अदम॥
चो दर चश्मे शाहिद नुआयद ज़रत।
ज़रो ख़ाक यकसां नुमायद बरत॥
दिगर बा कसत दर न आयद नफ़स।
कि बा ऊ नमानद दिगर जाए कस॥
तू गोई बचश्म अन्दरश मंज़िलस्त।
वगर चश्म बरहम निही दर दिलस्त॥
न अन्देशा अज़ कस कि रुसवा शवी।
न क़ूवत कि यकदम शिकेबा शवी॥
गरत जां बेख़ाहद बकफ़ बर निही।
वरत तेग़ बर सर नेहद सर निही॥
चु इश्क़े कि बुनियादे ऊ बर हवास्त।
चुनीं फ़ित्ना अंगेज़ो फ़रमां रवास्त॥

जब तक जागते हैं, उसके कपोलों और मुख पर के तिल का ध्यान बँधा रहता है और सोते हुए भी उसी के स्वप्न दिखलाई देते हैं।

तुमको उसके चरणों पर अपना सिर इस प्रकार रख देना उचित है कि इस संसार का होना भी न होने के समान जँचे।

जब तेरी प्रियतमा तेरी स्वर्ण मुद्राओं की तरफ़ आँख उठाकर देखती भी नहीं है तब तू सोने और मिट्टी को समान रूप से देख।

फिर किसी दूसरे की तरफ़ तेरा हृदय आकर्षित न हो और उसके स्थान पर किसी दूसरे का वास न हो।

उसके प्रणय में इस प्रकार [illegible] कि वह तेरी आंख में ही सर्वदा विद्यमान रहे और आंख मूंद लेने पर हृदय में दिखलाई दे।

तू सदैव उसके [illegible] स्वप्न देख और कभी भी उसके विरह की चिन्ता न कर, कारण कि [illegible] उससे पृथक किस प्रकार हो सकता है।

यदि वह तेरा [illegible] उसके सामने कर दे।

जब वासनाओं से [illegible] हो उसे [illegible] अवस्था हो जाती है [illegible] से मिलने के लिए [illegible]

सहरहा वेगिर्यंद चंदाँकि आब।
फ़ेरोशोयद अज़ दीदा शां कोहले खाब॥
फ़रस कुश्ता अज़ वसके शब राँदा अन्द।
सहर गह खरोसां कि वा माँदा अन्द॥
शबो रोज़ दर वहरे सूदो व सोज़।
नदानन्द अज़ आशुफ़्तगी शबज़ रोज़॥
चुनाँ फ़ित्ना वर हुस्ने सूरत निगार।
कि वा हुस्ने सूरत नदारन्द कार॥
नदादन्द साहबदिलाँ दिल वफ़ोस्त।
वगर अक्लहे दाद वेमग़्ज़ो गोस्त॥
मए सिर्फ़े वहदत कसे नोश कर्द।
कि दुनिया व उक्बा फ़रामोश कर्द॥

हिकायत गदाज़ादा वा पादशाहज़ादा

शुनीदम कि वक़्ते गदा ज़ादए।
नज़र दाश्त वा पादशा ज़ादए॥

प्रभात होते ही उसके नेत्रों से आँसुओं की वह धारा प्रवाहित होती है कि सुर्मा बिल्कुल धुल जाता है।

अहर्निश उसकी स्मृति रूपी पीड़ा में अपने आपको जलाया करता है। उसकी याद में पागल बना रहता है।

यह भी ध्यान नहीं है कि कब दिन समाप्त होता है, रात कब आरम्भ होती है।

ईश्वर के मुखारविन्द ने कुछ ऐसा जादू डाला है कि उसे संसार के किसी अन्य मुख से किसी प्रकार का सम्बन्ध ही नहीं रह गया है।

उसने अपने आप को सांसारिक प्रेम में नहीं डाल रक्खा है। यदि किसी ने अपने आपको मानवी प्रेम में फँसा दिया तो वह बहुत बड़ा मूर्ख तथा मन्द बुद्धि है।

ईश्वर के प्रेम में मग्न वास्तव में उसी को समझना चाहिये जिसने अपने अस्तित्व तथा संसार दोनों को भुला दिया हो।

फ़क़ीर के लड़के का शाहज़ादे पर आसक्त होना

मैंने सुना है कि किसी समय एक भिखारी एक शाहज़ादे पर आसक्त हो गया।

कसे गुफ़्तेश शोख़ ईं मा नमा रेख़ ।
चनीं ख़ूबां ब ज़ारी दर चोगां मेख़ ॥
बगुफ़्तम ईं चुनां दर मन चु इनजे ।
न ताक़त नालः दारम न जाय हीले ॥
मन ईनक रेम दीदी मी चनम ।
मगर कः दीदः बाशद ज़ीं सुख़नहम ॥
जे मन सर ता क़दम ख़ूबां गुज़ारे ।
कि चा कः दम ज़नम ईनजा नज़ारे कुनम ॥
न मेलाए सरम न जाए गुरेज़ ।
न ईनजा बूद न याए गुरेज़ ॥
बगो ता दर चेगानः सर बेख़ारम ।
बगर सर बुरदनम करा दर तनम ॥
न परवानः आँ दारद कः याए सोज़ ।
मेह अज़ बिनदः दर कुंजे तारीके ओफ़्तद ॥
बगुफ़्तम ज़ारी अज़ चोगाने ख़ूत ।
बेगुफ़ा बन्दः दर अज़्मम तो गू ॥

किसी ने उससे कहा, "ऐ मूर्ख! इतना पागल क्यों हो गया है कि गेंदों और डण्डों की मार खाकर भी सन्तुष्ट दिखलाई पड़ता है! मुख से आवाज़ नहीं निकलती है।"

उसने उत्तर दिया कि यह कठोरता मेरे प्यारे की तरफ से है और प्यारे के मारने पर मुख से आवाज़ निकालना उचित नहीं है।

मैं अभी तक उसका प्रेमी होने का दावा करता हूँ। वह चाहे मुझे अपना मित्र समझे अथवा शत्रु।

उसके बिना मुझे कल नहीं पड़ सकती अथवा उसके साथ भी धैर्य न होगा। न तो मुझे चैन ही मिलता है और न लड़ाई ही करने की इच्छा होती है।

न तो एक स्थान पर स्थिर होकर बैठा ही जाता है और न भागने ही के लिये पैर आगे बढ़ते हैं।

मुझे उसके दर्बार से—उसके सम्मुख से हट जाने के लिये मत कहो। यदि मेरा शिर भी मेख (खूंटे) की तरह रस्सी में खिंचे तब भी मैं वहाँ से नहीं हट सकता।

मैं तो अब अपने प्यारे के पास से हट नहीं सकता हूँ। क्या पतंगे ने अपने प्यारे के चरणों पर निज को न्योछावर नहीं कर दिया? वह जीवन से बढ़कर उस अँधेरे कोने में है।

यदि उसके चौगान से तू घायल होकर, उसके चरणों पर गेंद के समान जा कर गिर पड़े,

वगुफ़ा सरत गर बेबुर्रद बतेग़।
वगुफ़ ईं क़दर न बूबद अज वै दरेग़॥

यके रा कि माशूक़ बाशद यके।
नयाज़ारद अज वै बहर अन्दके॥

मरा खुद जे सर नेस्त चन्दाँ ख़बर।
कि ताजस्त बर तारकम या तबर॥

मकुन बा मने नाशिकेबा इतेब।
कि दर इश्क़ सूरत न बन्दद शिकेब॥

चु याक़ूबम अर दीदा गर्दद सुपीद।
नबुर्रम जे दीदारे यूसुफ़ उमीद॥

और यदि तलवार से वह तेरे शिर को काट डाले तो भी उसके प्रति तनिक भी बेरुखी प्रकट मत कर।

यदि किसी का कोई प्यारा हो तो उसे प्रत्येक बात सहने के लिये सदैव उद्यत् रहना चाहिये। मुझे अपनी तनिक भी सुध नहीं है।

मुझे क्या दण्ड मिल रहा है? यह भी नहीं ज्ञात हो रहा है। न मालूम मेरे शिर पर छत्र रक्खा हुआ है अथवा कुल्हाड़ी।

मैं व्याकुल हूँ; मुझ पर क्रोध मत कर। इस आसक्ति में मैंने अपनी शान्ति खो दी है।

यदि हज़रत याक़ूब के समान मैं अन्धा हो जाऊँ तब भी यूसुफ़ के दर्शनों की अभिलाषा हृदय में बनाए रक्खूँ।

शव्सतरी

(जन्म १२५० ई०: मृत्यु १३२० ई०)

शव्सतरो

(जन्म १२५० ई०: मृत्यु १३२० ई०)

इनका नाम सईदुद्दीन महमूद था। आपका जन्म स्थान शब्सतर जो तबरेज़ के निकट स्थित है, बतलाया जाता है। आपका जन्म लगभग १२५० ईस्वी में और मृत्यु १३२० ई० में हुई थी। आप एक ऊँचे दर्जे के सूफ़ी थे। इन्होंने लिखा कम है, परन्तु जो कुछ भी लिखा है बहुत ही उत्तम है। आपकी पुस्तक "गुल्शन राज़" के विषय में प्रोफ़ेसर ब्राउन का कहना है :—

"सूफ़ी धर्म्म ग्रन्थों में इसका स्थान बहुत ही ऊँचा है।"

(लि० हि० आ० पर० जिल्द ३ पृष्ठ १४८)

यह पुस्तक ख़ुरासान के अमीर हुसेनी के पन्द्रह प्रश्नों के उत्तर में लिखी गई है। लेवी इसके विषय में लिखते हैं :—

"प्रश्नों के उत्तर जो कि छोटे छोटे उदाहरणों तथा गूढ़ बातों में दिये गये हैं इस प्रकार के रहस्यवाद को और भी उत्तम बना देते हैं। सुन्दर भावों को यह एक नवीन आभा प्रदान करते हैं।"

(प० लि० लेवी० पृष्ठ ७३)

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में इस पुस्तक का अनुवाद जर्मन तथा अंग्रेज़ी भाषा में हो गया था। और वहाँ पर इसकी प्रशंसा भी बहुत हुई। इसकी सहायता से गुणों की उलझनें पूर्णतयः समझ में आ जाती हैं। जामी ने इस पुस्तक के विषय में कई बार लिखा है। अपनी लवायह नामी पुस्तक में उन्होंने बड़ी तारीफ़ की है। आपके जीवन में कोई घटना नहीं हुई। इतने वर्ष बड़ी शान्ति के साथ व्यतीत हो गये।

प्रमुख रचनाएँ :—

गुल्शने राज़।

हक़ाइक़ उर्फ़ान

रिसाल[illegible]

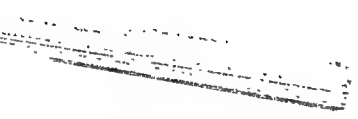

ख़िरद रा नेस्त ताबे नूरे आँ रूए।
वरै अज़ वहे ऊ चश्मे दिगर जूए॥
दो चश्मे ग़लसफ़ी चूँ वूद अहवल।
जे वहदत दीदने हक़ शुद मोअत्तल॥
ज़ि नाबीनाई आमद राए तशवीह।
जे यक चश्मीस्त इदराकाते तंज़ीह॥
तनासुख ज़ाँ सबब शुद कुफ़्रो बातिल।
कि आँ अज़ तंग चश्मी गश्त हासिल॥
अगर ख़्वाही बीनी चश्मए ख़ुर।
तुरा हाजत फ़ितद वा जिस्मे दिगर॥
चु चश्मे सर न दारद ताक़तो ताब।
तवाँ ख़ुरशीद तावाँ दीद दर आब॥
अज़ो चूँ रोशनी कमतर नुमायद।
दर इदराके तो हाली मे फ़ज़ायद॥
अदम आईनए हस्तीस्त मुतलक़।
अज़ो पैदास्त अक्से ताबिशे हक़॥

बुद्धि उस सुख के प्रकाश को देखने की सामर्थ्य नहीं रखती। इस कारण

सवाल

कि आराम मन मरा अज मन मादर कुन।
ये मानो दरूं अन्दर खुद मकर कुन?

जवाब

दिगर करदी सवाल अज मन कि मन चीस्त?
मरा अज मन शनासद कुन ता कि मन कीस्त॥
सो दस्तो मुतलक आमद दर इशारत।
बगाहे मन कुनद अज मन इशारत॥
हकीकत कज ता आमद खुद बोजदान।
तो ऊ रा दर इशारत मुखी मन॥
मनो तू आरिफे आने बजूदम।
मुशाहिदकुनाने मिरातेम॥
हमा नक नूर दाँ अस्वादो अरवाह।
गह अज आईना पैदा गह ज मिसवाह॥
तु गोई लाजे मन दर दर इशारत।
बसूए रूह मी बाशद इशारत॥

प्रश्न

मैं कौन हूँ? मुझे अपने आप पर प्रगट कर दे। "तू स्वयम् अपने अन्दर यात्रा कर" इसका क्या आशय है?

उत्तर

तूने फिर यही प्रश्न किया कि "मैं" क्या वस्तु है? मुझको बता दे कि यह "मैं" कौन है?

जब इस जीवन की तरफ स्वाभाविक ढंग से इशारा किया जाता है तब "मैं" शब्द के साथ उसका वर्णन करते हैं।

जो रहस्य वास्तविकता के रूप में परिणित हो गया है तूने शब्दों में उसको "मैं" कहा है।

"मैं" और "तू" सब उसी अस्तित्व से सम्बन्ध रखते हैं और अस्तित्व के दीपक की जालियाँ हैं।

यह सारी सूरतें और रूहें एक ही प्रकाश से प्रकाशित हो रही हैं, जो कभी दर्पण से प्रगट होती हैं और कभी दीपक से।

तू जिस प्रकार से भी "मैं" शब्द को कहेगा, उससे केवल आत्मा की ओर संकेत होगा।

चो कर्दी पेशवाए ख़ुद ख़िरद रा।
नमी दानी जे जुज्बे खेश ख़ुद रा॥
वेरौ ऐ ख्वाजा ख़ुद रा नेक वेशनास।
कि न ज़ुवद फ़रविही मानिन्दे आमास॥
मनो तू वरतरज्ञ जानो तन आमद।
कि ईं हर दो जे अजज़ाए मन आमद॥
वलफ़्जे मन न इनसानस्त मखलूस।
कि ता गोई वदो जानस्त मखलूस॥
यके रह वरतर अज़ कौनो मकाँ शौ।
जहाँ वेगुज़ारो ख़ुद दर ख़ुद जहाँ शौ॥
जे जस्ते वहमिए हाए हुनीयत।
दु चश्मी मी शवद दर वक्ते रोयत॥
न मानद दरमियाना रहरवे राह।
चो हाए हू शवद मुलहक़ व अल्लाह॥
ज़ुवद हस्ती वहिरत इमकाँ चो दोज़ख।
मनो तू दरमियाँ मानिन्दे वरज़ख॥

जब तू बुद्धि को अपना पथ प्रदर्शक मानता है, उस समय तू यह नहीं विचार करता कि तुझ में और बुद्धि में अन्तर है—दोनों एक दूसरे से भिन्न हैं।

अपने आपको अच्छी तरह पहचान ले। सूजन और मुटापा एक ही वस्तु को नहीं कहते हैं।

"मैं" और "तू" दोनों प्राण और शरीर से बहुत बड़े चढ़े हैं, क्योंकि यह दोनों अहम् अंश हैं।

अहं के शब्द से केवल मनुष्य का बोध नहीं होता है जिससे तू यह समझ ले कि केवल प्राणों के कारण यह शब्द आता है।

एक बार तू इस जलिक जगत से ऊपर चला जा और अपने अन्दर एक दूसरे ही जग का निर्माण कर।

इस जीवन में अद्वैत के भ्रम में भी अपने आपको पृथक कर ले। देखने के समय मन दो आँख वाली वस्तु बन जाता है।

उस समय पथिक बीच से विलुप्त हो जाता है और वह हवा के समान ईश्वर से जा मिलता है

अस्तित्व स्वर्ग के समान है और यह संसार नरक के तुल्य है। इन दोनों के मध्य में "मैं और तू" के निर्दिष्ट सीमा के समान खड़े हुए हैं।

चो परदेजार जोता ई परदा मा पेश।
न मानद नीज तुमे मजहबो केश॥
हमा तुमे शरीअत अज मनो तुस्त।
कि आँ पर बस्तए आनी तनी तुस्त॥
मनो तू चूँ न मानद इमेमाना।
चे मसजिद चे कनिश्त चे रेसमाना॥
ताअम्मुन कुनद चहमीलए हर ऐन।
चो साकी मस्त ऐनत मीन तुर ऐन॥
दो सूदा चेश न पुरा शवद खालिक।
अगरचे दारद ऊ नेसी मदालिक॥
यक अज दाए तुस्त दर गुजरतन।
दोम सद्राए दस्ती दर मनजरतन॥
दरीं मराहद यके शुद अम्नो अफराद।
चो वाहिद सारी अन्दर ऐने आहाद॥
तु आँ जमई कि ऐने वहदत आमद।
तु आँ वाहिद कि ऐने कसरत आमद॥

जब यह भेद भाव मिट जायगा उस समय धर्म और दीन की आज्ञाएँ भी शेष न रहेंगी।

धर्म ग्रन्थों की सारी बातें केवल तेरे अहंकार पर निर्भर हैं। तू समझता है कि अहं तेरे प्राणों और शरीर के साथ बँधा हुआ है।

जब "मैं" और "तू" तेरे बीच में न रह जायँगे उस समय मन्दिर, मस्जिद और गिरजा सब तेरे लिये समान हो जायँगे।

तेरे मन में केवल यही भ्रम "मैं" और "तू" घुसा हुआ है। जिस समय यह भ्रम मिट जायगा, तू निर्मल हो जायगा।

पथिक को बहुत दूर नहीं चलना है। हां, उसके मार्ग में विघ्न बाधाएँ अवश्य बहुत हैं।

तुझे केवल दो बातों का स्मरण रखना उचित है। एक तो यह कि तू ममत्व की बाधा को दूर कर दे और दूसरी अस्तित्व के मैदान को पार कर जा।

इस स्थान में मूल और शाखाएँ सब एक ही दिखलाई पड़ रही हैं। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि इकाई के अंक में सभी सम्मिलित हैं।

तू मूल है अथवा इकाई। तू ही मुख्य वस्तु है। तुझी में से सब की उत्पत्ति है।

कसे ईं सिर शिनासद कू गुजर कर्द।
जे जुज्वी सूए कुल्ली यक सफ़र कर्द॥
वेदाँ अव्वल कि ता चूँ गश्त मौजूद।
कि ता इन्साने कामिल गश्त मौलूद॥
दर अतवारे जमादी वूद पैदा।
पसज रूहे इज़ाफ़ी गश्त दाना॥
पसंगह जुंविश कर्द ऊ जे कुदरत।
पसज वै शुद जे हक़ साहब इरादत॥
वतिरली कर्द वाज एहसासे आलम।
दरो विलकेज शुद वसवासे आलम॥
चो जज्बर्यात शुद वर वै मुस्तव।
वकुल्लीयात रह वुर्द अज मुरक्कब॥
राजव गश्त अन्दरो पैदा व शहवत।
वजीशां खास्त वुज्जो हिर्सो नखवत॥
वकेल आमद सिफ़त हाए जमीमा।
वतर शुद अज ददो देवो वहीमा॥

वही मनुष्य इस रहस्य को समझ सकता है जो मार्ग को पार कर गया है और अपनत्व को भूलकर इकाई तक पहुँच गया है।

पहले तू इस संसार की उत्पत्ति का ज्ञान प्राप्त कर। और फिर यह देख कि मनुष्य किस प्रकार उत्पन्न हुआ।

पहले वह पत्थर-मिट्टी के रूप में प्रकट हुआ और उसके उपरान्त आत्मा के रूप में प्रकट होकर एक संसार बन गया।

तब उसको रचना का कौशल प्राप्त हुआ और वह माँ के पेट में आकर मनुष्य रूप में प्रकट हुआ।

बचपन में उसने इस संसार की सुंदरता को देखलिया और उसके भीतर यहाँ की वस्तुएँ उत्पन्न हो गईं।

जब उसके आकर संसार की समस्त वस्तुएँ यथोचित रूप से विद्यमान हो गईं तब वह मिश्रण से उत्पन्न हो पूर्ण हो गया।

फिर उसमें क्रोध और इच्छाएँ उत्पन्न हुईं और इन दोनों ने सम्पर्क से अभिमान उत्पन्न किया।

और लालच इत्यादि उत्पन्न हो कर आविर्भाव हुआ हिंसक पशुओं और राक्षसों ने भी अपने घर बना लिये।

मनुजत्व का मूल है मुक्ति मार्ग का।
कि मुड़ ना सकता कहीं मुक्ति से।।
यह अब अनन्त कर्मों से जिड़ गया।
मुक्तियों मुख भी न फिरा सका।।
अगर मरता मुक्तियों अन्तरों में।
पशुओं से बुरा कर्मों से अन्त।।
अगर नहीं इसमें अब आगे भी।
जो कैसे जन्मा था अब उससे पुरानी।।
सिवा ना कुछ एक इसमें और।
अगर यदि कि आगे अब और।।
जो जन्मा था जो पुराने पापों।
रहे सदा पैमाने पापों।।
कुल एक रजत अब मिट्टी कुम्हार।
मल आदर सूर इसे इन अवतार।।
बीच मुक्तियों मरता दर्शन हम।
सदा दर इसलिए बोलते आदम।।

उच्च पद से नीचे गिरने के लिये यह संस्कृत शब्द है जो कि बहरत शब्दकी समानता रखता है।

सांसारिक कार्यों और झंझटों की अधिकता से वह इस संसार में बिलकुल घुल मिल गया। उसे यह भी ज्ञान न रहा कि उसका उत्पन्न कर्ता कौन है।

यदि वह इसी जाल में फँसकर रह गया तो अज्ञानी पशुओं से भी अधिक उसकी अवस्था शोचनीय हो जायगी।

यदि आध्यात्मिक ज्ञान के प्रभाव से अथवा ईश प्रदत्त प्रकाश से जो कि सभी कार्यों से प्रकट होता है,

उसका हृदय उस महान् के प्रति प्रेम बन्धनों में बँध जावे तब तो वास्तव में वह जिस मार्ग से आता है उसी से लौट जाता है, अन्यथा नहीं।

ईश्वर की कृपा से अथवा प्रकट दलीलों से वह सचाई तक पहुँचाने वाला मार्ग पा जाता है।

वह पापात्माओं और बुरे काम करने वालों को छोड़ कर पुण्यात्माओं की ओर अग्रसर होता है।

नर्क को त्याग कर स्वर्ग में पहुँचता है। वह उसी समय सांसारिक वासनाओं को त्याग कर ईश्वर की एक पवित्र तथा सच्ची सन्तान बन जाता है।

चे अफ़ज़ाले निकोहीदा शवद पाक।
चो इदरीसे नबी दर चारुम अफ़लाक॥
चो यावद अज़ सिफ़ाते बद नजाते।
शवद चूँ नूह अज़ाँ साहब हयाते॥
नमानद कुद्रते जुजवीश दर कुल।
खलील आसा शवद साहब तवक्कुल॥
इरादत वा रज़ाए हक़ शवद जम।
रवद चूँ मूसा अन्दर वादे आज़म॥
चे इल्मे खेशतन यावद रिहाई।
चु ईसीये नबी गरदद समाई॥
देहद यक वारा हस्ती रा वताराज।
दर आयद अज़ पए अहमद बमेराज॥
रसद चूँ मुक्तए आखिर बअव्वल।
दराँजा ना मलक गुंचद न मुरसल॥
कसे मर्दे तमामस्त कज़ तमामी।
कुनद वा खाजगी कारे गुलामी॥

वह अपकर्मों को छोड़कर, नबी के समान चौथे आकाश पर पहुँच जाता है।

जब वह कुभावनाओं और कुकर्मों से छुटकारा पा जाता है तब उसका जीवन नूह से भी अधिक हो जाता है।

उस समय सुकर्मों के प्रभाव से उसका बुरा स्वभाव मिट जाता है और वह खलील पैगम्बर के समान ईश्वर पर विश्वास करने वाला हो जाता है।

उसकी इच्छायें बिलकुल ईश्वर के रँग में रँग जायँगी और वह हजरत मूसा के समान नदी के बड़े दर्वाजे में प्रविष्ट हो जायगा।

उनमें जो अहंकार वर्तमान रहता है उसे भूलकर वह ईसा नबी के समान आकाशवत् हो जाता है।

वह अपने अस्तित्व को बिलकुल मिटा देता है और अहमद के पीछे पीछे चलकर स्वर्गीय सीढ़ियों तक पहुँच जाता है।

वह वहाँ इस प्रकार पहुँच जाता है जिस प्रकार उस का अन्तिम बिन्दु सबसे पहले बिन्दु तक पहुँच जाता है। उस स्थान से न स्वर्गदूत दूर हैं पहुँच सकता है और न रसूल हैं।

पूर्ण मनुष्य वही है जो बड़ा होने पर और बड़ा होने पर भी नम्र रहता हो और सेवा में निमग्न रहता हो।

चो शुद दर दायरह सालिक मुकम्मल।
रसद हम नुक्तए आखिर बअक्ल॥
दिगर बारह शवद मानिन्दे परकार।
बराँ कारे कि अव्वल बूद दरकार॥
चो कर्द ऊ कतआ यक बारा मसाफत।
नेहद हक्क बर सरश ताजे खिलाफत॥
तनासुख न बुवद ईं कज रूए माना।
जहूरा तस्त दर गेने तजल्ला॥
"वकद सालू व कालू मन निहायद"।
"कफीला हियर रजूओ इलल बिदाहा"॥

सवाल

कि शुद बर सिरें वहदत वाकिफ आखिर?
शिनासाए चे आमद आरिफ आखिर?

जवाब

कसे बर सिरें वहदत गश्त वाकिफ।
के ऊ वाकिफ न शुद अन्दर मवाकिफ॥

जब पथिक ने वृत्त के अन्दर अपना मार्ग पूर्णकर लिया तो फिर वह वहीं चला जायगा जहाँ से उसकी उत्पत्ति हुई थी।

उस समय वह पुनः परकार की भाँति वही कार्य करने लगेगा जो पहले करता था।

जिस समय वह एक बार अपना पथ पार कर चुकता है उस समय ईश्वर उसके शिर पर साम्राज्य का मुकुट रख देता है।

वह आवागमन से मुक्त हो जाता है। क्योंकि अर्थानुसार यह बहुत से प्रकाश हैं जो उसी के प्रकाश से प्रकाशित रहते हैं।

लोगों ने प्रश्न किया कि अन्त क्या है? उनको उत्तर दिया गया कि आदि को लौटना ही अन्त का नाम है।

प्रश्न

अद्वैत का रहस्य कौन जानता है? ज्ञानी ने किस गुप्त भेद को पहचाना है?

उत्तर

अद्वैत के रहस्य को वही मनुष्य जान सका है, जो अपने मार्ग में कहीं ठहरा नहीं है। जो अविश्रान्त रूप से आगे ही बढ़ता गया है।

वले आरिफ़ शिनासाए वजूदस्त।
वजूदे मुतलक़ ऊरा दर शहूदस्त॥
वजुज़ हस्ती हक़ीक़ी हस्त न शनाख्त।
व वा हस्ती जे हस्ती पाक दर बाख्त॥
वजूदे तू हमा खारस्तो खाशाक।
चुनूँ अन्दाज़ अज़ खुद जुस्ता रा पाक॥
बरी तू खानए दिल रा फ़रो रोब।
मोदैया कुन मुक़ामे जाय महबूब॥
चो तू बेरूँ शुदी ऊ अन्दर आयद।
बतो बेतो जमाले खुद नुमायद॥
कसे कू अज़ नवाफ़िल गश्त महबूब।
बलाए नफ़्ी कर्द ऊ खाना चारूब॥
दरूने जाए महमूद ऊ मकाँ याफ़्।
जे वी "वही सिर व वी यसना" निशाँ याफ़्॥
जे हस्तौ वा बुवद बाक़ी बरोशैन।
नेआयद इल्मे आरिफ़ सूरते ऐन॥

परन्तु ज्ञानी वह है जो सत् को समझता है। उसे सत् सदैव साफ़ दिखलाई पड़ता है।

ब्रह्म के सिवाय उसने किसी को सत् नहीं पाया और उसने अपने अस्तित्व को उसी सत् में मिला दिया।

तेरा अस्तित्व बिलकुल गन्दा, कूड़े करकट से पटा हुआ है। अपने अन्दर से इस कूड़े को झाड़ कर साफ़ कर दे

बस तू केवल यार के [illegible]
झाड़कर स्वच्छ कर दे

जब तेरे हृदय से अहंकार [illegible]
और उस समय वो [illegible]

जिस मनुष्य [illegible]
नेत्र और [illegible]

उसका निवास [illegible]
उसे यह पद [illegible]

मकाने तो न मरहानी व सुद दुर।
इलने खानद दिल नाशाद नुद॥
मकाने दूं इमां आलम बदस्त।
जहाद करन अज दे दम बदस्त॥
न मुस्ती पाको अज अहदासो मनसाम।
दोयम अज माशियत बद रोई जमाम॥
सेउम पाको अज अमलाके जमीमम।
कि वा दे आदमो हम दूं वरीमम॥
बदारम पाकिए सिरेस अज दोर।
कि ईं जा गुफ्तहो मो गरदरा मोर॥
हरां कू कर्द हासिल ईं बदारा।
शाद वेशक सजावारे गुनाजात॥
तू ता खुद रा चकुल्ली दर न पाजी।
नमाजत के शाद दरगिह नमाजी॥
नो जाजत पाक गरद अज हमा शैन।
नमाजत गरद अंगह कबुलाशेन॥

जब तक तू सांसारिक बाधाओं को दूर न करेगा तब तक तेरे हृदय में प्रकाश न आवेगा।

इस संसार में रुकावट डालने वाली चार वस्तुएँ हैं और उनसे पृथक होने के भी चार उपाय हैं।

सब से पृथक गन्दी और हानि पहुँचाने वाली वस्तुओं से बचना है। दूसरा—अपकर्मों और बुरी इच्छाओं के जाल से पृथक रहना है।

तीसरा—ऐसी बुरी आदतों से अपने आपको बचाना है, जिनके कारण मनुष्य पशु हो जाता है।

चौथा—अपने रहस्य को दूसरों के हस्तक्षेप से बिल्कुल पवित्र रखना है। यहाँ पर उसकी चाल समाप्त हो जाती है।

जिस मनुष्य ने उपर्युक्त ढङ्ग से कार्य करके अपने आपको पवित्र बना लिया है, वह निस्सन्देह ईश्वर से वार्त्तालाप करने योग्य हो जायगा।

ऐ प्रार्थी! तेरी प्रार्थना उस समय तक प्रार्थना न होगी, जिस समय तक अहङ्कार तेरे हृदय से बिल्कुल न मिट जायगा।

जब तू सब प्रकार की मलीनता से रहित हो जायगा, तब तेरी प्रार्थना सुनी जायगी।

नमानद दरमियाना हेच तमीज़।
शवद मारूफ़ो आरिफ़ जुमला यक चीज़॥
वराए अक़्ल तौरे दारद इन्साँ।
कि विश्नासद बदाँ असरारे पिन्हाँ॥
बसाने आतश अन्दर संगो आहन।
निहादस्त ऐ जिद अन्दर जानो दर तन॥
चो वरहम ओफ़्तादो संगो आहन।
जे नूरश हर दो आलम गश्त रोशन॥
अजाँ मजमू पैदा गरदद ईं राज़।
चो वे शुनीदी वेरौ बाख़ुद वा परदाज़॥
तुई तू नुस्खए नक़्शे इलाही।
वेजो अज़ खेश हर चीज़े के ख़ाही॥

सवाल

कुदामी नुक़्ता रा नुक़्तस्त अनलहक़।
चे गोई हर जए वूद' आँ मुज़न्वक़॥

उस समय मार्ग में कोई रोड़ा न रह जायगा। उपासक तथा उपास्य में कोई अन्तर न रहेगा।

बुद्धि के अतिरिक्त मनुष्य के पास एक ऐसी शक्ति है, जिसके द्वारा वह रहस्यों का उद्घाटन करता है।

जिस प्रकार ईश्वर ने पत्थर और लोहे के भीतर अग्नि को छिपाकर रक्खा है, उसी प्रकार उस शक्ति को भी मनुष्य के अन्दर छिपा दिया है।

जब वह पाषाण और लोहा दोनों आपस में टकराए तब उनसे अग्नि उत्पन्न हुई, जिसके प्रकाश से दोनों जहान प्रकाशित हो गये।

उन दोनों के टकराने से (मिलाप से) रहस्य प्रगट होता है, जिस प्रकार अग्नि प्रगट हो जाती है।

जब तूने यह समझ लिया तो अब जाकर अपना विचार कर। ईश्वर के भेद सब तुझी में गुप्त हैं। जो कुछ तू चाहे स्वयम् अपने ही भीतर खोज कर देख ले।

जवाब

अनलहक करके बसदारदा मुनालिक।
बजुज हक कीस्त दा गोयद अनलहक॥
हमां जर्राते आलम हम चो मंसूर।
तु खाही मस्तगीरो खाह मखमूर॥
दरीं तसबीहो तहलीलन्द नामम।
दरीं मानी हमीं पासन्द कामम॥
अगर खाही कि बर तो गरदद आसां।
य इमिन रो अरा यक रह फेरोखां॥
चो करदी खेशतन रा पंबा कारी।
तु हम हल्लाज वार ई हम बरारी॥
बराबर पंबए पिंदारत अज गोश।
निहाए बादेदुल कदआरे ने न्योश॥
निदा मी आयद अज हक बर दवामत।
चेरा गरती तु मौकूफे कयामत॥
दरादर वादिए ऐमन कि नागाह।
दरख्ते गेयदत इअी अनलहक॥

उत्तर

अहंब्रह्मास्मि (मैं सत्य हूँ) यह कहना, सारे रहस्यों को बिल्कुल खोल देना है। ईश्वर के अतिरिक्त यह शब्द किसके मुख से निकल सकते हैं?

इस संसार के सम्पूर्ण कण मन्सूर ही के समान हैं। उन्हें चाहे मतवाला समझ ले अथवा नशे में चूर।

वे सदैव इन्हीं शब्दों का उच्चारण करते हैं और इन्हीं शब्दों पर उनका जीवन निर्भर है।

यदि तू यह चाहता है कि इस बात का समझना तेरे लिये सरल हो जावे, तो उनमें लिखे हुए इन वाक्यों का अध्ययन कर डाल।

जब तू अपने आप को रुई के समान धुन डालेगा तब धुना के समान यही शब्द जोर जोर से तुझ में से निकलेंगे।

अभिमान की रुई को अपने कान से निकाल डाल और अद्वैत की आवाज को सुन।

ईश्वर की ओर से तेरे लिये सदैव यही आवाज आ रही है कि तू प्रलय को बाट क्यों जोह रहा है।

तू ऐमन की घाटी में चला आ। वहाँ प्रत्येक वृक्ष तुझसे यही कहेगा कि "ईश्वर मैं ही हूँ।"

रवा बाशद अनल्हक़ अज़ दरख़्ते।
चिरा न ज़ुबद रवा अज़ नेक बख़्ते॥
हर आँ कस रा कि अन्दर दिल शक़े नेस्त।
यक़ीं दानद कि हस्ती जुज़ यके नेस्त॥
अनानीयत ज़ुबद हक़ रा सज़ावार।
कि हू ग़ैबस्तो ग़ायब बह्यो पिन्दार॥
जनाबे हज़रते हक़ रा दुई नेस्त।
दरीं हज़रत मनो माओ तुई नेस्त॥
मनो माओ तुओ ऊ हस्त यक चीज़।
कि दर वहदत न बाशद हेच तमीज़॥
हराँ कू ख़ाली अज़ चूनो चेरा शुद।
अनलहक़ अंदरो सौतो सदा शुद॥
शवद वा वह्दे वाक़ी ग़ैर हालिक।
यके गर्दद सुलोको सैरो सालिक॥
हुलोलो इत्तेहाद अज़ ग़ैर ख़ेज़द।
बले वहदत हमाँ अज़ सैर ख़ेज़द॥

एक वृक्ष का जब यह कहना कि "ईश्वर मैं ही हूँ," ठीक है तब एक पवित्रात्मा का कथन क्यों न सत्य हो।

जिस मनुष्य के हृदय में कोई सन्देह नहीं है वह यह बात पूर्ण रूप से समझ लेगा कि सत् वास्तव में एक ही है।

अपने आप को 'आप' कहना ईश्वर को ही शोभा देता है। इसके भीतर 'वह' का शब्द गुप्त है। परन्तु सन्देह और घमंड का चिह्न भी नहीं दिखलाई पड़ता।

ईश्वर के सामने द्वैत का चिन्ह भी नहीं पाया जाता। उसके सरोवर में, मैं, "हम" और "तू" इत्यादि कुछ भी नहीं है।

मैं और तू इत्यादि में कोई भेद नहीं है। इकतई में किसी प्रकार का अन्तर होना ही नहीं है।

जिस मनुष्य के हृदय से यह बाने दूर हो गए, उसका अन्तरात्मा में 'अहम ब्रह्मास्मि' का आनन्द निकलने लगता है।

वह सदैव रहने वाली सत्ता से सम्बन्ध स्थापित कर लेता है और उसके प्रति अपने तथा परमात्मा में एक ही हो जाते हैं।

उसमें मिल जाने अथवा अन्तर्हित हो जाने का अर्थ यह होता है जब हृदय में अहंकार रहता है।

नाचीज़ुन् पुर कब दुस्ती बुदा अद्।
न हुक चन्दा न चन्दा या बुदा अद्॥
तूलोनी इनेदार ईंजा मोहालस्त।
कि दर वहदत दुई ऐसे जुलालस्त॥
बजूई गरदी कमरत दर नमूदस्त।
न दर जो मी नुमायद ऐन बूदस्त॥

तमसील

नेनह् आईनए अन्दर रासार।
दरो नेनिगर ने मी आँ शख्से दीगर॥
यके रह् याज मी ता चीस्त आँ अक्स।
न ईनस्तो न आँ पस कीस्त आँ अक्स॥
चो मन दुस्तम बजाते खुद ताअम्मुल।
नमी दानम के बाशद मायए मन॥
अदम बा हस्ती आखिर चूँ शवद जम।
न बाशद नूरो जुलमत दर दो बादम॥
चो माजी नेस्त मुस्तकबिल महो साल।
चे बाशद गैर अजीं यक नुकताए हाल॥

परन्तु अहंकार को त्याग देने से बिलकुल ईश्वर से साक्षात् होता है। एक मनुष्य था जो जीवन से पृथक हो गया। न तो ईश्वर ही मनुष्य बना और न मनुष्य ही ईश्वर में मिला।

यहाँ पर उसमें लीन हो जाने का विचार करना ही पथ से विचलित होना है। क्योंकि इकताई में दूसरी बात सोचना अनुचित है।

सांसारिक मनुष्यों और जीवों का अस्तित्व दिखावे में है। यह सोचना कि जो वस्तु दिखलाई पड़ती है वही जीवन है, ठीक नहीं है।

उदाहरण

तू अपने सम्मुख दर्पण रख ले और उसमें अपने को निरख, तुझे एक दूसरा ही मनुष्य दिखलाई पड़ेगा।

पुनः एक बार ध्यान से देख और विचार कि यह प्रतिबिम्ब क्या वस्तु है। न यह है और न वह है।

फिर यह प्रतिबिम्ब है क्या? जब मैं अपने आप में मिला हूँ, मुझे नहीं ज्ञात होता कि मेरी छाया कैसी होगी।

मृत्यु, जीवन के साथ मिलकर एक कैसे हो जावे। प्रकाश और अन्धकार कभी साथ साथ नहीं रहते।

जब भूत काल नहीं है तब भविष्य के महीने और वर्ष क्या होंगे? जो कुछ है सो यही वर्त्तमान है।

यके तुअस्त वहमी गशता सारी।
तु ऊ रा नाम कर्दा महरे जारी॥
जुज अज मन अन्दरीं सहरा दिगर नीस्त।
वेगो वा मन कि ता सौतो सदा चीस्त॥
अरज फ़ानीस्त चो हर जो तुरकम।
वेगो कै बूद या खुद कू तुरकम॥
जे तूलो अर्ज वज उमक़स्त अजसाम।
वजूदे चूँ पिदीद आयद जे ऐदाम॥
अज़ीं जिन्सस्त अत्ले जुम्ला आलम।
चो दानिस्ती वे यार ईमाँ फ़अलजम॥
जुज अज हक़ नेस्त दीगर हस्ती अलहक़।
हुवलहक़ गोयो गर खाही अनलहक़॥
नमूदे वहमी अज हस्ती जुदा कुन।
न वेगाना खुद रा आशना कुन॥

सवाल

चेरा मखलूक़ रा गोयन्द वासिल।
सुलोको सैरे ऊ चूँ गश्त हासिल॥

एक सन्देह ही तेरे साथ बराबर लगा हुआ है। तूने उसी का नाम बहती हुई नदी रक्खा है।

मेरे अतिरिक्त इस वन में कोई दूसरा नहीं है। फिर यह आवाज़ और ध्वनि क्या है?

इच्छा एक मिट जाने वाली वस्तु है और कार्य उसी ने मिलकर बनी है। फिर यह बतला कि यह इच्छा कहाँ थी और यह उत्पन्न किस प्रकार हुई?

जितने भी शरीर हैं जितने भी आकार हैं, वह सब जर्रों, बौछारों और माटाई से मिलकर बने हैं

इनके मिटा देने से किस प्रकार से आत्मा का [illegible]
सारे संसार में केवल यह [illegible]
जब तक [illegible]

जवाब

विसाले हक़ जे खल्क़ीयत जुदाईस्त।
जे खुद बेगाना गश्तन आश्नाईस्त॥
चो मुमकिन गरदे इमकाँ बर क़िशानद।
बजुज़ वाजिब दिगर चीज़ो नमानद॥
बजूदे हर दो आलम चूँ खयालस्त।
कि दर वक्ते, बक़ा ऐने ज़वालस्त॥
न मखलूक़स्त आँ कू गश्त वासिल।
न गोयद ईं सखुन रा मर्दे कामिल॥
अदम के राह यावद अन्दरीं बाब।
चे निस्बत खाक रा बा रब्बे अरबाब॥
अदम चे बुवद कि बा हक़ वासिल आयद।
बजो सैरो सुलूके हासिल आयद॥
अगर जानत शवद जीं माआनी आगाह।
बेगोई दर ज़मीं असतग़फ़रउल्लाह॥
तु मादूमो अदम पैवस्ता साकिन।
व वाजिब कै रसद मादूमे मुमकिन॥

उत्तर

ईश्वर से मिलना संसार से पृथक हो जाना है और अपने आप से कोई दूसरा ही हो जाना, यह उसकी पहचान है।

जब सम्भव इस संसार की गर्द को झाड़ देता है तो सत् के अतिरिक्त और कुछ नहीं रह जाता है।

दोनों लोक और परलोक का अस्तित्व एक विचार मात्र है, जो कि मृत्यु के समय पूर्ण रूप से नष्ट हो जाता है।

जिसने ईश्वर को पा लिया वह सांसारिक मनुष्यों में नहीं रह जाता है। पूर्ण इस बात को कभी भी नहीं कहेगा कि मैं मनुष्य हूँ।

मनुष्य को इस दर्वाज़े से उस पार निकल जाने का मार्ग कब मिलेगा? उस महान् परमेश्वर के साथ मिट्टी का क्या सम्बन्ध है?

मनुष्य क्या वस्तु है जो वह ब्रह्म के साथ जा मिले और उससे किसी प्रकार का सम्बन्ध प्रकट करे।

यदि यह बात तेरी समझ में आजावे, तो निस्सन्देह उसी क्षण तू यह कहेगा कि मैं ईश्वर हूँ।

तू नाशवान् है और तू इसी रूप में सदैव एक स्थान पर ठहरा हुआ है। यह नाशवान कब सत् तक पहुँच सकेगा।

न दारद हेच जौहर वे अरज ऐन।
अरज चे बुवद कि ला यबक़ी जमानेन॥
हकीमे कंदरी रह कर्द तसनीफ़।
बतूलो अर्जो उमक़श कर्द तारीफ़॥
हयूला चीस्त जुज मादूमे मुतलक़।
कि मी गर्दद बदो सूरत मोहक़्क़क़॥
चे सूरत वे हयूला जुज अदम नेस्त।
हयूला नीज वे ऊ जुज अदम नेस्त॥
शुदा अजसामे आलम जी दो मादूम।
कि जुज मादूम अजीशाँ नेस्त मालूम॥
वेयीं माहीयते रा वे कमो वेश।
न मादूमो न मौजूदस्त दर खेश॥
नजर कुन दर हक़ीक़त सूए इमकाँ।
कि वे ऊ हस्ती आमद ऐने नुक़साँ॥
वजूद अन्दर कमाले खेश सारीस्त।
ताआयुनहा उमूरे एतवारीस्त॥
उमूरे एतवारी नेस्त मौजूद।
अदद विसयारो यक चीजस्त मादूद॥

कोई जवाहर विना परीक्षा के सच्चा (पूर्ण) नहीं कहा जा सकता है। और सत् है क्या वस्तु? वह, जो दो जमानों तक शेष न रहे।

जिस विद्वान ने इस विषय में कोई पुस्तक लिखी है उसने क्षणिक् की परिभाषा लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई से की है।

जिस अस्तित्व के द्वारा आकार सूरत उत्पन्न होती है वह क्षणभंगुरता के अतिरिक्त और क्या वस्तु है? जब आकार विना पंचभूतों के कुछ भी नहीं है तो वह भी आकार विहीन कुछ भी नहीं है।

इस संसार के जितने भी मांस पिण्ड हैं वे इन्हीं दो वस्तुओं से बने हैं।

उनके विषय में नाश के अतिरिक्त और कोई बात ज्ञात नहीं है।

एक अद्वैत को देखो जिसमें भाव अभाव तथा उत्पत्ति और लय कुछ भी नहीं है।

देखो इस क्षणभंगुर संसार को तनिक ध्यान से, कारण, कि उसके विना यह जीवन बिल्कुल अपूर्ण है

अस्तित्व अपनी विशेषताओं के वृत्त के भीतर चक्कर लगा रहा है। वास्तविकताएँ जितनी भी हैं वह सब विश्वासी बातें हैं

विश्वासी बातें वहाँ पर नहीं हैं जितनाएँ बहुत सी हैं परन्तु जितनेवाला

जहाँरा नेस्त हस्ती जुज मजाजी।
सरासर हाले ऊ लह वस्तो बाजी॥

तमसील दर अतवारे वजूद

बुखारे मुर्तफा गर्दद चे दरिया।
व अमरे हक फिरो आयद बसेहरा॥
शुआये आफ्ताब अज चर्खे चारुम।
फेरो बारद शवद तरकीब बाहम॥
कुनद गरमी दिगर रह अज्मे बाला।
दरावेजद बदो आँ आवे दरिया॥
चु बाईशाँ शवद खाको हवाजिम।
बरूँ आयद नबाते सब्जो खुर्रम॥
गिजाये जानवर गरदद तबदील।
खुर्द इनसाँ व यावद बाज तहलील॥
शवद यक नुक्ता बगरदद दर अतवार।
बजाँ इन्साँ शवद पैदा दिगर बार॥
चु नूरे नफ्स गोया दर तन आमद।
यके जिस्मे लतीफो रौशन आमद॥

इस संसार में जीवन स्थायी नहीं है। उसकी तमाम बातें खेल कूद के समान हैं।

जीवन में उलटफेर

ईश्वर की आज्ञा से एक वाष्प नदी में उठती है और समतल भूमि में आकर नीचे गिर पड़ती है।

चौथे आकाश खण्ड से सूर्य्य की किरणें उस मैदान में आकर पड़ती हैं और फिर आपस में गुथ जाती हैं।

धूप पड़ने पर ताप उत्पन्न होता है और फिर वह गर्मी ऊपर को जाना चाहती है। उस समय नदी का जल उसमें सम्मिलित हो जाता है और उससे लिपट जाता है।

जब उस ताप और जल के साथ मिट्टी और वायु भी मिल जाती हैं तब वह एक हरी-भरी घास के रूप में परिणत हो जाती है।

वही पशुओं की आशा हो जाती है। मनुष्य खाता है और फिर वह पच जाता है।

वही एक बिन्दु के रूप में परिणत हो जाता है और जन्म मरण के चक्कर में पड़कर पुनः मनुष्य के रूप में उत्पन्न होता है।

जब बोलने वाला मनुष्य के अन्दर एक चिनगारी के समान प्रवेश करता है तब शरीर के अन्दर से एक सुन्दर प्रभा प्रस्फुटित होती है।

शवद तिफ़्लो जवानो कोहो कम पीर।
बदानद इल्मो राये फ़इमो तदबीर॥
रसद अंगह अजल अज हज़रते पाक।
रवद पाकी बेबाको खाक बा खाक॥
हमा अजजाए आलम चो नबातन्द।
कि यक क़त्रा जे दरयाये हयातन्द॥
जमाँ चूंबगुज़रद बरूये शवद बाज़।
हमह अंजाम ईशाँ हमचु आग़ाज़॥
रवद हर यक अज़ी शाँ सूए मरकज़।
कि न गुज़ारद तबीयत जूए मरकज़॥
चु दरियायस्त बहदत लेक पुर जूँ।
कज़ो खेज़द हज़ारों मौजे मजनूँ॥
नगर ना क़त्रए बारों जे दरिया।
चगूना याफ़ चन्दीं शक्लो अस्मा॥
बुखारो आबो बाराँ व नमो गिल।
नबातो जानवरो इनसाने कामिल॥

वह बालक, युवा और वृद्ध होता है और विद्या, ज्ञान और प्रयत्न के मूल्य को समझने लगता है।

उस समय ईश्वर के दर्बार से मृत्यु का आगमन होता है। पवित्रता, पवित्रात्मा के पास चली जाती है और मिट्टी, मिट्टी में मिल जाती है।

संसार के जितने भी परमाणु हैं वह सब इसी जीवन रूपी सरिता की बूँदों के समान हैं।

जब उसपर संसार का भार आ पड़ता है तब उसका समस्त फल, उसका अन्न आदि के समान बुन जाता है।

उन बिन्दुओं में से प्रत्येक अपने केन्द्र की तरफ़ आकर्षित होने लगता है कारण कि मानवी इच्छा उसकी तरफ़ सदैव लगी रहती है

अद्वैत एक नदी के समान है परन्तु वह नदी जिसके दो तट रूप में भरे है, उसमें से सहस्रों नहरें मजनूँ के समान निकलती है

यह तो देखो कि बूंद के एक बिन्दु ने इस नदी में से जलरूप का कितने पात्र और किसने रूप धारण किए

बादल, जल, वर्षा, नदी और नाले मिट्टी और इसके उपजाए हुए और पूर्ण मनुष्य

हमा यक कत्रा बूद आखिर दर अस्ल।
कजो शुदीं हमा अशया मुमस्सिल॥
जहाँ अज आलो नासो नबूदो अदम।
चु आँ यक कत्रा दाँ जा आमाजो अंजाम॥
अजल नूँ दर रसद दर नबूदो अनजाम।
शवद हस्ती हमह दर नेस्ती गुम॥
चु मौजे बर जनद गर्दद अज़ाने नमस।
गुमाँ गरदद कि ईं बूद अज़ाने लमस॥
खयाल अज पेश बर खेजद यकबारे।
नमानद गैर हक दर दारे दय्यारे॥
तुरा कुरबे शवद आँ लहजा हासिल।
शवे बे तू तूई आ दोस्त वासिल॥
बिसाल ईंजायगह रफ्ता खयालस्त।
चु गैरज पेश बर खेजद बिसालस्त॥
मगो मुमकिन चे हस्ते खेश बगुजरत।
न ऊ वाजिब शुदो न वाजिब ऊ गश्त॥

: यह सब प्रारम्भ में एक ही बिन्दु थे, परन्तु फिर उसी बिन्दु ने इतने रूप धारण कर लिये।

" बुद्धि, इच्छा, आकाश, शरीर इत्यादि संसार की यह समस्त वस्तुएँ आदि से लेकर अन्त तक सब उसी बिन्दु के समान हैं।

. जब आकाश और तारों की मृत्यु आ उपस्थित होगी तब इनका अस्तित्व नाश रूपी गहरे गर्त में विलीन हो जायगा।

· जब एक लहर आक्रमण करती है तब सारा संसार मिट जाता है और यह विश्वास हो जाता है कि जो कुछ भी था वह स्वप्न था।

ऐसे विश्वास के उपरान्त समस्त विचार यकायक सामने से विलीन हो जाते हैं और फिर इस सूने घर में ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं रह जायगा।

तुझको उस समय ऐसा सुयोग प्राप्त होगा कि तू बिना ही किसी साधना के अपने मित्र से जा मिलेगा।

इस स्थान पर एक दूसरे के बीच में आजाने के कारण मिलने और अलग होने का विचार हृदय से जाता रहता है।

जब यह अटकाव मिट जाता है, मिलन सहज हो जाता है।

ईरान के सूफ़ी कवि

हराँको दर मआनी गश्त क़ायक़।
निगोयद कीं चुबद क़ल्बे हक़ायक़॥
हज़ारों निशाहे दारी ख़ाजा दर पेश।
बरो आमद ख़ुद .ख़ुद रा बीनदेश॥
जे बहसे जुज़ो कुल व निश्श इन्सों।
बगोयम यकबयक पैदा व पिन्हाँ॥

सवाल

बिसाल वाजिबो उमकिन वहम चीस्त।
हदोसे क़ुर्बो बादो बेशो कम चीस्त॥

जवाब

जे मन बिशनो हदीसे बे कम बेश।
जे नज़दीकी तो दूर उफ़तादी अज़ खेश॥
चु हस्ती रा ज़हूरे दर अदन बुद।
अज़ांजा क़ुर्बो बादो बेशो कम बुद॥

तू यह न समझ कि मनुष्य अपनी सीमा से आगे बढ़ जायगा। न तो वह सत् हुआ ही है और न होवेगा ही।

जो मनुष्य आत्मज्ञान से पूर्ण हो गया है, वह यह बात नहीं कहेगा कि ऐसा होना सत् का उलट जाना है।

मित्र! तुम्हारे ही सम्मुख सहस्रों जीवधारी उत्पन्न हुए हैं और मृत्यु के ग्रास बने हैं। इस बात को छोड़ कर तनिक अपने ही आवागमन पर विचार करो।

मनुष्य के जीवन-मरण के इन रहस्यों को एक एक करके खोलकर तथा छिपा कर देखो। उसका वर्णन करेगा

प्रश्न

ईश्वर और मनुष्य का सम्बन्ध [illegible] अधिक और कम में क्या अन्तर है

उत्तर

मैं बिना किसी प्रकार के [illegible] स्वयं निकट होने के [illegible] जब इस सत्संग में [illegible] अधिकता और कमी [illegible]

करीं आनस्त हुरा रश नूरस्त।
नईदाँ नेस्ती कज हस्त दूरस्त॥
अगर नूरे जे नुर इरे तो रसानद।
तुरा अज हस्तिए खुद वा रहानद॥
चे हासिल मर तुरा जीं दूरो नाचूर।
कजो गाहत खोकी गद रिजा बूद॥
नतरसंद तू कसे हुरा शनासद।
कि तिफलज सायए खुद मी हरासद॥
नमानद खौफ अगर मरदी रवाना।
नसाहद अस्पे ताजी ताजयाना॥
तुरा अज आतिशे दोजख चे बाकस्त।
कि अज हस्तीए तनो जाँ तो पाकस्त॥
जे आतिश चार खालिस चर करोजद।
चु गैरी नै चुबद अन्दर नै चे सोजद॥
तोरा गेरज तो चीजे नेस्त दर पेश।
वलेकिन अज वजूदे खुद बीन्देश॥

निकट वह है जिस पर प्रकाश की वर्षा होती रहती है। और दूर वह वस्तु है जो ईश्वर से बहुत दूर नाशवान् जगत के एक कोने में पड़ी हुई है।

यदि उस प्रकाश की कुछ किरणें तुझ तक पहुँच जावें तो तू अपने जीवन के बन्धनों से मुक्त हो जावे।

तुझको अपने इस अस्तित्व से क्या प्राप्त होता है? केवल भय और निराशा।

जो मनुष्य उसके भेद को जानता है, वह उससे कभी भय नहीं खाता। अपनी छाया से बच्चे ही डरा करते हैं।

यदि तू अपने मार्ग पर चल खड़ा हो तो फिर तुझे किसी प्रकार का भय नहीं रहेगा। तू अरब-अश्व के समान शीघ्र गामी है। तुझे कोड़े की क्या आवश्यकता है।

तुझे नर्क की अग्नि से बिल्कुल ही डरना न चाहिये। तेरा शरीर और तेरे प्राण संसार की मलिनता से स्वयं पवित्र हैं।

अग्नि में पड़ने से स्वर्ण निखर जाता है। परन्तु जिस सोने में किसी प्रकार की मिलावट अथवा खराबी न हो उसे अग्नि में डाला ही क्यों जावे? वह जलेगा ही नहीं।

तेरे सम्मुख तुझे छोड़कर और कोई भी वस्तु नहीं है, किन्तु तू आप ही सोच कि वास्तव में तू है कैसा।

अगर दर खेश्तन गर्दी गिरफ़्तार।
हिजाबे तो शवद आलम वयक बार॥
तुई दर दौरे हस्ती जुज्वे असफ़ल।
तुई वा तुफ़्तए वहदत मुक़ाबिल॥
ताअय्युनहाय आलम वर तो तारीस्त।
अजाँ गोई चो शैतां हमचो मन कीस्त॥
अजां गोई मरा खुद इख्तयारस्त।
तने मन मुरक़्क़वो जानम सवारस्त॥
जमामे तन वदस्ते जाँ निहादंद।
हमाँ तकलीफ़ वर मन जाँ निहादंद॥
न दानी कीं हमाँ आतिशपरस्तीस्त।
हमाँ ईं आफ़तो शोखी जे हस्तीस्त॥
कुदामी इख्तियार ऐ मर्दे आक़िल।
कसे रा कू वुवद विज्जात वातिल॥
चो वूदे तुस्त यकसर हम चो नावूद।
वेगोई केख्तियारत अज कुजा वूद॥
कसे कूरा वजूद अज खुद न वाशद।
वजाते खेश नेको वद न वाशद॥

तुझमें यदि किसी प्रकार का पर्दा है, तो वह केवल तेरा अभिमान है। इस जन्म मरण के चक्कर में—इस मर्त्य-लोक में तू सब से नीचा है। और अद्वैत प्राप्त करने का अधिकारी भी तू ही है।

तू इस संसार के बंधनों में विश्वास रखता है, इसी कारण तू शैतान के समान कहा करता है कि यह मेरा निवास स्थान है।

और मैं स्वतंत्र हूँ। मेरा शरीर अश्व है और मेरी आत्मा इसका सवार है।

शरीर की लगाम आत्मा के हाथ में दे दी है। इसी कारण तुझ पर यह सब बन्धन डाले गये है।

तू नहीं जानता कि यह सब कुछ अग्नि की पूजा करने के समान है यह सारी विपत्तियां और दिठाइयां केवल इसी जीवन के कारण है

हे ज्ञानवान तेरा जीवन क्षणिक है इस पर भी तू अपने अधिकार प्रकट करता है

बता, तेरे वह अधिकार किस काम के है और उनका अस्तित्व भी क्या है? और वह तुझे कहाँ प्राप्त हुआ था?

जिस मनुष्य का कोई अस्तित्व नहीं होता उसे अपने में भलाई अथवा बुराई किस प्रकार ज्ञात हो सकती है

के रा दीदी तू अन्दर हर दो आलम।
कि यकदम शादमानी याफ्त अेशान॥
कि रा शुद हासिल आखिर जुम्ला उम्मीद।
कि मौद अन्दर कमाले ता बजावीद॥
मरातिब बाकिओ अहले मरातिब।
बजेरे अम्रे हक बल्लाही शालिब॥
मो आसिर हक शनास अन्दर हमा जाय।
जे हद खेशतन बेरूँ मनेह पाय॥
जे हाले खेशतन पुरसीं कदर खीस्त।
बजाँ जा बाजदाँ कहले कदर कीस्त॥
हराँ कस रा कि मजहब गैरे जन्नस्त।
नबी फरमूद कू मानिन्दे गन्नस्त॥
चुनाँ काँ गब्र यजदाँ अञ्जुमन गुफ्त।
हमाँ नादाने अहमक मा व मन गुफ्त॥
बमा अफआल रा निस्बत मजाजीस्त।
निसब खुद दर हकीकत लहओ बाजीस्त॥

इन दोनों जहानों में तूने कभी किसी को क्षण भर के लिये भी सुखी होते देखा है ?

किस मनुष्य की सब इच्छाएँ पूर्ण हुई हैं ? और कौन सदैव एक ही समान रहा है ?

ईश्वरीय आज्ञा के अनुसार चलने वाले ही लोग शेष हैं और उसका भय सभी को लगता है।

सभी स्थानों में ईश्वर को ही प्रत्येक कार्य का कर्त्ता-धर्त्ता मान और निर्धारित सीमा से आगे मत बढ़।

तू अपना हाल देख ले और फिर अपने हृदय से पूछ कि प्रतिष्ठा क्या वस्तु है।

फिर यह सोच कि प्रतिष्ठा किसे प्राप्त होनी चाहिये।

और कौन ऐसे मनुष्य हैं जो प्रतिष्ठित होने योग्य हैं। जिस मनुष्य का धर्म्म बल प्रयोग के अतिरिक्त कोई और वस्तु है, नबी के कथनानुसार वह अग्नि पूजक है।

इसी प्रकार मूर्ख ने "मैं" और "हम" को समझ लिया है। कार्यों के सम्बन्ध में हमारे यहाँ कह दिया गया है।

निबूदी तू कि फ़ेलत आफ़रीदन्द।
तुरा अज वहे कारे वरगुजीदन्द॥
बकुदरत बेसबब दानाए वर हक़।
वइल्मे खेश हुक्मे करदा मुतलक़॥
मुक़द्दर गश्ता पेश अज जानो अज तन।
बराए हर यके कारे मोअय्यन॥
यके हफ़्सद हज़ारों साल ताअत।
बजा आवुर्दो गरदन तौक़े लानत॥
दिगर अज मासियत नूरो सफ़ादीद।
चो तोबह कर्द नामे इस्तिफ़ा दीद॥
अजबतर आँके ईं अज तर्के मामूर।
शुदज अलताफ़े हक़ मरहूमो मग़फ़ूर॥
मरां दीगर चे मनहा गश्ता मज़ऊँ।
चेहे फ़ेले तोबे चन्दो चे वो चूँ॥
जनावे किब्रेआई ला उबालीस्त।
मुनज्जह अज क़यासाते खियालीस्त॥

और वास्तव में मनुष्य के सभी प्रयत्न सारहीन खिलवाड़ के समान हैं।

जिस समय तू नहीं था उसी समय तेरे कार्यों को उत्पन्न कर दिया था और तुझे एक विशेष काम के लिये चुन लिया था।

बिना किसी कारण के परमेश्वर ने अपने आप एक आज्ञा दे डाली। शरीर और प्राणों से पहले ही प्रत्येक मनुष्य के लिये एक न एक कार्य निर्धारित कर दिया जाता है।

एक मनुष्य ने सात लाख वर्ष तपस्या की पर उस पर भी उसके गले में धर्म्महीनता का तौक़ पड़ गया।

दूसरे ने पाप और अपकर्म करके भी पवित्रता और ईश्वरीय प्रकाश को प्राप्त किया।

जब उसने अपने इन कर्मों के त्याग देने की प्रतिज्ञा की तब उसने ईश्वर के प्रिय मनुष्यों की सूची में अपना नाम पाया।

सबसे बड़े आश्चर्य की बात यह है कि यह हमारा ईश्वरीय आज्ञा को न मानने पर भी क्षमा कर दिया गया परन्तु वह पहला केवल मना कर देने ही के कारण क्षमा नहीं किया गया।

तेरे कार्यों का कहना ही क्या है, जो न तो वर्णन ही में आ सकते हैं और न उनकी गणना ही की जा सकती है। ईश्वर सर्वथा अपवाद है वह विचारों की पहुंच से परे है

ये बूद अन्दर अजल ये मर्दे ना अज़ ।
कि ई गश्ता मोहम्मद व आँ अज़ाज़ील ॥
कसे कू बा खुदा चूनो बरा गुफ़्त ।
जो मुशरिक हजरतश रा ना सजा गुफ़्त ॥
बरा जेबद के पुरसद अज़ नेक व बद ।
न बाशद एतराज़ अज़ बन्दा बीबद ॥
खुदावन्दी हमाँ दर किबरियाईस्त ।
न इल्लत लाएके फ़ेले खुदाईस्त ॥
सजावारे खुदाई खुफ़्तो कुदरत ।
वलेकिन बन्दगी दर शुक्रो मजलत ॥
करामत आदमी रा जे इताअतकीस्त ।
न आँ कूरा नसीबे इताअतीस्त ॥
न बूदा हेच कीरा दरगिज़ अज़ खुद ।
पसंगाह पुरसदरा अज़ नेको अज़ बद ॥
नदारद इख्तयारी गश्ता मामूर ।
जहे मिसकीं कि शुद मुख्तारो मजबूर ॥

ऐ मूर्ख ! मनुष्य के आरम्भ में कौन सी ऐसी बात होगई थी जिसके कारण एक मुहम्मद बन गया और दूसरा शैतान ।

जिस मनुष्य ने ईश्वर के सन्मुख किसी प्रकार की दलील पेश की उसकी आज्ञा के ग्रहण करने में आनाकानी की ,

उसने गोया कई देवताओं के पूजक के समान उसे बुरा कहा । तुमसे किसी बात का उत्तर मांगना उसी को शोभा देना है ।

सेवकों का किसी प्रकार की आनाकानी करना अनुचित है ? ईश्वर की ईश्वरता इसी में है कि वह सबसे बड़ा है । उसके कार्यों के कारण हो ही नहीं सकते ।

दया अथवा क्रोध परमात्मा को ही शोभा देता है । मनुष्य की भलाई केवल धैर्य्य धारण करने और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकाश करने ही में है ।

मनुष्य को प्रतिष्ठा केवल इसीलिये नहीं प्राप्त होती है कि वह अधिकारी बनता है । परन्तु वह मनुष्य प्रतिष्ठित हो जाता है जिसका अधिकार में कोई भाग नहीं है ।

मनुष्य स्वयम् अपने प्रति किसी प्रकार की भलाई नहीं कर सकता और फिर ईश्वर उससे भलाई अथवा बुराई के विषय में प्रश्न करेगा ।

उसका यहाँ पर अपना कोई अधिकार नहीं है । उसे केवल कार्य करने की आज्ञा मिली है । बेचारे मनुष्य का अजीब हाल है । वह स्वतन्त्र और परतंत्र दोनों ही है ।

न ज़ुल्मस्ती कि ऐने इल्मो अदलस्त।
न जौरस्ती कि महज़े लुत्फ़ो फ़ज़लस्त॥
व शरअत जाँ सनद तकलीफ़ करदन्द।
कि अज़ जाते खुदत तारीफ़ करदन्द॥
चो अज़ तकोफ़े हक़ आजिज़ शवी तू।
बयकबार अज़ मियाँ बरख़ेज़ रवी तू॥
बकुल्लीयत रेहाई यावी अज़ खेश।
ग़नी गर्दी बहक़ ऐ मर्दे दुरवेश॥
बेरो जाने पिदर तन दर क़ज़ा देह।
बतक़दीराते यज़दानी रज़ा देह॥

तमसील

शुनीदम मन कि अन्दर माहे नेस्तां।
सदफ़ बाला रवद अज़ वहे अब्रमां॥
जे शौवे क़ार बद आयद बरफ़राज़।
बरूए वह बनशीनद दहन बाज़॥

इसको अत्याचार कदापि नहीं कह सकते। वरन् इसे न्याय और ज्ञान कह सकते हैं। यह ज़बर्दस्ती नहीं कही जा सकती है। इसके विपरीत हम इसे दया और भलाई के नाम से पुकार सकते हैं।

तुझको इसीलिये धर्म्मग्रन्थों का अध्ययन करने की आज्ञा दी गई है कि तू अपने वास्तविक रूप को पहचान ले।

जब तू ईश्वरीय आज्ञानुसार चलने लगेगा, उस समय बीच में से निकल जायगा।

और अन्धकार को बिल्कुल छोड़ देगा। हे सखी! उस समय तू ईश्वर को पाकर मालामाल हो जायगी।

[illegible]

उदाहरण

[illegible]

चे बूद अन्दर अज़ल ऐ मर्द ना अह्ल।
कि ईं गश्ता मोहम्मद व आँ अबूजेह्ल॥
कसे कू वा खुदा चूनो चरा गुफ़्त।
जो मुशरिक हज़रतश रा ना सज़ा गुफ़्त॥
बरा जेबद के पुरसद अज़ चे व चूँ।
न बाशद एतराज़ अज़ बन्दा मौजूँ॥
खुदावन्दी हमाँ दर किबरयाईस्त।
न इल्लत लायक़े फ़ेले खुदाईस्त॥
सज़ावारे खुदाई लुत्फ़ो क़हस्त।
वलेकिन बन्दगी दर शुक्रो सबरस्त॥
करामत आदमी रा जे इज़तरारीस्त।
न आँ कूरा नसीबे इख़्तयारीस्त॥
न बूदा हेच खैरश हरगिज़ अज़ खुद।
पसंगाह पुर्सदश अज़ नेको अज़ बद॥
नदारद इख़्तयारो गश्ता मामूर।
ज़हे मिसकीं कि शुद मुख़्तारो मजबूर॥

ऐ मूर्ख! मनुष्य के आरम्भ में कौन सी ऐसी बात होगई थी जिसके कारण एक मुहम्मद बन गया और दूसरा शैतान।

जिस मनुष्य ने ईश्वर के सम्मुख किसी प्रकार की दलील पेश की उसकी आज्ञा के ग्रहण करने में आनाकानी की,

उसने गोया कई देवताओं के पूजक के समान उसे बुरा कहा। तुमसे किसी बात का उत्तर मांगना उसी को शोभा देता है।

सेवकों का किसी प्रकार की आनाकानी करना अनुचित है? ईश्वर की ईश्वरता इसी में है कि वह सबसे बड़ा है। उसके कार्यों के कारण हो ही नहीं सकते।

दया अथवा क्रोध परमात्मा को ही शोभा देता है। मनुष्य की भलाई केवल धैर्य्य धारण करने और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकाश करने ही में है।

मनुष्य को प्रतिष्ठा केवल इसीलिये नहीं प्राप्त होती है कि वह अधिकारी बनता है। परन्तु वह मनुष्य प्रतिष्ठित हो जाता है जिसका अधिकार में कोई भाग नहीं है।

मनुष्य स्वयम् अपने प्रति किसी प्रकार की भलाई नहीं कर सकता और फिर ईश्वर उससे भलाई अथवा बुराई के विषय में प्रश्न करेगा।

उसका यहाँ पर अपना कोई अधिकार नहीं है। उसे केवल कार्य करने की आज्ञा मिली है। बेचारे मनुष्य का अजीब हाल है। वह स्वतन्त्र और परतंत्र दोनों ही है।

न जुल्मस्ती कि ऐने इल्मो अदलस्त।
न जौरस्ती कि महज़े लुत्फो फ़ज़लस्त॥
व शरअत जाँ सबब तकलीफ़ करदन्द।
कि अज़ ज़ाते खुदत तारीफ़ करदन्द॥
चो अज़ तकीफ़े हक़ आजिज़ शवी तू।
बयकबार अज़ मियाँ बरुँ रवी तू॥
बकुल्लीयत रेहाई यावी अज़ खेश।
ग़नी गर्दी बहक़ ऐ मर्द दुरवेश॥
बेरो जाने पिदर तन दर क़ज़ा देह।
बतक़दीराते यज़दानी रज़ा देह॥

तमसीत

शुनीदम मन कि अन्दर गाहे नेस्ताँ।
सदफ़ बाला रवद अज़ बहरे अम्माँ॥
जे शीवे क़ार बर आयद बरफ़राज़।
बरूए बह बनशीनद दहन बाज़॥

इसको अत्याचार कदापि नहीं कह सकते। वरन इसे न्याय और ज्ञान कह सकते हैं। यह जबर्दस्ती नहीं कही जा सकती है। इसके विपरीत इस इसे दया और भलाई के नाम से पुकार सकते हैं।

तुझको इसीलिये धर्म्मग्रन्थों का अध्ययन करने की आज्ञा दी गई है कि तू अपने वास्तविक रूप को पहचान ले।

जब तू ईश्वरीय आज्ञानुसार चलने लगेगा, तब तेरा [illegible]
जायगा।

और अहंकार को बिल्कुल छोड़ देगा। हे [illegible]
ईश्वर को पाकर निहाल हो जायगा।

प्रिय पुत्र! जो ईश्वर की आज्ञानुसार [illegible]
अपना शरीर उसकी सेवा में [illegible]
प्रसन्न रह।

उदाहरण

[illegible]

चे बूद अन्दर अज्ल ऐ मर्द ना अह्।
कि ईं गश्ता मोहम्मद व आँ अबूजेह्॥
कसे कू वा खुदा चूनो चरा गुफ्त।
जो मुशरिक हुजरतश रा ना सजा गुफ्त॥
बरा जेबद के पुरसद अज चे व चूँ।
न बाशद एतराज अज बन्दा मौजूँ॥
खुदावन्दी हमाँ दर किबरयाईस्त।
न इल्लत लायके फेले खुदाईस्त॥
सजावारे खुदाई लुत्फो कहस्त।
वलेकिन बन्दगी दर शुक्रो सबरस्त॥
करामत आदमी रा जे इज्जतरारीस्त।
न आँ कूरा नसीबे इख्तयारीस्त॥
न बूदा हेच खैरश हरगिज अज खुद।
पसंगाह पुर्सदश अज नेको अज बद॥
नदारद इख्तयारो गश्ता मामूर।
जहे मिसकीं कि शुद मुख्तारो मजबूर॥

ऐ मूर्ख! मनुष्य के आरम्भ में कौन सी ऐसी बात होगई थी जिसके कारण एक मुहम्मद बन गया और दूसरा शैतान।

जिस मनुष्य ने ईश्वर के सम्मुख किसी प्रकार की दलील पेश की उसकी आज्ञा के ग्रहण करने में आनाकानी की,

उसने गोया कई देवताओं के पूजक के समान उसे बुरा कहा। तुमसे किसी बात का उत्तर मांगना उसी को शोभा देता है।

सेवकों का किसी प्रकार की आनाकानी करना अनुचित है? ईश्वर की ईश्वरता इसी में है कि वह सबसे बड़ा है। उसके कार्यों के कारण हो ही नहीं सकते।

दया अथवा क्रोध परमात्मा को ही शोभा देता है। मनुष्य की भलाई केवल धैर्य्य धारण करने और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकाश करने ही में है।

मनुष्य को प्रतिष्ठा केवल इसीलिये नहीं प्राप्त होती है कि वह अधिकारी बनता है। परन्तु वह मनुष्य प्रतिष्ठित हो जाता है जिसका अधिकार में कोई भाग नहीं है।

मनुष्य स्वयम् अपने प्रति किसी प्रकार की भलाई नहीं कर सकता और फिर ईश्वर उससे भलाई अथवा बुराई के विषय में प्रश्न करेगा।

उसका यहाँ पर अपना कोई अधिकार नहीं है। उसे केवल कार्य करने की आज्ञा मिली है। बेचारे मनुष्य का अजीब हाल है। वह स्वतन्त्र और परतंत्र दोनों ही है।

न ज़ुल्मस्ती कि ऐने इल्मो अदलस्त।
न जौरस्ती कि महज़े लुत्फो फ़ज़लस्त॥
व शरअत जाँ सबब तकलीफ़ करदन्द।
कि अज़ जाते खुदत तारीफ़ करदन्द॥
चो अज़ तकोफ़े हक़ आजिज़ शवी तू।
बयकबार अज़ मियाँ बरख़ेज़ रवी तू॥
बकुल्लीयत रेहाई याबी अज़ खेश।
शनी नहीं बहक़ ऐ मर्द दुरवेश॥
घेरो जाने पिदर तन दर क़ज़ा देह।
बतक़दीराते यज़दानी रज़ा देह॥

तमसील

शुनीदम मन कि अन्दर शहे नेम्तां।
सदफ़ वाला खद अज़ बहरे अम्मां॥
जे शीवे क़ार बद आयद बरकराज़।
बरूए वह बनशीनद दहन बाज़॥

इसको अत्याचार कदापि नहीं कह सकते। वरन इसे न्याय और ज्ञान कह सकते हैं। यह जबरदस्ती नहीं कही जा सकती है। इसके विपरीत इस इसे दया और भलाई के नाम से पुकार सकते हैं।

तुझको इसीलिये धर्मग्रन्थों का अध्ययन करने को कहा गया है ताकि तू अपने वास्तविक रूप को पहचान ले।

जब तू ईश्वरीय आज्ञानुसार चलने लगेगा, तब तुझे [illegible] जानेगा।

और अन्त में ...

चे बूद अन्दर अज़ल ऐ मर्द ना अह्ल।
कि ईं गश्ता मोहम्मद व आँ अबूजेह्ल॥
कसे कू वा ख़ुदा चूनो चरा गुफ़्त।
जो मुशरिक हज़रतश रा ना सज़ा गुफ़्त॥
वरा ज़ेबद के पुरसद अज़ चे व चूँ।
न बाशद एतराज़ अज़ बन्दा मौजूँ॥
ख़ुदावन्दी हमाँ दर किब्रयाईस्त।
न इल्लत लायक़े फ़ेले ख़ुदाईस्त॥
सज़ावारे ख़ुदाई लुत्फ़ो क़हस्त।
वलेकिन बन्दगी दर शुक्रो सब्रस्त॥
करामत आदमी रा ज़े इज़तरारीस्त।
न आँ कूरा नसीबे इख़्तयारीस्त॥
न बूदा हेच ख़ैरश हरगिज़ अज़ ख़ुद।
पसंगाह पुरसदश अज़ नेको अज़ बद॥
नदारद इख़्त्यारो गश्ता मामूर।
ज़हे मिसकीं कि शुद मुख़तारो मजबूर॥

ऐ मूर्ख! मनुष्य के आरम्भ में कौन सी ऐसी बात होगई थी जिसके कारण एक मुहम्मद बन गया और दूसरा शैतान।

जिस मनुष्य ने ईश्वर के सम्मुख किसी प्रकार की दलील पेश की उसकी आज्ञा के ग्रहण करने में आनाकानी की,

उसने गोया कई देवताओं के पूजक के समान उसे बुरा कहा। तुमसे किसी बात का उत्तर मांगना उसी को शोभा देता है।

सेवकों का किसी प्रकार की आनाकानी करना अनुचित है? ईश्वर की ईश्वरता इसी में है कि वह सबसे बड़ा है। उसके कार्यों के कारण हो ही नहीं सकते।

दया अथवा क्रोध परमात्मा को ही शोभा देता है। मनुष्य की भलाई केवल धैर्य्य धारण करने और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकाश करने ही में है।

मनुष्य को प्रतिष्ठा केवल इसीलिये नहीं प्राप्त होती है कि वह अधिकारी बनता है। परन्तु वह मनुष्य प्रतिष्ठित हो जाता है जिसका अधिकार में कोई भाग नहीं है।

मनुष्य स्वयम् अपने प्रति किसी प्रकार की भलाई नहीं कर सकता और फिर ईश्वर उससे भलाई अथवा बुराई के विषय में प्रश्न करेगा।

उसका यहाँ पर अपना कोई अधिकार नहीं है। उसे केवल कार्य करने की आज्ञा मिली है। बेचारे मनुष्य का अजीब हाल है। वह स्वतन्त्र और परतंत्र दोनों ही है।

ईरान के सूफी कवि

न जुल्मस्ती कि ऐने इल्मो अदलस्त।
न जौरस्ती कि महज़े लुत्फो फ़ज़लस्त॥
व शरअत जाँ सबब तकलीफ़ करदन्द।
कि अज़ जाते खुदत तारीफ करदन्द॥
चो अज़ तकीफ़े हक़ आजिज़ शवी तू।
बयकबार अज़ मियाँ बरूँ रवी तू॥
बकुल्लीयत रेहाई यावी अज़ खेश।
ग़नी गर्दी वहक़ ऐ मर्दे दुरवेश॥
बेरो जाने पिदर तन दर क़ज़ा देह।
बतक़दीराते यज़दानी रज़ा देह॥

तमसील

शुनीदम मन कि अन्दर माहे नेस्ताँ।
सदफ़ बाला रवद अज़ बहे अब्माँ॥
जे शौके क़ार बुद आयद बरूराज़।
बरूए वह बनशीनद दहन बाज़॥

इसको अत्याचार कदापि नहीं कह सकते। वरन् इसे न्याय और ज्ञान कह सकते हैं। यह ज़बर्दस्ती नहीं कही जा सकती है। इसके विपरीत हम इसे दया और भलाई के नाम से पुकार सकते हैं।

तुझको इसीलिये धर्मग्रन्थों का अध्ययन करने की आज्ञा दी गई है कि तू अपने वास्तविक रूप को पहचान ले।

जब तू ईश्वरीय आज्ञानुसार चलने लगेगा, उस समय बीच में से निकल जायगा।

और अहंकार को बिल्कुल छोड़ देगा। हे त्यागी! उस समय तू ईश्वर को पाकर मालामाल हो जायगा।

प्रिय पुत्र! जा ईश्वर की आज्ञानुसार कार्य करना आरम्भ कर दे। अपना शरीर उसको अर्पण कर दे और वह जो कुछ करता है उसमें प्रसन्न रह।

उदाहरण

मैंने सुना है कि स्वाती में सीपियाँ पानी के अन्दर से नदी के गम्भीर गर्भ में से निकल कर उसकी सतह पर आ जाती हैं।

इसके उपरान्त मुँह खोलकर फिर पानी के अन्दर बैठ जाती हैं।

ये मूर्ख! मनुष्य के आरम्भ में कौन सी ऐसी बात होगई थी जिसके कारण एक मुहम्मद बन गया और दूसरा शैतान।

जिस मनुष्य ने ईश्वर के सम्मुख किसी प्रकार की दलील पेश की उसकी आज्ञा के ग्रहण करने में आनाकानी की,

उसने गोया कई देवताओं के पूजक के समान उसे बुरा कहा। तुमसे किसी बात का उत्तर मांगना उसी को शोभा देता है।

सेवकों का किसी प्रकार की आनाकानी करना अनुचित है? ईश्वर की ईश्वरता इसी में है कि वह सबसे बड़ा है। उसके कार्यों के कारण हो ही नहीं सकते।

दया अथवा क्रोध परमात्मा को ही शोभा देता है। मनुष्य की भलाई केवल धैर्य्य धारण करने और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकाश करने ही में है।

मनुष्य को प्रतिष्ठा केवल इसीलिये नहीं प्राप्त होती है कि वह अधिकारी बनता है। परन्तु वह मनुष्य प्रतिष्ठित हो जाता है जिसका अधिकार में कोई भाग नहीं है।

मनुष्य स्वयम् अपने प्रति किसी प्रकार की भलाई नहीं कर सकता और फिर ईश्वर उससे भलाई अथवा बुराई के विषय में प्रश्न करेगा।

उसका यहाँ पर अपना कोई अधिकार नहीं है। उसे केवल कार्य करने की आज्ञा मिली है। बेचारे मनुष्य का अजीब हाल है। वह स्वतन्त्र और परतंत्र दोनों ही है।

न जुल्मस्ती कि ऐने इल्मो अदलस्त।
न जौरस्ती कि महज़े लुत्फ़ो फ़ज़लस्त॥
व शरअत जाँ सबब तकलीफ़ करदन्द।
कि अज़ ज़ाते खुदत तारीफ़ करदन्द॥
चो अज़ तकीफ़े हक़ आजिज़ शवी तू।
बयकबार अज़ मियाँ बरूँ रवी तू॥
बकुल्लीयत रेहाई यावी अज़ खेश।
ग़नी गर्दी वहक़ ऐ मर्दे दुरवेश॥
बेरो जाने पिदर तन दर क़ज़ा देह।
बतक़दीराते यज़दानी रज़ा देह॥

तमसील

शुनीदम मन कि अन्दर माहे नेस्ताँ।
सदफ़ वाला रवद अज़ बहे अम्माँ॥
ज़े शीवे क़ार वह आयद बरफ़राज़।
बरूए वह बनशीनद दहन बाज़॥

इसको अत्याचार कदापि नहीं कह सकते। वरन् इसे न्याय और ज्ञान कह सकते हैं। यह ज़बर्दस्ती नहीं कही जा सकती है। इसके विपरीत हम इसे दया और भलाई के नाम से पुकार सकते हैं।

तुझको इसीलिये धर्म्मग्रन्थों का अध्ययन करने की आज्ञा दी गई है कि तू अपने वास्तविक रूप को पहचान ले।

जब तू ईश्वरीय आज्ञानुसार चलने लगेगा, उस समय बीच में से निकल जायगा।

और अन्धकार को बिल्कुल छोड़ देगा। हे [illegible] उस समय तू ईश्वर को पाकर मालामाल हो जायगा।

[illegible]

बुखारे मुरतफा गरदद जे दरिया।
फरो बारद बा मेहे हक नजाजा॥
चकद अन्दर दहानश कअए चन्द।
शवद बस्ता दहाँ ऊ बसद बन्द॥
रवद बा कारे दरिया बादले पुर।
शवद आँ कअए बारां यके दर॥
बकार अन्दर रवद गव्वास दरिया।
बजो आरद बरूँ लुल्लू लद लाला॥
तने तू साहिलो हस्ती चु दरियास्त।
बुखारश फैजो बारां इल्मे इल्मास्त॥
सरद गव्वासे ईं बहे अजीमस्त।
कि ऊरा सद जवाहिर दर गलीमस्त॥
दिल आमद इल्म रा मानिन्द यक जर्फ।
सदफ बर इल्मे दिल सोतस्त व हर्फ॥
नफस गर्दद रवाँ चूँ बर्फे लामा।
रसद जू हरफहा बरगोशे सामा॥

नदी से भाप ऊपर उठती है और फिर नीचे ही बरस जाती है। ईश्वर की कृपा से सीप के मुख में कुछ बूँदें टपक जाती हैं।

बस उसका मुख फिर इस प्रकार बन्द हो जाता है जैसे उसमें सैकड़ों ताले डाल दिये गये हों।

प्रसन्नता के साथ सीप पुनः नदी की तह में चली जाती है और वह बूँदें एक बड़े मोती के रूप में परिणित हो जाती हैं।

पनडुब्बा—डुबकी लगाकर तह में पहुँचता है और उस उज्ज्वल मोती को बाहर ले आता है।

तेरा शरीर तट है और जीवन सरिता के समान है। उस सरिता की भाप ईश्वर है और उसके नामों का ज्ञान वर्षा है।

बुद्धि इस बड़ी नदी में डुबकी लगाने वाली है। सहस्रों मोती उसकी झोली में आ जाते हैं।

हृदय, ज्ञान के लिये एक बर्तन के समान है। शब्द और अक्षर, हृदय की ज्ञान शक्ति के सीप हैं।

श्वास इस प्रकार चलती है, जैसे चपला—चपल गति से। और उससे बातें सुनने वाले के कानों तक पहुँचती हैं।

वले कारी कि अज्ज आवो गिल आमद।
न चूँ इल्मस्त काँ करे दिल आमद॥
मियाने जिस्मो जाँ वनिगर चे फ़र्क़स्त।
कि ईं रा गर्व गीरो आँ चु शरक़ीयत॥
अज़ीजा वाजदाँ अहवाले आमाल।
वनिस्वत वा उल्मे क़ालो वामा हाल॥
न इल्मस्त आँके दारद मेले दुनयई।
कि सूरत दारद आला नीस्त मानयई॥
नगरदद जमा हरगिज़ इल्म वा आज़।
मलक खाही सगज़ खुद दूर आँदाज़॥
उल्मे दीं चे इखलाक़ फ़रिश्तत।
नवाशद दर दिले कू सग सरिश्तत॥
हदीसे मुसतफा आखिर हमींनस्त।
नेको वशुनो कि अलवत्ता चुनींनस्त॥
दुरूँ खानए चूँ हस्त सूरत।
फ़रिश्ता नयावद अन्दरूए ऊरूरत॥

परन्तु यह मिट्टी और जल के मिश्रण का कार्य उस ज्ञान के समान नहीं है जो हृदय से प्राप्त होता है।

नास्तिक ध्यान से देख कि शरीर और प्राण में कितना अन्तर है। यदि एक पूर्व है तो दूसरा पश्चिम।

यही से तू इस बात की पहचान कर कि कौन सा कार्य तुझे किस ओर लिये जा रहा है। मौलिक ज्ञान और अनुभवजन्य ज्ञान के अन्तर पर दृष्टि डाल।

जो ज्ञान संसार की ओर ले जाता है उसे ज्ञान के नाम से कदापि सम्बोधित नहीं कर सकते हैं। कारण कि उसका अस्तित्व अवश्य है, परन्तु उसमें किसी प्रकार का आशय नहीं पाया जाता।

ज्ञान वासना और इच्छा से परे है। यदि तू देवता बनना चाहता है तो कुत्ते का (इच्छाओं को) अपने पास से दूर कर।

धार्मिक ज्ञान—देवताओं का ज्ञान है। यह उस मनुष्य को प्राप्त नहीं हो सकता है, जो कुत्ते के समान स्वभाव रखता है।

धर्म का यही सार है। धार्मिक ग्रन्थों की अन्तिम शिक्षा यही है। इसको ध्यान में खूब कर समझ ले कि निस्सन्देह ऐसा ही है।

किसी घर में—जहाँ इस ज्ञान का अभाव है, देवता आ ही नहीं सकते।

निकाहे मानवी उफ़्ताद दर दीं।
जहाँरा नफ़्से कुल्ली दाद कावीं॥
अज़ीशाँ मे पिदीद आयद फ़साहत।
उल्मो नुत्क़ो एखलासो सवाहत॥
मलाहत अज़ जहाने वेमिसाली।
दर आमद हमचो रिन्दे ला उबाली॥
वशाहीरस्तानेश नेकोई अलम ज़द।
हमह तरतीव आलम रा वहमज़द॥
गहे वर रख़्श हुस्न ऊ शहसवारस्त।
गहे वा तेग़े नुत्क़े आवदारस्त॥
चु दर शख़्सस्त खानन्दश मलाहत।
चु दर नुत्क़स्त गोयन्दश फ़साहत॥
वलीओ शाहो दुरवेशो पयम्बर।
हमह दर तह्ते हुक्मे ऊ मसख़्खर॥
दरूने हुस्न रूए नीकू आँ चीस्त।
न आँ हुस्नस्त तनहाई गो आँ चीस्त॥
जुज़ अज़ हक़ मी न आयद दिलरुबाई।
कि शिरकत नेस्त कस रा दर ख़ुदाई॥

उनका सम्बन्ध आन्तरिक रूप से धर्म्मानुसार हो गया और इन्द्रियों ने सारे संसार को मेहर में दे दिया।

उन्हीं से आनन्द प्रदायिनी बातें, सुन्दर स्वभाव तथा गुण उत्पन्न होते हैं।

इसके उपरान्त इस विलक्षण संसार से लावण्य एक मस्त और मतवाले के समान प्रकट हुआ।

उसने सौन्दर्य-प्रदेश में अपनी विजय-पताका फहरा दी और संसार के संम्पूर्ण ज्ञान को भुला दिया।

कभी तो वह घोड़े पर आसन जमाए हुए दिखलाई देता है और कभी सुन्दर और मनोमोहक वार्त्तालाप की तीक्ष्ण तलवार हाथ में लिए हुए दृष्टिगोचर होता है।

यदि वह किसी मनुष्य में है तो उसे मधुरता कहते हैं।

सिद्ध, सम्राट साधु और सन्यासी सब उसी की अज्ञानुसार चलते हैं।

सुन्दर मुख में कौनसी बात है? यदि वह केवल सौन्दर्य ही नहीं है तो और क्या वस्तु है?

ईश्वर के पास से यदि वह नहीं आया है तो उसमें मादकता कहाँ से आती है। वह केवल उसी की देन है। उसकी सम्पत्ति में कोई हिस्सेदार नहीं है।

दिगर वारा शवद पैदा जहाने।
वहर लहज़ा ज़मीनो आसमाने॥
वहर लहज़ा जवाँ ईं कोहना पीरस्त।
वहरदम अन्दरो व हशरो वशीरस्त॥
दरो चीज़े दो सायत मनीआयद।
दराँ लहज़ा कि मी मीरद वे ज़ायद॥
वलेकिन तामुतुलकुवरा न ईनस्त।
कि ईं वूमे अमल वाँ योम हीनस्त॥
अज़ाँ ताईं वसे फ़ुरक़त ज़ीनहार।
वनादानी मकुन खुद राज़े कुफ़्फ़ार॥
नज़र वकुशाय दर तफ़सीलो जमाल।
निगर दर सायतो रोज़ो महो साल॥

तमसील

अगर ख़ाही कि ईं मानी वेदानी।
तोरा हम हस्त मरकव ज़िन्दगानी॥
जे हर चे अन्दर जहाँ अज़ शेवो वाला अस्त।
मिसालश दर तनो जाने तो पैदास्त॥

इसके उपरान्त, दूसरी वार फिर एक संसार उत्पन्न हो जाता है और प्रत्येक क्षण में एक पृथ्वी और एक आकाश उत्पन्न होता है।

क्षण भर में यह वृद्ध युवक हो जाता है। और प्रतिक्षण उसमें नवीनता की लहर दौड़ती रहती है।

एक ही वस्तु अधिक समय तक उसमें नहीं रह सकती। जैसे ही उसकी मृत्यु होती है, वैसे ही उत्पत्ति भी हो जाती है।

परन्तु इसको प्रलय नहीं कह सकते। इस दिन सर्कार के सम्मुख अपने कार्यों का विवरण नहीं देना पड़ता है।

वरन् यह वह समय है जब कि कार्य किया जाता है। उस प्रलय में और इस संसार के जीवन तथा मरण में वहुत अन्तर है।

सावधान्, मूर्खता में पड़कर ईश्वर से विमुख मत होना। तू थोड़े समय में वहुत करने पर अपनी दृष्टि लगाले और घन्टों, महीनों और वर्षों की अवस्था को देख।

उदाहरण

यदि तू इस जन्म-मृत्यु सम्बन्धी रहस्य को समझना चाहता है तो अपने ही मृत्यु और जन्म को देख।

इस संसार में ऊपर और नीचे की जो वस्तु है, उसका उदाहरण तेरे ही शरीर में वर्त्तमान है।

जहाँ चूँ तुस्त यक शख्से मोअय्यन।
तू ऊ रा गश्ता चूं जाँ ऊ तुरा तन॥
सेगूना नौये इन्साँ रा ममातस्त।
यके हर लहज़ा वाँ दर हत्वे ज़ातस्त॥
दो दीगर दाँ ममाते इख्तियारीस्त।
शियुम मुरदन मरू रा इज़्तिरारीस्त॥
चु मर्गों ज़िन्दगी वाशद मुक़ाबिल।
से नौ आमद हयातश दर सेह मंज़िल॥
जहाँ रा नेस्त मर्गे इख्तयारी।
कि ईं रा अज़ हना आलम तो दारी॥
वले हर लहज़ा मी गर्दद मुबद्दल।
दर आख़िर हम शबद मानिन्दे अव्वल॥
हरआँचे आँ गर्दद अन्दर हश्र पैदा।
ज़े तो दर नज़आ नी हवेदा॥
तने तो चूं ज़मीं सर आसमानस्त।
हवासत अंजुमो खुरशीद जानस्त॥

संसार तेरे ही समान एक शरीर धारी मनुष्य है। तू ही उसका प्राण है और तू ही शरीर।

मनुष्यों की मृत्यु तीन प्रकार की होती है। पहली वह है जो प्रतिक्षण होती रहती है और वह है उसकी जाति के अनुसार।

दूसरी मृत्यु वह है जो अपने अधिकार की कही जा सकती है। परन्तु तीसरी मृत्यु लाचारी की मृत्यु है।

जब मृत्यु और जीवन एक दूसरे के सन्मुख आते हैं, उस समय मनुष्य का जीवन तीन भागों में विभाजित हो जाता है।

संसार स्वयम् अपनी इच्छा से ही मृत्यु का आवाहन नहीं करता है। यह अधिकार केवल तुझे ही प्राप्त है।

परन्तु संसार प्रति क्षण बदला करता है और अन्तिम क्षण में भी पहले ही के समान रहता है।

जो वस्तु जन्म लेते समय तुझमें उत्पन्न हो जाती है, वह प्राण निकलने की अवस्था में तुझसे पृथक हो जाती है।

तेरा शरीर पृथ्वी के समान है और सिर आकाश की तरह। तेरी इन्द्रियाँ और इच्छायें तारागणों के समान हैं और तेरी आत्मा सूर्य के समान है।

चु कोहरत उस्तुखाँहाये कि सख्तस्त।
नबातस्त मूयो अतराफ़त दरख्तस्त॥
तनत दर वक्त मुर्दन अज़ नदामत।
वेलर्ज़द चूँ ज़मीं रोज़े क़यामत॥
दिमाग़ आशुफ़्ताओ जाँ तीरा गर्दद।
हवासत हमचो अंजुम खीरा गर्दद॥
मसामत गर्दद अज़ खवै हमचो दरिया।
तू दरवै ग़र्क़ा गश्ता वे सरोपा॥
शवद अज़ जाँ कनिश ऐ मर्द मिसकीं।
जे सुस्ती उस्तखाँहा चूँ परमे रंगीं॥
वहम पेचीदा गर्दद साक़ वा साक़।
हमा जुफ़्त शवद अज़ जुफ़्ते खुद ताक़॥
चो रूह अज़ तन बकुल्लीयत जुदा शुद।
ज़मीनत क़ाए सक़सफ़ ला तुरा शुद॥
बदाँ मिनवाल वाशद कारे आलम।
कि तू दर खेश मे बीनी दरानाँदम॥

तेरी मज़बूत हड्डियाँ पर्वत के समान हैं और तेरे बाल घास हैं। यही नहीं, तेरे हाथ पैर भी वृक्ष के समान हैं।

मृत्यु के समय तेरा शरीर इस प्रकार काँपता है, जिस प्रकार प्रलय के दिन यह पृथ्वी काँपेगी।

उस समय तेरा मस्तिष्क घबड़ा उठता है और तेरे प्राणों के आगे अँधेरा छा जाता है। तेरी ज्ञानेन्द्रियाँ तारागणों के समान झिलमिलाने लगती हैं।

और तेरे शरीर के छिद्रों से पसीना बहने लगता है—भय के कारण। और तू संज्ञाशून्य होकर उसमें डूब जाता है।

हे दीन मनुष्य! प्राण निकलते समय तेरी हड्डियाँ रंगे हुए ऊन के समान नर्म हो जाती हैं और तेरी पिंडलियाँ शक्तिहीन हो जाती हैं।

तेरे शरीर के सब जोड़—सब बन्धन ढीले पड़ जाते हैं।

जिस समय प्राण शरीर से निकल जाते हैं उस समय तेरी हरी भरी पृथ्वी बंजर हो जाती है।

इस संसार का कार्य भी इसी ढंग से चलता है। जैसा कि तू मृत्यु के समय अपने अन्दर देखता है।

बक़ा हक़स्तो बाक़ी जुम्ला फ़ानीस्त।
बयानश जुम्ला दर सबज़ल नसानीस्त॥
चु कुज़ो मन अलैहा फ़ाँ बयाँ कर्द।
लक़ी खल्क़ इन जदीद हम अयाँ कर्द॥
बुवद ईजादो एदामे दो आलम।
चु खल्को बासे नस्से इन्ने आदम॥
हमेशा खल्क़े दर खल्क़े जदीदस्त।
अगर्चे मुद्दते उमरश मदीदस्त॥
हमेशा फ़ैज़े फ़ज़्ल हक़ तआला।
बुवद दर शाने खुद अन्दर नज़ला॥
अज़ाँ जानिब बुवद ईजादो तकमील।
बज़ाँ जानिब बुवद दर लहज़ा तबदील॥
बलेकिन चूँ गुज़रते ईं तौरे दुनिया।
बकाए कुल बुवद दर रोज़े उक़्बा॥
कि दर चीज़े कि बीनी बिज़्ज़रूरत।
दो आलम दारद अज़ मानी व सूरत॥
बिनाले अज़्ज़ली एने बिराकस्त।
मराँ दीगर बे इन्दराज़ बाकस्त॥

चु कोहस्त उस्तुखाँ मे कि मानन्द।
नबातस्त मूयो अतराफ दरतन्द॥
तनत दर वक्त मुर्दन अज नजातन्द।
बेलर्जद चूँ जमीं रोजे कयामत॥
दिमाग आशुफ्ताओ जाँ तीरा गर्दद।
हवासत हमचो अंजुम सीरा गर्दद॥
मसामत गर्दद अज सबै हमचो दरिया।
तू दरवै शकी गश्ता बे सरोपा॥
शवद अज जाँ कनिश ऐ मर्द मिसकीं।
जे सुस्ती उस्तखाँ चूँ पश्मे रंगीं॥
बहम पेचीदा गर्दद साक बा साक।
हमा जुफ्त शवद अज जुफ्ते खुद बाक॥
चो रूह अज तन बदुज्दीयत जुदा शुद।
जमीनत क्राए सक्सक ला तुरा शुद॥
बदाँ मिनवाल बाशद कारे आलम।
कि तू दर खेश मे बीनी दरानदम॥

तेरी मजबूत हड्डियाँ पर्वत के समान हैं और तेरे बाल घास हैं। यही नहीं, तेरे हाथ पैर भी वृक्ष के समान हैं।

मृत्यु के समय तेरा शरीर इस प्रकार काँपता है, जिस प्रकार प्रलय के दिन यह पृथ्वी कांपेगी।

उस समय तेरा मस्तिष्क घबड़ा उठता है और तेरे प्राणों के आगे अँधेरा छा जाता है। तेरी ज्ञानेन्द्रियाँ तारागणों के समान झिलमिलाने लगती हैं।

और तेरे शरीर के छिद्रों से पसीना बहने लगता है—भय के कारण। और तू संज्ञाशून्य होकर उसमें डूब जाता है।

हे दीन मनुष्य! प्राण निकलते समय तेरी हड्डियाँ रंगे हुए ऊन के समान नर्म हो जाती है और तेरी पिंडलियाँ शक्तिहीन हो जाती हैं।

तेरे शरीर के सब जोड़—सब बन्धन ढीले पड़ जाते हैं।

जिस समय प्राण शरीर से निकल जाते हैं उस समय तेरी हरी भरी पृथ्वी बंजर हो जाती है।

इस संसार का कार्य भी इसी ढंग से चलता है। जैसा कि तू मृत्यु के समय अपने अन्दर देखता है।

वक़ा हक़्रतो वाक़ी जुम्ला फ़ानीस्त ।
बयानश जुम्ला दर सबउल मसानीस्त ॥
चु कुल्ली मन अलैहा फ़ाँ बयाँ कर्द ।
लक़ी खल्क़ इन जदीद हम अयाँ कर्द ॥
बुवद ईजादो एदामे दो आलम ।
चु खल्क़ो वासे नक़्से इन्ने आदम ॥
हमेशा खल्क़े दर खल्क़े जदीदस्त ।
अगर्चे मुद्दते उमरश मदीदस्त ॥
हमेशा फ़ैज़े फ़ज़्ल हक़ तआला ।
बुवद दर शाने खुद अन्दर तजल्ला ॥
अज़ाँ जानिब बुवद ईजादो तक़्मील ।
वज़ीं जानिब बुवद हर लह्ज़ा तबदील ॥
वलेकिन चूँ गुज़श्ते ईं तौरे दुनिया ।
बक़ाए कुल बुवद दर रोज़े उक़्बा ॥
कि हर चीज़े कि बीनी बिज़्ज़रूरत ।
दो आलम दारद अज़ मानी व सूरत ॥
बिसाले अव्वलीं ऐने फ़िराक़स्त ।
मराँ दीगर ज़े इन्दल्लाह वाक़स्त ॥

इस संसार में सत् के अतिरिक्त सभी वस्तुएँ नाशवान हैं। क़ुरआन में यही दिखलाया गया है।

संसार की सभी वस्तुयें क्षणिक हैं। परन्तु उन सबका सम्बन्ध नवीन जीवन से है।

दोनों जहानों का उत्पन्न करना और नाश करना, एक मनुष्य के चित्र बनाने और उसको मिटा देने के समान है।

मनुष्य शरीर में जीवन को ही कहते हैं। परन्तु इस स्थान में कहीं किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता है और न ही नाश का नाम है।

यहाँ पर प्रत्येक वस्तु आदि में भी ऐसा ही दिखलाई देता है, जैसी अन्त तक रहती है।

और यहाँ पर ईश्वर की महिमा प्रकट रूप से दृष्टिगोचर होती है। यह ऐसा स्थान है, जहाँ पर संसार की सम्पूर्ण गुप्त वस्तुएँ प्रकट दिखलाई पड़ती हैं।

फ़ायदा

जिस कार्य को तू पहले करता है वह कुछ कठिन-सा ज्ञात होता है। परन्तु बार बार करने से वही कार्य सरल हो जाता है।

उस कार्य के बार बार करने में लाभ हो अथवा हानि परन्तु तेरे मस्तिष्क में एक वस्तु पर्याप्त मात्रा में इकट्ठी हो जाती है। अर्थात् उस कार्य के करने में जितनी भी वस्तुओं की तुझे आवश्यकता पड़ती है वे सब ज्ञान में आ जाती हैं।

यहाँ तक कि जिस प्रकार समय व्यतीत होने पर फलों में सुगन्ध आने लगती है उसी प्रकार उस कार्य के करने का स्वभाव पड़ जाता है।

अज़ाँ आमोख़्त ईसाँ पेशहारा।
वज़ाँ तरकीब कर्द अन्देशहारा॥
हमा अफ़आलो अक़वाले मुदख़्ख़र।
हवेदा गर्दद अन्दर रोज़े महशर॥
चु उरियाँ गरदी अज़ पैराहने तन।
शवद ऐनो हुनर यकबारा रौशन॥
तनत बाशद व लेकिन बे कुदूरत।
कि बिनुमायद अज़ो चूँ आब सूरत॥
हमा पैदा शवद आँजा ज़मायर।
फ़ेरो रवाँ आयते तुबलसरायर॥
दिगर बारा बयफ़के आलमे ख़ास।
शवद अख़लाक़े तो अजसामो अशख़ास॥
चुनाँ कज़ कुव्वते उनसुर दरींजा।
मवालीदे से गाना गश्त पैदा॥
हमा अख़लाक़े तो दर आलमे जाँ।
गहे अनवार गरदद गाहे नीराँ॥

इसी ढंग से मनुष्यों ने पेशों को सीखा है और इसी प्रकार उनकी गुत्थियों को सुलझाया है—उनकी बारीकियों को निकाला है।

यह सब बातें जो तुझमें इकट्ठी हो रही हैं मृत्यु के समय सामने आ जायँगी।

जब तू इस शरीर रूपी वस्त्र को पृथक करके नग्न हो जावेगा उस समय सम्पूर्ण भलाइयाँ और बुराइयाँ प्रकट हो जावेंगी।

तेरा शरीर तो रहेगा परन्तु उसमें मलीनता न होगी। उसमें जल के समान सुरत दिखलाई देगी

वहाँ तुझ के भीतर जिसी हुई सभी [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

तआयुन मुरतफ़ा गरदद जे हस्ती।
नमाँनद दर नज़र वाला व पस्ती॥
नमानद मर्ग तन दर दारे हैवाँ।
वयक रँगी वरायद क़ालिवो जाँ॥
वुवद पा व सरे तो जुमला चूँ दिल।
शवद साफ़ी जे ज़ुल्मत सूरते गिल॥
वे वीनी वे जहत हक़ रा तआला।
कुनद अज़ नूर हक़ वर तो तजल्ला॥
नदानम ता चे मस्तीहा कुनी तू।
दो आलम रा हमा वरहम ज़नी तू॥
सक़ाहुम ज़बोहुम चे वुवद वेअन्देश।
तहूरन चीस्त साफ़ी गश्तन अज़ खेश॥
जेहे लज़्ज़त जेहे दौलत जेहे जौक़।
जेहे हैरत जेहे हालत जेहे शौक़॥
खुशाआँदम कि मा वेखेश वाशेम।
ग़नीएं मुतलक़ो दुर्वेश वाशेम॥

उस समय वर्तमान संसार से तेरा विश्वास उठ जायगा। बड़ाई और छुटाई का विचार जाता रहेगा।

उस लोक में शरीर की मृत्यु न होगी और शरीर तथा आत्मा दोनों का एक ही रंग हो जायगा।

तू शिर से लेकर पैर तक दिल के ही समान हो जायगा और इस मिट्टी की मूर्त्ति के सामने का अन्धकार मिट जायगा।

उस समय तुझे बड़ी सरलता के साथ उस महान् परमेश्वर के दर्शन होंगे। वह अपने प्रकाश से तुझे प्रकाशित कर देगा।

मैं नहीं कह सकता उस समय तुझे कैसी प्रसन्नता होगी और कैसे कैसे विचार तेरे हृदय में उठेंगे। उस समय तुझमें दोनों जहानों को उलट डालने की शक्ति विद्यमान होगी।

उस समय तू यही सोचेगा आह! ईश्वर ने कैसा अमृत पिला दिया। इस प्रकार पवित्रता प्रदान करने वाली क्या वस्तु है? इस अहंकार को छोड़ देने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।

अहा! किस मुख से उस आनन्द का और उस वैभव का वर्णन करूँ?

वह कौनसी आश्चर्यमय घड़ी होगी, वह कौन सी सुखद अवस्था होगी जब हम बिल्कुल अपने को भूल जायँगे, चिन्ता से रहित होकर मतवाले बन जायेंगे।

न दीं न अक़्ल न तक़वा न इदराक।
फ़िताद मस्तो हैराँ बर सरे खाक॥
बहिश्तो खुल्दो हूर आँजा चे संजद।
कि बेगाना दराँ खिलवत न गुंजद॥
चु रूयत दीदमो खुरदम अजाँ मै।
नदानम ता चे खाहद शुद पस अज़वै॥
पए हर मस्तिए बाशद खुमारे।
दरीं अन्देशा दिल खूँ गश्तवारे॥

सवाल

क़दीमो मोहदिस अज़ हम चूँ जुदा शुद।
कि ईं आलम शुद आँदीगर खुदा शुद॥

जवाब

क़दीमो मोहदिस अज़ हम खुद जुदा नेस्त।
कि अज़ हस्तस्त बाक़ी दायमानेस्त॥
हमा आनस्तो ईं मानिन्दे अनक़ास्त।
जुज़ अज़ हक़ जुम्ला इस्मे बे मुसम्मास्त॥

वह कौन सी शुभ घड़ी होगी जब हमारे पास धर्म्म, परहेज़गारी और ज्ञान के नाम से कुछ भी न होगा और हम इस पृथ्वी पर मस्त पड़े हुए लोटते होंगे ?

स्वर्ग—वह सदैव आनन्द देने वाला जगत और अप्सराओं को वहाँ क्या गणना होगी ? उस स्थान पर किसी दूसरे का जाना हो ही नहीं सकता।

जब मैंने तेरा मुखड़ा देख लिया और उस मदिरा का घूँट ले लिया तब मैं नहीं कह सकता कि आगे क्या होगा।

मदिरा में मस्ती होती है, वह मतवाला बना देती है, परन्तु उसके उपरान्त नशा उतरता भी है और ख़ुमार आता है। मेरे हृदय में सदैव यही चिन्ता व्याप्त है कि कहीं इस मस्ती के उपरान्त भी ख़ुमार न आ जावे।

प्रश्न

शाश्वत और नाशवान [illegible] दूसरे से पृथक [illegible] और यह संसार तथा वह ईश्वर [illegible]

उत्तर

शाश्वत तथा नाशवान [illegible] दूसरे से पृथक नहीं है क्योंकि सृष्टि वन से ही उत्पन्न है

शाश्वत सब कुछ है और यह नाशवान सदैव नष्ट होने वाला वस्तु है [illegible] आवारक [illegible] नष्ट होने वाले हैं

अदम मौजूद गर्दद ई मुहाल।
वजूद आज रूए हस्ती लायजालस्त॥
ज आँ ई गर्दी न ई शवद आँ।
हमा इस्काल गर्दद वर तो आसाँ॥
जहाँ खुद जुम्ला अमरे एतबारीस्त।
चे आँ यक नुक्ता कंदर दौर सारीस्त॥
बेरी यक नुक्ताए आतश बगर्दी।
कि बीनी दायरा अज सुरअत आँ॥
यके गर्दद शुमार आयद बनाचार।
नगर्दद वाहिद अज आदाद बिसयार॥
हदीसे मा से वल्लाहारा रहा कुन।
वअज्ले खेश आँरा जीं जुदा कुन॥
चु शकदारी दराँ कीं चूँ खयालस्त।
कि वा वहदत दुई ग्रेने जलालस्त॥
अदम मानिन्दे हस्ती बूवद यकता।
हमा कसरत जे निस्वत गश्त पैदा॥
जहरे इख्तिलाफ़ो कसरते शाँ।
शुदो पैदा जे बू क़ल्मूने इमकाँ॥

सृष्टि की उत्पत्ति से सत् में किसी प्रकार का विकार नहीं आता। सत् से यह जगत उत्पन्न होता है, परन्तु इसमें और उसमें अन्तर है।

सारी कठिनाइयाँ तेरे सम्मुख सरल हो जाती हैं। एक बिन्दु के समान जो घुमाने पर बराबर घूमता रहता है यह संसार भी एक विश्वास के योग्य विषय है।

एक आग की चिनगारी को लेकर घुमा। उसकी तीव्रता से एक वृत्त बन जायगा।

यदि एक गणना में आजाए तो फिर यह न हो सकेगा कि उसको बहुत सी संख्याओं में से निकाल दिया जावे।

ईश्वर के अतिरिक्त और जितनी वस्तुएँ हैं, उन सबको पृथक कर दे। अपनी बुद्धि द्वारा उसे अलग कर।

यदि तुझे उसमें सन्देह है, तो यही तेरे मार्ग का रोड़ा है। अद्वैत में दो का विचार करना ही पथ से विचलित हो जाना है।

मृत्यु भी जीवन के समान एक ही है और यह सारे भेद भाव केवल एक दूसरे का मिलान करने ही से उत्पन्न हुए हैं।

मनुष्य रंग विरंगे संसार में आकर चौकड़ी भूल जाता है। इसी से यह सम्पूर्ण भिन्नता उत्पन्न होती है।

बजूदे हर यके चूँ बूद वाहिद।
व वहदानीयते हक़ नेस्त शाहिद॥

सवाल

चे खाहद मर्द मआनी जाँ इबारत।
कि दारद नूर चश्मो लब इशारत॥
चे जोयद अज रुखो ज़ुल्फो खतो खाल।
कसे कंदर मक़ामातस्तो अहवाल॥

जवाब

हर आँ चीजे कि दर आलम अयानस्त।
चु अक्से जाकतावेआँ जहानस्त॥
जहाँ चूँ ज़ुल्फो खत्तो खालो अबरुस्त।
कि हर चीजे बजावे खेश नेकूस्त॥
तजल्ली गह जमालो गह जलालस्त।
रुखो ज़ुल्फआँ मआनी रा मिसालस्त॥
सिफाते हक़ तआला तुर्फो क़ुर्बस्त।
रुखो ज़ुल्फे बुनाँरा जाँ दो बहरस्त॥

जब कि प्रत्येक का अस्तित्व समान था तो फिर ईश्वर के एक होने का साक्षी और कौन हो सकता है?

चु महसूस आमदीं अन्दाजे मसाल।
नसुस्तज बहरे महसूसन्द मीजू॥
नदारद आलमे मानी निशानी।
कुजा बीनद मगरा लाजे मानी॥
हराँ मानी कि शुद बर चीज पैदा।
कुजा तावीरे लाजो या बद करा॥
चु अहले दिल कुनद तफसीरे मानी।
बमानिन्दे कुनद तावीरे मानी॥
कि महसूसात अजाँ आलम चु सायस्त।
कि ईं चूँ तिफलो आँ मानिन्दे दायस्त॥
बनज्दे मन खुद अन्दाजे मोअज्जल।
बराँ मअ्नी कितादं अज बजोर अक्ल॥
बमहसूसात खासु अज उफे आमस्त।
चे दानए आम कदाँ मानी कुदामस्त॥
नजर चूँ दर जहाँ आलम करदन्द।
अजाँजा लफ्जहारा नाल करदन्द॥

यही शब्द सौन्दर्य में भी सम्मिलित हैं और उसके साथ ही साथ इनकी भी प्रशंसा की जाती है।

अध्यात्मिक जगत की कोई निर्धारित सीमा नहीं है। कोरी बातों से निर्बल प्रतिज्ञाओं से वहाँ तक किस प्रकार पहुँच हो सकती है!

उस संसार के गुप्त रहस्यों का वर्णन शब्दों द्वारा किस प्रकार किया जा सकता है!

जब कोई साधु उन रहस्यों का वर्णन करता है तो उदाहरण द्वारा उनको समझाने का प्रयत्न करता है।

उस संसार की वे वस्तुएँ, जिनका हम अपनी इन्द्रियों द्वारा अनुभव करते हैं, छाया के समान हैं। कारण कि उसकी उपमा यदि हम छाया से देते हैं तो यह बच्चे के समान हैं और वही बच्चे को पालने वाली दाई है।

मैं विश्वास करता हूँ कि, उस जगत को विवेचना करने वाले शब्द पहले ही से निर्धारित कर लिये गये होंगे।

जिससे कि उनके द्वारा रहस्यों का उद्‌घाटन किया जा सके। जो शब्द साधारणतया वाद में निर्धारित किये गए हैं, उनसे रहस्यों की विवेचना उचित रूप से नहीं की जा सकती।

साधारण शब्द भला वहाँ तक किस प्रकार पहुँच सकते हैं? और साधारण लोग उन बातों की व्याख्या किस प्रकार कर सकते हैं।

गज़ाफ़ ऐ दोस्त नायद जह्ले तह्क़ीक़ ।
मरीरां कश्फ़ यावद या कि तसदीक़ ॥
बेगुफ़्तम बजए अलफ़ाज़ो मानी ।
तुरा सरवस्ता गर दारी बदानी ॥
नज़र कुन दर मआनी सूए ग़ायत ।
लवाज़िम रा यकायक कुन रियायत ॥
बवज्हे खास अज़ाँ तशवीह मी कुन ।
ज़े दीगर वज्हा तनज़ीह मीकुन ॥
चु शुदईं क़ायदा यकसर मुक़र्रर ।
नुमायम ज़ाँ मिसाले चन्द दीगर ॥

इशारत बचश्मो लब

निगर कज़ चश्मे शाहिद चीन्त पैदा ।
रियायत कुन लवाज़िम रा बदाँजा ॥
ज़े चश्मश खास्त बीमारी व मस्ती ।
ज़े लालश गश्त पैदा ऐने हस्ती ॥
ज़े चश्मे ऊ हमा दिलहा जिगर खार ।
लबे लालश शफ़ाए जाने बीमार ॥

ऐ मित्र ! खोज करने वालों से व्यर्थ की बातें नहीं आतीं, इन बातों को समझने के लिए पूरी जांच या अनुभव की आवश्यकता है ।

मैंने तुझे शब्दों और उनके अर्थों का भेद बतला दिया है । अब यदि तुझमें बुद्धि होगी तो सब बातों को समझ जायगा ।

तू अर्थ के भीतर छिपी हुई उसकी असलियत को देख और फिर जिस असलियत के वास्ते जिस वस्तु की आवश्यकता पड़े उसका ध्यान रख ।

किसी एक खास ढंग से तू उन अर्थों की व्याख्या करता जा और दूसरे ढंगों से उन व्याख्याओं की काट-छाँट करता जा ।

जब इस ढंग को तू बिल्कुल समझ गया है, अतएव मैं थोड़े से उदाहरण और भी तेरे सम्मुख रखता हूँ ।

नेत्रों और ओठों के प्रति

ध्यान से देख, प्रियतमा की आँख से कौनसी वस्तु प्रकट हो रही है। और उस वस्तु की आवश्यक बातों का विचार कर ।

उसके नेत्र से पीड़ा और मस्ती उत्पन्न हुई और उसके होठ से जीवन-प्रद धारा प्रकट हुई ।

उसकी आँख के कारण सभी अपने हृदयों को थामे हुए बैठे हैं और होठों के कारण सब जानें मस्त हैं ।

जे चश्मे ऊस्त दिलहा मस्तो मखमूर।
जे लाले ऊस्त जाँहा जुम्ला मसरूर॥
बचश्मश गर चे आलम दर नयावद।
लबश हर सायते लुक्के नुमायद॥
दमे अज मरदुमी दिलहा नवाजद।
दमे बेचारगाँ रा चारा साजद॥
बशोखी जाँ देहद दर आबो दर खाक।
बदम दादन जनद आतिश बर अफलाक॥
अजो हर गन्जा दामो दानए शुद।
बजो हर गोशए मैखानए शुद॥
जे गन्जा मी देहद हस्ती बयारत।
बयोसा मी कुनद बाजश इमारत॥
जे चश्मश खूने मा दर जोश दायम।
जे लालश जाने मा बेहोश दायम॥
बगम्जा चश्मे ऊ दिल मी रुबायद।
बअशवा लाले ऊ जाँ मी रुबायद॥

उनमें एक पीड़ा का अनुभव कर रहे हैं और उसके अरुणारे अधर पीड़ित हृदय के लिये, प्रेम-रोगी के लिये अमृत हो रहे हैं।

उन अधरों से सभी के प्राण प्रसन्न हो रहे हैं। उसकी दृष्टि में यद्यपि संसार समाता नहीं है, परन्तु उसका होंठ सदैव आनन्द प्रदान किया करता है।

किसी समय प्रेम से व्यक्ति हृदयों को सान्त्वना प्रदान किया करता है, और कभी दीनों की सुध लिया करता है। भटकतों को मार्ग बतलाया करता है।

वह अपनी चुलबुलाहट से बेजान में भी जान डालता है और फूँक मारकर आकाश में अग्नि उत्पन्न कर देता है।

उस आँख का प्रत्येक कटाक्ष, एक जाल और एक दाने के रूप में परिणत हो गया और उस होंठ से प्रत्येक कोना एक मदिरा-गृह बन गया।

शोखी और मान से वह जीवन को बर्बाद कर देता है, परन्तु चुम्बन देकर पुनः उसे जीवन प्रदान करता है।

हमारा रक्त उसकी आँख के कारण सदैव खौलता रहता है और हमारा प्राण उसके होंठ के कारण सदैव संजीवन रखता है।

उसकी आँख, शोखी से हृदय को मुट्ठी में कर लेती है और उसका होंठ दिल करके प्राण को आकर्षित कर लेता है।

चो बाज चश्मो लबश साही कनारे।
मरौ गोयद न आँ गोयद कि आरे॥
जे गम्जा आलमे रा कार साजद।
बयोसा उर जमाँ जाँ मी नाजद॥
अजो यक गम्जयो जाँ दादन अज मा।
बजो यक बोसयो इसतादन अज मा॥
कलमहिम बिलबसर शुद हस्ते आलम।
जे नफ्ते रूह पैदा गश्त आदम॥
चु अज चश्मो लबश अन्देशा करदन्द।
जहाने मै परस्ती पेशा करदन्द॥
नयायद दर्दी चश्मश जुम्ला दस्ती।
दरो चूँ आयद आखिर खाबे मस्ती॥
बजूदे मा हमा मस्तीस्त या खाब।
चे निस्बत खाक रा बा रब्बे अरबाब॥
खिरद दारद अजाँ सद गूना आशुफ्ता।
कि बल्तसना अला ऐनी चरा गुफ्ता॥

यदि तू एक बार उस आँख से और उस ओठ से मिलने की इच्छा प्रकट करेगा तो आँख कहेगी 'न' और ओठ कहेगा 'हाँ'।

शोखी दिखला कर आँख संसार की भलाई करती है और ओठ प्राणों को प्रसन्न रखता है।

उस आँख की एक तिरछी चितवन ऐसी है जिससे हमारे प्राण निकलने लगते हैं और उसका एक चुम्बन हमें प्राण दान देकर, जीवित कर देता है।

इस संसार का अन्त उस आँख के एक पलक मारने में हो जायगा जैसे आत्मा की फूँक से आदम उत्पन्न हो गया।

उसकी उस आँख और उस रसीले ओठ का विचार करके सारे संसार ने मदिरा पान करना स्वीकार कर लिया।

जब सम्पूर्ण जगत उसके दोनों नेत्रों में नहीं आता तो फिर मस्ती की निद्रा उसे किस प्रकार प्राप्त हो।

हमारा यह अस्तित्व या तो मस्ती है अथवा स्वप्न। मिट्टी को ईश्वर से क्या सम्बन्ध है?

उसने मेरी आँखों में बैठ कर क्या कहा? इस बात को सोचने में बुद्धि के सम्मुख सैकड़ों कठिनाइयाँ उपस्थित हैं।

सवाल

शरावो शमओ शाहिद रा चे मानीस्त।
खरावाती शुदन आखिर चे दानीस्त॥

जवाब

शरावो शमओ शाहिद ऐन मानीस्त।
कि दर हर सूरते ऊ रा तजल्लीस्त॥
शरावो शमा नूरो जौक़े इरफ़ाँ।
वे यीं शाहिद कि अज़ कस नेस्त पिनहाँ॥
शराब ईजा जुजाजह शमा मिसबाह।
वुवद शाहिद .फ़ुरूग़े नूरे अरवाह॥
जे शाहिद बर दिले मूसा शरर शुद।
शरावश आतिशो शमश शजर शुद॥
शरावो शमा जाँ आँ नूरे असरास्त।
वले शाहिद हमा आयाते कुबरास्त॥

प्रश्न

मदिरा, दीपक, और प्रियतमा से क्या आशय है? मतवाला हो जाना किस प्रकार के अधिकार का द्योतक है?

उत्तर

मदिरा, दीपक और प्रियतमा, ये सब मुख्य अंतरङ्ग वस्तुएं हैं, जिसकी झलक इन सभी नूरों में दिखलाई पड़ती है।

ऐ देखने वाले! देख, मदिरा, दीपक और प्रियतमा में कौनसा आनन्द छिपा हुआ है। यह एक ऐसा रहस्य है जिसको सभी जानते हैं।

इस स्थान में मदिरा फानूस के समान है और शमअ दीपक है। और साक्षी क्या है? आत्माओं के प्रकाश की चमक।

उसी प्रियतमा की तरफ से हजरत मूसा के हृदय पर एक चिनगारी उड़कर पहुँची, जिसके कारण वह उनकी चाह में लबलीन हो गये!

मुहम्मद साहब, इन प्राणों के लिये दीपक और मतवाला बना देने वाली मदिरा है। और वह बड़े बड़े चिन्ह ही साक्षी है।

शराबो शमओ शाहिद तुल्ला हाजिर।
मयो माशिक जे शाहिद बाजी आखिर॥
शराबे बेखुदी दर कश जमाने।
मगर अज खुद बखुद पावे अमाने॥
बेसुर मै ता जे तोशन न रिशुनद।
वजूद कतरा दर दरिया रसानद॥
शराबे सुर कि जामश नूर बारश।
पियाला चश्मे मस्ते बादा सारश॥
शराबे रा तलब जे मासारो जाम।
शराबे नाया सारो साकी आसाम॥
शराबे सुर जे जामे बन्दे बाकी।
सकाहुम रबहुम ऊ रास्त साकी॥
तहूरन मी बुवद कब लौसे दस्ती।
तुरा पाकी देहद दर जन्के मस्ती॥
बसुर मै बारेहाँ खुद रा जे सर्दी।
कि बदमस्ती बेहस्त अज नेक मर्दी॥

मदिरा, दीपक और साक्षी सभी वस्तुएँ तेरे सम्मुख प्रस्तुत हैं। इस अवस्था में तुझे प्रणय-मार्ग में बढ़ते रहना उचित है।

कुछ समय के लिये तू वह मदिरा पी ले जिससे तू अपने आप को भूल जावे। कदाचित् तू अपने आप ही अपनी शरण पा जावे।

तू वह मदिरा पान कर, जिससे अहंकार को भूल जावे और समझने लग कि एक बूंद का अस्तित्व उस महासागर के अस्तित्व से सम्बन्ध रखता है।

तू वह मदिरा पी, जिसका बड़ा प्याला तेरे प्यारे का मुख है और छोटा प्याला शराब पीने वालों के मतवाले नेत्र हैं।

उस मदिरा की खोज कर, जो छोटे और बड़े प्याले के बिना ही पी जाती हो। वह ऐसी मदिरा है जो साक़ी भी है और अपने आपको स्वयम् पी जाती है।

तू उस अमर मुख के प्याले से शराब पी, जिसका साक़ी ईश्वर है। और वह लोगों को पिलाया करता है।

वह अत्यन्त पवित्र और जीवन की बुराइयों को दूर करने वाली है। वह मस्ती के समय तुझे पवित्र बना देगी।

मदिरा पान कर, निज को इस शीत से बचाने का प्रयत्न कर। मतवाला होना, धार्मिक मनुष्य बनने से बढ़कर है।

खिरद मस्तो मलायक मस्तो जां मस्त।
हवा मस्तो जमीं मस्त आस्मां मस्त॥
फलक सरगश्ता अज बे दर्द नगारूए।
हवा दर दिल व उमीदे यके बूए॥
मलायक खुर्दा साफ अज बूए पाके।
बजुरआ रेखता दुर्दी बरीं साफ॥
अनासिर गश्ता जां यक जुरआ सरशार।
कितावा गद दरआवां गद दर आतश॥
बेबूए जुर्ए कुकाद बर खाक।
बरामद आदमी ता शुद बर अफलाक॥
जे अक्से ऊतने पजमुर्दा जां गश्त।
जे ताबश जाने अफसुर्दा रवां गश्त॥
जहाने खल्क अजो सरगश्ता दायम।
जे खानो माने खुद बरगश्ता दायम॥
यके अज बूए दुर्दश आकिल आमद।
यके अज रंगे साफश नाकिल आमद॥

बुद्धि, स्वर्गीय दूत, और प्राण सभी उसके कारण मतवाले हो रहे हैं। यही नहीं वरन् वायु, पृथ्वी और आकाश तक सब उसी मस्ती का राग अलाप रहे हैं।

आकाश उसी के कारण चक्कर लगा रहा है और वायु उसकी सुगन्ध की एक लहर पाने के लिये उत्सुक हो रही है।

स्वर्गीय दूतों ने पवित्र घट में से स्वच्छ मदिरा के घूँट ले लिये हैं और इस मिट्टी पर एक चुल्लू तलछट डाल दिया है।

उसी एक चुल्लू से सब के सब मस्त हो गये और कभी पानी और कभी अग्नि में जा पड़े।

जो घंट (चुल्लू) पृथ्वी पर गिरा उसकी सुगन्ध से मनुष्य उत्पन्न हुआ और वह आकाश तक जा पहुँचा।

उसकी आभा से कुम्हलाए हुए शरीर में प्राण आगये और उसकी मस्ती की लहर से सुस्त आत्मा में एक नवीन जीवन का संचार हुआ।

उससे संसार भर के लोग मतवाले हो रहे हैं और सदैव अपने घर और कुटुम्ब से पृथक उदासीन फिरा करते हैं।

एक मनुष्य उसकी तलछट की सुगन्ध से ही बुद्धिमान हो गया और दूसरा उसके साफ रंग का वर्णन करने में व्यस्त होगया।

यके अज़ नीम जुरआ गश्ता सादिक़।
यके अज़ यक सुराही गश्ता आशिक़॥
यके दीगर फ़रो बुर्दी वयकबार।
खुमो खुमखानओ साक़ीओ मैखार॥
कशीदा जुम्लओ माँदा दहन बाज़।
जेहे दरिया दिले रिन्दे सरफ़राज़॥
दरा शम्भीदा हस्ती रा वयकबार।
फ़रागत याफ़ा जे इक़रारो इन्कार॥
शुदा फ़ारिग़ जे जोहदे खुश्को तामात।
गिरिफ़्ता दामने पीरे खराबात॥

इशारत ब ख़राबातियान

खराबाती शुदन अज़ खुद रिहाईस्त।
खुदी कुफ़्स्त अगर खुद पारसाईस्त॥
निशाने दादा अन्दत अज़ खराबात।
कि अत्तोहीदो इस्क़ातुल इज़ाफ़ात॥
खराबात अज़ जहाने बेमिसालीस्त।
मुक़ामे आशिक़ाने ला उबालीस्त॥

कोई केवल आधे ही घूँट के पीने से उसकी लगन में मतवाला हो गया और दूसरे ने एक सुराही पीली तब उसके प्रेम में पड़ा।

एक और भी मनुष्य है। उसने एक ही बार में मदिरा के मटके, मदिरा-गृह, साक़ी और पीने वाले को अपने मुख में रख लिया।

परन्तु फिर भी उसकी पिपासा शान्ति नहीं हुई है। वाह! वह कितना विशाल हृदय साहसी और मतवाला है।

जो जीवन को ही एक बार मे निगल गया है वह मानने और न मानने दोनो से छुटकारा पा गया है, कर्म और अकर्म के बन्धनो से निकल गया है। दोनो से किनारा कर बैठा और मदिरागृह के पुजारी का दामन पकड़े हुए उपस्थित है।

मदिरापान करने वालों के प्रति

मदिरापान करना अपने आप मे कुटुम्ब पालने के समान है अहंकार चाहे कितना ही पवित्र क्यों न हो परन्तु फिर भी नास्तिकता ही का रूप है।

मदिरागृह का तुमको एक पता बतला दिया है वह है अपने सम्बन्ध के सम्पूर्ण बन्धनों को तोड़ देना मदिरागृह एक ऐसा स्थान है जहाँ किसी प्रकार के बन्धन नहीं है

मादरागृह एक विचित्र स्थान है और सब [illegible] का स्थान है

खराबात आशियाने मुर्ग आलम।
खराबात आबखाने जाम आलम॥
खराबातो खराब अन्दर खराबम।
कि दर खुमखाए ऊ आलम खुराबम॥
खराबातिस्त वे हदो निहायत।
न आगाजश कसे दीदा न आयत॥
अगर सद साल दर वे मी शिताबी।
न खुद रा ओ न कस रा याबजाबी॥
गरोहे अन्दरो वे पाओ वे सिर।
हमा ना मोमिनो ना नीज काफिर॥
शराबे बेखुदी दर सर गिरिफ्ता।
बतर्के जुम्ला कौनैन शर गिरिफ्ता॥
शराबे खुरद दर यक वे लबो काम।
फरामत याफ्ता अज नंगो अज नाम॥
हदीसे माजरायें शतहो तामात।
खयाले खिलवतो नूरो करामात॥

मदिरागृह प्राण रूपी पक्षी के लिये एक घोंसले के समान है और इस संसार के दर्वाजे की चौखट के समान है।

पीने वाला मतवाला है, खराब है और उससे भी बढ़कर मदिरा है। उसके सम्मुख यह सम्पूर्ण संसार एक मदिरागृह है।

उसकी खराबी की कोई सीमा नहीं है और न किसी ने उसके आदि और अन्त को ही देखा है।

यदि तू सैकड़ों वर्ष उसकी खोज में रहेगा तब भी अपने आपको या किसी दूसरे को न पा सकेगा।

इस विस्तृत क्षेत्र में कुछ ऐसे मनुष्य निवास करते हैं जिनके शिर और पैर कुछ भी नहीं हैं। उन्हें न तो निरीश्वरवादी ही कह सकते हैं और न ईश्वरवादी।

उनके मस्तिष्क में उस मदिरा का धुआँ छाया हुआ है जो मतवाला बना देती है। संसार की समस्त अच्छाइयों और बुराइयों से वह बहुत परे हैं।

उनमें से प्रत्येक ने उस मादक मदिरा का खूब ही सेवन किया है। अब उन्हें न तो अपने नाम का ही ध्यान है और न प्रतिष्ठा का।

छल-कपट की बातों का ध्यान, संसार और ईश्वरीय प्रकाश का विचार सब कुछ उन्होंने,

खराबात आशयाने मुग़ाँ जानस्त।
खराबात आसताने लामकानस्त॥
खराबाती खराब अन्दर खराबस्त।
कि दर सहराए ऊ आलम सुराबस्त॥
खराबातिस्त वे हदो निहायत।
न आग़ाज़श कसे दीदा न ग़ायत॥
अगर सद साल दर वै मी शितावी।
न ख़ुद रा ओ न कस रा बाज़यावी॥
गरोहे अन्दरो वे पाओ वे सिर।
हमा ना मोमिनो ना नीज़ काफ़िर॥
शराबे बेख़ुदी दर सर गिरिफ़्ता।
बतर्क जुम्ला खैरो शर गिरिफ़्ता॥
शराबे ख़ुरद हर यक बे लबो काम।
फ़राग़त याफ़ता अज़ नंगो अज़ नाम॥
हदीसे माजराये शतहो तामात।
ख़याले खिलवतो नूरो करामात॥

मदिरागृह प्राण रूपी पक्षी के लिये एक घोंसले के समान है और इस संसार के दर्वाज़े की चौखट के समान है।

पीने वाला मतवाला है, खराब है और उससे भी बढ़कर मदिरा है। उसके सम्मुख यह सम्पूर्ण संसार एक मदिरागृह है।

उसकी खराबी की कोई सीमा नहीं है और न किसी ने उसके आदि और अन्त को ही देखा है।

यदि तू सैकड़ों वर्ष उसकी खोज में रहेगा तब भी अपने आपको या किसी दूसरे को न पा सकेगा।

इस विस्तृत क्षेत्र में कुछ ऐसे मनुष्य निवास करते हैं जिनके शिर और पैर कुछ भी नहीं हैं। उन्हें न तो निरीश्वरवादी ही कह सकते हैं और न ईश्वरवादी।

उनके मस्तिष्क में उस मदिरा का धुआँ छाया हुआ है जो मतवाला बना देती है। संसार की समस्त अच्छाइयों और बुराइयों से वह बहुत परे हैं।

उनमें से प्रत्येक ने उस मादक मदिरा का खूब ही सेवन किया है। अब उन्हें न तो अपने नाम का ही ध्यान है और न प्रतिष्ठा का।

छल-कपट की बातों का ध्यान, संसार और ईश्वरीय प्रकाश का विचार सब कुछ उन्होंने,

जे सर वेरूँ कशीदा दल्के दह तूय।
मुजर्रद गश्ता अज़ हर रंगो हर बूय॥
फ़रोशुस्ता वदाँ साफ़े मुरव्वक़।
हमा रंगे सियाहो सब्जो अज़रक़॥
यके पैमाना खुर्दा अज़ मए साफ़।
शुदा ज़ाँ सूफ़िए साफ़ी जे औसाफ़॥
वजाँ खाके मज़ाबिल पाक रुफ़्ता।
जे हरचाँ दीदा अज़ सद यक न गुफ़्ता॥
गिरफ़्ता दामने रिन्दाने खम्मार।
जे शेखीओ मुरीदी गश्ता बेज़ार॥
चे जाए जोहदो तक़वा ईं चे क़ैदस्त।
चे शैखोयो मुरीदे ईं चे शैदस्त॥
अगर रूए तू वाशद वर केहो मेह।
बुतो ज़ुन्नारो तरसाई तुरा वेह॥

सवाल

बुतो ज़ुन्नारो तरसाई दरीं कूए।
हमा कुफ़्रस्त वगर न चीस्त वर गूए॥

इन लोगों ने दस पर्त की गुदड़ी को सर पर से उतार डाला है और उनके हृदय से सभी तरह के रंग-रहस्य और सर्व प्रकार के आनन्द किनारा कर बैठे हैं।

उन्होंने आनन्दोपभोग की सभी लालसाओं को मिटा डाला है। उस स्वच्छ, छनी हुई मदिरा से उन्होंने सब काले, हरे और नीले रंगों के धब्बों को धोकर साफ़ कर दिया है।

एक मनुष्य उस छनी हुई मदिरा का केवल एक ही प्याला पीकर ऐसा हो गया है कि उसमें किसी प्रकार का भी विकार शेष नहीं रह गया है।

इच्छाओं की धूल को उसने धोकर साफ़ कर दिया है और अपनी देखी हुई सभी बातों को उसने हृदय में छिपा रक्खा है।

वह अब मतवाले मदिरा सेवियों की शरण में जा पड़ा है। साधु बनने और चेला होने की इच्छाओं को हृदय से निकाल कर फेंक दिया है।

परहेज़गारी और ईश्वर से भय खाने की बातों से क्या तात्पर्य है? साधु और चेला होने का ढकोसला कैसा है?

यदि तू केवल दिखाने के लिये कुछ करना चाहता है, तो मूर्तिपूजक बन। जनेऊ धारण करके धूनी रमा ले।

प्रश्न

मूर्त्ति-पूजा, जनेऊ, और धूनी (अग्निपूजा) यह सब नास्तिकता के चिन्ह नहीं तो और क्या हैं?

जे सर वेरूँ कशीदा दल्के दह तूय।
मुजर्रद गश्ता अज़ हर रंगो हर बूय॥
फ़रोशुस्ता वदाँ साफ़े मुरव्वक़।
हमा रंगे सियाहो सब्जो अज़रक़॥
यके पैमाना खुर्दा अज़ मए साफ़।
शुदा ज़ाँ सूफ़िए साफ़ी जे औसाफ़॥
वजाँ खाके मज़ाबिल पाक रुफ़्ता।
जे हरचाँ दीदा अज़ सद यक न गुफ़्ता॥
गिरफ़्ता दामने रिन्दाने खम्मार।
जे शेखीओ मुरीदी गश्ता बेज़ार॥
चे जाए जोहदो तक़्वा ईं चे क़ैदस्त।
चे शैखीयो मुरीदे ईं चे शैदस्त॥
अगर रूए तू वाशद वर केहो मेह।
बुतो ज़ुन्नारो तरसाई तुरा वेह॥

सवाल

बुतो ज़ुन्नारो तरसाई दरीं कूए।
हमा कुफ़्रस्त वगर न चीस्त वर गूए॥

इन लोगों ने दस पर्त की गुदड़ी को सर पर से उतार डाला है और उनके हृदय से सभी तरह के रंग-रहस्य और सर्व प्रकार के आनन्द किनारा कर बैठे हैं।

उन्होंने आनन्दोपभोग की सभी लालसाओं को मिटा डाला है। उस स्वच्छ, छनी हुई मदिरा से उन्होंने सब काले, हरे और नीले रंगों के धब्बों को धोकर साफ़ कर दिया है।

एक मनुष्य उस छनी हुई मदिरा का केवल एक ही प्याला पीकर ऐसा हो गया है कि उसमें किसी प्रकार का भी विकार शेष नहीं रह गया है।

इच्छाओं की धूल को उसने धोकर साफ़ कर दिया है और अपनी देखी हुई सभी बातों को उसने हृदय में छिपा रक्खा है।

वह अब मतवाले मदिरा सेवियों की शरण में जा पड़ा है। साधु बनने और चेला होने की इच्छाओं को हृदय से निकाल कर फेंक दिया है।

परहेज़गारी और ईश्वर से भय खाने की बातों से क्या तात्पर्य है? साधु और चेला होने का ढकोसला कैसा है?

यदि तू केवल दिखाने के लिये कुछ करना चाहता है, तो मूर्तिपूजक बन। जनेऊ धारण करके धूनी रमा ले।

प्रश्न

मूर्त्ति-पूजा, जनेऊ, और धूनी (अग्निपूजा) यह सब नास्तिकता के चिन्ह नहीं तो और क्या हैं?

नदीद ऊ दर बुत इला खल्के जाहिर।
बदाँ इल्लत शुद अन्दर शर्रा काफ़िर॥
तो हम गर जो न बीनी हक़्के पिन्हाँ।
बशर्रा अन्दर न खानन्दत मुसलमाँ॥
व तसबीहो नमाजो सात्मे क़ुरआँ।
नगर्दद हरगिज ईं काफ़िर मुसलमाँ॥
जे इसलामे मजाजी गश्ता बेजार।
किरा कुफ़्रे हक़ीक़ी शुद पिदीदार॥
दरूने हर तने जानेस्त पिन्हाँ।
बजेरे कुफ़्र ईमानेस्त पिन्हाँ॥
हमेशा कुफ़्र अज़ा तसबीहे हक़्क़स्त।
"व इमामिन शै" गुफ़्र ईंजा चे दक़्क़स्त॥
चे मी गोयम कि दूर उफ़्तादम अज़ राह।
फ़ज़रहुम बअदमाजाअत कुल इलाह॥
बदाँ खूबी रुखे बुत रा कि आरास्त।
कि गश्ते बुतपरस्त अर हक़ नमीखास्त॥

इसने मूर्ति के केवल काट-छाँट को उसके प्रकट आकार को ही देखा है। इसी कारण धर्म ग्रन्थों के अनुसार वह विधर्मी बन गया।

तू भी, यदि मूर्ति के छिपे हुए रहस्य को न समझेगा तो तू भी धर्म ग्रन्थ में लिखा धर्मी वाला न कहलायेगा।

माला फेरने, पूजा करने और धर्म ग्रन्थों का अध्ययन कर लेने ही से एक विश्वासी मुसलमान नहीं हो सकता है।

जिस मनुष्य ने नास्तिकता के वास्तविक रूप को समझ लिया है वह उस से बिल्कुल पृथक हो गया है।

हमू कर्दी हमू गुफ़्तो हमू बूद।
निको कर्दी निको गुफ़्तो निको बूद॥
यके बीनो यके गोयो यके दाँ।
बदीं खत्म आमद अल्लो फ़र्रे ईमाँ॥
न मन मीगोयम ईं विश्नो जे कुरआँ।
तफ़ाउत नेस्त अन्दर खल्के रहमाँ॥

इशारत बजुन्नार

निशाने खिदमत आमद अन्दे जुन्नार।
नज़र करदम बदीदम अस्ले हरकार॥
नबाशद अहले दानिश रा मुअत्तल।
जे हर चीजे मगर दर बन्दए अव्वल॥
मियाँ दर बन्द चूँ मरदाँ बमरदी।
दरआ दर जुमरए औफ़ू बे अहदी॥
बरस्रो इल्मो चौगाने इबादत।
जेनदाँ दर रुबा गूए सआदत॥

वही कहने वाला और वही करने वाला था। उसके अतिरिक्त किसी दूसरे का हाथ इसमें नहीं था। वह अच्छा है। उसने कहा, सो भी अच्छा है और किया वह भी बुरा नहीं है।

एक ही को सदैव अपनी दृष्टि के सन्मुख रख एक ही से बोल और एक ही को अपने हृदय में धारण कर। धर्म्म की सब शिक्षाओं का मूल यही है।

मैं ही इस बात को नहीं कह रहा हूँ, अपितु धार्म्मिक ग्रन्थ भी यही शिक्षा दे रहे हैं कि ईश्वर के रूपों में किसी प्रकार का अधिक अन्तर नहीं है।

जनेऊ के विषय में

मैंने ध्यान पूर्वक प्रत्येक बात के तत्व को समझ लिया है। जनेऊ पहन लेना धर्म्म का चिन्ह धारण कर लेना, सेवा करने की निशानी है।

ज्ञानी पुरुष इस बात पर सभी जगह विश्वास करते हैं। क्योंकि इस बात से प्रकट होता है कि तू सेवा के लिए कमर बाँधे हुए उद्यत है।

वीर मनुष्यों के समान साहसी होकर फेंट बाँध ले और उसके बन्दों में, जो अपने वचन के सच्चे हैं, सम्मिलित हो जा।

तूने विद्या प्रदान की है और तू ईश्वर-प्रार्थना का मूल्य समझता है। इन्हीं दोनों की सहायता लेकर रणक्षेत्र में आगे बढ़ और उसकी कृपा पर उसके समीप रहने का अधिकार जमाले।

तुरा अज बहरकार आफ़रीदन्द।
अगर चे खल्क बिसयार आफ़रीदन्द॥
पिदर चूँ इल्मो मादर हुस्त आमाल।
बिसाने कुरत्तुलऐनस्त अहवाल॥
नबाशद बे पिदर इन्साँ शके नेस्त।
मसीह अन्दर जहाँ बेश अज यके नेस्त॥
रिहा कुन तर्रहानो शतहो तामात।
खयाले नूरो असवाबे करामात॥
करामाते तो अन्दर हक़ परस्तीस्त।
जुज़ाँ किज़ो रियाओ उजबे हुस्तीस्त॥
दरीं हर चीज़ कानजे बावे फ़क़ुस्त।
हमा असवाबे इस्तिदराजो मक़स्त॥
जे इबलीसे लानते बेशहादत।
शवद सादिर हजारों खर्क़े आदत॥
गह अज दीवारत आयद गाह अज बाम।
गह दर दिल नशीनद गाह दरन्दाम॥
हमी दानद जे तो अहवाले पिनहाँ।
दर आरद दर तोक़िरको कुफ़्रो इसयाँ॥

तुझे इस संसार में इसी कार्य के लिए उत्पन्न किया गया है। और तू ही क्या, बहुतों का जन्म इसी लिये हुआ है।

तेरा पिता विद्या और माँ तेरे कार्य हैं। यह सब तुझे प्रिय होने चाहियें।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि बिना पिता के मनुष्य उत्पन्न नहीं हो सकता। भगवान् ईसा मसीह के भी पिता थे।

और वह भी एक से बढ़कर नहीं थे। छल-कपट, मिथ्या और बनावटी बातों से मुख मोड़ ले। चमत्कारों का विचार हृदय से निकाल दे।

तेरा बड़प्पन तो ईश्वर के भजन में है, बस यही एक बात तत्वमय है। इसके अतिरिक्त सभी बातें छल-कपट और जीवन के अहङ्कार से परिपूर्ण हैं।

यह बातें साधुओं के योग्य नहीं हैं और इसी कारण छल-छद्म से शून्य नहीं हैं।

तू देख नहीं सकेगा परन्तु शैतान तेरे सम्मुख सैकड़ों बातें ऐसी उपस्थित करेगा जो इन उपयुक्त-भावनाओं के नितान्त विरुद्ध होंगी।

वह चारों तरफ़ से तेरे सम्मुख साँसारिक प्रलोभन लेकर उपस्थित होगा। कभी वह तेरे हृदय में घुस जायगा और कभी शरीर में प्रविष्ट हो जायगा।

तेरी गुप्त बातों को, तेरे छिपे हुए कार्यों को वह जान जाता है और तेरे हृदय में बुरे और पापमय विचारों को उत्पन्न कर देता है।

शुद इबलीसत इमामो दर पसां तू।
बदो लेकिन बदींहा कै रसी तू॥

करामाते तो गर दर ख़ुद नुमाईस्त।
तू फ़िरऔनी व ईं दावा ख़ुदाईस्त॥

कसे कू रास्त बा हक़ आशनाई।
नआयद हरगिज़ अज़वै ख़ुद नुमाई॥

हमा रूए तो दर ख़लक़स्त चिन्हार।
मकुन ख़ुद रा दरीं इल्लत गिरिफ़्तार॥

चूँ बा आमा नशीनी मस्ख़ गर्दी।
चे जाये मस्ख़ यक रह क़स्ख़ गर्दी॥

मबादत हेच बाआमत सरोकार।
कि अज़ क़ितरत शवी नागाह निगूँसार॥

तलफ़ कर्दी बहरजा नाज़नीं उम्र।
नगोई दर चे कारस्त ईं चुनीं उम्र॥

बजमईयत लक़ब करदन्द तशवीश।
ख़रेरा पेशवा कर्दा ज़ेहे रीश॥

क़िलादा सरवरी अकनूँ बजुहाल।
अज़ीं गश्तन्द मरदुम जुम्ला बद हाल॥
निगर दज्जाले आवर ता चे गूना।
क़िरस्तादस्त दर आलम नमूना॥
नमूना वाज़बीं ऐ मर्द हस्सास।
खर ऊरा दाँ कि नामश हस्त जस्सास॥
खराँरा ईं हमा हम नंग आँ खर।
शुदा अज़ जेह्ल पेश आहँग आँ खर॥
चु ख्वाजा क़िस्सए आखिर ज़मा कर्द।
बचंदीं जाँ अज़ीं मानी निशा कर्द॥
बेबीं अकनूँ कि कोरो कर शवाँ शुद।
उल्मे दीं हमा वर आसमाँ शुद॥
नमानंद अन्दर मियाना रिफ़्क़ो आज़र्म।
नमीदारद कसे अज़ जाहिली शर्म॥
हमा अहवाले आलम वाज़गूनस्त।
अगर तू आक़िली बेनिगर कि चूँ नस्त॥

इस काल में मूर्खों को ही सर्दारी मिल गई है और इसी कारण सभी मनुष्यों की दशा बुरी हो गई है।

यह देख कि मक्कार ने अपना किस प्रकार का एक नमूना संसार में भेजा है।

तुझे संसार का अधिक अनुभव है। तू वस्तुओं के अवगुणों और गुणों को अति शीघ्र समझ जाता है। तू ही उस गधे को देख और गधा उसे समझ जिसका नाम है।

वह मूर्ख उन सभी मूर्खों के लिये अपयश का कारण है और नादानी के कारण सब के आगे चल रहा है।

जब पैग़म्बर साहब ने अन्तिम काल का इतिहास सुनाया तो कई स्थानों पर यह भी कहा,

कि इसी काल में मूर्खाधिराजों ने लोगों के गुरुओं की पदवी धारण की और जितनी भी धार्म्मिक विद्यायें थीं, संसार से किनारा कर गईं,

नम्रता दया और लज्जा विलुप्त हो गई और किसी भी मनुष्य को निरुद्योगी अथवा मूर्ख होने के कारण लज्जा नहीं आती। संसार की सभी बातें, पलट गई हैं।

पहले जो होता था अब उसके नितान्त विपरीत कार्य होने लगे हैं। तुझमें यदि बुद्धि है तो उन्हें देख और समझ।

कसे कज़ बावे लानो तर्रो मज़तस्त ।
पिदर नीको बुद अकनूँ शैखे वक़्तस्त ।।
खिज़िर मीकुश्त आँ फ़रज़न्दे तालेह ।
कि ऊरा बुद पिदर वा जद सालेह ।।
कनूँ वा शैखे खुद कर्दी तु ऐ ज़र ।
ज़रे रा कज़ ज़री हस्त अज़ तो ख़रतर ।।
चु ऊला यारुफ़लहर्रम मिनलउबिर ।
चेंगूना पाक गरदानद तुरा सिर ।।
अगर दारद निशाने बावे खुद पूर ।
चेगोयम चूँ बुवद नूरन अला नूर ।।
पिसर कू नेक राचो नेक वज़्तस्त ।
चु मेवा ज़ वदए सिर्रे दरख़्तस्त ।।
वलेकिन शैखे दीं कै गर्दद आँकू ।
नदानद नेक अज़ वद, वद अज़ नीकू ।।
मुरीदी इल्मे दीं आमोख़्तन वूद ।
चिराग़े दीं चे नूर अफ़रोख़्तन वूद ।।

कसे अज़ मुर्दा इल्म आमोख़्त हरगिज़ ।
जे ख़ाकिस्तर चिराग़ अफ़रोख़्त हरगिज़ ॥
मरा दर दिल हमी गर्दद वदीं कार ।
बबन्दम दरमियाने ख़ेश ज़ुन्नार ॥
न जाँ मानी कि मन शोहरत नदारम ।
बले दारम बले जाँ हस्त आरम ॥
शरीकम चूँ ख़सीस आमद दरीं कार ।
ख़मूलम बेहतर अज़ शोहरत बिस्यार ॥
दिगर वारा रसीद इल्हामे अज़ हक़ ।
कि बर हिकमत मगीर अज़ अबलही दक़ ॥
अगर कन्नास नबूवद दर मुमालिक ।
हमा ख़ल्क़ ओफ़तन्द अन्दर महालिक ॥
बुवद जिनसियत आख़िर इल्लते ज़म ।
चुनीं आमद जहाँ बल्लाहो आलम ॥
बलेक अज़ सोहबते ना अह्ल बगुरेज़ ।
इबादत ख़ाही अज़ आदत बेपरहेज़ ॥
नगर्दद जमा आदत बा इबादत ।
इबादत मी कुनी बेगुज़र ज़े आदत ॥

परन्तु एक मृतक से विद्या कौन प्राप्त कर सकता है ? राख से दीपक कौन जला सकता है ?

इस कार्य के कारण मेरे हृदय में बार बार यही विचार उठता है कि मैं अपनी कमर जनेऊ से कस लूँ । धर्म्म की दीक्षा लेकर उसमें आगे बढ़ चलूँ ।

यह विचार अपने आपको विख्यात करने के लिये नहीं उठता है । मैं विख्यात तो हूँ, परन्तु यह विचार इसलिये होता है कि इस झूठी ख्याति से मैं लज्जित हूँ ।

मेरा साथी जब इस काम में निष्फल रहा, उसने अपना ओछापन प्रकट किया, तो मेरा गुप्त रहना ही उत्तम है ।

तदुपरान्त ईश्वर की ओर से एक दूसरी ही बात सुनाई दी कि तू अपनी मूर्खता के कारण ईश्वरीय कार्यों में मीन-मेष न निकाल ।

यदि इस संसार में, कूड़ा कर्कट साफ़ करने वाले न हों तो सभी घातक रोगों के शिकार बन जायँ ।

एक भाँति का होना ही, एक जाति का होना ही आपस में मिलने का कारण है । संसार को यही दशा है । आगे ईश्वरेच्छा ।

परन्तु तू दुष्टों की संगति से अपने आपको बचाए रख । यदि तुझे ईश्वर-भजन में निमग्न रहना है तो अपने स्वभाव से बच ।

भक्ति और आदत एक साथ नहीं रह सकती हैं । यदि तू भक्ति करता है तो आदत का त्याग कर दे ।

चु गश्त ऊ बालिग़ो मर्दे सफ़र शुद।
अगर मर्दस्त हमराहे पिदर शुद॥
अनासिर मर तुरा चूँ उम्मे सिफ़लीस्त।
तू फ़रज़न्दो पिदर आबाए उलवीस्त॥
अज़ाँ गुफ़्तस्त ईसा गाहे असरा।
कि आहंगे पिदर दारम बबाला॥
तो हम जाने पिदर सूए पिदर शौ।
पिदर रफ़्तन्द हमराहाँ पिदर शौ॥
अगर ख्वाही कि गर्दी मुर्ग़े परवाज़।
जहाने जीफ़ा पेशे करगस अन्दाज़॥
बदूना देह मरदे दुनियाए ग़द्दार।
कि जुज़ सग रा नशायद दाद मुर्दार॥
निसब चे बुवद मुनासिब रा तलब कुन।
बहक़ रू आवरो तर्के निसब कुन॥
बबहे नेस्ती हर कू फ़िरोशुद।
फ़ला अनसावा नक़्दे वक़्ते ऊ शुद॥
हराँ निस्बत कि पैदा शुद ज़े शहवत।
नदारद हासिले जुज़ किर्मो निखवत॥

जब वह तनिक बड़ा हो जाता है और चलने लगता है, तब यदि वह लड़का है तो पिता के साथ जाने लगता है।

तेरे शरीर के यह भाग, अंग-प्रत्यंग, तेरे लिये पवित्र प्राणों के समान हैं। तू वह शिशु है, जिसका पिता ऊपर आकाश में निवास करने वाला है।

इसीलिये ईसा ने पवित्र रात में यह कहा था कि मैं ऊपर इसलिये आया हूँ कि मैं अपने पिता के पास पहुँचने का इच्छुक हूँ।

तू भी, ऐ पिता के प्राण, अपने पिता के पास चल। तेरे सब साथी पिता बन के चले गये, तू भी, उन्हीं की तरह चल।

यदि तू यह चाहता है कि उड़ान भरने वाला पक्षी बन जाये, तो इस जीवन से वंचित जगत को गिद्ध के सम्मुख फेंक कर उड़ जा!

यह संसार छल-छिद्र से परिपूर्ण है। इसमें वही स्वार्थी जीव रहने योग्य हैं जो कपटी हैं। अतएव इसका त्याग कर देना ही उचित है।

जीवन क्या वस्तु है? उस जीवनदाता को ढूंढ़। ईश्वर की ओर मुख कर और सांसारिक झगड़ों से अपना हाथ खींच ले।

जो मनुष्य मृत्यु-सागर में डूब गया, उसका समय व्यर्थ ही गया।

इच्छाओं के सम्पर्क से उसे अभिमान और अहंकार के अतिरिक्त कोई लाभ नहीं हुआ।

वमर्दी वारहाँ ख़ुद रा चो मर्दां।
वलेकिन हक़्क़े कस जाये मगर्दां॥
जे शरअो अरयक दक़ीक़ा माँद मोहमल।
शवी दर हर दो कौन अज़ दीँ मोअत्तल॥
हक़ूक़े शरआरा ज़िनहार मगुज़ार।
वलेकिन खेशतन रा हम निगहदार॥
जे सोज़न नेस्त इल्ला मायए ग़म।
वजा वेगुज़ार चूं ईसाए मरयम॥
हनीफ़ी शौ जे हर क़ैदे मज़ाहिव।
दर आ दर दैरे दीँ मानिन्द राहिब॥
तुरा ता दर नज़र अग़यारो ग़ैरस्त।
अगर दर मसजिदी आँ ऐने दैरस्त॥
चु वरखेज़द जे पेशत किस्वते ग़ैर।
शवद वहे तो मसजिद सूरते दैर॥
नमीदानम वहर हाले कि हस्ती।
ख़िलाफ़े नफ़्स वेरूँ कुन कि रस्ती॥

मनुष्य के समान वीरता और साहस से अपने आपको इन फन्दों से छुटा ले। परन्तु यह स्मरण रहे कि किसी के अधिकार में हस्ताक्षेप न होने पावे।

यदि धर्म्म से सम्बन्ध रखने वाली यह तनिक सी बात छूट गई तो दोनों जहानों में तू विधर्म्मी बन जायगा।

तू धर्म का पालन कर परन्तु साथ ही अपने स्वरूप को न भूल।

सुई से दुःख के अतिरिक्त और कुछ भी प्राप्त न होगा। अतएव मरियम के पुत्र ईसा के समान उसे जहाँ का तहाँ छोड़ दे।

समस्त धार्म्मिक बन्धनों से सम्बन्ध छोड़ दे। और एक उदासीन के समान धर्म्म-मन्दिर में आ जा।

जब तक तेरे सामने ग़ैर लोग रहेंगे, तब तक तुझमें समानता के भाव उदय नहीं होंगे; तब तक मस्जिद भी तेरे लिए मूर्ति-गृह के समान है।

जब तेरे हृदय में समानता के भाव अपना अस्तित्व जमा लेंगे तब मन्दिर (मूर्तिस्थान) भी तेरे लिये मस्जिद बन जायगा।

मैं केवल यही जानता हूँ कि जिस दशा में भी तू है, तेरा उद्धार हो जायगा, यदि तू इन्द्रियों के विरोध को मिटा दे।

इशारत बवुतो तरसा बच्चा

वुतो तरसा बच्चा नूरेस्त ज़ाहिर।
कि अज़ रूए वुताँ दारद मज़ाहिर॥
कुनद ऊ जुम्ला दिलहा रा व साक़ी।
गहे गर्दद मुग़न्नी गाह साक़ी॥
ज़हे मुतरिब कि ऊ अज़ नग़मए ख़स।
ज़नद दर ख़िरमने सद ज़ाहिद आतश॥
ज़हे साक़ी कि ऊ अज़ यक पियाला।
कुनद बेख़ुद दोसदहफ़ताद साला॥
अगर दर मसजिद आयद दर सहरगाह।
न बेगुज़ारद दरो यक मरदे आगाह॥
रवद दर ख़ानक़ाह मस्ते शब्बाना।
कुनद अफ़ज़ूं सूफ़ी रा फ़िसाना॥
शवद दर मदरसा चूँ मस्त मस्तूर।
फ़क़ीह अज़ वै शवद बेचारा मख़मूर॥
ज़े इश्क़श ज़ाहिदाँ बेचारा गश्ता।
ज़े ख़ानो माने ख़ुद आवारा गश्ता॥

मूर्ति और अग्नि-पूजक के प्रति

मूर्त्ति और अग्नि से उत्पन्न हुई आभा एक ऐसी दिखावटी आभा है जो प्रेमिकाओं के मुख से अपना जलवा दिखलाती है।

वह आभा सभी दिलों को अपने प्रेम-जाल में फँसा लेती है। कभी वह एक गायक का रूप धारण कर लेती है और कभी मदिरा-वाहक का।

वह गायक कैसा है? ऐसा जो एक ही राग से सहस्रों परहेज़गारों के दिलों में आग उत्पन्न कर देता है।

वह साक़ी कैसा है? ऐसा जो एक ही प्याले में दो सौ सत्तर वर्ष के वृद्ध को मतवाला बना देता है।

यदि प्रातःकाल उठकर वह साक़ी मस्जिद में चला जाय, तो वहाँ के सभी लोग ख़ुदा को भूल जावें।

यदि वही साक़ी रात्रि के समय किसी साधु की कुटी में चला जावे, तो साधु का जप-तप सब हवा हो जावे।

जब वह मतवाला, पाठशाला में पहुँचता है, तो शिक्षक, शिक्षा देना भूल कर नशे में चूर हो जाता है।

जो मनुष्य परहेज़गार थे, वह उससे प्रेम करने के लिये बाध्य होकर अपने घरों से बाहर निकल आए हैं।

बर्बी ता इल्मो ज़ोहदो किब्रो पिन्दाश्त।
तुरा ऐ ना रसीदा अज़ के बादाश्त॥

नज़र कर्दम बरूयम नीम सायत।
हमी अरज़द हज़ाराँ साला ताअत॥

अलल ज़ुम्ला रुखे आँ आलम आराए।
मरा वामन नमूद अन्दर सरो पाए॥

सियह शुद रूए जानम अज़ खिजालत।
जे फ़ौते उम्रो ऐयामे बतालत॥

चु दीदाँ माह कज़ रूए खुर्शीद।
कि बेबुरीदम मन अज़ जाने खुद उम्मीद॥

यके पैमानां पुर कर्दो बमन दाद।
कि अज़ आबे बै आतश दर मन उफ़्ताद॥

कनूँ गुफ़्त अज़ मए बेरंगो बे बूए।
नक़ूशे तस्तए हस्ती फ़ेरो शोए॥

चु अशामीदम आँ पैमाना रा पाक।
दर उफ़्तादम जे मस्ती बर सरे खाक॥

मूर्ख, ध्यान से देख कि तेरी इसी विद्या और घमंड ने तथा परहेज़गारी ने तुझे तेरे अभीष्ट स्थान तक पहुँचने से रोक दिया।

आधी घड़ी के लिये मेरे मुख पर दृष्टि डाल ले, वह हज़ारों वर्षों की पूजा और भजन के समान है।

सारांश कि परलोक को सँभाल देने वाले यार के मुखड़े ने मुझे यह दिखा दिया कि मैं क्या था।

यह समझ कर कि मेरे जीवन के इतने दिन व्यर्थ की बातों ही में चले गये, मेरा मुख लज्जा से नीचा हो गया।

उस यार ने यह समझ कर कि उसके सूर्य के समान मुख को अप्राप्त समझ कर मैं अपने जीवन से निराश हो गया हूँ,

एक प्याला भर के मुझे दे दिया। उसे पीते ही मेरे शरीर में बिजली सी दौड़ गई।

बचश्मे मुनकरी मनिगर दरो खार।
कि गुलहा गरदद अन्दर चश्मे तो खार॥
निशाने नाशनासी ना सिपासीस्त।
शिनासाईए हक़ दर हक़ शिनासीस्त॥
गरज़ जीं जुम्ला आँ ता गर कुनद याद।
अज़ीज़े गोयदम रहमत बरो बाद॥
बनामे खेश करदम खत्मो पायाँ।
इलाही आक़बत महमूद गर्दां॥

पर उनकी तरफ़ सन्देहात्मक दृष्टि से न देख। इन रहस्यों में टीका टिप्पणी करने का विचार न कर। नहीं तो जितने भी पुष्प हैं सब तेरी दृष्टि में शूल हो जायंगे।

यह कहना कि मैं इन्हें जानता नहीं हूँ, कृतघ्नता प्रकट करना है। कृतज्ञता दर्शाने से ईश्वर भी प्रसन्न होता है।

इस सब का आशय यह है कि यदि कोई महाशय किसी समय मुझे स्मरण करें, तो उनके मुख से यही निकले कि ईश्वर उस पर कृपा करे।

मैंने अपने नाम पर ही इसे समाप्त कर दिया है। हे ईश्वर मुझ "महमूद" को फल अच्छा देना।

हाथ आम ।

ब्रिटिश म्यूज़ियम में सुरक्षित एक प्राचीन चित्र में ।

इनके जन्मकाल के विषय में कुछ कहा नहीं जा सकता। हाँ, इनकी मृत्यु सन् १३९० ईस्वी में हुई थी। इनका नाम शम्सुद्दीन मुहम्मद था। इन्हें लोग बहुधा लिसानुलग़ैब (अदृश्य की तलवार) तथा तर्जुमानुल असरार (रहस्य के अनुवादक) भी कहा करते थे। ब्राउन ने इनका जीवन-वृतान्त लगभग पचास पृष्ठों में लिखा है। उसके कथनानुसार शिबली की लिखी हुई पुस्तक इस विषय में सर्वोत्तम तथा विश्वसनीय और प्रमाणिक इतिहास है। फ़ारस के उन कवियों में जिन्होंने गान संबंधी पद लिखा है, हाफ़िज़ सर्वश्रेष्ठ हैं, इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं किया जा सकता। लेवी का कथन है कि भाषा, भाव और कल्पना के अनुसार, फ़ारस के कवियों में इनका स्थान सबसे ऊँचा है (Persian Literature P. 77)।

यह तो सभी मानते हैं कि हाफ़िज़ रहस्यवादी थे। प्रकट रूप में यह कहा जा सकता है कि हाफ़िज़ ने मदिरा तथा स्त्रियों की प्रशंसा में अधिक लिखा है। परन्तु इनके अन्दर छिपी हुई "गूढ़ रहस्यवाद की बातों" को सभी मानते हैं। जिन बातों को उन्होंने प्रकट करने का प्रयत्न किया है, जिस रहस्य को उद्घाटन करने का विचार किया है, वह सभी पूर्णतया उचित रूप में लोगों के सम्मुख रक्खी गई हैं। इस विषय में उन्हें सदैव सफलता प्राप्त हुई है। "हाफ़िज़ की मदिरा आन्तरिक प्रसन्नता, सराय पूजा गृह और फ़ारस का पुराना पुजारी आत्मिक गुरु है।" मुसलमानों में हाफ़िज़ के दीवान से शकुन उठाने की प्रथा प्रचलित है। यहाँ तक की भारतवर्ष के बादशाह भी उससे शकुन उठाया करते थे। जहाँगीर के विषय में ऐसा ही कहा जाता है।

हाफ़िज़ को मदिरा बहुत प्रिय थी। कुछ समय उपरान्त वह उसी मदिरा से आन्तरिक प्रसन्नता का आशय निकालने लगे। हाफ़िज़ की इच्छा इस प्रकार थी :—

"यदि अधिक मदिरापान से ही मेरी मृत्यु हो तो मुझे मेरी समाधि तक एक शराबी के ही भेष में लाना। ऐसे स्थान पर जहाँ चारों ओर अंगूर की बेलें हों, और जो किसी सराय की बग़ल में हो, मेरी क़ब्र बनाना। मेरी लाश को उसी सराय के पानी से स्नान कराना और शराबियों के कन्धों पर ही मेरी अर्थी भी ले जाई जावे। मेरी मिट्टी भी लाल मदिरा से नम की जावे और मेरा शोक मनाने के लिये वही तीन तारों वाली सितार बजायी जावे। यही मेरी अन्तिम इच्छा है—वसीयत है। मेरी मृत्यु का शोक मनाने वालों में केवल फ़ारस के अभिनेता तथा गानेवाले हों। हाफ़िज़ को मदिरा से पृथक मत करना। शराबियों के साथ बादशाहों को भी सख़्ती नहीं करनी चाहिये।"

मिस गार्ट्रूड बेल ने भी कुछ पंक्तियाँ हाफ़िज़ के सम्बन्ध में लिखी हैं। कदाचित यह हाफ़िज़ का अनुभव हो :—

"हाफ़िज़ ने बहुत से राजाओं—महाराजाओं को देखा। उन्होंने शक्ति-सम्पन्न की—ख्याति प्राप्त की। और फिर एक एक करके मरुभूमि की सतह पर जमी हुई बर्फ़ के समान विलीन हो गये।"

अपने जीवन-काल में ही हाफ़िज़ को पूर्ण ख्याति प्राप्त हो गई थी। जिसके कारण उनके पास ख़ुरासान, तुर्किस्तान और मैसोपोटामियाँ से निमंत्रण आये थे। मुहम्मद शाह बहमनी ने भी उन्हें दक्षिण भारत में, निमंत्रण देकर बुलाया था। हाफ़िज़ ने चलने की तय्यारी भी कर ली थी। परन्तु दुर्भाग्य से जहाज़ पर चढ़ने से पहले ही एक ऐसी दुर्घटना होगई, जिससे उन्हें रुक जाना पड़ा। घर पर भी हाफ़िज़ को शाही दर्बार से बहुत कुछ मिलता था।

इनकी रचनाओं के अगणित अनुवाद हो चुके हैं। केवल इंगलैण्ड में ही छः अनुवाद हो चुके हैं, जिनमें से मिस वेल तथा मिस्टर ओन्सले के सर्वोत्तम समझे जाते हैं। मिस्टर ओन्सले ने उनके विषय में लिखा है :—

"इनकी भाषा मुहाविरेदार, सुन्दर तथा बनावट से रहित है। शैली को देखने से ही पता चल जाता है कि लेखक उच्च कोटि का विद्वान है और उसे प्रकट तथा अप्रकट वस्तुओं का पर्याप्त ज्ञान है। इसके अतिरिक्त भाषा में एक ऐसा आकर्षण है जो अन्य कवियों की रचनाओं में नहीं पाया जाता।"

जन साधारण में तैमूर लंग और हाफ़िज़ की कहानी अधिक प्रसिद्ध है। तैमूर लंग ने जब हाफ़िज़ के मुख से यह शब्द सुने :

"अगर आँ तुर्के शीराज़ी बदस्त आरद दिले मारा।
बख़ाले हिंदवश बख़शम समरक़ंदो बुख़ारा॥"

तब वह बहुत क्रोधित हुआ और उसने उन्हें बुलाकर पूछा कि तुम इन मुल्कों के विषय में ऐसी मामूली बातें क्यों कहते हो जिनके जीतने के लिये मुझे इतना ख़ून बहाना पड़ा। हाफ़िज़ का उत्तर बड़ा ही विलक्षण था :

"हे शाहनशाह! अपने इन्हीं उच्च विचारों के कारण मैं आजकल इतना कंगाल हूँ।"

रचनायें :—

दीवान।

(२)

ऐ नसीमे सहर आराम गहे यार कुजाअस्त।
मंज़िले आँ महे आशिक़ कुशे अय्यार कुजाअस्त॥
शबे तारस्तो रहे वादिए ऐमन दर पेश।
आतिशे तूर कुजा मौअदे दीदार कुजाअस्त॥
हर कि आमद व जहां नक़्शे खरावी दारद।
दर खरावात मपुरसेद कि हुशयार कुजाअस्त॥
आँ कसस्त अह्ले वशारत कि इशारत दानद।
नुक़्ताहाहस्त वसे महरमे असरार कुजाअस्त॥
हर सरे मूए मरा वा तू हज़ाराँ कारस्त।
मा कुजाएमो मलामत गरे बेकार कुजाअस्त॥
अक़्ल दीवाना शुद आं सिलसिले मिशकीं कू।
दिल ज़े मा गोशा गिरिफ़्त अब्रुए दिलदार कुजाअस्त॥
आशिक़े खस्ता ज़े दर्दश्मे हिज्र तो व सोख्त।
खुद न पुरसी तु कि आँ आशिके ग़मख़ार कुजाअस्त॥

---

(२)

ऐ प्रभात के शीतल पवन! प्यारे के शयन करने का स्थान कौनसा है और उस प्रणयी को वध करने वाले उस दग़ाबाज चन्द्रमा का घर कहाँ है।

रात अँधेरी है और ऐमन घाटी का मार्ग सामने ही है (वह स्थान जहाँ मूसा को ख़ुदाई जलवा दिखाई दिया था) नूर की अग्नि कहाँ चली गई है और मिलन-मन्दिर किधर है?

संसार में जो मनुष्य आया है, वह नष्ट कर देने वाले चित्रों को लेकर आया है। इसलिये मदिरा-गृह में जाकर यह न पूछो कि कहाँ है।

शुभ समाचारों वाला वही मनुष्य है जिसे अन्य लोगों की तरफ़ से इशारा मिल गया है कि भीतर चले आओ। टीका-टिप्पणी करने के लिये तो बहुत स्थान हैं परन्तु रहस्य का जानने वाला कौन है? उसका होना भी आवश्यक है।

तेरे एक एक बाल में हमारे अगणित स्वार्थ छिपे हुए हैं। हम कहाँ आ पड़े हैं और व्यर्थ में खरी-खोटी कहने वाला कहाँ है?

हमारी समझ में पागलपन समा गया है। वह मुश्की रंग की अलकें न मालूम किधर छिप गई हैं। हमारा दिल एक कोने में चुपचाप बैठा हुआ है। प्रियतमा की वह भौंह कहाँ है।

बेचारा प्रेमी तेरे प्रेम और विरह में जल रहा है और तू यह भी नहीं पूछता है कि वह दुखिया कहाँ है।

(३)

दामे जुल्फे तू दिल मुअल्लाए खेशतनस्त।
काफ़रा तामजा कि ईनरा सजाए खेशतनस्त॥
गरत जो दस्त बर आयद मुराद खातिरे मा।
बदस्त आरा कि मीरे नजाए खेशतनस्त॥
बजानन ऐ तुते शीरीने मन कि हमनु शमा।
शबाने तीरा मरा दमे फनाए खेशतनस्त॥
तुराए इश्क जबी बातू मुफ़्लिम ऐ बुलबुल।
मकुन कि आँ गुले खुद रो बराए खेशतनस्त॥
बमिरके मीनो निगिल मस्त मुए गुल मोहताज।
कि नाकहारा जे बहि कबाए खेशतनस्त॥
मरो ब खानए अरबाब बेमुरव्वते दहर।
कि कुंजे आफ़ियतन् दर सराए खेशतनस्त॥
बसोख्त हाफ़िजो देर शर्त इश्को मकाबजो।
हनोज बर सरे अहदो वफ़ाए खेशतनस्त॥

---

(४)

तेरी काली अलकों के जाल में यह हृदय अपने आप ही जाकर फँस गया है। अपनी तिरछी चितवन से तू उसे मार डाल। उसका यही दण्ड है।

यदि मेरी इच्छाएँ—हृदय की आकाँक्षाएँ तेरे द्वारा पूर्ण हो जायँ तो तेरा बोलबाला हो। यह अपने साथ भलाई करने के समान है।

ऐ सुन्दरी, प्रियतमा, तेरे प्राणों की शपथ देकर कहता हूँ कि प्रत्येक अंधेरी रात को मैं इसी विचार में रहता हूँ कि तेरे दीपक के समान रूप पर, पतंगा बनकर मैं अपने आप को न्यौछावर कर दूँ।

जब तूने प्रणय का उपदेश लिया था, मैंने तभी कह दिया था कि ऐ बुलबुल तू प्रेम न कर। वह पुष्प जो अपने आप उत्पन्न हुआ है वह स्वयम् अपने ही लिये उगा है।

फूल अपनी सुगन्धि किसी दूसरे से उधार नहीं लेता है वह स्वयं सुगन्धि का भंडार है। और उसके पर्दे के अन्दर कस्तूरी के बहुत से टुकड़े छिपे हैं।

जो लोग रूखे स्वभाव के हैं, जिन्हें दूसरों से स्नेह नहीं है उनके पास मत जाओ। तुम्हारे निजी घर में ही विश्राम करने के लिये कोना मौजूद है।

हाफ़िज़, जल कर मर गया परन्तु उसने जो प्रेम और प्राणों पर खेल जाने की प्रतिज्ञा की थी उस पर अब तक दृढ़ है।

(६)

वरौ वकारे खुद ऐ वाइज़ ईं चे कर्यादस्त।
मरा फ़िताद दिल अज़ कफ़ तुरा चे उफ़्तादस्त॥
वकाम ता न रसानद मरा लवश चूंनाय।
नसीहते हमा आलम वगोशे मन वादस्त॥
गदाए कूए तु अज़ हश्त खुल्द मुस्तग़नास्त।
असीरे वंद तू अज़ हर दो आलम आज़ादस्त॥
मियाने ऊ कि खुदा आफ़रीदास्त हेचस्त।
दक़ीक़ा एस्त कि हेच आफ़रीदर न कुशादस्त॥
अगर्चे मस्तिए इश्क़ खराव कर्द वले।
असास हस्तिए मन ज़ाँ खराव आवादस्त॥
दिला मनाल ज़े वेदादो जौरे यार के यार।
तुरा नसीव हमीं करदास्त व ईं दादस्त॥
वरौ फ़िसाना मखानो किसँ मदम् "हाफ़िज़"।
कज़ीं फ़िसान अफ़सूं मरा वसे यादस्त॥

---

(६)

ऐ उपदेशक! क्या तेरे लिये और कोई काम नहीं रह गया है। मुझे इस शिक्षा की आवश्यकता नहीं है। मेरा तो दिल चला गया है, तेरा क्या बिगड़ गया है।

जब तक उस प्रेमिका के ओठ मुझे वीणा के समान अपने बीच में नहीं ले लेंगे तब तक सारे संसार की शिक्षा मुझपर कोई असर नहीं कर सकती।

जो तेरी गली में धूनी रमाये बैठा है उसके लिये आठों स्वर्ग भी कोई चीज़ नहीं है और जिसके तेरी बेड़ियाँ पड़ी हुई हैं वह दोनों जहानों से स्वतंत्र है।

जिसे ईश्वर ने उत्पन्न किया है वह नाशवान है। यह एक ऐसी उलझन है जिसे किसी मनुष्य ने आज तक सुलझा नहीं पाया है।

यद्यपि मैं प्रणय की मदिरा से मतवाला हो रहा हूँ परन्तु यह मैं भली प्रकार समझता हूँ कि मेरे जीवन की नींव उसी बीहड़ स्थान से है।

तेरा यार अगर तेरे ऊपर अत्याचार करे और अपनी प्रतिज्ञा को पूरा न करे तो उसके विषय में किसी से शिकायत न कर। उस यार ने तेरे भाग्य का निर्णय इसी प्रकार किया है और इसी को न्याय भी समझो।

ऐ "हाफ़िज़," जा। मुझसे यह बनावटी बातें न कर। ऐसी भुलावा देने वाली बहुत सी बातें मुझे मालूम हैं।

बलंद मतबा शाही कि न साके सिपहर।
नमूनए रुखाम ताके बारगह दानिस्त॥
हदीसे हाफिजो सागर कि मी जनद पिनहाँ।
चे जाए मोहतिसिबो शहना पादशाह दानिस्त॥

(८)

बया के कश्ते अमल सख्त सुस्त बुनियादस्त।
बयार बादा के बुनियाद उम्र बर्बादस्त॥
गुलाम हिम्मते आनम कि जेर चर्ख कबूद।
जे हर्चे रंग तअल्लुक पजीरद आजादस्त॥
चे गोएमत कि बमैखाना दोश मस्तो खराब।
सरोशे आलमे गैबम चे मुजदहा दादस्त॥
के ऐ बुलन्दे नजर शाहबाजे सिद्र नशीं।
नशेमने तू न ईं कुंजे मेहनत आबादस्त॥
तुरा जे कंगुरए अर्श मी जनन्द सफीर।
नदानमत कि दरीं दामगहे चे उफ्तादस्त॥
नसीहते कुन्मत यादगीरे ब दर अमल आर।
कि ईं हदीस जे पीरे तरीकतम यादस्त॥

वह सम्राट कितना महान् है। वह आकाशों को अपने मन्दिर के महराबों के समान समझता है।

(८)

हाफिज छिपकर मदिरा पान करता है। यह बात अब गुप्त नहीं है। इसे ऊँच और नीच सभी जान गये हैं।

आशाओं के भवन की नींव बहुत कमजोर है। उसकी दीवालें क्षण-भर में गिर सकती हैं। और मदिरा ला। जीवन का कोई भरोसा नहीं है।

मैं उस मनुष्य के साहस का कायल हूँ जो नीले आकाश के नीचे प्राप्त होने वाली वस्तुओं में से किसी से भी सम्बन्ध नहीं रखता और न किसी की चिन्ता रखता है।

कल रात को जब मैं शराब खाने में, मदिरा के नशे में मतवाला हो रहा था, उस समय आकाशवाणी ने मुझे बहुत से शुभ समाचार दिये थे। वह इतने आनन्द दायक हैं कि उनका वर्णन करना मेरी शक्ति से परे है।

ऐ स्वर्गीय वृक्षों (कल्प वृक्ष) पर भ्रमण करने वाले जीव यह संसार तेरे रहने योग्य स्थान नहीं है। यहाँ अध्यवसाय की आवश्यकता है।

तेरे लिये आकाश से बुलावा आ रहा है, फिर न मालूम किस लिये इन बन्धनों में यहाँ बँधा हुआ पड़ा है।

मैं भी तुझे एक उपदेश दे रहा हूँ। इसे स्मरण रखकर काम में लाना। बुद्धिमानों की एक बात मैंने भी याद रक्खी है।

मिन्नते सिद्रा व तूबा ज़ पये साया मकश।
के चो खुश बिनगरी ऐ सरवेरवाँ ईं हमा नेस्त॥
अज़ तहत्तुक मकुन अन्देशा बचूँ गुल खुशबाश।
ज़ाँ कि तमकीने जहाने गुज़रा ईं हमा नेस्त॥
दौलत आनस्त कि बे खूने दिल उफ़्ताद बकिनार।
वरना बासइये अमल बागे जिनाँ ईं हमा नेस्त॥
ज़ाहिद ऐ मन मशौ अज़ बाज़िये गैरत ज़िनहार।
कि रह अज़ सौमआ ता दैरे मुग़ाँ ईं हमा नेस्त॥
पंज रोज़े कि दरीं मरहला मोहलतदारी।
खुश बे आसाए ज़माने कि ज़माँ ईं हमा नेस्त॥
बर लबे बहे फ़ना मुंतज़िरेम ऐ साक़ी।
फ़ुरसते दाँ कि ज़े लब ताब दहाँ ईं हमा नेस्त॥
दर्दमंदोए मने सोख़तए ज़ारो निज़ार।
ज़ाहिरा हाज़ते तक़रीरो बयाँ ईं हमा नेस्त॥
नमे हाफ़िज़ रक़मे नेक पज़ीरफ़ बले।
पेशे रिंदाँ रक़मे सूदो ज़ियाँ ईं हमा नेस्त॥

केवल छाया के लिये इन स्वर्गीय वृक्षों का अहसान अपने सर पर न लो। यदि तुम भले प्रकार विचार करोगे तो इन वस्तुओं को नाशवान् पाओगे।

रहस्य प्रकट हो जाने का कोई शोक न करो और पुष्प के समान सदैव आनन्द से खिले रहो। इस बहुरूपिणी दुनियां में पद और प्रतिष्ठा, मान और मर्यादा सभी कुछ मिटने वाले हैं।

वैभव और सम्पत्ति उसी को कहना चाहिये जो बिना परिश्रम के, बिना हृदय का रक्त बहाए हुए प्राप्त हो जावे। अन्यथा प्रयास और प्रयत्न से तो स्वर्ग का उपवन भी प्राप्त किया जा सकता है।

ऐ पवित्र मनुष्य, विधाता के खेलों को सदैव अपने ध्यान में रख। पूजा-गृह से, मदिरा-गृह कुछ अधिक दूरी पर नहीं है।

इस मार्ग में तुझे केवल पाँच दिवस का अवकाश प्राप्त हुआ है। याद रख यह बहुत कम है। इसलिये यदि विश्राम करना चाहता है तो शीघ्रता कर।

हम इस सर्वभक्षक दरिया के तट पर साक़ी की प्रतीक्षा में खड़े हुए हैं। तनिक अवसर का भी विचार रख। पीने के लिये कुछ प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है। और जीवन भी स्थायी नहीं है।

मुझ दुखिया और प्रणय-ग्रसित की अवस्था प्रकट में थोड़े ही शब्दों में कही जा सकती है। इसके लिये अधिक शब्दों की और वर्णन की आवश्यकता नहीं है।

हाफ़िज़ की ख्याति दूर दूर तक फैल गई है परन्तु जीवनमुक्त पुरुषों के निकट इसका कुछ भी मूल्य नहीं है।

(११)

दिल सरा पर्दए मुहब्बते ओस्त।
दीदा आईना दार तलअते ओस्त॥

मन कि सर दर नयावरम बद व कोन।
गरदनम् ज़ेर बार मिन्नते ओस्त॥

गर मन आलूदा दामनम् चे अजब।
हमा आलम गवाहे असमते ओस्त॥

मन कि बाशम् दरीं हरम कि सबा।
परदादारे हरीमे हुरमते ओस्त॥

मुलकते आशिक़ी व गंजे तरब।
हर्चे दारम ज़े चमन दौलते ओस्त॥

बे खयालश मबाद मंज़रे चश्म।
जाँ कि ईं गोशा खासे खिलक़ते ओस्त॥

दौरे मजनूँ गुज़श्तो नौबते मास्त।
हर कसे पंज रोज़ नौबते ओस्त॥

मन व दिल गर फ़िदा शुदेम चे शुद।
ग़रज़ अन्दर मियाँ सलामते ओस्त॥

---

(११)

हृदय उसके प्रेम का स्थान है और नेत्र उसकी सूरत का दर्पण है।

मैं दोनों जहानों में किसी को सर नहीं झुकाता हूँ। परन्तु उसके एहसान के भार से यह सर झुक जाता है।

मैं पापी हूँ तो इसमें अश्चर्य्य ही क्या है। परन्तु उसकी पवित्रता का तो सारा संसार साक्षी है।

मैं उस रँगमहल में कुछ भी अस्तित्व नहीं रखता हूँ जहाँ की वायु उसकी प्रतिष्ठा की रक्षक है।

प्रणय की जागीर और आनन्द का कोष जितना भी मेरे पास है वह सब उसी की अनुकम्पा और विशाल हृदयता का फल है।

मैं यह चाहता हूँ कि मेरे नेत्रों में उसकी शोभा के अतिरिक्त और किसी वस्तु के लिये स्थान न रहे। यही एक ऐसा कोना है जो कि उत्तम पूजागृह कहा जा सकता है।

मजनूँ का ज़माना बीत गया अब उसके स्थान पर मैं हूँ। प्रत्येक मनुष्य की बारी केवल पाँच दिन की होती है।

मैं यदि अपने हृदय के साथ न्योछावर हो गया तो क्या हुआ। उसका प्रसन्न और सकुशल रहना आवश्यक है।

क़लंदरी न बरेशस्तो मूए या अबरू।
हिसाबे राहे क़लंदर बदाँ के मूए बमूस्त॥
गुज़श्तन अज़ सरे मू दर क़लंदरी सहलस्त।
चो हाफ़िज़ आँ के जे सर बगुज़रद क़लंदरूस्त॥

(१३)

राहेस्त राहे इश्क़ कि हेचश किनारा नेस्त।
आँजा जुज़ अंगाह जाँ बसिपारंद चारा नेस्त॥
हरगाह कि दिल बइश्क़ दिही खुश दमे बुबंद।
दर कारे खैर हाजते हेच इस्तखारा नेस्त॥
मारा बमने अज़ल मतरसाँ दमे बयार।
काँ शहना दर विलायते मा हेचकारा नेस्त॥
अज़ चश्मे खुद बे पुर्स कि मारा कि मी कुशद।
जानाँ गुनाहे तालओ जुमें सितारा नेस्त॥
फ़ुरसत शुमर तरीक़ये रिन्दी कि ईं तरीक़।
चूँ राहे गंज बरहमा कस आशकारा नेस्त॥
ऊरा बचश्मे पाक तवाँदीद चूँ हिलाल।
हर दीदा जाए जल्वये आँ माहपारा नेस्त॥

शिर मुड़ाने अथवा दाढ़ी रखाने से ही कोई सन्यासी नहीं हो जाता। इस मार्ग पर जो कि बाल के समान पतला है, चलना बहुत ही कठिन है।

बालों का विचार करना तो इस मार्ग में एक बहुत ही साधारण बात है। परन्तु वास्तव में उदासी वही है जो इन बातों का विचार छोड़ कर भी "हाफ़िज़" के समान अपने आप को मिटा डाले।

(१३)

प्रणय मार्ग अनन्त है। उस मार्ग में अपने आपको मिटा डालने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं है।

जिस समय किसी के प्रेम में तू अपने हृदय को खो बैठे तो उस समय को बहुत ही शुभ समझना चाहिये। भले काम में किसी प्रकार के सोचने विचारने की आवश्यकता नहीं है।

ज्ञान के उपदेश करने की धमकी मुझे मत दे और मेरे लिये मदिरा ला। क्योंकि यह वह स्थान है जहाँ मदिरा के ऊपर निगरानी रखना व्यर्थ है।

प्रियतमे! इसमें मेरे भाग्य अथवा ग्रहों को दोष देना व्यर्थ है। अपनी ही आंखों से क्यों नहीं पूछती कि मुझपर अत्याचार का पहाड़ क्यों ढारही हैं?

यह भी ठीक है कि फ़क़ीरी का मार्ग कोप के मार्ग के समान किसी पर विदित नहीं है।

इस प्रियतमा को पहिली रात के चन्द्रमा के समान पवित्र और वासनारहित दृष्टि से ही देखना उचित है। और इसीलिये प्रत्येक आँख इस कार्य के लिये अनुचित है।

नगीरफ़ दरतो गिरियए "हाफ़िज़" वहेच रूए।
हैराने आँ दिलम कि कमअज़ संगेखारा नेस्त॥

(१४)

रोज़गारेस्त कि सौदाये तुआँ दीने मन अस्त।
ग़मे ईं कार निशाते दिले ग़मगीने मन अस्त॥
दीदने रूये तुरा दीदये जाँ वी बायद।
वीं कुजा मरतबए चश्मे जहाँ बीनेमन अस्त॥
ता मरा इश्क़े तू तालीमे सुख़न गुफ़्तन दाद।
ख़ल्क़ रा विर्दे ज़ुबाँ मदहतो तहसीने मन अस्त॥
दौलते फ़क्र ख़ुदाया बमन अरज़ानीदार।
कीं करामत सबबे हश्मतो तमकीने मन अस्त॥
यारे मन बाश कि चेबे फ़लको चीनते दह।
अज़ महे रूये तूओ अश्क चो परवीने मन अस्त॥
वाइज़े शहना शनास ईं अज़मत गो मफ़रोश।
जाँ के मंज़िल गहे सुल्ताने दिले मिसकीने मनस्त॥
यारब ईं काबए मक़सूदो तमाशा गहे कीस्त।
के मुग़ीलाँ तरीक़श गुलो नस्रीने मनस्त॥

"हाफ़िज़" के रोने का कोई भी असर तेरे हृदय पर नहीं हुआ। मैं ऐसे हृदय से हैरान हो गया हूँ जो कि कठोर पत्थर से भी कठोर है।

(१४)

बहुत समय से प्रियतमाओं से प्रेम करना ही मेरा धर्म हो गया है। और यह काम मेरे दुखी हृदय को आनन्द प्रदान करता है।

तेरा मुख देखने के लिये प्राणों के अस्तित्व को समझने वाली आँख चाहिये। मेरी आँख जो कि संसार की वास्तविकता को समझने में असमर्थ है, यह पद किस प्रकार प्राप्त कर सकती है।

जब से तेरे प्रणय ने मुझे कविता लिखना सिखाया है सभी लोग मेरी बड़ाई करते हैं और मुझे प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखते हैं

भगवान कृपा करके मुझे संन्यासी बना दे इसने मेरा दरिद्रता और ख्याति है। मेरी इच्छा है कि तुम मेरे साथ ही साथ रहो

कारण, कि आकाश और फ़र्श देखने का दृश्य तुम्हारे सम्बन्ध से तुम्हें और मेरे प्रवीन से प्रसन्नता से है।

यह जो नाना प्रकार के उपदेश दे रहा है उस से उसे अधिक ज्ञान न सिखाओ यह मेरा मुख है जहाँ पर उसका निवास स्थान है।

यह लोगों का तीर्थस्थान है मेरे हृदय के मान के काँटे मेरे लिये गुलाब और

"हाफ़िज़" अज़ हश्मते परवेज़ दिगर क़िस्सा मख़ाँ।
कि लबश जुर्रा कशे खुसरवे शीरीने मनस्त॥

(१५)

रौशन अज़ परतवे रूयत नज़रे नेस्त कि नेस्त।
मिन्नते खाके दरत बर बसरे नेस्त कि नेस्त॥

नाज़िरे रूए तु साहब नज़रानंद आरे।
सिर्रे गेसूए तु दर हेच सरे नेस्त कि नेस्त॥

अश्के ग़म्माज़े मन अर सुर्ख बर आमद चे अजब।
ख़जिल अज़ कर्दए खुद परदा दरे नेस्त कि नेस्त॥

मन अज़ीं तालए शोरीदा बरंजम बरना।
बहरमंद अज़ सरे कूयत दिगरे नेस्त कि नेस्त॥

तू खुद ऐ शोलए रखिशदा चे दारी दर सर।
के कबाब अज़ हरकातत जिगरे नेस्त कि नेस्त॥

ता दम अज़ शामे सरे जुल्फ़े तू हर जा न ज़नद।
बा सबा गुफ़्तो शुनीदम सहरे नेस्त कि नेस्त॥

ऐ "हाफ़िज़" परवेज़ बादशाह के ठाट बाट का वर्णन न करो, क्योंकि उसकी ख्याति भी तो मेरे खुसरू और शीरीं के प्याले को ओठों से लगाने ही से थी।

(१५)

तेरे मुख के प्रकाश से सभी निगाहें प्रकाशित हो रही हैं और तेरे दर्वाज़े की धूल का अहसान सभी के ऊपर है।

तेरे मुख को बड़े बड़े नज़र लड़ाने वाले लोग देखते हैं और कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं है जिसका दिल तेरी काली अलकों में न उलझा हो।

मेरे यह चुग़ली खाने वाले अश्रुबिन्दु यदि लाल रंग के होकर निकल रहे हैं तो उसमें आश्चर्य की कौन सी बात है। क्योंकि रहस्य को खोलने वाला कोई भी ऐसा नहीं है जो अपने इस कार्य से लज्जित न हो।

मैं अपने इस दुर्भाग्य से ही विपत्तियों में आ पड़ा हूँ, नहीं तो संसार के सारे वैभव केवल तेरी गली में ही प्राप्त हो सकते हैं।

ऐ चमकीली अग्नि-शिखा तेरे मस्तिष्क में क्या क्या विचार उत्पन्न हो रहे हैं! तेरी शरारतों से कोई भी कलेजा खाली नहीं है।

सभी तेरी इन शरारतों से आरी आ रहे हैं। मैं प्रभात-वायु से प्रत्येक दिन यही बातचीत करता रहता हूँ कि वह तेरी लटों का कहीं दूसरी जगह चर्चा न कर बैठे।

अज़ हयाये लबे शीरीने तू ऐ चश्मए नोश।
राफ़्ते आबो अरक़ अकनूँ शकरे नेस्त कि नेस्त॥

मसलेहत नेस्त कि अज़ पर्दा बरूँ उफ़्तद राज़।
वरना दर मजलिसे रिंदाँ खबरे नेस्त कि नेस्त॥

अज़ बजूदीं क़दरम् नामो निशां हस्त कि हस्त।
वरना अज़ जोफ़ दर आँजा असरे नेस्त कि नेस्त॥

शेर दर वादियए इश्क़े तू रूवाह शवद।
आह अज़ीं राह कि दर वे खतरे नेस्त कि नेस्त॥

नाज़ुकाँरा सफ़रे इश्क़ हरामस्त हराम।
कि बहरगाम दरीं रह खतरे नेस्त कि नेस्त॥

आबे चश्मम कि बरू मिन्नते ज़ाके दरे तुस्त।
जेरे सद मिन्नते ऊ खाके दरे नेस्त कि नेस्त॥

ता बदामन न नशीनद जे नसीमत गर्दे।
सैले अश्कज मिज़ाअम बर गुज़रे नेस्त कि नेस्त॥

न मने दिल शुदा अज़ दस्ते तु ख़ूनीं जिगरम्।
कज़ ग़मे इश्क़े तु पुर खूं जिगरे नेस्त कि नेस्त॥

ऐ मिठास के सोते, तेरे मीठे ओठों की स्पर्धा में सभी प्रकार की शक्करें पानी में डूब चुकी हैं अर्थात लज्जित हो चुकी हैं।

यह ठीक नहीं है कि किसी प्रकार रहस्य प्रकट हो जावे अन्यथा साधुओं के जमाव में सभी प्रकार के आनन्द उपस्थित हैं।

मुझे अपने जीवन का केवल इतना ही पता है कि यह है। गोकि उसमें सभी प्रकार की दुर्बलताएँ पाई जाती हैं।

तेरे प्रणय के वन में सिंह भी लोमड़ी बन जाता है। बड़े बड़े साहसी हृदय भी हिम्मत खो देते हैं।

यह मार्ग ही इतना कठिन है कि इसमें सभी प्रकार के खतरे उपस्थित हैं।

मेरा वह आँसू जो तेरे दर्वाजे की स्मृति में गिरा है और जिसकर उसकी धूल का अहसान है, सभी दर्वाजों की धूल से अधिक प्रतिष्ठित और मूल्यवान है।

इसलिये कि तेरे अञ्चल पर किसी प्रकार की धूल अथवा कूड़ा न पड़ जावे मैं रास्तों पर अपने आँसुओं का छिड़काव कर देता हूँ।

अकेला मैं ही एक दुखिया ऐसा नहीं हूँ जिसका कि जिगर खून हुआ है, बल्कि तेरे प्रणय में सभी हृदय रक्त के आँसू बहा रहे हैं।

कमरे कीं वमने खस्ता चे बंदी कि जे मेह।
वर मियाने दिलो जानम् कमरे नेस्त कि नेस्त॥
अज़ सरे कूए तु रफ़तम् न तवानम् गामे।
वरना अन्दर दिले बेदिल सफ़रे नेस्त कि नेस्त॥
ग़ैर अर्ज़ी नुक्ता कि "हाफ़िज़" जे तु नाख़ुशनूदस्त।
दर सरापाए वजूदत हुनरे नेस्त कि नेस्त॥

(१६)

रोज़ए खुल्दे बरीं खिलवते दरवेशानस्त।
मायए मोहतशमी खिदमते दरवेशानस्त॥
गंजे इज़्ज़त कि तिलिस्माते अजायब दारद।
फ़तहे आँ दर नज़रे रहमते दरवेशानस्त॥
क़स्रे फ़िर्दोस कि रिज़वाँश व दरवानी रफ़।
मंज़रे अज़ चमने नुज़हते दरवेशानस्त॥
उंचे ज़र मी शवद अज़ परतवे आँ क़ल्ब सियाह।
कीमयाएस्त कि दर सोहबते दरवेशानस्त॥
उंचे पेशश नेहद ताज तकब्बुर खुर्शीद।
किब्रिआएस्त कि दर हश्मते दरवेशानस्त॥

तेरे प्रेम में, मैं अपने दिल और जान से लग रहा हूँ। क्या इसीलिये तूने मुझसे शत्रुता कर रक्खी है?

तेरी गली से बाहर मैं अपना क़दम कभी हटा ही नहीं सकता गोकि इस बे दिल के दिल में भी अन्यान्य सैकड़ों प्रकार की इच्छाएँ हैं।

एक छोटी सी बात को छोड़कर कि "हाफ़िज़" तुझसे अप्रसन्न है और तुझमें सभी अच्छाइयाँ हैं।

सबसे ऊँचे स्वर्ग-स्थान का उपवन साधुओं का एकान्तवास है और साधुओं की सेवा से प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

प्रतिष्ठा के कोष पर विलक्षण तिलिस्म बँधे होते हैं। उनपर अधिकार प्राप्त करना साधुगणों की कृपा-दृष्टि पर ही अवलम्बित है।

स्वर्ग का वह भवन जिसका रक्षक ही उसका दरबान है, साधुओं के घूमने का केवल एक बाग़ है।

वह विलक्षण वस्तु, जिसकी छाया मात्र से ही अँधेरे हृदय में प्रकाश हो जाता है, साधुओं की सत्संगति में ही प्राप्त होती है।

वह प्रतिष्ठा जो सूर्य से भी उच्च है, साधुओं की सेवा है।

दौलते रा के नवाशद ग़मज़ आसेबे ज़वाल।
बे तकल्लुफ़ विशनो दौलते दरवेशानस्त॥
ऐ तवंगर वफ़रोशी हमा नख़वत कि तुरा।
सरो ज़र दर कफ़े हिम्मते दरवेशानस्त॥
ख़ुसरवाँ क़िब्लए हाजाते जहानंद वले।
सबबश वरंदगीए हज़रते दरवेशानस्त॥
रूए मक़सूद कि शाहाँ बदुआ मी तलबंद।
मज़हरश आइनए तलअते दरवेशानस्त॥
गंजे क़ारूं कि फ़रो मी रवद अज़ क़ह हनोज़।
ख़ांदायाशी के हमज़ ग़ैरते दरवेशानस्त॥
अज़ करां ता करां लश्करे ज़ुलमस्त वले।
अज़ अज़ल ता ब-अबद फ़ुर्सते दरवेशानस्त॥
मन ग़ुलामे नज़रे आसिफ़े अहदम कूरा।
सूरते ख़ाजिगिओ सीरते दरवेशानस्त॥
"हाफ़िज़" अर आबे हयाते अबदी मी तलबी।
मंबाश ख़ाके दरे ख़लवते दरवेशानस्त॥
"हाफ़िज़" ईंजा ब-अदब बाश कि सुलतानिओ मुल्क।
हमा अज़ बंदगीए हज़रते दरवेशानस्त॥

वह वैभव, जिसका पतन कभी सम्भव ही न हो साधुओं का ही है।

ऐ धनवान्! तेरा यह सब घमंड व्यर्थ है। तेरा अभ्युदय और पतन सब साधुओं के आशीर्वाद पर ही निर्भर है।

संसार के सम्राट, संसार की आवश्यकताओं को निस्सन्देह पूरा करते हैं। परन्तु वे साधुओं की सेवा के ही उपलक्ष में सम्राट बने हुए हैं।

अपने अभीष्ट पर पहुँचना, जिसके लिये बड़े बड़े सम्राट इच्छुक रहते हैं, केवल साधुओं के संसर्ग पर ही निर्भर है।

क़ारूँ का [illegible] साधुओं की ही [illegible] के अन्दर वर्तमान है

पृथ्वी के [illegible] छाए हुए हैं [illegible] प्रकार का भय [illegible]

मैं इस [illegible] और स्वभाव [illegible]

ऐ "हाफ़िज़" [illegible] है तो साधुओं [illegible]

ऐ [illegible] साधुओं का [illegible]

(१७)

रूए तु कस नदीदो हज़ारत रक़ीब हस्त।
दर पर्दई हुनोज़ो सदद अंदलीब हस्त॥
गर आमदम् बकूए तु चंदाँ ग़रीब नेस्त।
चूं मन दरीं दयार फ़रावाँ ग़रीब हस्त॥
हर चंद दोरम अज़ तु कि दूर अज़ तु कस मबाद।
लेकिन उमीदे वस्ले तू अम अनक़रीब हस्त॥
दर इश्के खानक़ाहो खराबात फ़र्क़ नेस्त।
हर जा के हस्त परतवे रूए हबीब हस्त॥
आँजा के कारे सोमा रा जलवा मी देहंद।
नामूसे दैरे राहिबो नामे सलीब हस्त॥
आशिक़ कि शुद के यार बहालश नज़र न कर्द।
ऐ ख़ाजा दर्द नेस्त वगरना तबीब हस्त॥
फ़रयादे "हाफ़िज़ीं" हमा आख़िर बहर्ज़े नेस्त।
हम क़िस्सए ग़रीबो हदीसे अजीब हस्त॥

---

(१७)

तेरा मुख किसी ने भी नहीं देखा पर सहस्रों के दिलों में उसके देखने की लालसा लगी हुई है। तू अभी तक बाहर भी नहीं निकला है, इस पर भी सैकड़ों तेरे प्रेमी हो रहे हैं।

यदि मैं तेरी गली में आ गया तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। मेरे ही समान बहुत से दीन इस देश के निवासी हैं।

किसी को तुझ से दूर रहना उचित नहीं है। मैं तुझसे बहुत दूर पड़ा हुआ हूँ। पर उस पर भी मुझे तुझसे शीघ्र ही मिलने की आशा है।

साधुओं के निवास स्थान और शराबखाने के प्रेम में तनिक सा भी अन्तर नहीं है। किसी भी जगह पर क्यों न हो यार के मुख का उज्ज्वल प्रतिबिम्ब सदैव दृष्टि के सम्मुख रहता है।

जहाँ पूजा-गृह है, जहाँ ईश की अभ्यर्थना की जाती है वहाँ मन्दिर और उसके पुजारी तथा पुजारिनी के नाम की भी इज्ज़त की जाती है।

कोई ऐसा भी प्रेमी हुआ है जिसके हाल पर यार ने दया-दृष्टि न की हो। हृदय तो यहाँ भी उपस्थित है, परन्तु उसमें लगने के लिये कोई रोग ही नहीं है।

हाफ़िज़ व्यर्थ में ही यह ऊधम नहीं मचा रहा है, कोई न कोई अनोखी बात अवश्य होगी।

(१८)

जाँ यारे दिलनवाज़म शुक्रेस्त या शिकायत।
गर नुक्तादाने इश्क़ी खुश विश्नो ई हिकायत॥

वे मुज्द बूदो मिन्नत हर ज़िदमते कि करदम।
यारब मबाद कसरा मख़दूमे वे इनायत॥

रिंदाने तिश्ना लब रा आवे नमी देहद कस।
गोई वली शनासां रफ़्तंद जीं विलायत॥

दर ज़ुल्फ़ चूँ कमंदश ऐ दिल सपेच काँजा।
सरहा बुरीद बीनी वे जुर्मो वे जनायत॥

चश्मत व गन्जा मारा खूं रेज़न मी पसंदी।
जाना रवा न बाशद खूंरेज़ रा हिमायत॥

दरीं शबे सियाहम गुमगश्त राहे मक़सूद।
अज़ गोशए बुरू आ ऐ कोकबे हिदायत॥

अज़ हर तरफ़ के रक़्स जुज़ वहशतम नयफ़ज़ूद।
जिनहार अज़ीं बयाबाँ बीं राहे वे निहायत॥

---

(१८)

मैं अपने उस मित्र को, जो इस हृदय को प्रसन्न करने वाला है, धन्यवाद देता हूँ, परन्तु शिकायत के साथ। यदि तू प्रणय के भेदों का ज्ञाता है तो इस कथा को आनन्द से सुन।

मैंने जो सेवा की थी उसका न तो कुछ अहसान ही था और न उसके प्रति कोई कृतज्ञता ही प्रकट की गई थी। भगवान् किसी का स्वामी कठोर न हो।

प्यासे उदासियों को पीने के लिये कोई थोड़ा पानी भी नहीं देता है। मानो उन सिद्ध पुरुषों को परखने वाले इस देश में है ही नहीं।

ऐ हृदय ! देख सँभल जा और उसकी काली [illegible] के जाल में मत फंस। वहाँ पर सैकड़ों निरपराधियों के [illegible]

तेरी आँख ने [illegible] परन्तु तू इस कार्य को [illegible] करना उचित नहीं।

इस [illegible]
ऐ मार्ग-दर्शक [illegible] पहुँचा दे।

मैं चार [illegible] आया [illegible]

(१७)

रूए तु कस नदीदो हजारत रकीब हस्त।
दर पर्दई हुनोजो सदद अंदलीब हस्त॥
गर आमदम् बकूए तु चंदाँ गरीब नेस्त।
चूं मन दरीं दयार फरावाँ गरीब हस्त॥
हर चंद दोरम अज तु कि दूर अज तु कस मबाद।
लेकिन उमीदे वस्ल तू अम अनकरीब हस्त॥
दर इश्के खानकाहो खरावात फर्क नेस्त।
हर जा के हस्त परतवे रूए हबीब हस्त॥
आँजा के कारे सोमा रा जलवा मी दहंद।
नामूसे दैरे राहिबो नामे सलीब हस्त॥
आशिक कि शुद के यार बहालश नजर न कर्द।
ऐ खाजा दर्द नेस्त वगरना तबीब हस्त॥
फरयादे "हाफिजी" हमा आखिर बहर्जे नेस्त।
हम किस्सए गरीबो हदीसे अजीब हस्त॥

---

(१७)

तेरा मुख किसी ने भी नहीं देखा पर सहस्रों के दिलों में उसके देखने की लालसा लगी हुई है। तू अभी तक बाहर भी नहीं निकला है, इस पर भी सैकड़ों तेरे प्रेमी हो रहे हैं।

यदि मैं तेरी गली में आ गया तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। मेरे ही समान बहुत से दीन इस देश के निवासी हैं।

किसी को तुझ से दूर रहना उचित नहीं है। मैं तुझसे बहुत दूर पड़ा हुआ हूँ। पर उस पर भी मुझे तुझसे शीघ्र ही मिलने की आशा है।

साधुओं के निवास स्थान और शराबखाने के प्रेम में तनिक सा भी अन्तर नहीं है। किसी भी जगह पर क्यों न हो यार के मुख का उज्ज्वल प्रतिबिम्ब सदैव दृष्टि के सन्मुख रहता है।

जहाँ पूजा-गृह है, जहाँ ईश की अभ्यर्थना की जाती है वहाँ मन्दिर और उसके पुजारी तथा पुजारिनी के नाम की भी इज्जत की जाती है।

कोई ऐसा भी प्रेमी हुआ है जिसके हाल पर यार ने दया-दृष्टि न की हो। हृदय तो यहाँ भी उपस्थित है, परन्तु उसमें लगने के लिये कोई रोग ही नहीं है।

हाफिज व्यर्थ में ही यह ऊधम नहीं मचा रहा है, कोई न कोई अनोखी बात अवश्य होगी।

(१८)

जाँ यारे दिलनवाज़म शुकेस्त वा शिकायत।
गर नुक़तादाने इश्क़ी खुश बिश्नो ई हिकायत॥
बे मुज्द बूदो मिन्नत हर ख़िदमते कि कर्दम।
यारब मबाद कसरा मख़दूमे बे इनायत॥
रिंदाने तिश्ना लब रा आबे नमी देहद कस।
गोई बली शनासां रफ़ंद जीं बिलायत॥
दर ज़ुल्फ़ चूँ कमंदश ऐ दिल सपेच काँजा।
सरहा बुरीद बीनी बे जुर्मो बे जनायत॥
चश्मत व ग़म्ज़ा मारा ख़ूं रेख़्न मी पसंदी।
जाना रवा न बाशद ख़ूरेज़ रा हिमायत॥
दरीं शबे सियाहम गुमगश्त राहे मक़्सूद।
अज़ गोशए बुरू आ ऐ कोकबे हिदायत॥
अज़ हर तरफ़ के रफ़्तम जुज़ वहशतम नयफ़ज़ूद।
ज़िनहार अज़ीं बयाबाँ बीं राहे बे निहायत॥

ईं राह रा निहायत सूरत कुजा तवाँ बस्त।
कश सद हज़ार मंज़िल बेशस्त दर बदायत॥
ऐ आफ़ताबे खूबाँ मी जोशद अंदरूनम।
यक साअतम बगुंजाँ दर सायए हिमायत॥
हर चंद बरूए आबम रू अज़ दरत न ताबम।
जौर अज़ हबीबो खुशतर कज़ मुद्दई रियायत॥
इश्क़त रसद ब फ़रयाद गर खुद बसाने "हाफ़िज़"।
क़ुरआँ जे बर बखानी दर चार दह रवायत॥

(१९)

ज़ाहिदे ज़ाहिर परस्त अज़ हाले मा आगाह नेस्त।
दर हक़ाके मा हर चे गोयद जाय हेच इकराह नेस्त॥
दर तरीक़त हर चे पेशे सालिक आयद खैरे ऊस्त।
बर सिराते मुस्तक़ीम ऐ दिल कसे गुमराह नेस्त॥
ता चे बाज़ी रुख नुमायद बैज़के खाहम राँद।
असपे शतरंज रिंदाँ रा मजाले शाह नेस्त॥

जिस मार्ग के आदि में ही सैकड़ों मंज़िलें पार करने को हैं, उसके अन्त के विषय में भला क्या कहा जा सकता है!

ऐ सुन्दरियों के सूर्य! मेरा हृदय उबाल खा रहा है। उसे एक क्षण भर के लिये अपने साथ लेकर शान्त कर दो।

तू चाहे जितने अत्याचार मेरे साथ कर और मेरी प्रतिष्ठा में बट्टा लगा परन्तु मैं तेरे दरवाज़े से मुख न मोड़ूँगा, क्योंकि मित्र का अत्याचार शत्रु की कृपा से बढ़कर होता है।

प्रेम तेरी सहायता उसी अवस्था में करेगा जबकि तू क़ुरआन पढ़नेवालों के समान क़ुरआन को चौदह रवायतों के साथ ज़ुबानी पढ़ेगा।

(१९)

वह पवित्र मनुष्य जिसे केवल प्रकट बातों का ही ज्ञान है हमारी अवस्था नहीं जानता है। अतएव वह हमारे विषय में जो कुछ भी कह रहा है, उसमें बुरा न मानना चाहिये।

जो कुछ भी ईश्वर के मार्ग के पथिक पर बीत रहा है, वह सब उसकी भलाई के लिए है। ऐ हृदय! कोई मनुष्य सीधे मार्ग में भटक नहीं जाता है।

शत्रुओं को शतरंज में बादशाह के बढ़ने के लिये स्थान ही नहीं है। इसलिये बाज़ी को समझने के लिये हम अपना केवल एक ही प्यादा आगे मैदान में बढ़ायेंगे।

चीस्त ईं सक़फ़े बलंद साद्दए बिस्यार नक़श।
कीं मुअम्मा हेच दाना दर जहाँ आगाह नेस्त॥
ईं चे इसतिग़नास्त यारब वीं चे क़ादिर हिकमतस्त।
कीं हमा चश्मे निहानस्तो मजाले आह नेस्त॥
साइबे दीवाने मा गोई नमी दानद हिसाब।
कंदरीं तुग़रा निशाने हरयतन लिल्लाह नेस्त॥
हर के ख़ाहद गो बेयाअो हर चे ख़ाहद गो बगो।
गीरो दारे हाजिबो दरबाँ दरीं दरगाह नेस्त॥
हर चे हस्त अज़ क़ामते ना साज़ बे अंदामे मस्त।
वर्ना तशरीफ़े तू बर बालाए कस कोताह नेस्त॥
बर दरे मैख़ाना रफ़्तन कारे यकरंगाँ बुवद।
ख़ुद फ़रोशांरा व कूए मै फ़रोशां राह नेस्त॥
बंदए पीरे ख़राबातम के लुत्फ़श दायमस्त।
वर्ना लुत्फ़े शेख़ो ज़ाहिद गाह हस्तो गाह नेस्त॥

यह ऊँची और

"हाफिज" सर पर खाक न नशीनद जे आनी मय दिल।
आशिकी दरूकरा चंदर कंद मालो जाह मेम्न॥

(२०)

सीना अम जे आतशे दिल दर गमे जानानाँ बसोख्त।
अतिशी दूर दरी खाना कि काशाना बसोख्त॥
तनमन दास्तए दूरिए दिलबर बसुराख्त।
जानमन आतशे इश्के रुखे जानानाँ बसोख्त॥
हर कि जुल्फे मरे जुल्के परीरुए दीद।
दिल सौदा जराजरा बर मने दीवाना बसोख्त॥
सोज दिल बीं कि जे नम आतशे अश्कम दिले शमा।
दोश बर मन जे सरे मेह्र चु परवाना बसोख्त॥
सिर्फए आदिल मरा आबे खराबात बबुद।
खानए अक्ले मरा आतशे खुमखाना बसोख्त॥
आशनायां न शरीयम कि दिल सोजे मनंद।
चूँ मन अज खेश बिरफ्तम दिले बेगाना बसोख्त॥
माजरा कम कुनो बाज आ कि मरा मरदुमे चश्म।
खिरका अज सर बदर आवर्दी बशुकाना बसोख्त॥

हाफिज अपने उन विचारों के ही कारण कोई ऊँचा स्थान प्राप्त नहीं कर सकता है। क्योंकि तलछट पीने वाला प्रेमी किसी प्रकार की पदवी अथवा ऊँचे और नीचे स्थान की चिन्ता ही नहीं करता है।

(२०)

हृदय की अग्नि से मेरा सीना यार की जुदाई में जल गया है। इस घर की आग ने सारे घर को जलाकर भस्म कर डाला है।

प्यारे के विरह में मेरा शरीर घुल गया और उसके प्रणय ने मेरे प्राणों में ही आग लगा दी।

जिस मनुष्य ने किसी प्रियतमा की काली अलकों को देखा है, उसका आकुल हृदय मुझ पागल पर जलने लगा है।

मेरे हृदय की तपन को तो देखो कि मेरे आँसुओं की गर्मी के होते हुए भी दीपक का दिल पतंगे के समान, मुझ पर तरस खा के रात समय जल कर भस्म हो गया।

मेरी पवित्रता के लिबास को मदिरा-गृह के पानी ने डुबा दिया और वहाँ की अग्नि ने मेरी बुद्धि के घर को जला दिया।

मुझे पागल देखकर दूसरों का हृदय भी पिघल गया है, फिर यदि मेरे मित्र मेरे ऊपर दयालु हैं तो इसमें आश्चर्य करने की कौनसी बात है।

बहुत बातें बनाना उचित नहीं है। आओ, अब लौट आओ। मेरे शरीर ने तुम्हारे आगमन की प्रसन्नता में अपने वस्त्रों को भी जला डाला है।

चूँ प्याला दिलम अज़ तोबा कि करदम बिशकस्त ।
हम चो लाला जिगरम बे मयो पैमाना बसोख़्त ॥
तकैं अफ़साना वगो हाफ़िजो मैं नोश दमे ।
कि न ख़ुस्फ़ेम शबो शमां व अफ़साना बसोख़्त ॥

(२१)

शगुफ़्ता शुद गुले हमरा ओ गश्त बुलबुल मस्त ।
सलाए सर ख़ुशी ऐ आशिक़ाने बादा परस्त ॥
असासे तौबा कि दर मोहकमी चु संग नमूद ।
बवीं कि जाम चे जाजे चे बुर्क़ाअश बिशकस्त ॥
चे आर बादा कि दरबारगाहे इसतिग़ना ।
चे पासबानो चे सुल्ताँ चे होशयारो चे मस्त ॥
दरीं रवाते दो दर चूं सुकर्रस्त रहील ।
रवाके ताक़े मईशत चे सर बलंदो चे पस्त ॥
मक़ामे ऐश मचस्सर नमी शवद व रंज ।
बजे बहुक्मे बला बस्ताअंद अहदे अलस्त ॥

न तुस्रो नेस्त मंजाँ ज़मीरो ग़ुस्सा मो बारा।
कि नेस्तीस्त मरंजामे हर कमाल के दुम्न ॥
शिकोफ़े आसतोसो अमे बादो मैनिके नेर।
बबाद रफ़्तो अज़ाँ खाजा हेच तर्फ़े न बस्त ॥
कमालो पर मरो अज़ ख़ाक के तीरे पर नाज़ी।
हवा गिरिफ़्त ज़माने चुने तज़ाक निशस्त ॥
ज़बाने किस्के तु "हाफ़िज़" न शुकरां गोयद।
कि गुफ़्तए सख़ुनत मी बरंद दस्त न दस्त ॥

(२२)

सुबह दम मुझे चमन का गुले नौखास्ता शुफ़्त।
नाज़ कम कुन कि दरीं बाग़ बसे तूं तु रासुफ़्त ॥
गुल न खन्दीद कि अज़ रास्त न रंजम बले।
हेच आशिक़ रुसुने तल्ख़ बमाशूक़ न गुफ़्त ॥
गर तमा दारी अयां जामे मुरस्सा मै लाल।
गौहरे अश्क बनो के निज़ाअत बायद सुफ़्त ॥
ता अबद बूए मोहब्बत न मशामश न रसद।
हर कि ख़ाके दरे मैख़ाना बरुखसारा नरुफ़्त ॥

परन्तु धनी और निर्धन होने का कोई सोच मत कर और प्रत्येक अवस्था में प्रसन्नचित्त रह। उत्थान के बाद पतन अवश्यम्भावी है।

अवसफ़ का रोब, हवा का घोड़ा और चिड़ियों की बोली यह सब वस्तुयें मिट गईं। और ख़्वाजा भी इस पृथ्वी से अपने साथ कुछ भी न ले जा सका।

यदि तू उन्नति कर के बड़ा आदमी हो जावे तो भी अपने मार्ग से विचलित न हो। तू एक धनुष से छोड़े हुये बाण के समान है जो थोड़ी देर हवा में उड़ कर ज़मीन पर गिर जाता है।

ऐ "हाफ़िज़"! तेरी लेखनी इस बात का धन्यवाद किस प्रकार दे कि तेरी कविता सर्वप्रिय हो रही है।

प्रभात-काल में बुलबुल ने नये खिले हुये पुष्प से कहा कि घमंड में बहुत ऐंठिये मत। इस उपवन में आप के समान बहुत से खिल चुके हैं।

फूल हँस कर बोला कि मैं सच्ची बात पर खेद नहीं करता। बात वास्तव में यह है कि कोई प्रेमी अपनी प्रेमिका से कठोर बात नहीं कहा करता।

यदि तुझे इस सुन्दर सजे हुए प्याले से लाल मदिरा की इच्छा है तो तुझे अपनी पलकों की नोक से आँसुओं के मोती पिरोने चाहिये।

जिस मनुष्य ने मदिरा-गृह के दरवाज़े की धूल अपने गालों से नहीं झाड़ी उसके मस्तिष्क में प्रणय की सुगन्धि कभी भी नहीं पहुँचेगी।

दर गुलिस्ताने हरम दोश चो अज लुत्फ़े हवा।
जुल्फ़े सुम्बुल जे नसीमे सहरी मी आशुफ़्त॥
गुफ़्तम ऐ पसन्दे जम जामे जहां बीनत कू।
गुफ़्त अफ़सोस कि आँ दौलते बेदार न खुफ़्त॥
सखुने इश्क़ न आनस्त कि आयद बजबाँ।
साक़िया मै देहो कोताह कुनीं गुफ़्त गुफ़्त॥
अरके "हाफ़िज़" खिरदो सब्र बदरिया अंदाख्त।
चे कुनद सिर रामे इश्क़े न्यारस्त ने नेहुफ़्त॥

(२३)

नारा जे आरज़ूए तू परवाए खाब नेस्त।
बेरूए दिलफ़रेबे तु बूदन सवाब नेस्त॥
दर दौरे चश्मे मस्ते तु हुशियार कस न दीद।
कू दीदा कज तसव्वुरे चश्मत खराब नेस्त॥
दर हर कि बिनगरी बगामे अज तु मुवतिलास्त।
यक दिल न दीदा अम कि जी इश्क़त कबाब नेस्त॥
हर कू ब तेगे इश्क़े तु शुद कुश्ता बर दरद।
ऊ रा दराँ हिसाबे सवालो जवाब नेस्त॥

गत रात्रि को स्वर्ग के उपवन में जब वायु की उत्तमता से सम्बुल की अलकें प्रभात-कालीन वायु के साथ उलझ रही थीं,

तब मैंने कहा कि ऐ जमशेद के सिंहासन! तेरा प्याला वह कहां है जिसमें संसार का सारा दृश्य दिखलाई देता था?

उसने कहा कि शोक है। वह जानता हुआ सो गया है। प्रेम वार्त्तालाप ऐसा नहीं है कि उसका वर्णन किया जावे। ऐ साक़ी! मदिरा ला। इस बात-चीत को समाप्त कर।

"हाफ़िज़" के आंसुओं ने ज्ञान और धैर्य को नदी में बहा दिया वह करता ही क्या अपने प्रणय-पीड़ा के रहस्य को गुप्त न रख सका

तेरे मिलन की इच्छा में मैंने सोने की भी चिन्ता छोड़ दी है और तेरी मोहक छवि के बिना अब अकेले रहना अच्छा नहीं लगता है

तेरी मतवाली चितवन सभी को मोह लेती है। ऐसी कोई भी आंख नहीं है जो उसके लिये व्याकुल न हो रही हो

सभी मनुष्य तेरे कारण शंकित हो रहे हैं मैंने ऐसा एक भी हृदय नहीं देखा जो तेरे प्रणय की अग्नि में जल न जा रहा हो।

जो कोई मनुष्य तेरे दरवाजे पर प्रेम रूपी तलवार के घाट उतारा गया है, उससे मरने के उपरान्त किस प्रकार के प्रश्न नहीं किये जाते

हाफिज़ चु ज़र बसूता दर उफ़तादी ताब याफ़्त ।
आशिक़ न बाशद आँ कि चु ज़र ऊ बताब नेस्त ॥

(२४)

दर अज़ल परतवे हुसनत जे तजल्ली दम ज़द ।
इश्क़ पैदा शुदो आतिश बहमा आलम ज़द ॥

जल्वए कर्द रुख़त दीद मुल्के इश्क़ न दाश्त ।
ऐन आतिश शुद अज़ीं ग़ैरतो बर आदम ज़द ॥

अक़्ल मीं ख़्वास्त कज़ाँ शोला चराग़ अफ़रोज़द ।
बर्क़े ग़ैरत बदरख़्शीदो जहाँ बरहम ज़द ॥

मुद्दई ख़्वास्त कि आयद बतमाशा गहे राज़ ।
दस्ते ग़ैब आमदो बर सीनये ना महरम ज़द ॥

दीगराँ क़ुर्रए क़िस्मत हमा बर ऐश ज़दन्द ।
दिले ग़म दीदए मा बूद कि हम बर ग़म ज़द ॥

जाने अलवी हवसे चाह ज़नख़दाँ तो दाश्त ।
दस्त दर हल्क़ए आँ ज़ुल्फ़ ख़म अन्दर ख़मज़द ॥

प्रेमी सोने के समान घरिया में पड़कर ताव खा गया। वह प्रेमी जो सोने के समान तपाया गया हो वास्तविक प्रेमी नहीं कहा जा सकता है।

(२४)

सृष्टि के आदि में तेरे प्रतिविम्ब ने चमत्कार का विकास किया, अर्थात् तेरा जलवा प्रगट हुआ। उससे वह प्रेम उत्पन्न हुआ जिसने सारे संसार में आग लगा दी।

तेरे मुख ने अपनी प्रभा दिखला कर देखा कि स्वर्गीय दूतों में प्रेम था ही नहीं। इस पर उसे क्रोध आगया और इसी से दुःखी तथा लज्जित होकर वह आदम के ऊपर जा पड़ा।

बुद्धि यह चाहती थी कि उस प्रेम की लपट से अपना दीपक जला ले परन्तु लज्जा की बिजली ने चमक कर सम्पूर्ण संसार को परेशान कर दिया।

प्रणय का झूठा दावा करने वाले ने यह चाहा कि वह उस रहस्यों से भरे हुए उपवन की सैर करे, परन्तु अदृष्ट से एक ऐसा हाथ निकला जिसने उसे धक्का देकर पीछे लौटा दिया।

अन्यान्य सभी लोगों ने भोग विलास और आनन्दोपभोग को पसन्द किया परन्तु तेरे दुःखित हृदय ने पुनः उसी पीड़ा को पसन्द किया।

ऐ साहसी प्राण! तेरा साहस बहुत ही बढ़ा-चढ़ा था। इसी लिये उसने उन घुँघराली अलकों तक अपना हाथ बढ़ा दिया।

"हाफिज" आँ रोज तरबनामये इश्क़े तो नविश्त।
कि क़लम बर सरे असबाब दिले खुर्रम जद॥

(२५)

दर हर हवा कि जुज़ बर्क़ अन्दर तलब न बाशद।
गर खिरमने व सोजद चन्दाँ अजब न बाशद॥

मुर्गे कि बामे दिल शुद उल्फ़तेश हासिल।
बर शाखसार उम्रश बर्गे तरब न बाशद॥

दर कारखानये इश्क़ अज़ कुफ्र ना गुज़ीर अस्त।
आतश करा व सोजद गर बूलहब न बाशद॥

दर महफ़िले कि खुरशेद अन्दर शुमारो जह अस्त।
खुद रा बुज़ुर्ग दीदन शर्ते अदब न बाशद॥

दर केश जाँ फ़रोशां फ़ज़्लो अदब न बाशद।
ईंजा नसब न गुंजद आँजा हसब न बाशद॥

मै खुर के उम्रे सरमद गर दर जहाँ तवाँ याफ़्त।
जुज़ बादऐ वहिश्ती हेचश सबब न बाशद॥

हाफिज ने प्रेम और आनन्द से परिपूर्ण पत्र उसी दिन लिखा जिस दिन उसने आनन्दोपभोग की सभी सामिग्रियों को दूर कर दिया।

(२५)

उस वायुमंडल में, जहाँ प्रेमी को विद्युत् के अतिरिक्त कोई अन्य वस्तु नहीं मिलती है, उस स्थान में यदि कोई खलियान जल जाय तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

वह जीव, जिसने प्रणय-पीड़ा से अपनी लगन लगा ली है, कभी फलता फूलता हुआ नहीं दिखलाई देगा।

प्रणय-मन्दिर में ईश्वर के नाम का उच्चारण न करना ही उचित है। जब वहाँ नास्तिकता का निवास होगा तो फिर भय किस वस्तु का रह जायगा। अगर बूलहब (रसूल का चचा) न हो तो आग किसको जला देगी

जिस भवन में सूर्य एक कण के समान समझा जाता है वहाँ अपनी प्रतिष्ठा का विचार भी करना अनुचित है।

जो लोग प्रभु पर खेल जाने के लिये उद्यत हैं उनके धर्म में साधु और ज्ञान के लिये कोई स्थान नहीं है प्रतिष्ठा, पद और मान का भी कोई काम वहाँ नहीं है।

स्वर्ग यदि प्राप्त किया जा सकता है तो मदिरा द्वारा संसार में जीवन यदि अमर बनाया जा सकता है तो उसी के द्वारा। इसलिये मदिरा पान कर।

"हाफिज" बिगाल जानाँ ता चूं बे जमदुमा।
मीजे शायद कि ता आँ नेज़ह शाद बे मीरद॥

(२६)

दिल अज तलबत न हाहम ता काम मन बर आयद।
या तन रसद ब जानाँ या जाँ ज तन बर आयद॥
जाँ बर लबत चुनो दुआस्त दर हेल कि अज़ ज़ानस्त।
नगिरफ्ता हेच कामे जाँ अज़ तलब बर आयद॥
अज़ दस्तरे हैरानम आमद कमाँ बजानम।
खुद कामे बेनिशानम कि आँ हुनर बर आयद॥
न तुमाने रुख कि बीनद जानां शाने मेरा।
न कुशाने लब कि फरयाद अज़ मनी जन बर आयद॥
गुफ्तम ज खेश कुजे बर तार दिल दिलम गुफ्त।
कार कोहल दे कू ता खेशतन बर आयद॥
न कुशाये तुरबतम् या याद अज़ दिलो जनाद।
कज़ आतिशे दरूनम दूदे कफन बर आयद॥
बर चूये आँ कि दर बाग या बुत गुले बे रूयत।
आयद नसीम हरदम बिदे चमन बर आयद॥

ऐ कंजूस "हाफिज"! यदि तुझे तेरी प्रियतमा मिलेगी भी तो मृत्यु के दिन।

(२६)

मैं अपनी लगन से हाथ तब तक न खींचूँगा जब तक कि मेरी इच्छा पूर्ण न हो जायगी या तो यह शरीर प्रियतमा तक पहुँच जावेगा या इसमें से प्राण ही निकल जावेंगे।

प्राण निकलना चाहते हैं पर हृदय में अभी यह लालसा शेष है कि प्रियतमा के ओठों का स्वाद चख लिया जावे।

उसका मुख देखने की इच्छा से मेरे प्राण आकुल हो रहे हैं। मेरे समान बेचारों का यह अभीष्ट कैसे सिद्ध हो सकता है।

अपने मुख पर से घूँघट हटा ले जिससे तेरी रूप-सुधा का पान कर संसार चकित हो जावे और प्रेम में मतवाला हो जावे।

और अपने ओठ खोल दे ताकि सब कोई चिल्लाने लगें। मैंने अपने हृदय से कहा कि अब उसका ध्यान छोड़ दे।

उत्तर मिला कि यह कार्य वही कर सकता है, जिसे अपने ऊपर अधिकार हो।

मृत्यु के उपरान्त मेरी समाधि खोलकर देखना कि मेरे हृदय की अग्नि के कारण मेरे कफन से धुआँ निकलता हुआ दिखलाई देगा।

हर यक शिकन जे जुल्फत पंजाए शश्त दारद।
चं ई दिले शकिस्ता बा आँ शिकन बर आयद॥

बरखेज ता चमन रा अज क़ामतो क़यामत।
हम सर्व दर बर आयद हम नारवन बर आयद॥

हरदम चु बेवफ़ाया न तवाँ गिरफ़ बारे।
मायेमो खाके कूयश ता जाँ जे तन बर आयद॥

गोयंद जिक्र खैरश दर लैले इश्कबाजां।
हर जा कि नामे "हाफ़िज" दर अंजुमन बर आयद॥

(२७)

दिला बसोज कि सोजे तु कारहा बकुनद।
निआजे नीम शबी दफ़ए सद बला बकुनद॥

अताबे यारे परी चेहरा आशिक़ाना बकुश।
कि यक करिश्मा तलाफ़ी सद जफ़ा बकुनद॥

जे मुल्क ता मलकूतश हिजाब बर दारद।
हर आँ कि खिदमते जामे जहांनुमा बकुनद॥

तुम्हारे मुख के समान फूल देखने की आशा से वायु दिन भर बाग़ के चक्कर काटा करती है। तुम्हारी प्रत्येक लट में पचास पचास फंदे पड़े हुए हैं। भला वह टूटा हुआ हृदय उनसे किस प्रकार छूट सकता है।

तू उठकर चल जिससे कि उपवन में सरो और नारून के वृक्ष उत्पन्न हों। और वह भी तेरे क़द और तेरे चलने की शोभा से।

हर समय हृदय-हीन मनुष्यों के समान नये २ मित्रों को बनाना उचित नहीं है। हम उसकी गली की धूल के समान रहेंगे जब तक कि शरीर में प्राण हैं।

प्रेमियों के जमाव में उसकी कुशलता के समाचार क्यों सुनाये जाते हैं उसमें तो हाफ़िज़ का भी नाम आ जाता है।

(२८)

ऐ हृदय तू जल। तेरी जलन से अनेक कार्य पूर्ण होंगे और अर्द्धरात्रि की प्रार्थना सहस्रों विपत्तियों को टाल देती है।

उस अप्सरा के समान सुन्दर प्रेमिका के स्थान की प्रसन्नता के समान सहन कर यदि उसने सौ बार एक भी कुटिल कटाक्ष फेंक दिया तो सैकड़ों झिड़कियों का बदला मिल जायगा।

वह मनुष्य जो अपने हृदय की सेवा न करके दूसरे की सेवा करता है उसके लिये कुर्सी से लेकर आसन तक के सारे यत्न व्यर्थ जायेंगे।

तबीबे इश्क मसीहा दमस्त मुश्फिक नीस्त।
तु दर्द दर तो न बीनद किरा दवा न कुनद॥
तु वा खुदाए खुदेदाज कारए खो दिल खुशदार।
कि रख अगर न कुनद मुद्दई खुदा बकुनद॥
जे बखते खुफ्ता मलूलम मुबद कि बेदारे।
बनाके फातहा सबद यक दुआ न कुनद॥
बसोख हाफिजो खूए जुल्फे यार मबुद।
मगर दलालते ईं दौलतश सबा बकुनद॥

(२८)

बले कि ऐब मुदावास्त जामे जम दारद।
जे साकिए कि दमे गुम शुद चे गम दारद॥
बसाखो साल गदायाँ मदेह साजीनए दिल।
बदस्ते शाहो रो देह कि महरम दारद॥
दिलम् कि लाफ तजकदबदी कनूँ सद शगल।
बखूए जुल्फ तो वा बादे सुबहदम दारद॥

प्रणय का वैद्य प्रभु मसीह के समान दयालु है और उसकी फूँक में बहुत बड़ा असर है। परन्तु जब तेरे अन्दर उसे किसी प्रकार की पीड़ा ही न दिखाई दे तो वह तुझे औषधि दे तो किस प्रकार की दे।

यदि शत्रु तुझ पर दया न दिखलायगा तो ईश्वर अवश्य ही ऐसा करेगा। इसलिये तू अपने कार्य उसी के भरोसे पर छोड़ दे और आनन्द से रह। मैं अपने सोये हुये भाग्य से तँग आ गया हूँ।

क्या ही अच्छा होता कि कोई प्रातःकाल का उठने वाला प्रभात काल में पौ फटते समय मेरे लिये ईश्वर से प्रार्थना कर देता!

"हाफिज" प्रणय की अग्नि में जल मरा परन्तु उसको यार की काली अलकों की सुगन्धि भी प्राप्त न हुई। कदाचित् उसको यह सौभाग्य वायु द्वारा प्राप्त हो जाय।

(२८)

जो हृदय की पीड़ा को समझने वाला है उसी के पास अभीष्ट सिद्धि करने वाला प्याला भी है। अगर कोई अँगूठी थोड़े समय के लिए उसके पास से खो जाय तो उसे क्या दुःख होगा।

उदासियों की दुखित अवस्था पर अपने हृदय के कोष को मत लुटा बैठ। यदि तुझे अपना दिल देना है तो किसी ऐसे सम्राट के समान यार को दे जो उसका मूल्य भी समझे।

मेरा हृदय जो कि इस नाशवान जगत के अहँकारों से परिपूर्ण था अब तेरी काली अलकों के ध्यान में प्रभात कालीन वायु के साथ सैकड़ों प्रकार की प्रतीक्षा में बैठा रहता है।

न हर दरख़्त तहम्मुल कुनद जफ़ाए ख़िज़ाँ।
ग़ुलाम हिम्मते सर्दम कि ई क़दम दारद॥
रसीद मौसमे आँ कज़ तरब चु नरगिस मस्त।
नेहद बपाए क़दह हर कि शश दरम दारद॥
जे राजे वहाए मी अकनूँ चु गिल दरेग़ न दार।
कि अज़ले कुल वसदते ऐब मुत्तहम दारद॥
मुराद दिलज़ कि जोयम कि नेस्त दिलदारी।
कि जल्वए नज़रो शेवए करम दारद॥
जे सिर्रे ग़ैब कस आगाह नेस्त ऐब मजोए।
कदाम महरमे दिल रह दरीं हरम दारद॥
जे जेबे ख़िर्क़ए "हाफ़िज़" चे तर्फ़ो व तवां बस्त।
कि मा समद तलबीदम् व ऊ सनम दारद॥

(२९)

दमे वा ग़म बसर जहाँ चकसर नमी अरज़द।
बमै बफ़रोश दिल्के मा कज़ीं बेहतर नमी अरज़द॥

तबीबे इश्क़े मसीहा दमस्ते मुशफ़िक़ लेक।
चु दर्द दर तौ न बीनद कियत दवा बकुनद॥
तु वा ख़ुदाए ख़ुदंदाज़ कारए ओ दिल ख़शदार।
कि रह्म अगर न कुनद मुद्दई ख़ुदा बकुनद॥
जे वक़्ते ख़ुफ़्ता मलूलम बुवद कि बेदारे।
बवक़्ते फ़ातहा सबह यक दुवा बकुनद॥
बसोख़्त हाफ़िज़ो बूए ज़ुल्फ़े यार नबुर्द।
मगर दलालते ईं दौलतश सबा बकुनद॥

(२८)

बले कि ग़ैब नुगायस्त जामे जम दारद।
जे ख़ातमे कि दमे गुम शुद चे ग़म दारद॥
बख़त्तो ख़ाल गदायाँ मदेह ख़जीनए दिल।
बदस्ते शाहो शँ देह कि महतरम दारद॥
दिलम् कि लाफ़ तजर्रुदज़दी कनूँ सद शग़ल।
बबूए ज़ुल्फ़ तो बा बादे सुबहदम दारद॥

प्रणय का वैद्य प्रभु मसीह के समान दयालु है और उसकी फूँक में बहुत बड़ा असर है। परन्तु जब तेरे अन्दर उसे किसी प्रकार की पीड़ा ही न दिखाई दे तो वह तुझे औषधि दे तो किस प्रकार की दे।

यदि शत्रु तुझ पर दया न दिखलायगा तो ईश्वर अवश्य ही ऐसा करेगा। इसलिये तू अपने कार्य उसी के भरोसे पर छोड़ दे और आनन्द से रह। मैं अपने सोये हुये भाग्य से तँग आ गया हूँ।

क्या ही अच्छा होता कि कोई प्रातःकाल का उठने वाला प्रभात काल में पौ फटते समय मेरे लिये ईश्वर से प्रार्थना कर देता!

"हाफ़िज़" प्रणय की अग्नि में जल मरा परन्तु उसको यार की काली अलकों की सुगन्धि भी प्राप्त न हुई। कदाचित् उसको यह सौभाग्य वायु द्वारा प्राप्त हो जाय।

(२८)

जो हृदय की पीड़ा को समझने वाला है उसी के पास अभीष्ट सिद्धि करने वाला प्याला भी है। अगर कोई अँगूठी थोड़े समय के लिए उसके पास से खो जाय तो उसे क्या दुःख होगा।

उदासियों की दुखित अवस्था पर अपने हृदय के कोष को मत लुटा बैठ। यदि तुझे अपना दिल देना है तो किसी ऐसे सम्राट के समान यार को दे जो उसका मूल्य भी समझे।

मेरा हृदय जो कि इस नाशवान जगत के अहँकारों से परिपूर्ण था अब तेरी काली अलकों के ध्यान में प्रभात कालीन वायु के साथ सैकड़ों प्रकार की प्रतीक्षा में बैठा रहता है।

न हर दरख़्त तहम्तुल कुनद जफ़ाए ख़िज़ाँ।
गुलाम हिम्मते सर्दम कि ईं क़दम दारद॥
रसीद मौसमे आँ कज तरब चु नरगिस मस्त।
नेहद बपाए क़दह हर कि शश दरम दारद॥
चे राजे बहाए मी अकनूँ चु गिल दरेग न दार।
कि अज़ले कुल बसहते ऐश मुत्तहम दारद॥
मुराद दिलज़ कि जोयम कि नेस्त दिलदारी।
कि जल्वए नज़रो शेवए करम दारद॥
चे सिर्रे गैब कस आगाह नेस्त ऐश मजोए।
कदाम महरमे दिल रह दरीं हरम दारद॥
चे जेबे ख़िर्क़ए "हाफ़िज़" चे तर्कों व तवां बस्त।
कि मा समद तलबीदम् व ऊ सनम दारद॥

(२९)

दमे बा ग़म बसर जहाँ यकसर नमी अरज़द।
बमै बफ़रोश दिल्के मा कजाँ बेहतर नमी अरज़द॥

प्रत्येक वृक्ष पतझड़ के अत्याचार को सहन नहीं कर सकता। मैं सरो के वृक्ष के साहस का क़ायल हूँ। उसी में इतनी सहनशीलता वर्त्तमान है।

अब वह ऋतु आ गई है कि लोग मतवाले हो कर मदिरा के पैरों पर अपना सर्वस्व लुटा दें। इस समय मदिरा का मूल्य देने में आगा पीछा न कर।

यह वह प्याला है जो कि गुलाब के समान अपने कोप को छिपाये हुये है। यदि तू ऐसा करेगा तो स्वर्गीय दूत सैकड़ों दोष तेरे मत्थे मढ़ देगा।

मैं किससे कहूँ कि मेरे हृदय की अभिलाषा को पूरा कर दे एक भी यार ऐसा नहीं है जो मेरी दृष्टि के सम्मुख मुझे जलाने के लिए आवे और दया दृष्टि दिखलावे।

अदृष्ट के रहस्यों को कोई नहीं जानता है और न उसके समझने का प्रयत्न करो। हृदय के दर्पण में परीक्षण का कोई ऐसा पैमाना नहीं है जो वहाँ तक पहुँच सके

"हाफ़िज़" की गुदड़ी का ऐब मत ढूँढ़ो और उसमें सूफ़ी बनाने के लिए तर्क और तवां का ढूँढ़ना है हम तो ईश्वर को ढूँढ़ने का प्रयत्न कर रहे हैं और उसमें मूर्ति बनाने के

(३०)

दुःख में एक घड़ी भर व्यतीत करना संसार के समस्त सुख से बढ़कर है। हमारे आँसुओं की मदिरा में जलने के आँसुओं का मूल्य उससे बढ़कर नहीं है

तबीबे इश्के मसीहा दमस्त मुश्फिक नेस्त ।
तु दर्द दर तो न बीनद कियत दवा बकुनद ॥
तु वा सुदाए खुदेदाज कारए खो दिल शादबार ।
कि रश्क अगर न कुनद मुर्दई खुदा बकुनद ॥
जे बखते खुफ्ता मलूलम चुनद कि बेसारे ।
बजुज्फे फातेहा साहे यक दुआ बकुनद ॥
बमांद हाफिजो चूए जुल्फे यार नयुरे ।
मगर दलालते दे दौलतरा सबा बकुनद ॥

(२८)

बले कि पीरे मुगानस्त जामे जम दारद ।
जे खाके कि दमे गुम शुद चे गम दारद ॥
बखाबो खाल गदायां मदेह सलीनाए दिल ।
बदस्ते शाहे शौ देह कि महरम दारद ॥
दिलम् कि लाफ नजकुदजदी कनूं सद शगल ।
बचूए जुल्फ तो वा बादे सुबहदम दारद ॥

प्रणय का वैद्य प्रभु मसीह के समान दयालु है और उसकी फूँक में बहुत बड़ा असर है। परन्तु जब तेरे अन्दर उसे किसी प्रकार की पीड़ा ही न दिखाई दे तो वह तुझे औषधि दे तो किस प्रकार की दे।

यदि शत्रु तुझ पर दया न दिखलायगा तो ईश्वर अवश्य ही ऐसा करेगा। इसलिये तू अपने कार्य उसी के भरोसे पर छोड़ दे और आनन्द से रह। मैं अपने सोये हुये भाग्य से तँग आ गया हूँ।

क्या ही अच्छा होता कि कोई प्रातःकाल का उठने वाला प्रभात काल में पौ फटते समय मेरे लिये ईश्वर से प्रार्थना कर देता!

"हाफिज" प्रणय की अग्नि में जल मरा परन्तु उसको यार की काली अलकों की सुगन्धि भी प्राप्त न हुई। कदाचित् उसको यह सौभाग्य वायु द्वारा प्राप्त हो जाय।

(२८)

जो हृदय की पीड़ा को समझने वाला है उसी के पास अभीष्ट सिद्धि करने वाला प्याला भी है। अगर कोई अँगूठी थोड़े समय के लिए उसके पास से खो जाय तो उसे क्या दुःख होगा।

उदासियों की दुखित अवस्था पर अपने हृदय के कोष को मत लुटा बैठ। यदि तुझे अपना दिल देना है तो किसी ऐसे सम्राट के समान यार को दे जो उसका मूल्य भी समझे।

मेरा हृदय जो कि इस नाशवान जगत के अहँकारों से परिपूर्ण था अब तेरी काली अलकों के ध्यान में प्रभात कालीन वायु के साथ सैकड़ों प्रकार की प्रतीक्षा में बैठा रहता है।

न हर दरख़्त तहम्मुल कुनद जफ़ाए ख़िज़ाँ।
ग़ुलाम हिम्मते सर्दम कि ई क़दम दारद॥
रसीद मौसमे आँ कज़ तरब चु नरगिस मस्त।
नेहद वफ़ाए क़दह हर कि शश दरम दारद॥
जे राज़े वहाए मी अकनूँ चु गिल दरेग़ न दार।
कि अज़ले कुल वसइते ऐव मुत्तहम दारद॥
मुराद दिलज़ कि जोयम कि नेस्त दिलदारी।
कि जल्वए नज़रो शेवए करम दारद॥
जे सिर्रे ग़ैब कस आगाह नेस्त ऐब मजोए।
कदाम महरमे दिल रह दरीं हरम दारद॥
जे जेबे खिर्क़ए "हाफ़िज़" चे तर्फ़ो व तवां वस्त।
कि मा समद तलबीदम् व ऊ सनम दारद॥

(२९)

दमे वा ग़म वसर जहाँ यकसर नमी अरज़द।
बमै वफ़रोश दिल्के मा कज़ीं बेहतर नमी अरज़द॥

बकूए मी फ़रोशानश बजामे बर नमी गीरंद।
जहे सज्जादए तक्वा कि यक साग़िर नमी अरज़द॥

रक़ीबम् सरज़नशहा कर्द कर्जी बावे रुखे बर ताब।
चे उफ़्ताद ईं सरे मारा कि खाके दर नमी अरज़द॥

तुरा आँ बेह कि रूए खुद ज़े मुश्ताक़ाँ बपोशानी।
कि शादीए जहाँगीरी- गमे लश्कर नमी अरज़द॥

दयारो यार मरदम रा मुक़ीदे मी कुनद बर्ना।
चे जाए फ़ारसे कीं मेहनत जहाँ यकसर नमी अरज़द॥

बिशो ईं नक़्शे दिल तंगी कि दर बाज़ारे यकरंगी।
मुरक़्क़ाहाये गूनागूं मए अहमद नमी अरज़द॥

शिकोहे ताजे सुलतानी कि बीमे जाँ व राँ रह अस्त।
कुलाहे दिलकशास्त अम्मा तवक्कुफ़ सर नमी अरज़द॥

बस आसाँ मीं नमूद अव्वल गमे दरिया बबोए सूद।
ग़लत करदम कि एक मौजश बसद गौहर नमी अरज़द॥

मदिरा बेचने वालों की गली में तो उसका मूल्य एक प्याला भी नहीं समझा जाता। आखिर यह पवित्रता है क्या वस्तु जो एक प्याले के बराबर भी नहीं है।

मेरे प्रतिद्वन्द्वी ने मुझसे बहुत सी तीखी बातें कहकर उस दरवाजे को छोड़ देने की आज्ञा दी। न मालूम मेरे इस सर को क्या हो गया है कि वह उस द्वार की धूल होने योग्य भी नहीं है।

ऐ प्रियतमा! तेरे लिये अपने प्रेमियों से मुँह छिपा लेना उत्तम होगा। संसार-विजय से जो प्रसन्नता होती है वह उस चिन्ता की समानता नहीं कर सकती जो सेना के प्रति होती है।

देश और मित्रों ने मुझे बाँध रक्खा है अन्यथा फ़ारस क्या एक संसार भी फ़िकर करने योग्य नहीं है।

इस हृदय के घब्बों को धोकर साफ़ कर डाल। विश्वास की हाट में यह साफ़ गुदड़ी लाल मदिरा के ही भाव में ली जाती है।

बादशाही ताज एक सुन्दर और मनोहर वस्तु है। एक बहुत बड़ी शान की चीज़ है। उसमें प्राण जाने का भय भी है। परन्तु वह सर दर्द के सम्मुख कुछ भी मूल्य नहीं रखता।

पहले पहल नदी को देखकर जो भय उत्पन्न होता है वह लाभ की आशा में बहुत ही सरल ज्ञात होता है। परन्तु मैंने भूल की। उसकी एक लहर सौ मोतियों से भी बढ़कर है।

बरो गंजे क़नाअत जो बकुंजे आफ़ियत बिनशीं।
कि यकदम तंग दिल बूदन ब यहो बर नमी अरज़द॥
चु "हाफ़िज़" दर क़नाअत कोश अज़ दुनियाए दूँ बगुज़र।
कि यक जौ मिन्नते दोना दो सद मन ज़र नमी अरज़द॥

(३०)

राहे बे ज़न कि आहे बर साज़े आँ तवाँज़द।
शेरे बज़बाँ कि बा आँ रतले गिराँ तवाँज़द।
बर आसताने जानाँ गर सर तबाँ निहादन।
गुलबाँगे सर बलन्दी बर आस्माँ तवाँज़द॥
क़दे ख़मीदए मा सहलत नुमायद अमाँ।
बर चश्मे दुश्मनाँ तीर अज़ीं कमां तवाँज़द॥
दर ख़ानक़ए न गुंजद इसरारे इश्क़बाज़ी।
जामे मये मुग़ाना हम बा मुग़ाँ तवाँज़द॥
दरवेश रा न बाशद नुक्ले सराये सुल्ताँ।
मायेम ब कोहना दलक़े क़ातश दराँ तवाँज़द॥

जाकर किसी धैर्य्य के कोने को ढूंढ़ और उसमें बैठकर कुछ देर विश्राम कर ले। थोड़ी सी पीड़ा की बराबरी समस्त संसार की तरी और खुश्की भी नहीं कर सकती।

अहे नजर दो आलम दर यक नजर ने बाजद।
इश्कस्तो दादे अव्वल वर नादे जाँ नाजद॥
गर दौलते विसालत गुशादद दरी कजूने।
सरहा बदी तवस्सुल वर आस्ताँ तवाँजद॥
या आजो कतमा दानिश दादे मकुन न माँ दाद।
चूँ जन्मा शुद मजानी गूये बगाँ तवाँजद॥
शुद रहजने सलामत जुल्फे तो वीं अजब नेस्त।
गर राहजन तु बाशी सद कारवाँ तवाँजद॥
अज शर्म दर हिजाबम साकी तलत्तुफ कुन।
बाशद के बोसए चंद बरआँ दहाँ तवाँजद॥
बर चोबयारे चश्मम् गर साया अफगनद दोस्त।
बर खाके रह गुजारश आबे रवाँ तवाँजद॥
बर अदमे कामरानी फाले बजन चे दानी।
युमकिन के गूये दौलत दरई जहाँ तवाँजद॥
ईशको शबाबो रिन्दी मजमए मुरादस्त।
साकी बेआ के जामे दर दे जमाँ तवाँजद॥

प्रेमी मनुष्य प्रेमिका के एक ही कटाक्ष पर दोनों जहानों को न्यौछावर कर देते हैं। प्रणय का प्रारम्भ हो गया है। उसके लिये अपने प्राणों की बाजी लगाना चाहिये।

यदि सौभाग्य से तू अपने अगणित प्रेमियों से मिलने के लिये उद्यत हो जाय तो बहुत से सर तेरी चौखट से ही टकरा जायँ।

बुद्धि, ज्ञान और विद्या के बल से कविता में मिठास भरी जा सकती है। जब बहुत से विषय इकट्ठे हो जायँ तो कविता का पाठ पढ़ाया जा सकता है।

तेरी घुँघराली अलकों ने मेरे धैर्य को लूट लिया और इसमें कोई आश्चर्य्य की बात भी नहीं है। यदि तू लुटेरा होता तो प्रेमियों के सहस्रों क़ाफ़िलों को लूट सकता था।

मुझे झेंप लग रही है। ऐ साक़ी! तू मेरे ऊपर दया दिखला। तेरी कृपा के आधार पर ही संभव है कि मैं उसके मुख का कुछ चुम्बन ले सकूँ।

मैं अपने मित्र के मार्ग की धूल पर अपनी आँखों के आँसुओं से छिड़काव कर सकता हूँ।

सफलता की आशा रख कर तू अपना कार्य आरम्भ कर दे। मैं नहीं कह सकता हूँ कि परिणाम क्या होगा। सम्भव है कि सौभाग्य की बाजी तू इस संसार में जीत ले।

प्रेम, युवावस्था और फ़क़ीरी यह वस्तुयें अभिलाषा की जड़ हैं। साक़ी आगे बढ़। इस थोड़े से जीवन में ही एक प्याला पिया जा सकता है।

"हाफ़िज़" वह्नके क़ुरआँ कज़रिफ़्को शीर वाज़ आ।
वाशद कि गूये दौलत वा मुखलिसाँ तवाँज़द ॥

(३१)

सालहा दिल तलबे जामे जम अज़ मा मी कर्द।
उँचे खुद्दाश्त जे बेगाना तमन्ना मी कर्द ॥
गौहरे कर सदफ़े कौनो मकाँ बेरूनस्त।
तलब अज़ गुमशुदगाने लबे दरिया मी कर्द ॥
मुश्किले खेश बरज़ पीरे मुगाँ पुर्दम दोश।
कू बताईदे नज़र हले मोअम्मा मी कर्द ॥
दोदमश खुर्मों .खुशदिल कदहे बादा बदस्त।
बंदराँ आईना सद गूना तमाशा मी कर्द ॥
गुफ़्तमीं जामे जहाँ बीं वतू कै दाद हकीम।
गुफ़्तआँ रोज़केई गुम्बदे मीना मी कर्द ॥
आँ हमाँ शोब्दहा अक़्ल कि मी कर्द आँजा।
सामरी पेशे असाओ यदे बैज़ा मी कर्द ॥

ऐ "हाफ़िज़" ! तू धर्म (क़ुरान) के लिये अपने हृदय की चिन्ता कर
बनावटी बातों को त्याग दे। कदाचित् तू संत मनुष्यों की संगति से
सुखी हो सके।

वेदिली दर हमा अहवाले खुदा वा ऊ वूद।
ऊ नमी दीदशो अज़ दूर ख़ुदारा मी कर्द॥
गुफ़्त आँ यार कज़ू गश्त सरे दार बलंद।
जुर्मश ईं वूद कि इसरार हवेदा मी कर्द॥
फ़ैज़े रूहुल्क़ुदस अर वाज़ मदद फ़रमायद।
दीगराँ हम बे कुनद उंचे मसीहा मी कर्द॥
गुफ़्तमश ज़ुल्फ़ चु ज़ंजीर वुताँ अज़ पए चीस्त।
गुफ़्त "हाफ़िज़" गिलए अज़ दिले शैदा मी कर्द॥

(३२)

सहर बुलबुल हिकायत बासवा कर्द।
कि इश्क़ रूये गुले बामा चहा कर्द॥
अज़ाँ रंगे रुखम ख़ूँ दर दिल अफ़्त।
बज़ीं गुल्शन व खारम् मुब्तला कर्द॥
गुलामे हिम्मते आँ नाज़नीनम।
कि कारे ख़ैर बे रूओ रेया कर्द॥

एक ऐसा प्रेमी था कि जिसके साथ ईश्वर प्रत्येक अवस्था में वर्त्तमान रहता था परन्तु वह उन्हें देख नहीं पाता था और दूर से उनका नाम ले ले कर पुकारता था।

उस यार ने कहा कि उसे (मंसूर) को शूली मिलने का कारण यही था कि वह प्रणय के रहस्यों को समझ गया था और उन्हें खोलता था।

यदि यह पवित्र आत्मा फिर से सहायता करे तो अन्य लोग भी वही करने लगें जो ईसा किया करते थे (मृतकों को जिला देना और रोगियों को चंगा कर देना।)

मैंने उससे पूछा कि तेरी यह ज़ंजीर के समान अलकें किस लिये हैं। उसने उत्तर दिया कि "हाफ़िज़" अपने पागल दिल की शिकायत करता था, इसलिये उस पागल को बाँधने के लिये।

(३२)

सुबह को बुलबुल ने प्रभात कालीन वायु से कहा कि देखो पुष्प के रूप ने मेरी कैसी अवस्था कर दी है। उसके प्रेम में पड़कर मैं इस अवस्था को पहुँच गया हूँ।

अपने रूप के रंग से उसने मेरे हृदय को रक्त में परिणित कर दिया है और इस उपवन के द्वारा मुझे काँटों में फंसा दिया है।

मैं तो उस सुन्दरी के साहस का क़ायल हूँ, जिसने बिना किसी बनावट के हृदय पर अधिकार कर लिया है।

ख़ुशश वादआँ नसीमे सुब्हगाही।
कि दर्दे शब नशीनाँ रा दवा कर्द॥

मन अज बेगानगाँ हरगिज न नालम्।
के बामन हर्चे कर्द-आँ आशना कर्द॥

गरअज सुल्ताँ तमा करदम खता बूद।
वरअज दिलबर वफ़ा जुल्तम् जफ़ा कर्द॥

जे हर सू बुलबुले आशिक़ दर अफ़ग़ाँ।
तनुम दरमियाँ बादे सबा कर्द॥

नक़ाबे गुल कशीदो जुल्फ़े सुंबुल।
गिरहबन्दे क़बाए गुंचा वा कर्द॥

वफ़ा अज ख्वाजगाँन शहा बामन।
कमाले दीनोदौलत बुल वफ़ा कर्द॥

बशारत बरबकूये मै फ़रोशाँ।
कि "हाफ़िज़" तौबा अज जुहदे रेया कर्द॥

(३३)

इश्क़त न सिर्रेसरेस्त कि अज सर बदर शबद।
मेहरत न आरिज़ेस्त कि जाए दिगर शबद॥

इश्के तु दर दरूँनमी मेरद तू दर दिलम।
आखिर अंगरूँ शुदो बा आँ दर खाद॥
दर्दमन्द दर्दे इश्क कि दारद इलाजे ऊ।
हरचंद सई बेश नुमाई बतर शवद॥
अन्दर शबे कि मनम् कोहरी शवद दर शबे।
फरयाद मन जे इश्क न अफलाक बर शवद॥
गर चो के मन सरिश्क किशानम बजिला दाद।
किरते दराक जुम्ला बयकबार तर शवद॥
बे दरमियाने जुल्फ बदीदम रुखे निगार।
बर हैअते कि अज मुहीते कमर शवद॥
गुफ्तम कि इन्तिहा कुनमज बोसा गुफ्त ने।
मगुजार ता कि माद जे उफ्तद बदर शवद॥
ऐ दिल बयाद लालश अगर बादसुरा।
मगुजार हाँ कि गुदरगाँ रा खबर शवद॥
"हाफिज" सर अज लहद बदर आरद बपाये बोस।
गर साके ऊ बपाए शुमा पए सिपर शवद॥

मेरे सीने और मेरे हृदय में तेरे प्रेम ने पैदाइश के साथ प्रवेश किया था और अब वह प्राणों के साथ निकलेगा।

प्रेम एक ऐसा रोग है कि उसकी जितनी ही औषधि की जाय उतनी ही रोगी की अवस्था और भी बुरी होती जाती है।

इस नगर में केवल मैं ही एक ऐसा मनुष्य हूँ जिसकी प्रेम में रोने की आवाज आकाश तक पहुँच जाती है।

यदि मैं अपनी आँखों से आँसू बहाऊँ तो एक नदी प्रकट होकर तमाम खेतों को भर दे।

रात मैंने अपने प्रियतमा के मुख को देखा। उसे काली अलकों ने आच्छादित कर रक्खा था। उसे देखकर ऐसा ज्ञात होता था मानो चन्द्रमा को बादलों ने ढक लिया हो।

यह हाल देखकर मैंने कहा कि क्या मैं चुम्बन लेना प्रारम्भ करूँ। उसने उत्तर दिया कि तनिक ठहर जाओ। चन्द्र को बादलों में से निकल आने दो।

ऐ हृदय! यदि तू उसके अधरों की याद में मदिरा पीकर मतवाला बनना चाहता है तो इस प्रकार अपना कार्य कर कि वैरियों को खबर न होने पावे।

यदि तुम "हाफिज" की समाधि पर चलो तो वह उसमें से निकल कर तुम्हारे पैरों का चुम्बन ले ले।

(३४)

इश्क़े तू निहाले हैरत आमद।
वस्ले तू कमाले हैरत आमद॥
वस ग़र्क़ए बहरे वस्ल काख़िर।
हम बा सरे हाल हैरत आमद॥
ने वस्ल बैमाँद व ने वासिल।
आँ जा कि ख़याले हैरत आमद॥
अज हर तरफ़े कि गोश करदम।
आवाज़े सवाले हैरत आमद॥
यक दिल बनुमाँ कि दर रहे ऊ।
बर चेहरा न खाले हैरत आमद॥
शुद मुन्हज़म अज कमाले इज़्ज़त।
आँ रा कि जलाले हैरत आमद॥
सर ता क़दमे वजूदे "हाफ़िज़"।
दर इश्क़ निहाल हैरत आमद॥

(३५)

अक्से रूये तु चु दर आइनये जाम उफ़्ताद।
आरिफ़ अज़ रन्दये मए दर तमए खाम उफ़्ताद॥

हुस्ने रूये तु वयक जलवा कि दर आईना क़द।
ईं हमा नक़्श दर आइनये औहाम उफ़्ताद॥
चेकुनद कज़ पये दौराँ न रवद चूँ परेकार।
हर कि दर दायरये गरदिशे अय्याम उफ़्ताद॥
मन जे मसजिद व खराबात न खुद उफ़्तादम।
ईं नम अज़ अहदे अज़ल हासिले फ़रजाम उफ़्ताद॥
आँ शुद ऐ ख्वाजा कि दर सौमुआ बाज़म बीनी।
कारे मन बारुखे साक़ी व लबे जाम उफ़्ताद॥
ईं हमाँ अक्से मयो नक़्शे मुखालिफ़ कि नमूद।
यक फ़रोगे रुखे साक़ीस्त कि दर जाम उफ़्ताद॥
ग़ैरते इश्क़ ज़बाने हमाँ खासाँ बबुरीद।
कज़ कुजा सिर्रे ग़मश दर दहने आम उफ़्ताद॥
हर दमश बा मने दिल सोख़्ता लुफ़्फ़े दिगर अस्त।
ईं गदा बीं कि चे शाइस्तये इनआम उफ़्ताद॥

बस वह उससे मिलने के लिये व्यर्थ के विचारों में पड़ गया। तेरे मुख ने दर्पण में जैसे ही अपनी शोभा दिखलाई वैसे ही उसके साथ ही साथ उसी दर्पण में सँसार की सारी विचित्रतायें अंकित हो गईं।

जो मनुष्य समय रूपी चक्कर में पड़ गया है वह उसके साथ चक्कर लगाने के अतिरिक्त और कर ही क्या सकता है।

मैं स्वयँ पूजागृह से मदिरागृह में नहीं चला आया हूँ। मैंने जो सृष्टि के प्रारंभ में प्रतिज्ञा की थी यह उसी का फल है।

महाशय जी! वह समय व्यतीत हो गया जब आप मुझे पूजागृह में देखते थे। अब मैं प्रणय की पूजा करने लगा हूँ और मेरी पहुँच साक़ी के चेहरे और प्याले के ओंठों तक हो गई है।

मदिरा की यह झलक और उसमें एक दूसरे के विरुद्ध दिखलाई देने वाले चित्र साक़ी के ही दृष्टि फेरने के परिणाम हैं। जैसा कि प्याले के दर्पण में हुआ है।

प्रणय की शरमिन्दगी ने तमाम मुख्य मुख्य और बड़े बड़े आदमियों की ज़ुबान काट डाली थी। आश्चर्य्य यह होता है कि उसके प्रेम का रहस्य साधारण मनुष्यों को कैसे मालूम हुआ।

देखो तो यह दीन हीन उसका पुरस्कार पाने के योग्य किस प्रकार हो गया है कि उसके साथ वह सदैव कोई न कोई दयाभाव प्रकट किया करता है।

मन के दर जुम्रये उश्शाक़ वरिन्दी अलमम।
तबले पिन्हाँ चे जनम तश्ते मन अज बाम उफ़्ताद॥

जेरे शम्शीरे ग़मश रक़्स कुनाँ बायद रफ़्त।
कौं के शुद कुश्तये ऊ नेक सर अंजाम उफ़्ताद॥

दर ख़मे चुलके तु आवेख़्त दिल अज चाहे ज़क़न।
आह कज़ चारा करूँ आमदो दर दाम उफ़्ताद॥

पाक बीं अज नज़रे रास्त व मक़्सूद रसीद।
अहवल अज चश्मे दो बीं दर तमये ख़ाम उफ़्ताद॥

सूफ़ियाँ जुम्ला हरीफ़न्दो नज़र बाज़ बले।
जीं नियाँ "हाफ़िजे" दिल सोख़्ता बदनाम उफ़्ताद॥

(३६)

आशिक़ाँ रा दर्दे दिल दिस्वार नीं बायद कशीद।
दाग़े यारो ग़ुस्सये अग़यार नीं बायद कशीद॥

दाद ख़ाही रा कि नीं ख़ाहद जे सुल्ताँ दादे ख़ेश।
इन्तज़ारे बामदादे दार नीं बायद कशीद॥

प्रेमियों में मेरा नाम एक बड़े और मतवाले प्रेमी के नाम से प्रसिद्ध है। अब जब मैं इस प्रकार कलंकित हो गया हूँ तो इस भेद को छिपाने से क्या लाभ।

उसकी प्रेम की तलवार के नीचे बड़ी ही प्रसन्नता से जाना चाहिये। उसके हाथ से जिसकी मृत्यु होती है वह एक बहुत ही उत्तम परिणाम पर पहुँचता है।

मेरा दिल पहिले तेरी ठुड्डी में आ कर अटक गया था, फिर वहां से निकला तो तेरी काली लटों के फन्दे में फंस गया। [illegible]

नलुस्त गोएन्द पीर सोहबत ईं हर्फ़स्त।
कि अज मुसाहबे ना जिंस एहतराज कुनेद॥
बजाने दोस्त कि ग़म परदए शुमाँ न दरद।
गर एतमाद बर अल्ताफ़े कारसाज कुनेद॥
मियाने आशिक़ो माशूक़ फ़र्क़ बिस्यारस्त।
चु यार नाज नुमायद शुमा नियाज कुनेद॥
हर आँ कसे कि दरीं हल्क़ा जिंदा नेस्त बइश्क़।
बरू चु मुर्दा बकतवाए मन नमाज कुनेद॥
अगर तलब कुनद इनाम अज शुमा "हाफ़िज"।
हवालतश बलबे यारे दिलनवाज कुनेद॥

(३८)

मनो इंकार शराब ईं चे हिकायत बाशद।
गालिब न ईं कदीम अज़लो किफ़ायत बाशद॥
मनकि शबहा रहे तक़वा जदा अम बादफ़ो चंग।
नागहाँ सर बरह आरम चे हिकायत बाशद॥
ज़ाहिद अर राह बरिंदी न बरद माज़ूरस्त।
इश्क़ कारेस्त कि मौक़ूफ़े हिदायत बाशद॥

बहुत ही अनुभवी साधु की शिक्षा यह है कि बेजोड़ साथी से सदैव अलग रहो।

यार के प्राणों की शपथ देकर कहता हूँ कि प्रणय में तुम्हारे सिर पर कलंक का टीका कभी भी नहीं लगेगा; यदि तुम ईश्वरीय कृपा पर विश्वास रक्खो।

प्रेमी और प्रेमिका में बहुत बड़ा भेद है। जब प्रेमिका अपनी मान लीला दिखलावे तो तुम उसको मनाने के लिये विनती किया करो।

इस जनाब ने जिस मनुष्य के हृदय से अज्ञान नहीं है, आज्ञा में आज्ञा देता है, उसे मृत समझकर उसके ऊपर नेत्र पड़ी

"हाफ़िज" यदि तुमसे कोई तुम्हारा मोल ले तो उसे उसी मनोमोहक यार के

ता अक्लो फ़िक्र बीनी बे मारफ़त नशीनी।
यक नुक्ताअत बगोयम सुदरा मबीं कि रस्ती॥
आँ रोज दीदा बूदम ई किसनदा कि बरखास्त।
कज सरकशी जेमानी बा मा नमी नशस्ती॥
सुल्ताने मन खुदा रा जुल्फत शिकस्त मारा।
ता कै कुनद सिपाही चंदीं दराज दस्ती॥
दर मजलिसे मुगानम दोशाँ सनम् चे खुश गुफ़्त।
बा काफ़िराँ चे कारत गर बुत नमी परस्ती॥
अज राहे दीदा "हाफ़िज" ता दीदा जुल्फे पस्तत।
बा जुम्ला सर बलंदी शुद पायमाले पस्ती॥

(४२)

ऐ बे खबर बकोश कि साहब खबर शवी।
ता राहरौ न बाश कि राहबर शवी॥
दस्तज मसे वजूद चु मर्दाने रह बुशोद।
ता कीमियाए इश्क बेयाबी व जर शवी॥

जब तक तू बुद्धि और विद्या के चक्कर में रहेगा तुझे सफलता कभी भी प्राप्त न होगी। मैं तुझे एक गुर बताए देता हूँ। स्वयम् कभी शिक्षक मत बनना।

बस फिर स्वतंत्रता तेरी है। उस दिन जब कि तू क्रोधित होकर उठ गया था मैंने सोच लिया था कि कुछ न कुछ बखेड़ा अवश्य ही उठ खड़ा होगा।

ऐ मेरे सम्राट! ईश्वर के लिये अब तो कुछ मेरे ऊपर तरस खा। तेरी अलकों ने मेरे हृदय को चुटीला बना दिया है। यह काली नागिनें कब तक डसती रहेंगीं? मेरी कुछ तो सुनाई कर।

रात को मदिरा बेचने वालों की सभा में उस प्यारे ने मुझसे एक बहुत ही अच्छी बात कही कि यदि तू मूर्तिपूजक नहीं है तो तेरा विधर्मियों से क्या सम्बन्ध है?

"हाफ़िज" बड़ा ही प्रतिष्ठित था। परन्तु जब से उसने तेरी बिखरी हुई अलकों को देखा है बरबाद हो रहा है और प्रतिष्ठा से बहुत दूर जा पड़ा है।

(४३)

ऐ अज्ञानी! प्रयत्न कर ताकि तेरा अज्ञान दूर हो जावे। जब तक तू स्वयम् इस मार्ग पर नहीं चलेगा दूसरों के लिये क्या रास्ता बतावेगा।

अपने अस्तित्व को ईश्वरीय मार्ग पर चलने वालों के समान छोड़ दे। इससे तुझे प्रेम का कीमियाँ प्राप्त होगा और तू सुवर्ण बन जावेगा।

ख़ाबो ख़ुरत जे मर्तबए ख़ेश दूर कर्द।
अंगा रसी बख़ेश कि बे ख़ाबो ख़ुर शवी॥
गर नूरे इश्क़े हक़ बदिलो जानत ओफ़्तद।
बिल्लाह कज आफ़तावे फ़लक ख़ूब तर शवी॥
यकदम शरीक़ बहे ख़ुदा शो गुमाँ मबर।
कज आब हफ़्त बह बयक मूए तर शवी॥
अज़ पाए ता सरत हमा नूरे ख़ुदा शवद।
दर राहे ज़ुल जलाल चो बेपाओ सर शवी॥
बज़्हे ख़ुदा अगर शवदत मंजरे नज़र।
ज़ाँ पस शके निमाँद कि साहब नज़र शवी॥
बुनियाद हस्तिए तु चू ज़ेरो ज़बर शवद।
दर दिल मदार हेच कि ज़ेरो ज़बर शवी॥
दर मकतबे हक़ायक़े पेशे अदीबे इश्क़।
हाँ ऐ पिसर बकोश कि रोज़े पिदर शवी॥
गर दरसरत हवाए विसालस्त "हाफ़िज़ा"।
बायद कि ख़ाके दरगहे अह्ले हुनर शवी॥

खाना और सो रहना तुझे तेरे पद से गिराते हैं। तू अपने आप को उस समय पहिचानेगा जब विश्राम और विलास को तिलाञ्जलि दे देगा।

यदि ईश्वर के प्रेम का प्रकाश तेरे हृदय में हो जावे और तेरा प्राण उससे ओतप्रोत हो जावे तो परमेश्वर की शपथ तू आकाशी सूर्य से भी अधिक प्रकाशित हो जायगा।

तू क्षण भर के लिये ईश्वरीय नदी में डूब जा और विश्वास कर ले कि सातों समुद्रों का जल तेरे एक बाल को भी नहीं भिगो सकेगा।

तू शिर से लेकर पैर तक ईश्वरीय प्रकाश से प्रकाशित हो उठेगा। पर यह होगा तभी जब तू परमेश्वर के मार्ग में निज को घुला देगा

यदि ईश्वर की शाश्वत दैव तेरी दृष्टि में रहने लगे तो निस्सन्देह तू उसका प्यारा बन जायगा

(४४)

बेरौ ऐ तबीबम अज़ सर कि ख़बर ज़े सर न दारम।
बख़ुदम दमे रिहा कुन कि ज़े ख़ुद ख़बर न दारम॥
बैयादतम् क़दम नेह कि ज़े बे ख़ुदी शबम बेह।
मै नाबो नोश बहमदेह कि ग़मे दिगर न दारम॥
ग़मम् अर ख़ुरी अज़ीं पस न कुनम् ज़े ग़म ख़ुरी बस।
नज़रे कि जुज़ तु बाकस बसरत नज़र न दारम॥
दिगरत मगू कि खाहम् ज़े बरख़ुदत बिरानम।
तू बरीनो मन बरानम कि दिलज़ तु बर नदारम्॥
ज़े ज़रत कुनन्दे ज़ेवर ब ज़रत कशंद दर बर।
मने बेनवाए मुज़तर चे कुनम कि ज़र न दारम॥
बमन अर्चे मै परस्तम् मदेहेद मै कि मस्तम।
मबर्रेद दिल ज़े दस्तम कि दिले दिगर न दारम॥
दिले "हाफ़िज़" अरबज़ोई ग़मे दिल ज़े तुंद ख़ूई।
चु बगोएदत बगोई सरे दर्द सर न दारम॥

(४४)

ऐ वैद्य! मेरे सिरहाने से उठ जा। तू दवा किसे देने आया है? मुझे तो अपने शिर का भी होश नहीं है। मैं अपने आपे से बाहर हूँ। मुझे थोड़ी देर इसी अवस्था में पड़ा रहने दे।

मित्र! मेरी कुशलता पूछने के लिये आ जा ताकि मैं इन बन्धनों से छुटकारा पा जाऊँ। मुझे निर्मल और मीठी मदिरा पीने के लिये दे। और इस हृदय में अब कोई चिन्ता नहीं है।

मैं तेरे अतिरिक्त और किसी पर दृष्टि भी नहीं डालता। यदि तू अब भी मुझे देखने आ जाता तो मैं सम्पूर्ण दुखों को सहन करने के लिये उद्यत हूँ।

तेरे शिर की शपथ, तेरे अतिरिक्त मेरे लिये दूसरा कोई नहीं है। बस एक दृष्टि कृपा की चाहिये। मुझसे फिर यह न कहना कि मैं तुझे निकालना चाहता हूँ अपने पास रखना नहीं चाहता। यदि तूने मुझे अपने पास न रखने का प्रण कर लिया है तो मैंने तेरे साथ रहने का।

सोने से ही तेरे आभूषण बने हैं और सुवर्ण से ही तू प्राप्त होता है। मैं निर्धन दुखिया हूँ। करूँ क्या मेरे पास धन ही नहीं है।

मैं मदिरा-भक्त हूँ पर अब मुझे न चाहिये। मैं मस्त हो रहा हूँ। मेरे हाथ से मेरा दिल मत छीनो। मैं दीन हूँ और मेरे पास दूसरा दिल नहीं है।

तू हाफ़िज़ का प्यारा नहीं बनता और जब वह तेरे सम्मुख नए दिल की पीड़ा की कहानी रखता है, तब तू क्रोध में आकर कह देता है कि मुझसे यह शिर की पीड़ा सहन नहीं की जाती है।

(४५)

फ़ाश मी गोयमो अज गुफ़्ये ख़ुद दिल शादम्।
बन्दये इश्क़मो अज हर दो जहाँ आज़ादम्॥
तायरे गुल्शने क़ुदसम् चे देहम शरह फ़िराक़।
के दरीं बाँगहे हादिसा चूँ उफ़्तादम्॥
मन मलक बूदमो फ़िरदौसे बरीं जायम् बूद।
आदम् आवर्द दरीं दैरे ख़राब आबादम्॥
सायए तूबाओ दिल जूये हूरो लबे हौज़।
बहबाये सरे कूये तु बेरफ़ अज यादम्॥
नेस्त बर लौहे दिलम् जुज़ अलिफ़े क़ामते यार।
चे कुनम् हर्फ़े दिगर याद न दाद उस्तादम्॥
यक नज़र कर्दमो सद तीरे मलामत ख़ुर्दम्।
दानये चीदमो दर दामे बला उफ़्तादम्॥
कौकबे बख़्ते मरा हेच मुनज्जिम न शनाख़्त।
बारब अज मादरे गेती बचा ताले ज़ादम्॥
मीख़ुरद ख़ूने दिलम् मर्दुमके चश्मो सज़ास्त।
के चेरा दिल बअज़गर गोशये मर्दुम दादम्॥

(४५)

पिदरो मादरे मन बन्दा न बूदन्द बले।
मन तुरा बन्दा शुदम गर्चे व अज्ल आजादम॥
ता शुदम हल्का व गोशे दरे मैखानये इश्क।
हरदम आयद गमे अज नौ बमुबारकबादम॥
पाक कुन चेहरए "हाफिज" व सरे जुल्फ अज अरक।
बनी ईं सैल दमादम् व बरद बुनियादम॥

(४६)

मस्तम् अज बादए शब्बाना हनोज।
साकिए मा नरफ्त खाना हनोज॥
मैकशीओं बगमजा मी गोई।
तौबा करदी जे इश्क या न हनोज॥
नाजनीनाँ जे इश्के तू बिल्लाह।
आलमे तौबा कर्द मा न हनोज॥
हस्त मजलिस बराँ करार कि बूद।
हस्त मुतरिब दराँ तराना हनोज॥
चश्म मस्तश बगम्जए जादू।
मी जनद तीर बर निशाना हनोज॥

मेरे जन्म दाता पिता तेरे सेवक न थे पर मैं तेरा अनुचर बन गया हूँ। परन्तु सेवक होते हुए भी मैं स्वतंत्र हूँ।

जब से मैं ने प्रेम के मदिरा-गृह का सेवा व्रत धारण किया है तब से कोई न कोई नया रंज मुझे इस व्रत पर बधाई देने आ ही जाता है।

अपने इस सेवक के आँसुओं को अपनी काली अलकों से पोंछ दे नहीं तो यह दिन प्रति दिन की बाढ़ इसके अस्तित्व को भी बहा ले जायगी।

(४६)

रात को जो मदिरा पी थी उसका नशा अबतक बना हुआ है और पिलाने वाला भी अभी तक यहीं उपस्थित है।

तू मुझे घायल भी करता है और फिर बड़े दर्प के साथ कहता है कि तूने अब भी प्रेम करना छोड़ा या नहीं।

प्रियतम! तेरे प्रेम से सारा संसार हाथ खींच बैठा है, परन्तु मैं अभी तक उसमें लव-लीन हो रहा हूँ।

यह बैठक सदैव से ऐसी ही चली आ रही है और उसमें वही राग अब अलापा जा रहा है।

और उसकी मतवाली आँखों से तीर छूट छूट कर अब भी लक्ष्य पर पड़ रहे हैं।

"हाफिजे" सब्बा दरमियां आमद।
शी कुनदयार अज़ू केराना हनोज़॥

(४६)

ऐ बाद मुश्कबू बगुजर कूए आ निगार।
बकुशा गिरह जे जुल्फ़श व बूए बमन बयार॥
बाज़ बगो कि ऐ बुते नामेहुबाने मन।
बाज़ा कि आशिकाने तू मुर्दन्द जे इंतज़ार॥
दिलदादाएमो मेह तू अज़ जाँ खरीदायम।
बर मा जफ़ाओ जौरे किराकत रवा मदार॥
कर्दी व रोज़गार फ़रामोश बंदा रा।
जिनहार अज़ दयारे वफ़ादार गोश दार॥
ऐ दिल बेसाज़ बा ग़मे हिज्रानो सब्र कुन।
ऐ दीदा दर फ़िराक़श अज़ीं बेश खूं मबार॥
बारे खयाले दोस्त जे पेशे नज़र मशू।
चूँ बर बिसाले दोस्त नदारेम इख़्तियार॥
"हाफ़िज़" तू तावके ग़मे हाले जहाँ खुरी।
बिसयार ग़म मखुर कि जहाँ नेस्त पाएदार॥

ऐ दीन "हाफ़िज़"! तू निकट आ पहुँचा है परन्तु प्यारा अब भी तुझसे कनाई काट रहा है (कतरा रहा है)।

(४७)

ऐ कस्तूरी की सुगन्ध से सुगन्धित वायु! तू मेरे प्रियतम को गली से होकर आ। और उसकी काली घुंघराली लटों को बिखेर कर उनकी तनिक सी सुगन्ध मुझ तक पहुँचा।

उससे कहना कि कठोर हृदय! तू वापस चल। तेरे प्रेमी विरह-वेदना में पड़े हुए तड़प रहे हैं।

हमने दिल दे दिया है और प्राण न्योछावर कर तेरा प्यार पाया है। अब तो हम पर कृपा कर और इस जुदाई रूपी अत्याचार को रोक।

समय अधिक व्यतीत हो जाने के कारण तू ने इस सेवक को भुला दिया है। प्यारे ऐसा न कर। तू तो अपने प्रेमियों के प्रति अपने वचनों को पूरा करने के लिये विख्यात है!

ऐ हृदय! तू विरह-वेदना से मैत्री कर ले और धैर्य्य धारण कर। और लोगों! तुम उसके विरह में रुदन और अधिक रक्तपात न बहाओ।

(४८)

मुर्गे दिलम् तायरेस्त कुदसीये अर्श आशियाँ।
अज कनसे तने मलूल सेर शुदा अज जहाँ॥
चूँ बेपरद जाँ जहाँ सिदरह शुजद जाने ऊ।
तकिया गहे बाजे मा कंगूरये अर्श दाँ॥
अज सरे ईं खाकदाँ चूँ ब पर ब मुर्गे जाँ।
बाज नशेमने कुनद बर दरे आस्ताँ॥
सायए दौलत फिगन्द बर सरे आलम बसे।
गर बे कुशद मुर्गे माँ बालो परे दर जहाँ॥
दर दो जहानश मकाँ नेस्त बजुज फौके चर्खे।
जिस्मे बे अज मादन अस्त जाने बे अज लामकाँ॥
आलमे उलवी बुवद जलवागहे मुर्गे माँ।
आबे खुरेऊ बुवद गुल्शने बाग़े जिनाँ॥
तादमे वहदत जदी "हाफिजे" शोरीदा हाल।
सामये तौहीद कश बर बकमे इन्सो जाँ॥

---

(४८)

मेरे हृदय का पवित्र पक्षी अमरलोक का निवासी है। अब वह इस शरीर के पिंजड़े से ऊब गया है और संसार से अपना मुख फेरने के लिये उद्यत है।

जब वह इस संसार से उड़ेगा तो उसके स्थान पर सदरह का वृक्ष होगा और हमारा बाज अमरलोक के शिखर पर जा बैठेगा।

प्राणपखेरू इस मृत्युलोक से उड़ कर पुनः उसी स्थान में अपना घोंसला बनावेगा जहाँ कि वह पहले रहता था।

यदि हमारा पक्षी आत्मिक जगत में अपने परों को फैला दे तो सारा संसार महत्वपूर्ण हो जावेगा जैसा कि हुमा के परों की छाया से होता है।

आत्मा का घर इन दोनों जहानों में कहीं भी नहीं है और यदि है तो आकाश पर, शरीर में इसका कुछ दिनों के लिये बसेरा होना आवश्यक है परन्तु रूह का निवास स्थान किसी खास स्थान में है।

हमारे पक्षी का घर है अमरलोक में और यह चरता है स्वर्ग के उपवन में।

ऐ दीन "हाफिज" चूँकि तू ने अद्वैत का दावा किया है, अतएव तू मानवी और जिन्नों के जगत से बाहर चला जा और अद्वैत में ही अपने जीवन को विसर्जित कर दे।

(४९)

वग़ैर अज़ाँ कि चे शुद दीनो दानिश अज़ दस्तम् ।
चे आ वगो कि ज़े इश्क़त चे तरफ़ वर वस्तम् ॥
अगर्चे ख़िर्मने उम्रम ग़मे तू दाद व वाद ।
वख़ाक़ पाए अज़ीज़त कि अहद नशिकस्तम् ॥
चु चर्रा गर चे हक़ीरम वबीं वदौलते इश्क़ ।
कि दर हवाचे रुख़त चूं वमेह पैवस्तम् ॥
चेयार वादा के उम्रेस्त तामन ज़ सरेअम्न ।
व कुंजे आफ़ियत अज़ वहे ऐश नशिस्तम् ॥
अगर ज़े मर्दुमे हुशियारी ऐ नसीहत गू ।
सख़ुन व ख़ाक़ मयफ़गन चेरा कि मन मस्तम् ॥
चे गूना सर ज़ेख़िजालत वरआवरम् वर दोस्त ।
के ख़िदमते वसज़ा वर नयामद अज़ दस्तम् ॥
वसोख़्त "हाफ़िज़ो" आँ यारे दिल नवाज़ न गुफ़्त ।
कि मरहमे व फ़िरस्तम् चो ख़ातिरश ख़स्तम् ॥

—

(५२)

(५०)

दर कस कि नशास्त न जाँ मेहे तु दरदिल ।
हक्का कि बुनद नायते ऊ जाय बा बातिल ॥

बरदाश्तन आज इश्के तू दिल किके मुहालस्त ।
आज जाने सुद आसाँ बुनद आज इश्के तू मुश्किल ॥

अज इश्के तू नासेह चु मरा मनाँ मुमायद ।
ऐ दोस्त मगरहम तु कुनी दस्ते मसाइल ॥

गश्तेम जहाँरा कि बगीनेमो नदीदम ।
हमचू तो कसे जेबा दर शाहो शमाइल ॥

ऐ जाहिदे सुदबीं बदरे मैकदा बगुजर ।
आँ दिलबरे मन बीं कि बुनद मीरे कमाइल ॥

अज बस्ल तू शुस्तंद रकीबाँ जे तमाँ दस्त ।
चूँ गश्त मरा कामे दिल अज लाले तू हासिल ॥

"हाफिज" तू बरो बंदगिए पीरे मुगाँ कुन ।
दर दामने ऊ दस्त जनो अज हमा बगुसिल ॥

---

(५०)

इस संसार में जो मनुष्य तुझसे हार्दिक प्रेम नहीं रखता वह वास्तव में कुछ भी नहीं है। उसकी प्रार्थना सर्वांश में व्यर्थ और बेकार है।

तेरे प्रेम से दिल हटा लेना एक असम्भव विचार है। प्राण से हाथ धो बैठना सहल है परन्तु तेरे प्रति प्रणय का छोड़ देना कठिन है।

शिक्षा देने वाला जब मुझे यह शिक्षा देता है कि तेरे प्रेम में न पड़ूँ, उस समय प्यारे ! कदाचित् तू ही इन समस्याओं को सुलझा सके।

मैंने सम्पूर्ण जगत का चक्कर लगा डाला, पर तू कहीं भी नहीं दिखलाई पड़ा।

ओ अभिमानी विवेकी ! आ इस मदिरा-गृह के द्वार पर आजा और मेरे उस प्रियतम को देख जो सब देवताओं का स्वामी है।

प्यारे जब से मेरे हृदय की आकांक्षा तेरे ओठों से पूर्ण हो गई तब से लोभी प्रतिद्वन्दी तेरे मिलने के विचार में मतवाले हो रहे हैं।

ऐ "हाफिज" ! तू जाकर शराब बेचने वाले के स्वामी की चाकरी कर ले और उसका दामन पकड़ कर फिर संसार की सभी आशायें छोड़ दे।

(५१)

हिजाबे चेहए जाँ मी शवद ग़ुबारे तनम्।
ख़ुशा दमे कि अज़ाँ चेहरा पर्दा बरफ़िगनम्॥
चुनीं क़फ़स न सज़ाये चूँ मने ख़शइलहाँस्त।
रवम् व गुल्शने रिज़वाँ कि मुर्ग़े आँ चमनम्॥
अयाँ न शुद कि चिरा आमदम् कुजा बूदम्।
दरेग़ो दर्द कि ग़ाफ़िल ज़े कारे ख़ेशतनम्॥
चिगूना तौफ़ कुनम् दर किज़ाए आलमे क़ुद्स।
चु दर सरा चे तरकीबां तख़्ता बंदतनम्॥
अगर ज़े ख़ने दिलम् बूए मुश्क मी आयद।
अजब मदार कि हमदर्द नाफ़ए ख़ुतनम्॥
मरा कि मंज़रे हूरस्तो मसकनो मावा।
चरा बकूए ख़राबातियाँ बुवद वतनम्॥
तराज़े पैरहने ज़र कशम् मयीं चूँ शमा।
कि सोज़हास्त निहानी दरूने पैरहनम्॥
बयाओ हस्तिए "हाफ़िज़" ज़े पेशे ऊ बरदार।
कि बावजूद तु कस न शुनूद ज़े मन कि मनम्॥

(५२)

बारहा गुफ्तमो बारे दिगर मी गोयम।
कीं मने दिल शुदा ई'न्न, बखुद मी पोयम॥
दर पसे आईना तूती सिफतम दाश्ता अन्द।
उच्चे उस्तादे अजल गुफ्त बुगोमी गोयम॥
मन अगर कारमो गर गुल चमन आराए हस्त।
कीं अजाँ दस्त कि मी पर्दरदम मी रोयम्॥
दोस्ताँ मन मने बेदिले हैराँ मकुनेद।
गौहरे दारमो साहब नजरे मी जोयम्॥
गर्चे बादस्के मुलम्मा मए गुलगूँ ऐबस्त।
मकुनमा ऐब कजू रंगे रिया मी शोयम्॥
सन्दअो गिर्यए उश्शाक जे ओज दिगरस्त।
मय सरायम बशबो बन्के सहर मी मोयम्॥
बायदम गुफ्त कि "हाफिज" दरे मयखाना मबू।
गो मकुन ऐब कि मन मुश्के खुतन मी बोयम्॥

---

(५२)

मैंने सब तरह कहा और अब फिर कहता हूँ कि मैं अपनी इच्छा से इस मार्ग पर नहीं चल रहा हूँ।

मुझको परछाईं के समान दर्पण के पीछे बैठा दिया है। मृत्यु मेरे मुख से जो कुछ कहलवाना चाहती है कह रहा हूँ।

मैं कण्टक हूँ या पुष्प पर उपवन का माली उसे सजाने के लिये जिस प्रकार मुझे उगाना चाहता है मैं वैसे ही उगता हूँ।

मित्रो! मुझ घबड़ाये हुए प्रेमी की निन्दा मत करो। मेरे पास एक मोती है और मैं किसी अच्छे परीक्षक अथवा जौहरी की खोज में हूँ।

गुदड़ी बाजार में गुलाबी शराब कहाँ? मेरे ऐसे फटेहाल प्रेमी के पास ऐसी वस्तु कहाँ से आई? लोग कहेंगे, परन्तु बुरा न मानना, इस समय मैं एक ढोंगी बना हुआ हूँ।

प्रेमी लोग किसी अन्य कारण से हँसते और आँसू गिराते हैं। मैं रात को गाना गाता हूँ और प्रातः काल रोता हूँ।

उपदेशक ने मुझसे पूछा है कि ऐ "हाफिज" तू इस मदिरा-गृह के द्वार पर क्या सूँघा करता है? उससे कह दो कि वह बुरा न माने मैं तो खुतन के मुश्क को सूंघा करता हूँ।

(५३)

दिलम् रबूदए लूली वशोस शोर अंगेज़।
दरोग़े बादओ क़त्ताले वज़ओ रंगामेज़॥
क़िदाए पैरहने चाके माहरूयाँ बाद।
हज़ार जामए तक़वाओ खिर्क़ए परहेज़॥
क़िरश्तए इश्क़ नदानद कि चीस्त क़िस्सा मखाँ।
बखाह जामो गुलाबे बखाके आदमरेज़॥
गुलामे आँ कलमातम कि आतिश अंगेज़द।
न आबे सर्द जनद दर सखुन बर आतशे तेज़॥
फ़क़ीरां खस्ता बदरगाहत आमदम रहमे।
कि जुज़ विलायतुअम् नेस्त हेच दस्तावेज़॥
बेआ कि हातिफ़े मैखाना दोश बा मन गुफ़्त।
कि दर मुक़ामे रिज़ा बाशो अज़ क़ज़ा मगुरेज़॥
मबाश गर्रा बबाज़ूए खुद कि हर सायत।
हज़ार शाबदा बाज़द सिपहे मक़रंगेज़॥

(५२)

बारहा गुफ्तमो बारे दिगर मी गोयम।
कि मने दिल मुदा ईरह न. बखुद मी पोयम॥
दर पये आईना तूती सिफतम दाश्ता अन्द।
उचे उस्ताद अजल मुफ्त बुगोयी गोयम॥
मन अगर कामलो गर मुल जनम आराद् हेल।
की अजां दुस्त कि मी परदरदम मी रोयम्॥
दोस्तां ऐब मने बेदिले हैरां मकुनेद।
गौहरे दारमो नाहद नजरे मी जोयम्॥
गर्चे बादहके मुलम्मा मए मुफ्तम् ऐसत।
मकुनना ऐब कज् रंगे रिया मी शोयम्॥
चन्दजो गिर्यए इश्शाक चे जोय दिलरम।
मय सरायम बराबो चक्के नजर मी मोयम्॥
वायजन मुफ्त कि "हाफिज" दरे मयखाना मबू।
गो मकुन ऐब कि मन मुश्के खुतन मी बोयम्॥

---

(५२)

मैंने सब तरह कहा और अब फिर कहता हूँ कि मैं अपनी इच्छा से इस मार्ग पर नहीं चल रहा हूँ।

मुझको परछाईं के समान दर्पण के पीछे बैठा दिया है। मृत्यु मेरे मुख से जो कुछ कहलवाना चाहती है कह रहा हूँ।

मैं कण्टक हूँ या पुष्प पर उपवन का माली उसे सजाने के लिये जिस प्रकार मुझे उगाना चाहता है मैं वैसे ही उगता हूँ।

मित्रो! मुझ घबड़ाये हुए प्रेमी की निन्दा मत करो। मेरे पास एक मोती है और मैं किसी अच्छे परीक्षक अथवा जौहरी की खोज में हूँ।

गुदड़ी बाजार में गुलाबी शराब कहाँ? मेरे ऐसे फटेहाल प्रेमी के पास ऐसी वस्तु कहाँ से आई? लोग कहेंगे, परन्तु बुरा न मानना, इस समय मैं एक ढोंगी बना हुआ हूँ।

प्रेमी लोग किसी अन्य कारण से हँसते और आँसू गिराते हैं। मैं रात को गाना गाता हूँ और प्रातः काल रोता हूँ।

उपदेशक ने मुझसे पूछा है कि ऐ "हाफिज" तू इस मदिरा-गृह के द्वार पर क्या सूँघा करता है? उससे कह दो कि वह बुरा न माने मैं तो खुतन के मुश्क को सूंघा करता हूँ।

(५३)

दिलम् रबूदए लुली वशेस शोर अंगेज़।
दरोग़े बादओ क़त्ताले वज़ओ रंगामेज़॥
फ़िदाए पैरहने चाके माहरूयाँ बाद।
हज़ार जामए तक़वाओ ख़िर्क़ए परहेज़॥
फ़िरस्तए इश्क़ नदानद कि चीस्त क़िस्मा मख़ाँ।
बख़ाह जामो गुलाबे बख़ाके आदमरेज़॥
ग़ुलामे आँ क़लमातम कि आतिश अंगेज़द।
न आबे सर्द जनद दर सख़ुन बर आतशे तेज़॥
फ़क़ीरां खस्ता बदरगाहत आमदम रहमे।
कि जुज़ बिलायतुअम् नेस्त हेच दस्तावेज़॥
बेआ कि हातिफ़े मैख़ाना दोश बा मन गुफ़।
कि दर सुक़ाने रिज़ा बाशो अज़ क़ज़ा मगुरेज़॥
मबाश ग़र्रे बवाजूए ख़ुद कि दर सावन।
हज़ार शोबदा बाज़द सिपहे मकरंगेज़॥

जामी

[जन्म १४१४ ई० : मृत्यु १४९२ ई०]

जामी

(श्री० वाई० एम० काले के सौजन्य से)

इनका पूरा नाम था मुल्ला नूरहीन अब्दुल रहमान। परन्तु जन साधारण में यह जामी नाम से ही विख्यात थे। खुरासान नामक एक छोटे से नगर में इनका जन्म हुआ था और उसी में मृत्यु भी। यह बड़े भारी विद्वान, ऊँचे कवि और जिज्ञासु थे। इन्होंने पचास से भी अधिक पुस्तकें लिखी हैं। इनमें से तीन दीवान हैं जिनमें उच्च कविताएँ हैं, सात प्रेम कहानियाँ तथा उपदेश प्रद मसनवियाँ हैं। उन्होंने इतने विषयों पर अपनी लेखनी उठाई है कि लोगों को आश्चर्य होता है। मुहम्मद साहब के उपदेशों से लेकर, पौराणिक कहानियाँ, सन्तों के जीवन चरित्रों, व्याकरण, पिंगल इत्यादि पर भी उन्होंने लिखा है। रहस्यवाद पर उन्होंने जो पुस्तकें लिखी हैं, वह वास्तव में ध्यान देने योग्य हैं। इनमें से दो पुस्तकें—लवाहे और तहफ़ातुल अहरार, जिसके पद मैंने उद्धृत किये हैं, विशेष उल्लेखनीय हैं। इनमें से प्रथम, रहस्यवाद की उत्तम से उत्तम पुस्तकों में से एक है। कल्पना की ऊँची उड़ान, भाषा, और उसकी उपयुक्तता तथा शैली के लिहाज़ से इसकी गणना रूमी की मसनवी और अत्तार की मंतक़ुत्तैर के साथ ही की जाती है। इन दोनों से जामी ने सीखा भी बहुत कुछ था। उसके चरित्र में फिरदौसी, हाफ़िज़, सादी, अनवरी और ख़ाक़ानी इत्यादि के चरित्रों से भिन्नता थी। और यह भिन्नता थी उसकी स्वतंत्रता। वह किसी भी दर्बार में नहीं गया। जिस समय उसकी मृत्यु हुई वह प्रसन्न था और निर्धन भी। उसकी निर्धनता ने उसे कभी भी हतोत्साह नहीं बनाया और न कभी उसने आवश्यकता पड़ने पर दान करने से मुख मोड़ा। उसने जो कुछ भी लिखा अपनी इच्छा से परन्तु डेवोज के शब्दों में वह लोगों के लिये बहुत ही सुन्दर तथा उच्च कविताएँ छोड़ गया है।

इनकी रचनाओं में व्यंग देखने ही योग्य है। प्रोफ़ेसर ब्राउन ने इनका एक उदाहरण दिया है एक बार वह कुछ पंक्तियाँ पढ़ रहे थे। जिनका आशय था—

"तुम मेरी निद्राहीन आँखों तथा पीड़ित हृदय में इस प्रकार बस रहे हो कि कोई भी मुझे दूर से आता हुआ तुम्हारे ही रूप में दिखलाई देता है।"

इसी समय किसी ने पूछा

"मान लिये कि वह तुम्हारे हैं"

जामी ने उत्तर दिया "मैं तो सोचता हूँ वह तुम्हारे हैं"

उनके जीवन के विषय में कैप्टन नैसन और वैरन विक्टर रौसन के लेख बहुत ही उत्तम हैं। इस विषय का अध्ययन करने-वालों को इनसे लाभ हो सकता है।

प्रमुख रचनाएँ:—

लवाहे,

युसुफ जुलेखा,

सुलेमान अवजाल

लैला मजनूं।

(१)

गुफ्तमश ऐ खिज़्रे मसीहा नफ़स।
खिज़्रो मसीहा तुई इमरोज़ व बस॥
अज़ क़दमत सब्ज़ए ऐशम दमीद।
वज़ नफ़सत बौके हयातम रसीद॥
ऐने शफ़ा तुद ज़े तो बीमारीयम।
वेह ज़े सद इत्तलाक़ गिरिफ्तारीयम॥
सेहते मन दौलते दीदारे तुस्त।
शरबते मन लज़्ज़ते गुफ़्तारे तुस्त॥
रूए तो तुद महवते ईमाने मन।
नूरे यक़ीं ज़द अलम अज़ जाने मन॥
आँचे रसीद अज़ तो बजाने सक़ीम।
वाशद अज़ाँ हुज़्ज़तो बुरहाँ अक़ीम॥
उश्के तुदम अज़ तो बआँरेह शिनास।
मुनत्तिजे आँ नेस्त दलीलो क़ियास॥

---

(१)

मैंने उससे कहा कि हे मेरे पथ प्रदर्शक! यदि आज संसार में मेरा कोई शुभेच्छु अथवा उत्तम पथ पर चलाने वाला है, तो वह केवल आप ही हैं।

आपके चरणों के स्पर्श से मेरा जीवन रूपी पौधा लहलहाने लगा। आपके वचनों से मुझे जीवन का आनन्द प्राप्त हो गया।

आपकी कृपा से मेरा रोग आरोग्यता में परिवर्तित हो गया और अब मेरे बन्धन सहस्रों स्वतंत्रताओं से बढ़कर हैं।

आपके दर्शनों से मैं हरा-भरा हो जाता हूँ। आपके वचनों से जीवन में स्फूर्ति आती है।

आपका मुख देखने से मेरा [illegible] हो जाता है और मुख पर हर्ष प्रकट होता है। मैं [illegible] हो उठता हूँ।

आपकी कृपा से [illegible] जो कुछ प्राप्त हुआ है वह सब, धा प्रेम से नहीं मिल सका।

आपके कारण मेरे [illegible] वह बढ़ विवाद अथवा नुमान के सहारे नहीं [illegible]

बर मन आजी गम गमे बारे मखुन्द।
बर रुखे मक़सूद गुबारे मखुन्द॥
लेक आजी बीम जे जा ओलम।
कज तो मबादा कि जुदा ओलम॥

(२)

गुफ़्त कि जामी मशो अन्देशा नाक।
नूँ शुदन आईना जे अन्देशा पाक॥
बाश हमेशा जेरहे दिल रमत।
आईना अतवार मुक़ाबिल बमन॥
ता जे फ़रोगे कि जे मन बर तो साफ़।
दानिशो दीदे तो शवद दीद याफ़॥
याफ़्ते तोरा अज़ तो रिहानद तमाम।
जुम्ला यके गाबीओ बस वस्सलाम॥

(३)

उन्चे दिलज पेश. न दानिस्ता बूद।
पेशे नज़र जुम्ला हुवेदा नमूद॥

अब मुझे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं रही अ मेरे सम्मुख प्रकट हो गया।

परन्तु एक और भय मुझे व्याकुल कर रहा है। कहीं आ होना पड़े।

(२)

पीर ने कहा कि "जामी" अपने हृदय में किसी प्रकार के भय सन्देह को स्थान न दे।

जब तेरा हृदय-दर्पण निर्मल हो गया है तो सदैव प्रसन्नता से मेरे रह और उस दर्पण को मेरे सम्मुख रख;

ताकि जो प्रकाश तुझे मेरे द्वारा प्राप्त हुआ है, उसकी कृपा से तेरा विस्तृत हो और नेत्रों को उसका दर्शन करने की सामर्थ्य प्राप्त हो,

और प्रेम स्वरूप दाता तेरे अहंकार को हटा दे, जिससे तुझे सबमें व दिखलाई पड़े। बस अब जा।

(३)

हृदय को जिन बातों का ज्ञान पहले नहीं था, वह सब अब साफ़ तौर से नेत्रों के सम्मुख वर्त्तमान हैं।

दीद के आलम चे समक ता समा।
नेस्त बजुज वाजिबो मुमकिन दमा॥

(४)

हस्तिए वाजिब यके आनद बजात।
हस्त तआयुन चे शयूनो सिफात॥
कसरते नूरत चे सिफातस्तो बस।
अस्ल हमा वहदते जातस्त व बस॥
वहद यके मौज हजारों हजार।
रूए यके आईना हा बेशुमार॥

(५)

कदें चूईं बन्द कुशाई मरा।
दाद चे हर बन्द रिहाई मरा॥
रिश्तए मन अज गिरहए कैदरस्त।
बर गिरहम गौहरे इतलाकबस्त॥
कश्तए नाचीज बदह आरमीद।
हस्तिए खुद रा हमगी बह दीद॥

पृथ्वी से लेकर आकाश तक सम्पूर्ण विस्तार में ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।

(४)

वह एक ही है। उसके रूपों में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है।

यदि यह नाना रूप उसके हैं भी तो वह केवल उसके गुणों के कारण हैं। प्रकट रूपों की अधिकता केवल गुणों पर ही निर्भर है।

सबका मूल तथा तत्व एक ही है। समुद्र एक है, परन्तु लहरें लाखों। मुख एक है और दर्पण अगणित!

(५)

जब पीर ने यह रहस्य मेरे सन्मुख प्रकट कर दिया, मेरे सभी बन्धन ढीले हो गये।

कारागार से मुझे मुक्ति प्राप्त हो गई और सभी प्रकार की वस्तुओं से मेरा सम्बन्ध छूट गया। हृदय में विश्वास आ गया।

अस्तित्व हीन बूंद समुद्र में मिल गया और अपने जीवन रूपी सरिता की सैर भी कर ली।

दीद के आलम चे समक तो समा।
नेस्त वजुज वाजिबो मुमकिन वमा॥

(४)

हतिए वाजिब यके आमद वजात।
हस्त तआयुत चे शयूनो सिफात॥
कसरते सूरत चे सिफातस्तो वस।
अस्ल हमा वहदते जातस व वस॥
वह यके मौज हजारों हजार।
रूए यके आईना हा बेशुमार॥

(५)

कदे चूईं वन्द कुशाई मरा।
दाद चे हर वन्द रिहाई मरा॥
रिश्तए मन अज गिरहए क़ैदरस्त।
वर गिरहम गौहरे इतलाक़वस्त॥
क़त्रए नाचीज वबह आरमीद।
हस्तिए खुद रा हमगी वह दीद॥

पृथ्वी से लेकर आकाश तक सम्पूर्ण विस्तार में ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।

(४)

वह एक ही है। उसके रूपों में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है।

यदि वह नाना रूप उसके हैं भी तो वह केवल उसके गुणों के कारण हैं। प्रकट रूपों की अधिकता केवल गुणों पर ही निर्भर है।

सबका मूल तथा तत्व एक ही है। समुद्र एक है, परन्तु लहरें लाखों। मुख एक है और दर्पण अगणित!

(५)

जब पीर ने यह रहस्य मेरे सन्मुख प्रकट कर दिया, मेरे सभी बन्धन ढीले हो गये।

कारागार से मुझे मुक्ति प्राप्त हो गई और सभी प्रकार की वस्तुओं से मेरा सम्बन्ध छूट गया। हृदय में विश्वास आ गया।

अस्तित्व हीन बूंद समुद्र में मिल गया और अपने जीवन रूपी सरिता की सैर भी कर ली।

दर नूरे बहर मौजे बिसार।
यापत हमा जलाए खेश आशकार॥
चूँ पए गौहर गुए दरिया शिनाफ़्त।
हेच गौहर जुज गौहरे खुद न याफ़्त॥
चूँ बतमाशा गुए खुद बिनांगरीस्त।
हेच न दानिस्त कि जुज बहु कीस्त॥
"जामी" अगर आँकि जदी दस्तो पा।
ता कि बदीं बहु शवी आशना॥
गर्कए बह आमदा गश्तास शौ।
तालिबे दुर्रे गौहरे खास शौ॥
दर दिलत अज शोला लालीन दस्त।
लायेक़ा आँ हुस्न मकालीन दस्त॥
सोख्तए शोलए हाजात बाश।
साख्तए शरहे मकालात बाश॥

(६)

रौनक़े ऐयामे जवानीस्त इश्क़।
माए काम दो जहानीस्त इश्क़॥

समुद्र के विभिन्न रूपों में, आनन्द मयी लहर के समान, सभी स्थानों में अपने ही को पाया।

जब मोती के लालच में, उसी सरिता की तरफ़ दौड़ लगाई तो वहाँ भी उसी लाल को पाया जो मेरे पास पहले ही से था।

सैर करने के लिये स्थान की खोज की तो वही समुद्र दृष्टि में आया

हे "जामी"! यदि इस समुद्र को ही जानने और पहचानने के लिये तूने इतना प्रयत्न किया है,

तो अब इसी के गर्भ में डुबकी लगा और उसी खास मोती और लाल की खोज कर।

तेरे हृदय में मस्ती की अग्नि प्रज्वलित हो रही है। अतएव मीठे वचन कहना उचित है।

तू प्रेम की मस्ती की लपटों में जलकर मरने के लिये उद्यत हो जा।

(६)

प्रणय युवावस्था की शोभा है और दोनों जहानों के उद्देश्यों का सार है।

मैले तहर्रुक बकलक इश्क़ दाद।
चौके तजर्रुद बमलक इश्क़ दाद॥

चूँ दिलो जाँ बूए ताआयुक गिरिफ़्त।
वा गिले तन रंग ताल्लुक़ गिरिफ़्त॥

रावतए जानो तने मा अजअोस्त।
मुर्दने मा ज़ोस्तने मा अजअोस्त॥

उलवी व सिफ़ली हमा बन्देबयन्द।
पस्ते शवे क़द्रे बलन्देबयन्द॥

मह कि व शब नूर देहो याफ़्ता।
परतवे अज मेह बरो ताफ़्ता॥

खाक जे गरदूँ न बुवद ताबनाक।
ता असरे मेह न बुवद व खाक॥

चूँ बतन आज़ादा जे मेहरस्त दिल।
संगे सियाह हस्त दराँ तीरा गिल॥

हर कि दर आतिशे इश्क़स्त गर्क़।
अज दिले ऊ ता बसनोबर चे फ़र्क़॥

आकाश को हिलने-डुलने की इच्छा प्रेम ही ने प्रदान की है और स्वर्गीय दूत में सदाकाँक्षी बनने की शक्ति प्रेम ने ही भर दी है।

मन और प्राण में जब प्रणय का प्रकाश पहुँचा तब उन दोनों ने मिट्टी तथा शरीर से सम्बन्ध जोड़ लिया।

हमारे शरीर तथा प्राणों के बीच केवल यही एक बन्धन है और इसी के बल पर हम मरते तथा जीते हैं।

आकाश और पृथ्वी सब उसी की रस्सियों में बँधे हुए हैं और उसी महानता तथा उच्चता के सम्मुख सब के सब हार मान रहे हैं।

चन्द्रमा जो संसार के अंधकार को रात में निकलकर दूर करता है, प्रेम के प्रकाश से ही प्रकाशित है।

मिट्टी तब तक नहीं चमकती जबतक आकाशस्थित सूर्य का प्रकाश उस पर नहीं पड़ता।

यदि शरीर में दिल है और वह भी प्रणय से रहित है तो वह मिट्टी में काले पत्थर के समान है।

जो मनुष्य प्रणय की अग्नि में नहीं जला है, उसके और बसन्त ऋतु के फूल में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है।

दर गुबरे बहर चो मौजे बिहार।
यापम हमा जलवाए खेश आशकार॥
चूँ पए गौहर ब्याए दरिया शिताफ़।
हेच गौहर जुज गौहरे खुद न याफ़॥
चूँ बतमाशा रूए खुद बिनीगरीस्त।
हेच न दानिस्त कि जुज वह चीस्त॥
"जामी" अगर बाँकि अदी दस्तो पा।
ता कि बदीं बह शवी आशनाँ॥
मर्क़ए वह आमदा ग़ज्वास शौ।
तालिबे दुर्रे गौहरे खास शौ॥
दर दिलत अज शोला हालीन दस्त।
लायेक़ा आँ हुस्न मकालीन दस्त॥
सोख्तए शोलए हालात बाश।
साख्तए शरहे मकालात बाश॥

(६)

रौनक़े ऐयामे जवानीस्त इश्क़।
माए क़ामे दो जहानीस्त इश्क़॥

समुद्र के विभिन्न रूपों में, आनन्द मयी लहर के समान, सभी स्थानों में अपने ही को पाया।

जब मोती के लालच में, उसी सरिता की तरफ़ दौड़ लगाई तो वहाँ भी उसी लाल को पाया जो मेरे पास पहले ही से था।

सैर करने के लिये स्थान की खोज की तो वही समुद्र दृष्टि में आया

ऐ "जामी"! यदि इस समुद्र को ही जानने और पहचानने के लिये तूने इतना प्रयत्न किया है,

तो अब इसी के गर्भ में डुबकी लगा और उसी खास मोती और लाल की खोज कर।

तेरे हृदय में मस्ती की आग प्रज्वलित हो रही है। अतएव मीठे वचन कहना उचित है।

तू प्रेम की मस्ती की लपटों में जलकर मरने के लिये उद्यत हो जा।

(६)

प्रणय युवावस्था की शोभा है और दोनों जहानों के उद्देश्यों का सार है।

मैले तहर्रुक बकलक इश्क दाद।
जौक़े तजर्रुद बमलक इश्क़ दाद॥
चूँ दिलो जाँ बूए ताआल्लुक गिरिफ़्त।
वा गिले तन रंग ताल्लुक गिरिफ़्त॥
रावतए जानो तने मा अज़ओस्त।
मुर्दने मा ज़ीस्तने मा अज़ओस्त॥
उलवी व सिफ़ली हमा बन्देबयन्द।
पस्ते शबे क़द्रे बलन्देबयन्द॥
मह कि ब शब नूर देहो याफ़्ता।
परतवे अज़ मेह बरो ताफ़्ता॥
खाक जे गरदूँ न बुवद तावनाक।
ता असरे मेह न बुफ़्तद ब खाक॥
चूँ बतन आज़ादा जे मेहरस्त दिल।
संगे सियाह हस्त दराँ तीरा गिल॥
हर कि दर आतिशे इश्क़स्त गर्क़।
अज़ दिले ऊ ता बसनोबर चे फ़र्क़॥

आकाश को हिलने-डुलने की इच्छा प्रेम ही ने प्रदान की है और स्वर्गीय दूत में सदाकाँची बनने की शक्ति प्रेम ने ही भर दी है।

मन और प्राण में जब प्रणय का प्रकाश पहुँचा तब उन दोनों ने मिट्टी तथा शरीर से सम्बन्ध जोड़ लिया।

हमारे शरीर तथा प्राणों के बीच केवल यही एक बन्धन है और इसी के बल पर हम मरते तथा जीते हैं।

आकाश और पृथ्वी सब उसी की रस्सियों में बँधे हुए हैं और उसकी महानता तथा उच्चता के सम्मुख सब के सब हार मान रहे हैं।

चन्द्रमा जो संसार के अंधकार को रात में निकलकर दूर करता है, प्रेम के प्रकाश से ही प्रकाशित है।

मिट्टी तब तक नहीं चमकती जबतक आकाशस्थित सूर्य का प्रकाश उस पर नहीं पड़ता।

यदि शरीर में दिल है और वह भी प्रणय से रहित है तो वह काली मिट्टी में काले पत्थर के समान है।

जो मनुष्य प्रणय की अग्नि में नहीं जला है, उसके हृदय तथा सनोबर के फूल में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है।

दर गुबारे बहर चो मौजे बिहार।
यापत हमा जन्नाए ऐश आशकार॥
चूँ पए गौहर सूए दरिया शिताफ़।
हेच गौहर जुज गौहरे खुद न याफ़॥
तू चतमाशा सूए खुद बिनगरीस्त।
हेच न दानिस्त कि जुज बहु चीस्त॥
"जामी" अगर आँके अदी दस्तो पा।
ता कि बदीं बहु शवी आशनाँ॥
दर्फ़ाए बहु आमदा शवास शौ।
तालिबे दुरों गौहरे खास शौ॥
दर दिलत अज शोला हालोत दस्त।
लायेक़ा आँ हुस्न मकालोत दस्त॥
सोख्तए शोलए हालात बाश।
साख्तए शरहे मकालात बाश॥

(६)

रौनक़े ऐयामे जवानीस्त इश्क़।
माए क़ामे दो जहानीस्त इश्क़॥

समुद्र के विभिन्न रूपों में, आनन्द मयी लहर के समान, सभी स्थानों में अपने ही को पाया।

जब मोती के लालच में, उसी सरिता की तरफ़ दौड़ लगाई तो वहाँ भी उसी लाल को पाया जो मेरे पास पहले ही से था।

सैर करने के लिये स्थान की खोज की तो वही समुद्र दृष्टि में आया।

ऐ "जामी"! यदि इस समुद्र को ही जानने और पहचानने के लिये तूने इतना प्रयत्न किया है,

तो अब इसी के गर्भ में डुबकी लगा और उसी खास मोती और लाल की खोज कर।

तेरे हृदय में मस्ती की आग प्रज्वलित हो रही है। अतएव मीठे वचन कहना उचित है।

तू प्रेम की मस्ती की लपटों में जलकर मरने के लिये उद्यत् हो जा।

(६)

प्रणय युवावस्था की शोभा है और दोनों जहानों के उद्देश्यों का सार है।

यारे हम आवाज़ बहम परदा साज़।
तू जे तपे फ़ुक़र्ते ऊ दर गुदाज़॥
यार हम आहंग बहर सीना तंग।
तू जे ग़मश कोफ़ा बर सीना संग॥
जोरकये वर्ज़ चुनाँ गीर यार।
कश बुवद अन्दर दिलो जानत क़रार॥
महरमे खिलवत गहे राज़त शवद।
मूनिसे शवहाए दराज़त शवद॥

(१०)

जलवा गरे कुंगुरे यकशाख़ शौ।
न ग़मा जने ताहमे यक काख़ शौ॥
रू व यके आर कि फ़रख़ुन्दा गीस्त।
तर्के दुई कुन कि परागन्दा गीस्त॥
मेवए मक़सूद कै आरद दरख़्त।
ता न कुनद पाए व यक जाए सख़्त॥

तेरा साथी तेरे साथ बैठा हुआ स्वर में स्वर मिला रहा है, और तू उसकी विरह-व्यथा में अपने आप को घुलाए डालता है।

तेरा सदैव का साथी मित्र, तेरे हृदय में ही है और तू उसी के लिये रो रो कर सीने पर पत्थर पटक रहा है।

तनिक सावधान हो जा और ऐसे से दोस्ती कर जो सदैव तेरे प्राणों और दिल ही में निवास करे।

वह तेरे रहस्यों की कोठरी की ताली अपने पास रक्खे और विरह की लम्बी रातों में तुझे सान्त्वना प्रदान करने का प्रयत्न करे।

(१०)

एक ही वृक्ष की चोटी पर बैठ जा और एक ही डाल पर आसीन होकर अपना राग अलाप। यदि तेरा ध्यान किसी की ओर आकर्षित होता है तो उसके अतिरिक्त और किसी को दिल में जगह न दे।

यह एक बहुत अच्छी बात है। अपने दिल को चारों तरफ़ दौड़ने से रोक, क्योंकि ऐसा करना अच्छा नहीं है।

वृक्ष में वह मेवा किस समय दिखलाई देता है? उस समय जब कि उसके फलने का समय आता है। उसी प्रकार तू भी उसी समय फलेगा जब एक स्थान पर दृढ़ हो जायगा।

कारे सनोवर ने तुवर साकिली।
अज रामे इश्के कि न साद्वादिली॥
चिन्दगिए दिल वसमे आयाकोस्त।
नारके आँ नर कदमे आशाकोस्त॥
ता न शवद इश्क व दिल बुर्दगी।
गर्मिए दिल नेस्त तुज अकसुर्दगी॥
ऐ शुदा कारे तो बद अज नीकू आँ।
तुके सद अन्दोह बे नाक अन्दू आँ॥

(७)

गह दम जे अन्देशए माहे जनी।
मह बरुलक बीनिओ आहे जनी॥

(८)

गह बसिद्याले दिले शैदा शवी।
रूए चो दीवाना व सहरा नेही॥

(९)

यार हम आगोश बहम बादा नोश।
तू पसे जानुए गम अन्दर खरोश॥

सनोवर का क्या काम है ? बेसबर रखना, और वह भी प्रणय की पीड़ा से। प्रेम से परिपूर्ण कर देना उसका काम नहीं है।

दिल का अस्तित्व प्रेमी की जलन में ही है और प्राण का शिर प्रणयी के चरणों पर पड़ा हुआ है।

जब तक दिल किसी दूसरे के अधिकार में नहीं चला जाता उसे प्रणय का अनुभव नहीं होता। और प्रणय के अनुभव के बिना दिल का होना न होना बराबर है। ऐ प्रणयी !

तेरा काम सुन्दरियों ने बिगाड़ रक्खा है और उनके तीखे कटाक्षों का शिकार बनकर तुझे सहस्रों विपत्तियों का सामना करना पड़ रहा है।

(७)

कभी तो तू किसी चन्द्रमुखी के ध्यान में मस्त रहता है और चन्द्रमा की तरफ़ देख देख कर आहें भरा करता है।

(८)

कभी तू किसी मृग की चाह में मतवाला होकर जंगलों में निकल भागता है और घरबार त्याग देता है।

(९)

तेरे अंक में तेरा प्यारा बैठा हुआ मदिरा के प्यालों पर प्याले खाली कर रहा है परन्तु तू शोक के बोझ से दबा हुआ रोता है।

यारे हम आवाज़ बहम परदा साज़।
तू चे तपे फ़ुर्क़त ऊ दर गुदाज़॥
यार हम आहंग बहर सीन: तंग।
तू चे ग़मश कोफ़्ता बर सीना संग॥
ज़ोरकने बज़्म चुनाँ गीर यार।
कश बुवद अन्दर दिलो जानत क़रार॥
महरमे ख़िलवत गहे राज़त शवद।
मूनिसे शबहाए दराज़त शवद॥

(१०)

जलवा गरे कुंगुरे यकशाख़ शौ।
न ग़मा चने ताज़ने यक काख़ शौ॥
रू व यके आर कि क़रख़ुन्दा गीस्त।
तर्के दुई कुन कि परागन्दा गीस्त॥
मेवए मक़सूद कै आरद दरख़्त।
ता न कुनद पार व यक जाए सख़्त॥

तेरा साथी तेरे साथ बैठा हुआ स्वर में स्वर मिला रहा है, और तू उसकी विरह-व्यथा में अपने आप को घुलाए डालता है।

तेरा सदैव का साथी मित्र, तेरे हृदय में ही है और तू उसी के लिये रो रो कर सीने पर पत्थर पटक रहा है।

तनिक सावधान हो जा और ऐसे से दोस्ती कर जो सदैव तेरे आगे और दिल ही में निवास करे।

वह तेरे रहस्यों की कोठरी की ताली अपने पास रखेगा और विरह की लम्बी रातों में तुझे सान्त्वना प्रदान करने का प्रयत्न करेगा

रुबाई "जामी"

(१)

यारब दिले पाको जाने आगाहम देह।
आहे शबो गिर्याए सहर गाहम देह॥
दर राहे खुद अहाल जे खुदम बे खुद कुन।
अंगह बेखुद जे खुद बखुद राहम देह॥
यारब हमा खल्क रा बमन बदखू कुन।
बज जुम्ला जहाँनियाँ मरा यकसू कुन॥
रूए दिले मन सर्फ कुन अज हर जिहते।
बज इश्क खुदम यक जहतो यकरू कुन॥
यारब बेरिहानेयम जे हिरमाँ चे शवद।
राहे दिहीयम बकूए इरफाँ चे शवद॥
बस गत्र कि अज करम मुसल्माँ करदी।
यक गत्र दिगर कुनी मुसल्माँ चे शवद॥
यारब जे दो कौन बे नियाजम गरदाँ।
बज अक्सेर फक्र सर्फराजम गरदाँ॥
दर राहे तलब महरमें राजम गरदाँ।
जाँ राह कि न सूर तुस्त बाजम गरदाँ॥

---

(१)

हे ईश्वर! मुझे पवित्र हृदय और विचारवान् प्राण प्रदान कर और ऐसा कर जिससे मैं रात को तड़पूँ और दिन को रोऊँ।

अपने मार्ग में पहले मुझे ऐसा बना दे कि मैं अहंकार को भूल जाऊँ और फिर मुझे ऐसा मतवाला बना दे कि मैं तुझी को ढूंढ़ता फिरूँ।

हे ईश्वर! मुझे सभी लोगों के प्रति बुरा और उनसे पृथक कर दे।

मेरी इन्द्रियों को सभी सांसारिक वस्तुओं से हटाकर अपने में केन्द्रीभूत करले जिससे कि तू ही मेरा सर्वस्व हो जावे।

हे ईश्वर तू ने बहुत से पथ भ्रष्ट मनुष्यों को सीधे मार्ग पर लगाया है (अपने में विश्वास उत्पन्न कर दिया है) फिर मुझ गुमराह का भी यदि अपने में (ईश्वर में) विश्वास उत्पन्न कर देगा तो क्या बड़ी बात होगी?

मुझे भी उचित पथ पर ला। उस मार्ग से जो तेरी तरफ नहीं आता है मुझे लौटा कर उस पथ पर डाल जो तुझ तक पहुँचाता है।

मुझे दोनों जहानों के प्रलोभनों से छुटाकर अपनी खोज में मतवाला बना दे।

तूने बहुतेरों को उबारा है। मुझे भी उबार ले।

(२)

मन हेचम व कम जे हेच हम बिस्यारे।
अज़ हेचो कम अज़ हेच न आयद कारे॥
हर सिर कि जे असरारे हक़ीक़त गोयम।
जानम न बुवद वला बजुज़ गुफ़्तारे॥

दर आलमे फ़क़्र बेनिशाने औला।
दर क़िस्सए इश्क़ बेज़बाने औला॥
जाँकस कि न अहे जौक़ो असरार बुवद।
गुफ़्तन बतरीक़े तर्जुमानी औला॥

सुफ़्तम गौहरे चन्द कि रौशन ख़िर्दाँ।
दर तज़मए हुदीसे आली सनदाँ॥
बाशद जे मने हेचमदाँ मोतमिदाँ।
ईं तोहफ़ा रसानन्द बशाहे हमदाँ॥

(३)

ऐ आँके वक़िदब्लए चुताँ रुस्त तुरा।
दर मरज़ चेरा हिजाब चुद पोस्त तुरा॥

---

(२)

मैं अकर्मण्य हूँ और बहुत से अकर्मण्य मनुष्यों से गया बीता हूँ। साधारण और निम्न श्रेणी वालों का कार्य उसी श्रेणी वालों से नहीं सरता।

मैं रहस्यों को कहता अवश्य हूँ परन्तु रहस्य उद्घाटन करने वालों में से नहीं हूँ।

प्रेम के मार्ग में यदि सन्यास ले तो उसमें गूंग नाम रहना ही उत्तम है और प्रणय की कथा कहने में गूंगा ही बना रहना उचित है।

दिल दर पए ईनाँ आँ न नेकूस्त तुरा।
यक दिलदारी वसस्त यक दोस्त तुरा॥

(४)

ऐ दर दिले तू हजार मुशकिल जे हमा।
मुशकिल शवद आसूदा तुरा दिल जे हमा॥
चूँ तफ़ुकए दिलस्त हासिल जे हमा।
दिल रा व यके सिपारो वगुसिल जे हमा॥

मादाम कि दर तफ़ुकए वसवासी।
दर मजहवे अह्ले जमा शर्ननासी॥
वल्लह कि नई नास वले नसनासी।
नसनासिए खुद जे जेहल मीनशिनासी॥

ऐ सालिके रह सखुन जे हर बाब मगोए।
जुज राहे वसूले रब्बेअरबाब मपोए॥
चूँ इल्लते तफ़ुकस्त असबाबे जहाँ।
जमईअते दिल जे जमये असबाब मजोए॥

उसने किसी को दो दिल क्यों नहीं दिये हैं? इसमें भी भेद है। यदि तेरे एक ही दिल होगा तो तेरा झुकाव भी एक ही तरफ़ होगा।

(४)

ऐ मनुष्य! इन बहुत सी वस्तुओं की तरफ़ ध्यान आकर्षित करने से तेरे हृदय में बहुत सी कठिनाइयाँ आ उपस्थित हुई हैं। तेरा हृदय इन्हीं कारणों से विपत्तियों का केन्द्र हो रहा है।

जब इतने रहस्यों के कारण तेरा हृदय इस प्रकार व्याकुल हो रहा है तो उसे सब ओर से हटा कर एक ही तरफ़ लगा।

जब तक तू प्रेम और विश्वास में संलग्न रहेगा तब तक तू लोगों की दृष्टि में बहुत बुरा जचेगा।

ईश्वर की शपथ, तू मनुष्य नहीं वरन् राक्षस है। परन्तु अपनी मूर्खता के कारण तू यह भी नहीं जान सकता कि तू राक्षस हो रहा है।

ऐ पथिक! तू अन्य प्रकार की बातों को न सोच और उस भक्तवत्सल तक पहुँचाने वाली सीधी राह को छोड़कर कोई दूसरा मार्ग ग्रहण न कर।

जब सम्पूर्ण सांसारिक वस्तुएँ दुःखदायिनी हैं तब तू केवल एक ही वस्तु से लगन क्यों नहीं लगाता।

ऐ दिल तलबे कमाल दर मदरस चन्द।
तकमील उलूमो हिकमतो हिन्दसा चन्द॥
हर किक कि जुज किके खुदा वसवसास्त।
शरमे जे खुदा बदारो ईं वसवसा चन्द॥

(५)

बाग़ार बगुलज़ार शुदम रहगुजरी।
बर गुल नज़रे फ़गन्दम अज बेखबरी॥
दिलदार बताना गुफ़ शरमत बादा।
रुखसारे मन ईं जास्त तू दर गुल नज़री॥

आमद सहर आँ दिलबरे खूनीं जिगराँ।
गुफ़्ए जे तो बर खातिरे मन बारे गिराँ॥
शरमत बादा कि मन बसूयत निगराँ।
बाशम तू निहीं चश्म बसूए दिगराँ॥

माएम बराहे इश्क़ पोयाँ हमा उम्र।
बरले तो बजदो जेहद जोयाँ हमा उम्र॥
यक चश्म जदन जमाले तो पेशे नज़र।
बेहतर जे जमाले खूबरोयाँ हमा उम्र॥

ऐ हृदय ! तू कब तक इस संसारी ज्ञान के पीछे लगा रहेगा। शब्दों और अक्षरों को समझने में कबतक लगा रहेगा !

ईश्वरोपासना के अतिरिक्त और सभी प्रकार की चिन्ताएँ व्यर्थ हैं। ईश्वर की तो कुछ शर्म कर। इन व्यर्थ बातों के झंझट में कब तक रहेगा !

(५)

मैं अपने यार के साथ घूमता हुआ उपवन में पहुँचा और धोखे से एक दूसरे पुष्प की तरफ देखने लगा।

मेरी प्रियतमा ने ताने के साथ कहा कि तुझको अपने कार्य पर लज्जित होना चाहिये। मेरा कपोल तेरे सम्मुख है और इस पर भी तू दूसरे पुष्प पर नज़र डालता है।

सुबह को वह सुन्दर बाग़ों का प्रियतमा मेरे पास आई और कहने लगी कि देख तेरे आचरण मेरे हृदय पर कैसे बुरे भाव पैदा कर रहे हैं।

तुझे दूसरी ओर ताकने में कुछ लज्जा आना चाहिये। मैं तेरी राह ताक रही हूँ।

मैं अपने जीवन के [illegible] तुझसे [illegible] और तेरे मिलने की [illegible]

याद रख मेरे [illegible] सैकड़ों प्रियतमाओं के [illegible]

तू जुजवी हक़ कुलस्त गर रोजे चन्द।
अन्देशए कुल पेश कुनी कुल बाशी॥

जामेजिशी जानो तन तुई मक़सूदम।
बज मुर्दनो जीस्तन तुई मक़सूदम॥
तू देर बेजी कि मन बेरफ़्तम जे मियाँ।
गर मन गोयम जे मन तुई मक़सूदम॥

कै बाशदो कैलिबासे हस्ती शुदा राक़।
ताबाँ गश्ता जमाले बजहे मुतलक़॥
दिल दर सुबूबाते नूरे ऊ मुसतहलक़।
जाँ दर गलबाते शोक़े ऊ मुसतगरक़॥

(१०)

रुख गर्चे नमी नुमाई तो मरा सालहासाल।
हाशा कि बुवद मेहे तोरा बीमे जवाल॥

दारम हमा जा बा हमा कस दर हमा हाल।
दर दिल जे तू आरजू व दरदीदा खयाल॥

ईश्वर अंशी है और तू अंश है। यदि कुछ दिनों तू अंशी (उसी कुल) की धुन में लगा रहा तो फिर उसी के स्वरूप को प्राप्त कर लेगा।

प्राण और शरीर के पारस्परिक सम्मिलन में भी तू ही मेरा अभीष्ट है और मृत्यु तथा जीवन का भी तू ही अभीष्ट है।

तू बहुत दिनों तक जीवित रह। मैं तेरे बीच में से निकल गया हूँ। अब यदि मैं अपने को "मैं" कहकर बोलता हूँ तो उससे तेरा ही आशय निकलता है।

वह दिन कब आवेगा जब मैं अपने अस्तित्व के इन प्रकट वस्त्रों को फाड़ कर उसी प्रकाश में लवलीन हो जाऊँगा।

उस समय मेरा दिल उसके रूप के प्रकाश में मिलकर विलुप्त हो जायगा और मेरे प्राण उसकी चाह के दरिया की लहरों में डूब कर विलीन हो जायँगे।

(१०)

[illegible] से तूने मुझे [illegible] दिखलाया है, परन्तु इससे यह [illegible] तेरा प्रेम मेरे [illegible] हो जावे।

[illegible] होऊँ तू मेरे हृदय के अन्दर [illegible] दृष्टि के सम्मुख सदैव तेरा ही

(११)

यारब मददे कज़ दुईए खुद बेरेहम।
वज़ बद बेबरम वज़ बदीए खुद बेरेहम॥
दर हस्तिए खुद मरा जे खुद बेखुद कुन।
ता अज़ खुदी, ओ बेखुदीए खुद बेरेहम॥

आँरा के फ़ना शेवओ फ़क़ आईनस्त।
ना कश्फ़ो इल्मी ना मारफ़त ना दीनस्त।
रफ़त ऊ जे मियाँ हमीं खुदा मानेद खुदा।
अलफ़क़्रो इज्ञानम्मह हुवल्लाह इनस्त॥

(१२)

अज़ नेस्तीस्त ईं कि फ़नाए खेशतन नीखाही।
अज़ खिर्मने हस्तियत जू रो काही॥
ता यकसरे मू जे खेशतन आगाही।
गर दम जनी अज़ राहे फ़ना गुमराही॥

---

(११)

हे ईश्वर मेरी सहायता कर जिसने मेरा अहंकार मिटा दिया। मेरी सभी कुभावनाएँ दूर हो जावें और हृदय की मलिनता कहीं दूर हो जाये।

तू इतनी कृपा मेरे ऊपर दिखला दे कि [illegible] मतवाला हो जाऊँ और खुदी और [illegible] कर सकूँ

[illegible]

(१३)

तौहीद बजुर्ज गुफ्तए साहबे सैर।
तसलीमे दिल अज हमजहे ऊस्त वगैर॥
रम्जे जे निहायत मुकामाते तुयूर।
गुफ्तम बतो गर फ़हम कुनी मंतिकतैर॥

(१४)

ऐ बुलबुले जाँ मस्त जे यादे तो मरा।
वै मायए गम पस्त जे यादे तो मरा॥
लज्जाते जहाँरा हमा दर पाए किगन्द।
जौके कि दहद दस्त जे यादे तो मरा॥

(१५)

बर ऊदे दिलम नवाख्त यक जमजमा इश्क।
जाँ जमजमा अम जे पाए ता सर हमा इश्क॥
हक्का कि व अहदहा नयायम बरुँ।
अज ओहदए हक गुजारीए यकदमा इश्क॥

---

(१३)

ऐ ईश्वर की खोज करने वाले! तुझे इस मार्ग पर चलने के लिये उसे छोड़कर सभी वस्तुओं से दिल को हटा लेना है।

मैं तुझ पर सन्यासियों के अन्तिम पद का एक रहस्य प्रकट कर रहा हूँ। यदि तू उनकी बातें समझता है, तो इसको भी समझ जा।

(१४)

कि हे मेरे प्राणों के स्वामी तेरी स्मृति से यह हृदय मतवाला हो रहा है और शोक की पूँजी घटने लगी है।

तेरी याद में जो आनन्द मुझे प्राप्त होता है उसने तमाम ससार के मजों को अपने पैरों से रौंद डाला है।

(१५)

मेरे हृदय रूपी सितार पर, प्रेम ने एक ऐसी गति बजा दी है, जिसके प्रभाव से मैं सर से पैर तक प्रेम ही प्रेम हो गया हूँ।

सच तो यह है कि मैं सहस्र मुख से भी प्रेम को पूर्णतया धन्यवाद देने में सफल न हो सकूँगा।

(१६)

या मन वहवाका बिलरूहे समेहतो।
हम फ़ौक़िओ हम तहतियो ना फ़ौक़ो न तहत॥
ज़ाते हमा जुज़ वजूद क़ायम बवजूद।
ज़ाते तू वजूदे साबिजो हस्तिए बहत॥

बस बेरंगस्त यारे दिलख़ाह ऐ दिल।
क़ाने न शवी बरंग नागाह ऐ दिल॥
अस्ले हमा रंगहा अज़ाँ बेरंगस्त।
मन अहसना सिबग़तम मिनल्लाहए दिल॥

(१७)

हस्ती बक़यासो अक़्ले असहावे क़यूद।
जुज़ आरिज़े आयाँनो हक़ायक़ न ननूद॥
लेकिन बसुकाशक़ाते अरबाबे शहूद।
आयाँ हमा आरिज़न्दो नातूज़ बजूद॥

(१८)

वा गुल रुखे खेश गुफ़्तम ऐ गुंचे देहाँ।
हर लहज़ा मपोश चेहरा चूँ अश्वा देहाँ॥
ज़द खन्दा कि मन वअक्से खूबाने जहाँ।
दर पर्दा अयाँ वाशमो वे पर्दा नेहाँ॥

रुखसारे तो वेनक़ाब दीदन न तवाँ।
दीदारे तो वेहिजाब दीदन न तवाँ॥

मादाम कि दर कमाले इशराक़ बुवद।
सर चश्मए आफ़ताब दीदन न तवाँ॥

खुर्शीद चू बर फ़लक ज़नद रायते नूर।
दर परदा तू वो खीरा शवद दीदा ज़े दूर॥
वाँदम कि कुनद ज़े पर्दए अब्र ज़हूर।
फ़न्नाज़िरो इल्मही ईलैहे मिन ग़ैरे क़ुसूर॥

(१९)

दामाने ग़िनाए इश्क़ पाक आमद पाक।
ज़ालूदगिए वजूदे वा मुश्ते खाक़॥

---

(१८)

मैंने अपने गुलाब के से मुखवाली प्रियतमा से कहा कि ऐ सुन्दरी! तू मानिनियों के समान अपने मुख को सदैव छिपाये न रखा कर।

उसने हँस कर उत्तर दिया कि मैं तो संसार की अन्यान्य प्रेमिकाओं से बिल्कुल भिन्न हूँ। मैं पर्दे के भीतर साफ़ दिखलाई देती हूँ, परन्तु उसके बाहर छिपी रहती हूँ।

जब तक तेरे मुख पर नक़ाब न पड़ा हो उसका दिखाई देना असम्भव है। और तेरी सूरत बिना पर्दे के दृष्टि में हो नहीं आ सकती।

जिस समय सूर्य, आकाश में पूर्ण रूप से प्रकाशित होता है, उस समय उसका देखना नामुमकिन है।

यदि तू पर्दे के भीतर भी हो तब भी पूर्णरूप से प्रकाशित देखने में, तेरी आँखें दूर से ही चौंधिया जाती हैं।

परन्तु, इसके विपरीत जब वह बादलों के अन्दर होता है तब सरलता से देखा जा सकता है।

(१९)

प्रेम का अञ्चल बिल्कुल पवित्र और अदाग़ है। वह किसी पर अवलं नहीं है। उसका अस्तित्व एक मुट्ठी धूल के साथ सम्बद्ध नहीं हो सकता

चूँ जल्वागरो नज़ारगाए जुम्ला .ख़ुदस्त।
गर मा व तू दर्मियाँ न बाशेम चे बाक ॥

हर शारों सिफ़त कि हस्तिए हक़ दारद।
दर .ख़ुद हमा माल्मो मोहक़्क़क़ दारद ॥
दर जिम्ने मुक़य्यदात मोहताज बखेश।
अज़ दीदने आँ ग़िनाए मुतलक़ दारद ॥

वाजिब जे वजूद नेको वद मुसतग़नीस्त।
वाहिद जे मरातिबे अदद मुसतग़नीस्त ॥
दर .ख़ुद हमा रा चू जावदाँ मी बीनद।
अज़ दीदने शाँ बुरूँ जे .ख़ुद मुसतग़नीस्त ॥

वह सब को प्रकाश और पवित्रता प्रदान करने वाला है। यदि हम और तुम दोनों उसके बीच में न रहें तब भी उसकी कोई हानि नहीं हो सकती।

उसके लिये किसी ऐसे मध्यस्थ की, जिसमें होकर वह अपने आपको प्रकट कर सके, आवश्यकता नहीं है। प्रेम एक ऐसी वस्तु है जो ईश्वर के सभी गुणों और विशेषताओं में वर्त्तमान है।

फिर उसको क्या पड़ी है कि वह अपने आपको अन्य वस्तुओं द्वारा प्रकट करे।

उसको उचित और अनुचित, भले और बुरे किसी की भी पर्वाह नहीं है। उसको प्रतिष्ठा और उसके दर्जों की कोई चिन्ता नहीं है।

जब वह सब को सदैव अपने अन्दर ही देखता है तो फिर उसको अपने से बाहर देखने की उसको क्या पर्वाह है?

पृ० ८—मंसूर हल्लाज : एक बहुत बड़े सूफी भक्त थे, जिन्होंने घोषित किया था कि 'मैं सत्य हूँ।' उनके ऊपर धर्म-विरोध का दोष लगाया गया और ऐसे निडर वाक्यों को कहने के कारण उनको फांसी की सजा दी गई, क्योंकि उलमाओं की राय में ऐसे वचन इस-लाम धर्म के विरुद्ध थे। सूफी उनको बहुत पूज्य और प्रतिष्ठित समझते हैं और महान सिद्ध पुरुष की तरह मानते हैं।

पृ० १०—याक़ूब : एजक के पुत्र और एक सिद्ध पैग़म्बर थे जिनका हवाला क़ुरान में 'कुल के प्रधान' की तरह दिया गया है। वह यूसुफ़ के पिता थे।

पृ० १०—यूसुफ़ : क़ुरान में विस्तृत विचरण दिया हुआ है। "जामी" ने इनकी प्रेम कहानी को अपनी पुस्तक 'यूसुफ़ व जुलेखा' में अमर बना दी है। वे अपनी शुद्धता के आदर्शों के लिये प्रसिद्ध हैं। एक बार जब वह अपने पिता और भाइयों सहित मिश्र जा रहे थे तो उनके डाही भाइयों ने उनको एक कुएं में ढ़केल दिया, किन्तु वह बच गये। बाद को मिश्र की शाहज़ादी जुलेखा का उनके प्रति प्रेम हो गया। जुलेखा बुराई की ओर उन्हें ले जाना चाहती थी, किन्तु उन्होंने अस्वीकार कर दिया। इस पर उनको क़ैदखाने में बंद कर दिया गया। जांच करने के बाद वह निर्दोष पाये गये, और छोड़ दिये गये।

पृ० ११—फ़रहाद व शीरीं : फ़रहाद एक महान प्रेमी था, जो शाहज़ादी शीरीं के प्रेम में फंस गया था। शीरीं ने उसकी बहुत कठिन परीक्षा ली जैसे पहाड़ में से नहर निकलवाई। लेकिन उसने उस कार्य्य को पूरा किया। किन्तु शीरीं ने अपने वादे को पूरा करने से इन्कार कर दिया। तब उसने अपनी आत्महत्या कर ली। अपने सच्चे प्रेमी की मृत्यु को सुनकर शीरीं ने भी अपने प्राण त्याग दिये। "निज़ामी" ने अपनी कविताओं से इस घटना को अमर कर दिया है।

गुफा का मुंह बंद करवा दिया लेकिन उनको रास्ता मिल ग
और उनकी कोई हानि नहीं हुई और अद्भुत रूप से बच गये

पृ० २१—अफ़लातून : यूनान का एक बहुत बड़ा दार्शनिक था।

पृ० २२—क़ारूँ : मूसा पैग़म्बर के देश का था। वह अपनी सम्पत्ति के लि
प्रसिद्ध था। मूसा के विरुद्ध विद्रोह करने और अपनी दौलत
घमण्ड के कारण उसको सजा मिली।

पृ० २२—जैहूँ : स्वर्ग-लोक की एक नदी का नाम है।

पृ० २८—इब्राहीम : वे पैग़म्बरों में से एक हैं, और 'परमात्मा के मित्र
के नाम से भी प्रसिद्ध हैं। ईसाई, मुसलमान और यहूदी तीन
इसको अपने पैग़म्बरों में से मानते हैं।

पृ० २८—इसराफ़ील : एक स्वर्गदूत है, जिसके बारे में कहा जाता है कि
वह प्रलय के दिन तुरही बजाकर मरे हुए लोगों को जगावेगा।

पृ० ३३—ज़ुलक़रनैन : यूनान का सम्राट, सिकन्दर : कोई बहादुर पुरु
जो इबराहीम के समय में रहता था।

पृ० ३५—फ़िरऔन : मूसा के समय में मिश्र का बादशाह था। वह लाल
सागर में डूब कर मर गया।

पृ० ३५—सलमान: अली के मित्र का नाम।

पृ० ६२—क़यामत : प्रलय।

पृ० ६३—जुब्बा : सर का पहनावा।

पृ० ६३—सूफ़ : ऊनी लबादा जो सूफ़ी पहनते हैं।

पृ० ६३—सीमुर्ग़ : एक चिड़िया।

पृ० ६५—लुक़मान : एक बहुत बड़ा दार्शनिक जो अपनी बुद्धिमत्ता के लिये
मशहूर है। यूनानी उसको एसाप कहते हैं।

पृ० ७०—तयम्मुम : जहां पर नमाज के वज़ू के लिए पानी नहीं मिलता है,
वहाँ मुसलमान नमाजो वाल्ू का प्रयोग करते हैं, जिस क्रिया को
इस नाम से पुकारा जाता है।

पृ० ७५—तरसा : मूर्तिपूजक : ईसाइयों को भी इस नाम से पुकारते हैं।

पृ० ७६—दफ़ व चंग : बाजों के नाम।

पृ० ८३—जिबराइल : स्वर्ग का दूत, जिसके द्वारा मुहम्मद साहब पर क़ुरान
उतारी गई : कभी २ ईसाइयों के पाक दूत को भी इस नाम से
बतलाया गया है।

पृ० ८६—ख़ुतबा : शुक्रवार की प्रार्थना। इसकी महत्ता यह है कि पैग़म्बर
अक्सर इस दिन उपदेश किया करते थे।

पृ० ८७—हातिफ : अदृश्य बोलने वाला : आकाश वाणी।

पृ० ९३—तौक़े सुरैया : एक ग्रह।

पृ० ९८—क़ैक़ुबाद : ईरान के एक प्रसिद्ध बादशाह का नाम।

पृ० १०२—संजर : ईरान के एक बादशाह का नाम।

पृ० १११—कुफ़्र : धर्मविरोध और अविश्वास। मुसलिम, मूर्ति पूजकों और अग्निपूजकों के मत को 'कुफ़्र' कहा करते थे।

पृ० ११६—ज़ुन्नार : माला।

पृ० १२२—तसबीह : माला।

पृ० १३४—मुसल्लह : पूजा करने का आसन।

पृ० १३५—ख़िर्क़ा : सूफ़ी का लबादा।

पृ० १३१—अनलहक़ : मंसूर अल हल्लाज इन शब्दों को कहा करते थे 'मैं ख़ुदा हूँ, इस धर्मविरोध के लिये मुसलमानों ने उनको सूली पर चढ़ा दिया।

पृ० १३८—ईसा : ईसाइयों के पैग़म्बर। मुसलमानों ने इनको भी स्वीकार किया है।

पृ० १३९—मरियम : ईसा की माँ।

पृ० १९४—चलीपा : छोटा सलीब, जिसको ईसाई कमर में पहनते थे।

पृ० १९५—नसरानियाँ : ईसाई।

पृ० १९४—कोह क़ाफ़ : पहाड़ों का एक समूह। मुसलमानों का यह विश्वास है कि वहाँ पर जिनों और राक्षसों का निवासस्थान है। अक्सर काकेशस पहाड़ के लिये प्रयोग किया जाता है।

पृ० १९८—इक्लीमा : अरब का एक बहुत बड़ा सुन्दर इलाक़ा।

पृ० १९४—क़ैस : अरब का एक क़बा

पृ० २०५—मजनू व लैला : [illegible]